BIHAR YOGA

श्रीरामचरितमानस

बालकाण्ड – 1

संकलन एवं सम्पादन

अवलोकितेश्वर



योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार, भारत

श्रीरामचरितमानस

बालकाण्ड – 1

(दोहा 43 तक)

श्रीरामचरितमानस एवं राम नाम की महिमा

ॐ, प्रेम, मंगलम्

स्वामी निरंजन

श्रीरामचरितमानस

बालकाण्ड – 1

श्रीरामचरितमानस एवं राम नाम की महिमा

संकलन एवं सम्पादन

अवलोकितेश्वर

(सुबोध अग्रवाल, सतना)



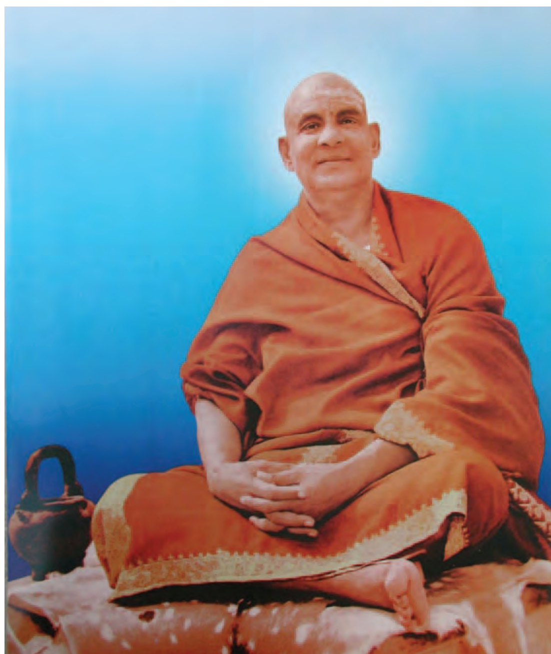
योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार, भारत

योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट द्वारा प्रथम प्रकाशन 2019

ISBN: 978-81-940805-6-5

प्रकाशक एवं वितरक—योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट,
मुंगेर, बिहार, भारत
मुद्रक—थॉमसन प्रेस (इंडिया) लिमिटेड,
नई दिल्ली

वेबसाइट: www.biharyoga.net



सविनय समर्पण

स्वामी शिवानन्द सरस्वती के चरणों में
जिन्होंने स्वामी सत्यानन्द सरस्वती को योग के रहस्यों की शिक्षा दी



नमो नारायण

योगविद्या भारतवर्ष की सबसे प्राचीन संस्कृति और जीवन-पद्धति है तथा इसी विद्या के बल पर भारतवासी प्राचीनकाल में सुखी, समृद्ध और स्वस्थ जीवन बिताते थे। जब से भारत में योग विद्या का ह्रास हुआ, तभी से भारतवासी गरीब, दुःखी और अस्वस्थ हैं। पूजा-पाठ, धर्म-कर्म से शान्ति मिलती है और योगाभ्यास से धन-धान्य, समृद्धि और स्वास्थ्य। भारत में सुख, समृद्धि, शक्ति और स्वास्थ्य के लिए हर व्यक्ति को योगाभ्यास करना चाहिए।

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती
रिखियापीठ, 2005

विषय सूची

परिचय

श्रीरामचरितमानस को मेरे पिताजी अपने माता-पिता के समान ही मानते थे, क्योंकि उनके माता-पिता बचपन से ही नहीं थे। उन्होंने अपना सारा जीवन इस ग्रंथ के आधार पर ही प्रेम, आनंद व संतोष के साथ जिया। मुझे बचपन से ही इस ग्रंथ से बहुत लगाव रहा है। मैंने इसकी जीवंतता को नजदीक से देखा है।

मेरे गुरु, श्री स्वामी सत्यानन्द जी की भी इस ग्रंथ के प्रति अगाध श्रद्धा है। रिखिया में उनके सत्संगों के अनुपम संग्रह, भक्ति योग सागर भाग-1 से 7 तक मैंने पढ़े हैं और उन्हें पढ़कर लगा, वे चाहते हैं कि श्रीरामचरितमानस का शब्दानुवाद हो। यह बात मेरे मन में बैठ गयी। 5 दिसंबर 2009 की मध्य रात्रि को जब गुरुदेव महासमाधि में लीन हुए, रात्रि में 2 बजे मेरी नींद अचानक खुल गई। उठकर थोड़ी देर ध्यान किया। उसके बाद यह कार्य मेरे लिये श्री गुरुदेव का सेवा कार्य बन गया।

स्वामी चिन्मयानन्द जी के वरिष्ठ शिष्य स्वामी शंकरानन्द जी, कानपुर आश्रम में रामचरितमानस के एक-एक दोहे पर एक घंटे का प्रवचन दिया करते थे। उनके उपलब्ध प्रवचनों को आधार बनाकर मैंने नोट तैयार किया। स्वामी निरंजनानन्द जी से जब आशीर्वाद और मार्गदर्शन का निवेदन किया तो उन्होंने कहा, कार्य अच्छा है, इसे इतना सरल लिखो कि अनपढ़ व्यक्ति भी समझ जाये। बस फिर क्या था! स्वामीजी की प्रेरणा से सरलीकरण, संपादन, शीर्षक, उपशीर्षक बनते चले गये। स्वामीजी ने कहा कि एक-एक काण्ड लिखते जाओ, हम प्रकाशित करते जायेंगे। सबसे पहले सुंदरकाण्ड तैयार हुआ जिसमें हनुमान जी के सुंदर सेवा कार्य का वर्णन है। गुरु प्रेरणा से अब बालकाण्ड को पाँच भाग में तैयार किया

गया है जिसमें श्रीरामचरितमानस की महिमा, शिव-पार्वती विवाह, राम-अवतार के कारणों का वर्णन, बाल लीला एवं राम-सीता विवाह का सरस एवं सुन्दर वर्णन किया गया है।

गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस महाकाव्य है। यह सरस है, इसमें मधु की मिठास है। हम अपनी कार्य सिद्धि के लिए बिना मिठास के जल्दी-जल्दी पाठ कर लेते हैं। राग से, भाव से, रस लेते हुए इसे पढ़ें। आँखों में प्रेम के अश्रु आयेंगे, शरीर रोमांचित हो जाएगा। यह मात्र पुस्तक नहीं है, इसमें अध्यात्म, ज्ञान, भक्ति और प्रेम के साथ-साथ पारिवारिक, व्यावहारिक एवं सामाजिक शिक्षा भी है। यह इतिहास भी है, भूगोल भी है, राजनीति और कूटनीति की शिक्षा भी है। यह हिंदी साहित्य की उच्चतम प्रस्तुति है।

– अवलोकितेश्वर

तुम भगवान पर अविश्वास कर सकते हो। तुम्हें राम के अस्तित्व पर प्रश्न हो सकता है। सब ठीक है, पर मैं भगवान के बारे में नहीं, मैं बोल रहा हूँ नाम के बारे में। नाम पर कभी शंका मत करना। जब राम का नाम लेते हो तो तुम्हारा मन, तुम्हारा हृदय, तुम्हारा पूरा जीवन ऐसे धुल जाता है, जैसे राम का नाम डिटरजेंट पाउडर हो। यह भगवान का नाम मामूली चीज नहीं है। यह भगवान का नाम आत्मबम है। तुम्हारे अंदर में जितनी माया, मलिनता, कोढ़, गंदगी, भय, निराशा, जितनी भी आसुरी शक्तियाँ हैं सबको समाप्त कर देगा। मेरा कहना है कि रोज जब भी तुमको समय मिले भगवान का नाम जपो। 1 घण्टा जपो, 2 घण्टा जपो। समय मिले तो कभी 1 दिन, कभी 2 दिन, कभी 9 दिन या साल भर का अनुष्ठान करो। यही एकमात्र रास्ता है।

– स्वामी सत्यानन्द सरस्वती

श्रीरामचरितमानस की महिमा

श्री स्वामी सत्यानंद सरस्वती के रिखिया सत्संग से

रामचरितमानस पाठ से घर में भगवान का निवास

रामचरितमानस के पाठ से घर में भगवान का निवास हो जाता है। घर में तो भगवान को रहना चाहिये न? हम लोगों के घर में बहुत से लोग रहते हैं, शैतान भी रहते हैं। इसलिये भगवान का थोड़ा अभाव रहता है। भगवान को अपने घर में लाने के लिये, रखने के लिये रामचरितमानस जितना हो सके पढ़ो, कम से कम दो चौपाई ही पढ़ लो। कितने मिनट लगते हैं? बीस मिनट ही तो लगते हैं। इस बात को याद रखना।

साकार ईश्वर की प्राप्ति सबसे बड़ी उपलब्धि

साकार वह है जिसका एक आकार है, एक रूप है और निराकार वह है जो आकार रहित है। तुम एक निराकार अस्तित्व को कैसे देख सकते हो? तुम एक अनाम अस्तित्व को कैसे नाम दे सकते हो? जो कहीं रहता नहीं उसे कैसे खोज सकते हो? मैं तो ऐसे ईश्वर की चाह करता हूँ, जिसका एक नाम हो, एक रूप हो, जिसका घर हो, पता हो। इसलिये मैंने उन्हें रघुनाथ कुटीर में प्रतिष्ठित कर रखा है। मैं प्रतिदिन उस कुटीर का ध्यान और उनकी पूजा-अर्चना करता हूँ। मैं सच्चाईपूर्वक कह सकता हूँ कि मेरे भगवान वहाँ निवास करते हैं। रामचरितमानस से मैंने यह सीखा है कि ईश्वर सर्वत्र विद्यमान है, किंतु तुम्हें उन्हें किसी एक स्थान पर स्थापित करना है। जैसे पानी तो सभी जगह उपलब्ध होता है, पर तुम पीते अपने कुएँ से ही हो।

मेरे जीवन को दिशा प्रदान की

वेद, उपनिषद्, बाइबिल, कुरान और अन्य अनेक आध्यात्मिक ग्रंथ, जिनके प्रति मेरे मन में अपार श्रद्धा है, उनके गहन अध्ययन के उपरांत मैने उनका पाठ रामचरितमानस के पाठ के बाद बन्द कर दिया है। इस एक ग्रंथ ने मेरे जीवन को दिशा प्रदान की है। मेरे जीवन का सबसे बडा व्यवधान यह था कि मैं ईश्वर के विषय में कुछ अधिक ही जान गया था। मैं उनके विषय में गहन चिंतन कर सकता था, परंतु वे केवल मेरे मन की परिधि में ही सीमित रहे, उससे आगे मैं अग्रसर नहीं हो सका। यह ग्रंथ मुझे मन और बुद्धि की गुरुत्वाकर्षण शक्ति से बाहर ले गया। अब तो मैं मात्र इसी ग्रंथ का पाठ करता हूँ। मैं सोचता हूँ कि आध्यात्मिक लोगों को, जो कुछ चीजें अनुभव करना चाहते हैं, उन्हें रामायण अवश्य पढ़नी चाहिये।

इसमें मधु की मिठास है

मैंने रामचरितमानस जैसा सरस ग्रंथ नहीं देखा है। भगवद्गीता ज्ञान का भंडार है, परंतु रामचरितमानस में मधु की मिठास है। मैं सदा एकांत में रहा हूँ। मेरा जीवन नीरस रहा है। रामचरितमानस हमारे इस नीरस जीवन में अमृत की मिठास लेकर आया।

जीवनोपयोगी उपदेश रामचरितमानस की विशेषता है

वास्तविक ज्ञान तो जीवनोपयोगी उपदेश हैं। इस ग्रंथ में जीवन दर्शन की जो शिक्षा है, वह है मानवीय संबन्धों की, वह संबन्ध भाई-बहन का प्रेम हो, या दो भाइयों का परस्पर प्रेम हो या फिर पिता और पुत्र का प्रेम हो। कैसे इन संबन्धों को जीना चाहिये और कैसे ये संबन्ध बिगड़ते हैं, इन सभी पर उदाहरणों का भण्डार है इसमें। यही रामचरितमानस की विशेषता है।

रामचरितमानस में जीवन की संपूर्ण रूप रेखा है

रामचरितमानस मात्र धर्म ग्रंथ नहीं है। इसमें हमारे जीवन के द्वन्द्वों, हताशाओं और निराशाओं का चित्रण है। जिस दिन तुम माँ के गर्भ में आये, उस दिन से तुम्हारे कब्र में दफन होने के दिन तक का सम्पूर्ण चित्र प्रस्तुत करने वाला यह ग्रंथ है। इस जीवन के कई पहलू होते हैं, कई रिश्ते होते हैं, मन होता है, कार्य-व्यापार होते हैं, विश्वास, अविश्वास, झूठ, सच और न जाने कितने

रूप होते हैं। इस ग्रंथ में इन सबके समाधान की रूप रेखा मिलेगी। यह जीवन की एक समय सारिणी है। जीवन एक सतत् यात्रा है। इसके लिये एक समय सारिणी अवश्य होनी चाहिये।

रामायण के पात्रों को प्रतीक मानने से साधना नष्ट होती है

पहले मैं रावण, वनवास, अयोध्या, जनकपुरी, सबको प्रतीक मानता था, अलंकारिक ढंग से समझता था पर अब नहीं। अब मैं मानने से इंकार करता हूँ क्योंकि इससे मेरी साधना नष्ट होती है। मैं राम को उसी रूप में मानता हूँ, जिस रूप में तुलसीदासजी व वाल्मीकिजी ने उन्हें प्रस्तुत किया है। मैं राम को उस रूप में नहीं मानता हूँ जिस रूप में उनको आध्यात्मिक रामायण में प्रस्तुत किया गया है।

रामजी के सुंदर शरीर का मन में दर्शन हो

भगवान श्रीराम की कृपा रहे, उनके सुंदर शरीर का मन में भक्तिपूर्वक दर्शन होता रहे, उनके प्रति अपनी श्रद्धा नित्य निरंतर बढ़ती जाये और सीताजी के सुंदर चरित्र को देखकर हृदय गद्‌गद्‌ हो जाये, आँखों में आँसू भर जाएँ, दिल एकदम आह्लादित हो जाये। और फिर उसी में अपना सुंदर मन धीरे-धीरे निराकार में लीन हो जाता है। रामचरितमानस में सीधे-सीधे जो लिखा है उतना ही पकडो, उसके अलावा अपना दिमाग मत लगाओ। दिमाग लगाने से भगवान मिलते नहीं बल्कि भागते हैं।

रामचरितमानस ग्रामीण साक्षरता का सर्वोतम उपाय

यहाँ गाँव की एक स्त्री से हमने पूछा पढ़ना-लिखना क्यों नहीं सीखती हो। उसने कहाँ क्या करें स्वामीजी गोबर ही तो उठाना है, घर-गृहस्थी ही तो देखनी है। हमने सोचा ठीक तो है, उसको बैंक में कोई खाता तो खोलना नहीं है उसकी तो सीमित आवश्यकता है। कुछ दिनों के बाद हम दूसरे लोगों को रामायण दे रहे थे, तो उसने कहा हमको भी दीजिये न। हमने कहा पढ़ोगी? तो बोली हाँ पढ़ेगें। सच में दुबारा जब आई तो रामायण पढ़ने लग गयी थी। मुझे तो उस स्त्री के माध्यम से अचानक अनुभूति हुई। यह भारतीय मनोविज्ञान है, क्योंकि भारत का आदमी कहता है मैं पढ़ूँ क्यों? हम गाँव के लोगों के बीच साक्षर शब्द का प्रयोग नहीं करते। हम इनसे कहते

हैं रामचरितमानस सीखो। और ये वाकई रोज रामचरितमानस पढ़ने लगे। अत: साक्षरता के लिये केवल रामचरितमानस दे दीजिये।

रामचरितमानस से गाँवो में समृद्धि भी आयेगी

रामचरितमानस रोज पढ़ने से मन पर असर होगा, राम का आदर्श आयेगा, सीता का आदर्श आयेगा, रावण के बारे में पता चलेगा और वह असर उनके बच्चे में जायेगा। बच्चों की अनुवांशिक संरचना सुधरेगी, उनके संस्कार सुधरेंगे। और जहाँ रामचरितमानस आयेगा वहाँ समृद्धि भी आयेगी। आज एक झोपड़ी बन गयी, कल एक मकान और जोड़ दिया, परसों एक शौचालय जोड़ दिया। लोग कहेंगे समृद्ध हो रहे हैं। समृद्धि व्यक्ति को नियंत्रण में रखती है, उसे भटकने नहीं देती। लेकिन संपत्ति आदमी को भटका देती है, क्योंकि संपत्ति के साथ अवगुण आते हैं।

रामजी हमारे पूर्वज

श्रीराम वास्तव में हुए हैं। मैं इसलिये नहीं कह रहा हूँ कि वे भगवान हैं बल्कि इसलिये कह रहा हूँ कि वे "मेरे पूर्वज हैं"। मैनें इक्ष्वाकु वंश में जन्म लिया है, यही सूर्य वंश है जो आगे जाकर रघुवंश बना। उस रघुवंश में राम पैदा हुए हैं। जब हम पैदा हुए, तब पहला जो मंत्र हमारी माँ ने कान में दिया, वह राम था। इसलिये नहीं कि राम भगवान का नाम था बल्कि इसलिये कि राम हमारे पूर्वज का नाम था। राम इस संन्यासी के पूर्वज हैं। हम अपने पूर्वजों को कभी अस्वीकार नहीं कर सकते, चाहे हमारे पास उसके प्रमाण हों या न हों। आज से पन्द्रह पीढ़ी पहले तुम्हारे दादा कहाँ रहते थे, कोई साक्ष्य दे सकते हो क्या? साक्ष्य नहीं है तो क्या तुम्हारे परदादा थे ही नहीं। आपके पास यदि अपने दादा के प्रमाण नहीं हैं, तो आप उनको नकार दोगे क्या? नहीं। अपने हर पूर्वज को याद करना हमारा धर्म होता है।

रामजी हमेशा पूज्य हैं

श्रीराम का अस्तित्व एक ऐतिहासिक सत्य नहीं था, यह कहना पूरी की पूरी संस्कृति को नकारने के बराबर है। जिस व्यक्ति को लाखों साल से पूजते आये हैं, उसको अस्वीकार नहीं किया जा सकता। जो वस्तु तुमको

सुख देती है, वह हमेशा पूज्य है। जो व्यक्ति तुमको रास्ता बतलाता है वह हमेशा पूज्य है। जिस व्यक्ति को लोग निर्भय होकर याद कर सकते हैं वह हमेशा पूज्य है।

भगवान राम का अवतार हुआ है

भगवान युग-युग में अवतार लेते हैं। हर युग में भगवान का एक प्रमुख अवतार होता है और भगवान के अंशावतार तथा अर्चावतार भी होते हैं। पर उनका पूर्णावतार युग में एक बार होता है। राम उनमें से एक थे। मनुष्य भगवान की लीला को नहीं समझ सकता है। भगवान जिस युग में जन्म लेते हैं उस युग के लोगों के लिये लेते हैं। भगवान का अवतार मजाक में नहीं होता है। जब राजा असमर्थ हो जाये, विधि-व्यवस्था असफल हो जाये, अच्छे लोगों को कहीं भी रास्ता न मिले, अच्छे लोगों पर अत्याचार होने लगे, भले लोग परेशान हों तब भगवान का अवतरण होता है।

रामचरितमानस उच्चतम साहित्य

अगर तुम रामचरितमानस को धार्मिक पुस्तक नहीं मानो, सिर्फ साहित्य ही मानो तो भी इसकी गणना उच्चतम साहित्य में की जायेगी। इसमें जो शब्द हैं, अलंकार हैं, अभिव्यक्तियाँ हैं, सब बहुत अच्छे हैं। तुलसीदासजी ने साहित्य के नौ रसों का वर्णन किया है पर समाज की मर्यादा नहीं तोड़ी है। बगीचे में सीताजी और रामजी के बीच जो आमना-सामना तुलसीदासजी ने कराया है, उसे कितनी अच्छी तरह से लिखा है– *लोचन मग रामहि उर आनी, दीन्हे पलक कपाट सयानी।* रामचरितमानस में एक युवा लड़की और एक युवा लड़का आँखों से आँखें मिला रहे हैं, हृदय में भाव आ रहे हैं, उनके मन में मनोरथ उत्पन्न हो रहे हैं, सहेलियाँ मजाक भी कर रही हैं, मगर तुलसीदासजी ने मर्यादा बनाये रखी है। यह बहुत मुश्किल है। *चितवति चकित चहूँ दिसि सीता, कहं गए नृप किसोर मन चिंता।* शुरू से आखिर तक रामचरितमानस साहित्य के दृष्टिकोण से बहुत अच्छा है।

रामचरितमानस में कई भाषाओं का मिश्रण

इसकी भाषा बुंदेलखण्डी है। उतरप्रदेश के दक्षिण में एक जिला है झांसी, वहाँ राजापुर नाम का एक गाँव है। राजापुर तुलसीदासजी का जन्म

स्थान है। यह बुंदेलखंडी वहाँ की भाषा है। पन्ना, झांसी, कटनी, यहाँ बुंदेलखण्डी है, और इधर रीवाँ वगैरह में बघेलखंडी है। उन्नीस-बीस का फर्क है दोनों में। इसमें मैथिली भी है, उर्दू भी है, पुरानी अंग्रेजी भी है जैसे 'नीयरे' यानि नजदीक। फारसी भी है और कुमाऊँनी भी। जब हनुमानजी पेड़ पर बैठे थे और रावण वहाँ पर आया तो लिखा है– *तरू पल्लव महुं रहा लुकाई।* कुमाऊँनी में लुकना मतलब छिपाना। इसलिये इसमें कई भाषाओं का मिश्रण है।

शिवजी व रामभक्तों के बीच प्यार करा दिया

तुलसीदासजी की रामचरितमानस ने जो काम किया उसकी वजह से शिवजी के भक्तों और रामजी के भक्तों के बीच प्यार हो गया। नहीं तो पहले इन दोनो में भी हिन्दू-मुसलमान की तरह झंझट था। तिरुपति के मन्दिर में शिवजी के भक्तों को घुसने की अनुमति नहीं थी। शिवजी के मंदिर में विष्णु पूजा नहीं होती थी। उन्होने रामचरितमानस में ऐसा उपाय निकाला कि शिवजी रामजी की पूजा करते हैं और रामजी शिवजी की पूजा करते हैं। दोनो को एक दूसरे का दोस्त बना दिया। तो उनके भगत लोग भी एक दूसरे के दोस्त बन गये। अब वह फर्क खत्म हो गया। ऐसा ही हिन्दू-मुसलमान के झगड़े को मिटाने के लिये करना पड़ेगा। संसद और विधान सभा से यह समस्या हल नहीं होने की है। इसको हल करेगा तो संत करेगा, दूसरा कोई नहीं कर सकता है।

इसकी ध्वनि भी विशेष है

रामचरितमानस का यदि अर्थ समझ में न आये तो कोई बात नहीं। इसकी ध्वनि का भी बहुत महत्त्व है। मैने देखा है, लोग केवल पढ़ते-पढ़ते, गाते-गाते, रोने लगते हैं। इसकी ध्वनि ही ऐसी है। जो रामचरितमानस पढ़ते हैं वे बतायेंगे कि रामायण पढ़ते-पढ़ते आँखों में आँसू आ जाते हैं या शरीर गर्म हो जाता है।

रामचरितमानस के अनुष्ठान

मैने रामचरितमानस के कई अनुष्ठान किये। नौ दिनों में पूरी रामायण करना, सात दिनों में, फिर एक दिन में। नवरात्रि के समय में तो रोज पूरी रामायण।

रात्रि में 2 बजे उठना, स्नान करना और बैठ जाना– *'वर्णानामर्थसंघानाम्'* से *'दह्यन्ति नो मानवा:'* तक। संध्या 4 बजे तक खाना नहीं, पीना नहीं, सोना नहीं, कुछ नहीं करना। केवल रामायण 2 बजे रात्रि से अगले दिन 4 बजे तक। प्रतिदिन 9 दिनों तक।

मेरी इच्छा इस पर लिखूँ पर आदेश नहीं मिला

रामचरितमानस भगवान राम की कहानी है, यह कथा भगवान शिव ने माता पार्वती से कही है। मेरी इच्छा थी कि मैं इसका अंग्रेजी में अनुवाद करूँ। अभी तक इस ग्रंथ के अंग्रेजी में जो अनुवाद हुए हैं, वे उत्तम कोटि के नहीं है, क्योंकि वे सभी विद्वानों, शिक्षकों और व्याख्याताओं द्वारा लिखे गये हैं, किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा नहीं जो उसकी अनुभूति कर सकता हो। परंतु मुझे अभी तक ऐसा आदेश प्राप्त नहीं हुआ है। यदि मुझे आदेश मिलेगा तो मैं उसका पालन करूँगा। निश्चय ही, मैंने लिखना त्याग दिया है। मैं अब हाथ में कलम नहीं पकड़ता, परंतु यदि अब मैं कोई पुस्तक अपने हाथ से लिखूँगा, जैसा मैने पूर्व में किया है, तो वह रामचरितमानस का शब्दानुवाद होगा। इसे किसी व्याख्या की आवश्यकता नहीं होगी क्योंकि यह ग्रंथ तो स्वयं ही श्रद्धा की व्याख्या है।

गोस्वामी तुलसीदासजी

तुलसीदासजी संस्कृत के महान् विद्वान् थे, पर उन्होनें रामचरितमानस ग्रामीण हिंदी भाषा बुन्देलखण्डी में लिखा है और इसकी अभिव्यक्ति संस्कृत से भी बेहतर है। इस पुस्तक ने भारत के लाखों लोगों की आत्मा को हिलाकर रख दिया, और रामजी की पूर्ण अभिव्यक्ति एवं उनकी नई परिभाषा दी।

सन्त तुलसीदास गंभीर थे, वे ऐसे ही नहीं थे। जीवन को, सृष्टि को, वेदांत दर्शन, अद्वैत वेदांत दर्शन, विशिष्ट अद्वैत दर्शन को उन्होने गंभीरता से लिया। ऐसे ही बच्चों की तरह नहीं लिया। समझाया उन्होंने। हमारे संत-महात्मा कपोलकल्पित गप नहीं लगाते थे। वे एक भक्त थे, धर्मपरायण थे और उनको श्रीराम के दर्शन प्राप्त थे।

बालकाण्ड – 1

21 शीर्षकों द्वारा संक्षिप्त प्रस्तुतिकरण

1. संस्कृत में मंगलाचरण

(श्लोक 1 से 7)

श्रीरामचरितमानस का प्रारंभ तुलसीदास जी सरस्वती जी व गणेश जी की संस्कृत में वन्दना से करते हैं। स्वर, व्यंजन, शब्द, वाक्य, अर्थ, छन्द, रस इन सबकी देवी सरस्वती हैं। इन सबको समझने का जो ज्ञान है उसके देवता गणेश जी हैं। इनके स्मरण एवं कृपा से पढ़कर सब समझ में तो आयेगा पर उसका फल पाने के लिये श्रद्धा व विश्वास का होना अत्यंत आवश्यक है। इसलिये फिर श्रद्धा की देवी पार्वती जी व विश्वास के देवता शिव जी की वन्दना करते हैं। श्रीरामकथा को बार-बार सुनना, कहना व पढ़ना है इसलिये सबसे बड़े वक्ता आदिकवि वाल्मीकि व सबसे बड़े श्रोता हनुमान जी की वन्दना है। श्रीराम की महामाया शक्ति सीता जी की वंदना है जो हमें श्रेय मार्ग में ले चलें। अंत में श्रीराम की वंदना करते हैं जिनके कमल के समान चरणों का स्मरण ही दु:खों से छुटकारा पाने का एकमात्र उपाय है। सातवें श्लोक में स्पष्ट कहते हैं कि श्रीरामचरितमानस समस्त वेदों, पुराणों, वाल्मीकि रामायण एवं शास्त्रों का सार है। यह ग्रंथ हिंदी भाषा में अत्यंत सरस प्रबंध महाकाव्य है जो अपने अंत:करण के सुख के लिये तुलसीदास जी ने लिखा है। यही भाव रखकर इसे पढ़ें, सुने व सुनायें।

2. पंचदेवों का स्मरण

(सोरठा 1 से 4)

'सदा भवानी दाहिने सम्मुख रहें गणेश पंचदेव रक्षा करें ब्रह्मा विष्णु महेश'
इस प्रकार पाँच देवताओं का आवाहन करके कोई भी शुभ कार्य प्रारम्भ करने

की अपने यहाँ प्रथा है। तुलसीदास जी इसी का पालन करते हुए श्रीरामकथा लिखने के पहले गणेश जी, सूर्यदेव, विष्णुजी, शंकर जी व पार्वती देवी इन पंच देवताओं का आवाहन करते हैं। इन देवताओं के स्वरूप व गुण बताने के साथ इनसे क्या मांगना है यह भी बताते हैं। यह प्रार्थना अत्यन्त सरल व प्रभावशाली है इसे याद कर लेना चाहिये। रामायण पाठ के पहले इसे अवश्य गाते हैं।

3. श्रीगुरु की महिमा व वन्दना

(सोरठा 5 दोहा 1, दोहा 2 की 2 चौपाई)

श्रीगुरु परहंस सत्यानंद जी कहते हैं कि केवल अच्छे प्रवचन देने वाला शिक्षक है, सुंदर ग्रंथ लिखने वाला लेखक है, चीजों को अध्ययन कर उसके विषय को स्पष्ट रूप से उद्‌घाटित करने वाला दार्शनिक है, ये सब गुरु नहीं हैं। परन्तु जो न अच्छा प्रवचन देने वाला हो, न अच्छा लेखक हो और न ही किसी विषय को स्पष्ट रूप से समझाने वाला हो, फिर भी यदि उसने अपनी आत्मा पर विचार कर लिया हो और गहन अंधकार में टॉर्च की तरह प्रकाश दे सकता हो, वही गुरु है। ऐसे ही श्रीगुरु की महिमा व वन्दना तुलसीदास जी ने की है। कहते हैं गुरु का शरीर तो देखने में मनुष्य जैसा है पर वे हैं ईश्वर ही। श्रीगुरु के मिलने व उनकी नजदीकी से व्यक्ति में कैसे और क्या परिवर्तन आता है उसका वर्णन इस प्रसंग में किया गया है।

4. अच्छे लोगों का साथ करें, बुरों से बचकर रहें

(दोहा 2 से 7)

पूज्य गुरुदेव सत्यानंदजी रिखिया सत्संग में कहते हैं कि अच्छे लोगों की संगति सत्संग है। बुरे लोगों की संगति कुसंग है। अगर तुम बुरे लोगों की संगति में रहोगे तो तुम्हारे मन का नाश होगा, तुम्हारे परिवार का नाश होगा, तुम्हारी संपन्नता भी नष्ट हो जायेगी, हो सकता है कि तुम्हारे संपूर्ण राष्ट्र का भी नाश हो जाए। जहाँ लोगों ने बुरे सुझावों पर ध्यान दिया है, जहाँ नकारात्मक प्रस्तावों में रुचि दिखाई गई है, वहाँ विनाश ही हुआ है। अभी से तुम सोचो कि तुम्हारे व्यक्तिगत जीवन में जिन लोगों से तुम्हारा सम्पर्क होता है वे लोग क्या सकारात्मक बुद्धि के हैं? क्या वे अहितकर हैं? क्या वे दुष्ट हैं? निर्णय पूरा का पूरा तुम्हारा होना है और फिर उस निर्णय पर तुम्हारा भाग्य निर्भर है।

तुलसीदासजी इस प्रसंग में अच्छे लोगों व दुष्टों की वन्दना करते हुए उनके लक्षण बताते हैं, सत्संग से व्यक्ति में तुरंत परिवर्तन हो जाता है। दुष्ट व्यक्तियों के लक्षण बताते हुए कहते हैं कि अपने आप की तुलना इन लक्षणों से करके देखो कि कहीं हमारे अंदर भी खलों जैसी मनोदशा तो नहीं है। यदि है तो तुरन्त सुधरने का प्रयास करें।

5. सम्पूर्ण जगत को सीता-राम से ओत-प्रोत जानकर नमन

(दोहा 7ग, 7घ, 8)

परम पूज्य स्वामी सत्यानंद जी कहते हैं कि अपने विकास के एक निश्चित बिंदु पर, मनुष्य ने यह अनुभव किया कि सम्पूर्ण जगत् सीता-राम से ओत-प्रोत है, ईश्वर और उसकी माया से व्याप्त है। मैं उनका नमन करता हूँ, इस जगत की सभी वस्तुओं को अपनी करबद्ध वन्दनायें अर्पित करता हूँ, क्योंकि समस्त सत्ता में, ब्रह्माण्डीय अस्तित्व से सूक्ष्मतम प्राणी तक में वह व्याप्त है। भगवान सब रूपों में है– वृक्षों में है, वनस्पतियों में है, जानवरो में है, अमीर में है, गरीब में है, सदाचारी में है, दुराचारी में है, ज्ञानी में है, अज्ञानी में है। सबमें भगवान उसी तरह से व्याप्त हैं जिस प्रकार से बल्ब और माइक्रोफोन में एक ही बिजली है। ईश्वर एक ऐसी शक्ति का नाम है जो हमेशा मेरे पास है, जो हमेशा मेरे अंदर है, जो हमेशा मेरे सामने है, जिसका मैं अनुभव नहीं करता। तुलसीदास जी कहते हैं *'सीय राममय सब जग जानी, करऊँ प्रनाम जोरि जुग पानी'* सब को यह मानकर प्रणाम करते हैं कि सब के अंदर सीता राम विराजमान हैं। वे अपनी बुद्धि का अभिमान त्याग करके सबको प्रणाम करते हैं, सबका आशीर्वाद माँगते हैं।

6. सज्जन कथा सुन प्रसन्न होंगे, दुष्ट मजाक बनाकर हँसेंगे

(दोहा 8 व 9)

तुलसीदास जी बताते हैं कि इस कथा को कौन किस तरह से सुनेगा। मैंने तो इस महान् रामकथा को वैसे ही लिखने का प्रयास किया है जैसे छोटा बालक, जिसे बोलना नहीं आता। फिर भी वह तुतलाकर ही बोलने की कोशिश करता है। बालक के माता पिता तोतली बातों को भी सुनकर प्रसन्न होते हैं वैसे ही सज्जन लोग कथा को सुनकर आनंद लेंगे। दुष्ट लोग इसका मजाक बनाकर उपहास करके आनंद लेंगे। मेरा तो दोनों में ही हित है।

7. इसमें 'राम' नाम पिरोया है यही इसका एकमात्र गुण है

(दोहा 9 से 13)

सुंदर मोतियों में बहुत बारीकी से छेद करके उसमें कारीगर धागा पिरोकर माला बना देते हैं। उस माला को लोग गले में पहनते हैं, मोतियों की सुंदरता दिखती है, पर सब में धागा ही पिरोया रहता है। तुलसीदास जी कहते हैं कि इस ग्रंथ में जितनी भी कवितायें हैं, दोहे, चौपाइयाँ, छंद, अलंकार हैं वे सब मोतियों के समान हैं। उनमें बहुत सावधानी से छेद करके, ताकि उनकी सुंदरता व काव्यात्मकता बनी रही, उसमें राम चरित्रों को पिरो दिया है। इसमें पिरोये गये राम नाम का, उनके चरित्रों का ही महत्त्व है, उसी पर सब ध्यान दें, वही इस ग्रंथ का मुख्य आधार है। इस सुंदर रामचरितमानस की माला को लोग हृदय में धारण करें मायने इसका नियमित पाठ करें, उसमें लिखी बातों को समझकर हदय में धारण करें, व्यावहारिक जीवन में अपनायें फिर देखें जीवन में प्रेम ही प्रेम आ जायेगा। इस प्रेम की सुंदरता चारों तरफ फैलेगी।

8. कवियों व वेदों की वन्दना

(दोहा 13 से 14)

तुलसीदासजी कहते हैं कि श्रीराम कथा को मुनियों व कवियों ने पहले ही गाया है। मुनि वाल्मीकि ने सस्कृत में रामायण नाम के ग्रंथ में श्रीरामकथा का वर्णन किया है। वेदव्यास जी ने भी संस्कृत में रामकथा का वर्णन किया है। इनके द्वारा लिखी गयी कथा मेरे लिये पुल का काम करेगी। मैं कोई नयी रचना नहीं कर रहा हूँ, इन सबके आधार पर ही रामकथा लिखूंगा। सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग, कलियुग के सभी कवियों व चारों वेदों की भी वन्दना करके उनसे आशीर्वाद माँगते हैं।

9. शंकर-पार्वती के वरदान से दोहे व चौपाइयाँ मंत्र बन गये

(दोहा 15)

तुलसीदास जी कहते हैं कि शंकर-पार्वती मेरे माता-पिता व गुरु हैं, यदि वे मुझ पर सचमुच प्रसन्न हों, तो मैंने श्रीरामचरितमानस के सुनने व सुनाने से होने वाले जो प्रभाव लिखे हैं, वे सब सच हो जायें। शंकर जी ने वरदान दे दिया। इस ग्रंथ के दोहे व चौपाइयाँ हैं तो हिंदी में पर इनका प्रभाव मंत्र के

समान है। समय के साथ यह बात सत्य साबित हो चुकी है। बहुत से लोगों को इसके निरंतर अध्ययन से भक्ति, शांति, विश्राम प्राप्त हुआ है, प्रभु राम के दर्शन हुए हैं। यह पूर्णत: सिद्ध ग्रंथ है।

10. श्रीरामचरितमानस के पात्रों का परिचय व वंदना

(दोहा 16,17,18)

श्रीरामचरितमानस एक प्रबंध महाकाव्य है। तुलसीदास जी इस महाकाव्य के नायकों का परिचय उनकी विशेषता बताकर देते हैं, उनकी वंदना भी करते हैं। इस ग्रंथ का पाठ करते समय मन में इसे याद रखना चाहिये। साधकों के लिये इन सबके चरित्र बहुत प्रेरक तत्त्व हैं। हर एक पात्र कुछ न कुछ प्रेरणा देने में समर्थ है, जो जैसा दे सकता है उससे वही माँगते हैं।

11. राम नाम की महिमा

(दोहा 19 से 27)

स्वामी सत्यानंद जी रिखिया सत्संग में कहते हैं कि तुम भगवान पर अविश्वास कर सकते हो। ठीक है। तुम्हें राम के अस्तित्व पर शंका हो सकती है या प्रश्न हो सकता है कृष्ण के अस्तित्व पर या तुम पूछ सकते हो शिव के अस्तित्व के बारे में। सब ठीक है, पर मैं भगवान के बारे में बात नहीं कर रहा हूँ। मैं बोल रहा हूँ नाम के बारे में। नाम पर कभी शंका मत करना। जब राम का नाम लेते हो तो तुम्हारा मन, तुम्हारा हृदय , तुम्हारा पूरा जीवन ऐसे धुल जाता है, जैसे राम का नाम डिटरजेंट पाउडर हो। यह बात पक्की है कि संसार रूपी काजल की कोठरी में, जिसको प्रपंच और माया कहते हैं, हम जो आए हैं, थोड़ा दाग तो सबको लगता ही है, रोजाना लगता है, उससे तुम बच नहीं सकते हो। यह भगवान का नाम मामूली चीज नहीं है। यह भगवान का नाम आत्मबम है। तुम्हारे अंदर में जितनी माया, मलिनता, कोढ़ , गंदगी, भय, निराशा, जितनी भी आसुरी शक्ति है सबको समाप्त कर देगा। मेरा कहना है कि रोज जब भी तुमको समय मिले भगवान का नाम जपो। 1 घण्टा जपो, 2 घण्टा जपो। समय मिले तो कभी 1 दिन, कभी 2 दिन, कभी 9 दिन या साल भर का अनुष्ठान करो। यही एकमात्र रास्ता है।

तुलसीदास जी ने सबकी वन्दना एक या दो पंक्तियों में की है, परंतु नाम की महिमा बहुत विस्तार से 9 दोहे व 72 चौपाइयों में की है। वे कहते हैं हमें

जो भी उपलब्धि हुई इसी राम नाम जप से हुई। राम नाम तो बहुत लोग जपते हैं, परंतु महिमा जाने बिना। महिमा जानकर यदि नाम जप करें तो वह जल्दी फलदायी होगा। राम नाम जपने वालों या गुरु मंत्र का जप करने वालों या भगवान के किसी भी अन्य नाम का जप करने वालों को नाम महिमा का यह प्रसंग बहुत ही सावधानी पूर्वक पाठ करके, इसे समझने का प्रयास करना चाहिये। इस पूरे प्रसंग का प्रस्तुतीकरण नौ शीर्षकों में किया गया है।

12. राम स्वामी हैं मैं उनका सेवक हूँ, प्रभु से रिश्ता बनायें

(दोहा 28 व 29)

इस प्रसंग में तुलसीदास जी दशरथ पुत्र राजा राम से अपना रिश्ता सेवक का जोड़कर उनकी वन्दना करते हैं, उनका स्मरण करते हैं। कहते हैं कि मुझ जैसे कुसेवक के दोषों को प्रभु ने ध्यान ही नहीं दिया, मेरे अंदर के भक्ति भाव को पहचान कर मुझ पर कृपा कर दी। मैं अपने प्रभु की गुणगाथा लिखने के लिये महाकाव्य की रचना करना चाहता हूँ, मेरे प्रेम को देखकर उन्होंने हमें स्वीकृति दे दी। भगवान से कोई रिश्ता बना लें, फिर उनका स्मरण, ध्यान, पूजा करें बहुत जल्दी ही प्रेम का भाव आयेगा, आनंद की प्राप्ति होगी।

13. रामकथा की परंपरा

(दोहा 30)

भारत की अनुपम आध्यात्मिक संस्कृति की यह परंपरा है कि भगवान की कथा कहने वाला व्यक्ति यह कहता है कि यह ज्ञान हमने परंपरा से प्राप्त किया है। हमारे गुरु ने यह ज्ञान दिया जिसे आगे अन्य लोगों को बता रहे हैं। व्यक्ति यह नहीं कहता कि मैं अपने मन से कह रहा हूँ। तुलसीदास जी इसी भारतीय संस्कृति के परिपोषक हैं, इसकी रक्षा करने वाले व इसे आगे बढ़ाने वाले हैं। इस प्रसंग में यह कथा कहाँ से प्रारंभ हुई व तुलसीदास जी को अपने गुरु से कैसे प्राप्त हुई इसका वर्णन है।

14. रामकथा की महिमा का 18 प्रतीकों से वर्णन

(दोहा 31)

तुलसीदास जी की काव्य शैली बहुत ध्यान से समझने लायक है। इस दोहे में प्रसंग रामकथा महिमा का है। कथा शब्द स्त्रीलिंग है अत: कथा की महिमा

कहने के लिये सभी 18 उदाहरण स्त्रीलिंग में दिये हैं जैसे नाव, मोरनी, अरणि, कामधेनु, संजीवनी, अमृत की नदी, सर्पिणी, दुर्गा, लक्ष्मी, पृथ्वी, यमुना, काशी, तुलसी, हुलसी, नर्मदा, अदिति, मंदाकिनि और भक्ति।

15. श्री रामचरित्र की महिमा का वर्णन 24 प्रतीकों से

(दोहा 32)

प्रभु राम ने अवतार लेकर जो लीलायें की हैं वे ही रामचरित्र हैं, और इनका वर्णन रामकथा कहलाता है। इस प्रसंग में राम चरित्रों की महिमा है। रामचरित्र पुल्लिंग है अत: तुलसीदास जी इसकी तुलना 24 पुल्लिंग प्रतीकों से करते हैं, यही उनकी विशेष शैली है। राम नाम, रामकथा, रामचरित्र सब एक ही हैं, इन सबको इस प्रकार प्रस्तुत किया है ताकि ये हमारे मन में ठीक से बैठ जायें।

16. रामकथा की विचित्रता

(दोहा 33)

भगवान का नाम, उनके चरित्र, चरित्रों की कथा, ये सब कल्याण करने वाले और दिव्य हैं। इनकी महिमा कहने के बाद तुलसीदासजी कहते हैं हम जो कथा कहने जा रहे हैं वह बहुत विचित्र है। लोग कथा सुनकर आश्चर्य करेंगे, उन्हें जल्दी विश्वास ही नहीं होगा। इसी विचित्रता का वर्णन करते हुए उसका समाधान बताते हैं।

17. शुभ मुहूर्त, शुभ स्थान में रचना

(दोहा 34, 35)

भगवान राम के त्रेता युग में अयोध्या में अवतार के समय जो तिथि थी वही संवत् 1631 में रामनवमी का दिन था। बहुत शुभ मुहूर्त था। जैसे दोपहर में राम का अवतार हुआ उसी प्रकार दोपहर में अयोध्या में कथा लिखने का कार्य प्रारंभ किया। उस दिन मंगलवार था, जो हनुमान जी का दिन है। तुलसीदास जी को हनुमान जी सिद्ध थे, उन्हीं के कहने से, उनकी प्रेरणा से तुलसीदास जी ने यह रचना की। 2 वर्ष 7 माह तक निरंतर वे रचना करते रहे। सीता-राम विवाह के पावन दिन यह रचना कार्य पूर्ण हुआ। इस प्रसंग में अयोध्या में रचना का कारण, इस ग्रंथ का नाम रामचरितमानस क्यों रखा है, इन सब बातों का वर्णन है।

18. रामचरितमानस मानसरोवर के समान है

(दोहा 36 से 38)

इस कथा की रचना वैसे ही होती है जैसे सरोवर की होती है। इसे समझाने के लिये वे सांग रूपक अलंकार का प्रयोग करते हैं। इसमें प्रत्येक अंग की एक दूसरे के साथ तुलना की जाती है।

19. रामचरितमानस सरयू नदी के समान है

(दोहा 39 से 41)

सरयू नदी कैलाश पर्वत पर मानसरोवर नामक सर से निकली है। अत: इसका नाम सरयू है। पुराणों की कथा के अनुसार अयोध्या मे पहले नदी नहीं थी, वहाँ के राजा मनु ने ऐसा बाण छोड़ा जिसने मानसरोवर का एक किनारा काट दिया। पानी उधर से बह चला, आगे-आगे बाण पीछे-पीछे पानी चला। बाण अयोध्या में से होकर निकला और आगे जाकर गंगा जी में मिल गया। तुलसीदासजी के हृदय के मानसरोवर में राम की कथा उमड़ पड़ी, वही कविता बन गयी और उनके हृदय से निकल पड़ी। कथा का प्रवाह ही सरयू नदी के समान है। इस प्रसंग में सरयू की उपमा करते हुए रामचरितमानस का संक्षिप्त प्रस्तुतीकरण है।

20. श्रीराम कथा की तुलना 6 ऋतुओं से

(दोहा 42)

श्रीरामचरितमानस महाकाव्य है। महाकाव्य के बहुत से नियम हैं, जैसे इसमें सरोवर, नदी, पर्वत, समुद्र व ऋतुओं का वर्णन आवश्यक है। तुलसीदास जी ने इसलिये सभी का समावेश किया है। अब श्रीरामकथा की तुलना सभी ऋतुओं से करते हैं।

21. श्रीराम कथा की तुलना सरयू के जल से

(दोहा 43)

जल में चार गुण होते हैं स्वच्छता या निर्मलता, शीतलता, मधुरता व हल्कापन। श्रीराम कथा की तुलना जल के चारों गुणों से करते हैं।

बालकाण्ड – 1

श्रीरामचरितमानस एवं राम नाम की महिमा

1. संस्कृत में मंगलाचरण

(श्लोक 1 से 7)

श्रीरामचरितमानस का प्रारंभ तुलसीदास जी सरस्वती जी व गणेश जी की संस्कृत में वन्दना से करते हैं। स्वर, व्यंजन, शब्द, वाक्य, अर्थ, छन्द, रस इन सबकी देवी सरस्वती हैं। इन सबको समझने का जो ज्ञान है उसके देवता गणेश जी हैं। इनके स्मरण से पढ़ना प्रारंभ करें। इनकी कृपा से पढ़कर सब समझ में तो आयेगा पर उसका फल पाने के लिये श्रद्धा व विश्वास का होना अत्यंत आवश्यक है। इसलिये फिर श्रद्धा की देवी पार्वती जी व विश्वास के देवता शिव जी की वन्दना करते हैं। श्रीरामकथा को बार-बार सुनना, कहना व पढ़ना है इसलिये सबसे बड़े वक्ता आदिकवि वाल्मीकि व सबसे बड़े श्रोता हनुमान जी की वन्दना है। श्रीराम की महामाया शक्ति सीता जी की वंदना है जो हमें श्रेय मार्ग में ले चलें। अंत में श्रीराम की वंदना करते हैं जिनके कमल के समान चरणों का स्मरण ही दु:खों से छुटकारा पाने का एकमात्र उपाय है दूसरा नहीं। सातवें श्लोक में स्पष्ट कहते हैं कि श्रीरामचरितमानस समस्त वेदों, पुराणों, वाल्मीकि रामायण एवं शास्त्रों का सार है। यह ग्रंथ हिंदी भाषा में अत्यंत सरस प्रबंध महाकाव्य है जो अपने अंत:करण के सुख के लिये तुलसीदास जी ने लिखा है। यही भाव रखकर इसे पढ़ें, सुने व सुनायें।

वाणी की देवी सरस्वती व ज्ञान के देवता गणेश की वन्दना

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि ।
मंगलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥श्लोक 1॥

वर्णानामर्थसंघानां = अक्षरों व अर्थसमूहों, *रसानां* = रसों, *छन्दसामपि* = छन्दों, *मंगलानां* = मंगलों, *च कर्त्तारौ* = को करने वालों की, *वन्दे* = वन्दना करते हैं, *वाणी* = सरस्वती जी और, *विनायकौ* = गणेश जी।

अक्षरों, अर्थसमूहों, रसों, छन्दों और मंगलों को करने वाली सरस्वती जी और गणेश जी की मैं वन्दना करता हूँ। जो बोला जाये वह वाणी या सरस्वती जी हैं। वाणी में स्वर, व्यंजन, शब्द, वाक्य, अर्थ, छन्द, रस आदि सब आते हैं। इनको समझने का जो ज्ञान है, वही गणेश जी हैं। मंगलकारी भावनायें भी गणेश जी हैं। काव्य रचना बिना वर्ण, छन्द, रस के हो नहीं सकती, अत: मंगलकारी भावों को व्यक्त करने के लिये वाणी की देवी सरस्वती एवं भावों को समझने के लिये ज्ञान के देवता गणेश जी की सबसे पहले वन्दना की है। श्रीरामचरितमानस या अन्य आध्यात्मिक पुस्तक का पाठ करने के पहले सरस्वती जी व गणेश जी का स्मरण कर लें। इसी प्रकार विद्यार्थी भी अपने कोर्स की पुस्तक पढ़ने के पहले नियमित सरस्वती जी व गणेश जी का स्मरण करके, अपने अंदर होने वाले परिवर्तनों का स्वयं अनुभव कर सकते हैं।

श्रद्धा की देवी पार्वती, विश्वास के देवता शिव की वन्दना

भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धा: स्वान्त:स्थमीश्वरम् ॥श्लोक 2॥

भवानी = पार्वती जी, *शंकरौ* = शंकर जी, *वन्दे* = वन्दना करते हैं, *श्रद्धाविश्वासरूपिणौ* = जो श्रद्धा व विश्वास के रूप हैं, *याभ्यां विना* = जिनके बिना, *न पश्यन्ति* = नहीं देख सकते हैं, *सिद्धा:* = सिद्धजन भी, *स्वान्त:स्थमीश्वरम्* = अपने अंदर स्थित ईश्वर को।

श्रद्धा व विश्वास के स्वरूप शंकर जी और पार्वती जी की वन्दना करता हूँ। जिन दोनों के बिना, मायने श्रद्धा व विश्वास के बिना साधारण मनुष्य की तो दूर की बात है, जो लोग सिद्ध महापुरुष हैं वे भी अपने अंदर छिपे हुए भगवान को नहीं देख सकते हैं। इस ग्रंथ में जो लिखा है उसे पढ़ लिया, समझ लिया, पर उससे काम पूरा नहीं होने वाला है। इस पर श्रद्धा व विश्वास भी होना

चाहिये तभी वह मन के अंदर जायेगा, फल प्रदान करेगा। परमपूज्य स्वामी सत्यानंद जी श्रद्धा की महिमा रिखिया सत्संग में अपने अनुभव से बता रहे हैं। उसे समझने का प्रयास करें।

श्री स्वामी सत्यानंदजी के रिखिया सत्संग से

इक्कीसवीं शताब्दी श्रद्धा व विश्वास की होगी

बीसवीं शताब्दी सन्देह की शताब्दी रही है। विज्ञान ने मनुष्य के विश्वास को समाप्त कर दिया, जिसे धर्मों ने समझाया था, क्योंकि धर्म इन चीजों को सिद्ध नहीं कर सकता। लेकिन इक्कीसवीं शताब्दी श्रद्धा व विश्वास के पुनरुत्थान की शताब्दी होगी, क्योंकि मनुष्य के पास दूसरा कोई रास्ता नहीं है। अगर तुम कोई दिव्य अनुभव प्राप्त करना चाहते हो तो तुम्हारे भीतर श्रद्धा व विश्वास होना चाहिये।

श्रद्धा व विश्वास से पत्थर भी भगवान् बन गया

दिमाग से भगवान् का कोई रिश्ता नहीं, दिमाग से गुरु का कोई रिश्ता नहीं। जब मैंने गणेश जी, राम जी, काली जी, कृष्ण जी, शंकर जी को दिमाग से समझना चाहा, तो संशय ही पैदा हुआ। दिमाग से तो ये समझ में आते नहीं हैं। लेकिन जब दिमाग को हटाया और दिल को सामने रक्खा तो पत्थर भी भगवान् बन गया और उसके चारों तरफ ज्योति जगमगाने लगी। वह पत्थर का भगवान् बोलने लग गया। प्रेम में क्या ताकत है? प्रेम, भक्ति और श्रद्धा पहाड़ों को भी हिला सकती है। इसलिये अपने दिल पर, अपनी श्रद्धा, भक्ति पर विश्वास करो, दिमाग पर नहीं।

श्रद्धा में एकाग्रता की आवश्यकता नहीं है

दो रास्ते हैं एक है श्रद्धा का, दूसरा है एकाग्रता का। रामायण में लिखा है श्रद्धा का रास्ता अच्छा है, चित्त को एकाग्र करना अति दुर्गम है। चित्त को एकाग्र करने के चक्कर में मत पड़ना, प्रकृति ने वहाँ पर ताला लगा रखा है। इसलिये पूजा करो तो श्रद्धापूर्वक करो। श्रद्धा में एकाग्रता की आवश्यकता नहीं है। केवल पूजा पाठ करो, रामायण पढ़ो, अगरबत्ती जलाओ। जो भी तुम करते हो, नियमपूर्वक नियमित करो श्रद्धा के साथ।

तुलसी में श्रद्धा के कारण मैं स्वस्थ रहा

तुलसी माँ पर हमारी श्रद्धा है और उस श्रद्धा का हमको बराबर फल मिल रहा है। मेरी पंचाग्नि साधना तुलसी की कृपा से ही संभव हो पाई। मैंने तुलसी से विनय की थी कि मुझे स्वस्थ रखिये और उन्होंने पूरा किया है। मैं अपने पाँच वर्ष के पूरे अनुष्ठान में एक भी दिन बीमार नहीं हुआ। एक बुद्धिजीवी के लिये तुलसी एक पौधा है, ठीक है। परन्तु मेरे लिये तुलसी एक पौधा नहीं है, वे एक देवी हैं। तुलसी हमारी माँ हैं। हमारी इष्ट देवी हैं। मैं नियमित रूप से सुबह और शाम तुलसी की पूजा करता हूँ। पूजा में मुझे दस ही मिनट लगते हैं। तुलसी विवाह के दिन शालिग्राम से उनका विवाह करते हैं।

श्रद्धा व विश्वास के साथ ही तुम पैदा हुए हो

जब तुम पैदा हुए श्रद्धा और विश्वास दोनों तुम्हारे अंदर उसी दिन पैदा हुए। तुम सिद्ध कर सकते हो कि यह तुम्हारा बाप है? कहीं पता चला कि यह बाप है? तुम विश्वास के साथ पैदा हुए हो तो तुमने मान लिया कि यह तुम्हारा बाप है। तुमने कभी सोचा भी नहीं था कि मेरा बाप हो सकता है कि नहीं। कभी प्रश्न किया है क्या? श्रद्धा तो एकदम अजर है, अमर है, तुम्हारे साथ आई, तुम्हारे साथ जायेगी। वह शिव-पार्वती का रूप है।

गुरु रूप में शंकर जी की वन्दना

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपिणम् ।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ॥श्लोक 3॥

वन्दे = वन्दना करते हैं, *बोधमयं* = ज्ञान से उत्पन्न विश्वास से, *नित्यं* = साक्षात, *गुरुं शंकररूपिणम्* = शंकर जी के गुरु रूप को, *यमाश्रितो हि* = जिसका आश्रय पा करके, *वक्रोऽपि चन्द्रः* = टेढ़ा चन्द्रमा भी, *सर्वत्र वन्द्यते* = सब जगह पूजनीय बन गया।

ज्ञानमय, नित्य, शंकर रूपी गुरु की मैं वन्दना करता हूँ, जिनके आश्रित होने से टेढ़ा चन्द्रमा भी सर्वत्र वन्दित होता है। श्रद्धा के बल पर विश्वास उत्पन्न हुआ, इसी विश्वास के आधार पर हृदय में स्थित परमात्मा के दर्शन कर लिये

तो वह विश्वास ज्ञान स्वरूप हो गया। इस साक्षात् ज्ञान में स्थित रहने वाले व्यक्ति का विश्वास ही शंकर जी हैं। और वही गुरु भी हैं। वह वैसा ही ज्ञान दूसरे के हृदय में उत्पन्न करने में सक्षम हैं, इसलिये गुरु हैं। शंकर जी ने द्वितीया के चन्द्रमा को इसके टेढ़ेपन के बावजूद अपने सिर पर आश्रय प्रदान किया है, जिनसे शंकर जी के साथ-साथ उसकी भी लोग पूजा करते हैं। ठीक इसी प्रकार गुरु भी अपने शिष्यों में अनेक दोषों के बाद भी उन्हें अपने पास में रखते हैं, आश्रय देते हैं, उनमें श्रद्धा व भक्ति जाग्रत करके उन्हें सुधारते हैं। गुरु के सामीप्य के कारण वे शिष्य भी संसार में वन्दनीय बन जाते हैं।

रामकथा के श्रोता हनुमान व वक्ता वाल्मीकि की वन्दना

सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ ।
वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ॥श्लोक 4॥

सीताराम = श्रीराम व सीता जी, *गुणग्राम* = गुणों के समूह, *पुण्यारण्य* = पवित्र वन में, *विहारिणौ* = विचरण करने वाले, *वन्दे* = वन्दना करते हैं, *विशुद्ध-विज्ञानौ* = परमात्मा का साक्षात् ज्ञान रखने वाले, *कवीश्वर कपीश्वरौ* = कवि वाल्मीकजी और हनुमान जी की।

जिस प्रकार वन में असंख्य पेड़ पौधे रहते हैं, उसी प्रकार श्रीराम एवं सीता जी के गुणों के समूह भी असंख्य हैं। इन पवित्र गुणों के वन में वाल्मीकि जी व हनुमान जी सदा विचरण करते रहते हैं। वाल्मीकि जी हैं वक्ता, उनके जीवन का एक ही लक्ष्य था श्रीराम की गुणगाथा लिखने का, जब तक जीवन रहा वे लिखते ही रहे। हनुमान जी हैं श्रोता, जहाँ कहीं रामकथा होती है वे गुप्त अथवा प्रकट रूप में बैठे, मस्तक झुकाये, हाथ जोड़े, आनंद लेते हुए भाव सहित कथा सुनते हैं। इनकी वंदना करने से श्रीराम कथा को बार-बार सुनने, सुनाने, समझने व जीवन में उतारने की लगातार प्रेरणा मिलती रहेगी।

राम की महामाया शक्ति सीता जी की वन्दना

उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम् ।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम् ॥श्लोक 5॥

उद्भव = उत्पन्न करने वाली, *स्थिति* = पालन करने वाली, *संहारकारिणीं* = नष्ट करने वाली, *क्लेशहारिणीम्* = दुखों को दूर करने वाली, *सर्वश्रेयस्करीं* = सबका कल्याण करने वाली, *सीतां* = सीता जी, *नतोऽहं* = प्रणाम करता हूँ, *रामवल्लभाम्* = श्रीराम की प्रियतमा।

इस जगत् को उत्पन्न करने वाली, जगत् का पालन करने वाली एवं इसका संहार करने वाली, सबके दु:खों को दूर करने वाली, सबका कल्याण करने वाली, श्रीराम की प्रियतमा सीता जी को मैं प्रणाम करता हूँ। राम परब्रह्म परमेश्वर हैं। उनकी महामाया शक्ति सीता जी हैं। परब्रह्म जगत की रचना, पालन व संहार अपनी जिस माया शक्ति से करता है वे सीता जी हैं। हमारे दु:खों का मूल कारण अज्ञानता है। सीता जी विद्या माया हैं। इनके स्मरण से अज्ञान दूर हो जाता है। ये बुद्धि को प्रेरित करके श्रेय मार्ग यानि सही रास्ते पर चलने में हमारी सहायता करती हैं। सीता जी को राम अत्यंत प्रिय हैं, ये दोनों अभिन्न हैं।

परब्रह्म परमेश्वर राम की वन्दना

यन्मायावशवर्त्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा
यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रम:।
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम् ॥श्लोक 6॥

यन्मायावशवर्त्ति = जिस परमात्मा की माया के वश में, *विश्वमखिलं* = समस्त विश्व और, *ब्रह्मादिदेवासुरा* = ब्रह्मा आदि देवता व असुर हैं, *यत्सत्त्वादमृषैव* = जिस परमात्मा की सत्यता से ही यह जगत् असत्य होते हुए भी, *भाति सकलं* = सत्य के समान इस प्रकार से प्रतीत होता है, *रज्जौ यथाहेर्भ्रम:* = जैसे रस्सी में सर्प का भ्रम हो जाता है, *यत्पादप्लवमेकमेव हि* = जिस परमात्मा के चरण रूपी नाव ही, *भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां* = इस संसार सागर से पार जाने की एकमात्र नाव है, *वन्देऽहं* = हम वन्दना करते हैं उसी परमात्मा की, *तमशेषकारणपरं* = जो सभी कारणों का अंतिम कारण है, *रामाख्यमीशं* = उसी परमात्मा का नाम राम है, *हरिम्* = वह सब क्लेशों को दूर करने वाला है।

राम की माया सीता हैं जिसके वश में सारा जगत

पहले सीता जी की वन्दना की फिर राम की। श्रीराम परब्रह्म परमेश्वर हैं, उनके अधीन उनकी माया है, और उस माया के वश में सारा जगत है। जगत में ब्रह्मा यानि उच्च लोक, विश्व मायने मृत्यु लोक, असुर मायने पाताल लोक ये तीनों लोक आते हैं। ये सब माया के वश में हैं, माया ही समस्त सृष्टि को चला रही है। माया जैसा चाहे वैसा करना पड़ता है। जब परब्रह्म, माया से सृष्टि की रचना करता है तो ब्रह्मा कहलाता है, जब वह माया से पालन करता है तो विष्णु हो जाता है, वही जब माया से ही संहार करता है तो उसे महेश कहते हैं। जहाँ कहीं भी भेद है सब माया के कारण से। श्लोक 5 में बताया कि वह माया ही जगत को उत्पन्न करने वाली, पालन करने वाली व संहार करने वाली हैं। ये माया विद्या माया हैं।

जगत् मिथ्या होते हुए भी सत्य के समान प्रतीत होता है

कोई रस्सी पड़ी हो वह सर्प के समान दिखे तो हम उसे सर्प ही मानकर व्यवहार करते हैं। वह सर्प नहीं है पर रस्सी है, भ्रम के कारण सर्प प्रतीत होता है। उसी प्रकार यह संसार भी सत्य नहीं है, वह तो ब्रह्म ही है पर भ्रम के कारण से सत्य प्रतीत होता है। हम संसार के साथ सत्य जैसा ही व्यवहार करते हैं। जैसे सर्प में रस्सी है इसलिये वह सर्प लगती है, वैसे ही जगत में माया के साथ परमात्मा है इसलिये वह सत्य लगता है।

समस्याओं से निपटने का एकमात्र सहारा राम स्मरण

व्यक्ति जब पानी में डूबता है तो पानी उसके मुँह से, नाक से, कान से, अंदर जाता है वह फड़फड़ाता है, चिल्लाता है, उसी प्रकार हम सब भी इस संसार सागर में अज्ञान के कारण से चिल्लाते रहते हैं, तनाव में एवं अशांत रहते हैं। सोते, जागते तो परेशान रहते ही हैं, शरीर छोड़ने के बाद भी ये सब साथ चले जाते हैं। फिर नया जन्म फिर वही चक्कर। कहते हैं इन सबसे छुटकारा पाना है यानि आनंदमय जीवन, शांतिमय जीवन जीना है तो राम के चरण कमल पकड़ लो, उनकी शरण में जाओ, वही एकमात्र नाव हैं जो इन सब समस्याओं से पार लगा सकते हैं।

परमात्मा सब कारणों का कारण है, उसी का नाम राम है

तमशेषकारण मायने जितने भी कारण हैं, उनका कारण परमात्मा है, उसी का नाम राम है जो सब कष्टों का भी हरण करने वाला है। उसी राम की वन्दना

करते हैं। इस समस्त जगत का कारण माया है, क्योंकि जगत माया से ही उत्पन्न हुआ है। माया का कारण परमात्मा है, क्योंकि उस परमात्मा ने ही उसे बनाया है। पर परमात्मा को किसी ने नहीं बनाया वह कार्य कारण संबंध से परे है। सबका कारण परमात्मा है इसलिये वह सबमें विद्यमान भी है।

यह ग्रंथ हिंदी में वेद उपनिषद पुराण शास्त्रों का सार संग्रह है

नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद् रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि ।
स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथा भाषानिबन्धमतिमञ्जुलमातनोति ॥श्लोक 7॥

नानापुराण= अनेक पुराण, *निगमागमसम्मतं यद्*= वेद व तंत्र शास्त्र से सम्मत यह, *रामायणे निगदितं* = वाल्मीकि रामायण में वर्णित, *क्वचिदन्यतोऽपि* = व अन्य जगह से भी, *स्वान्तःसुखाय*= अपने आंतरिक सुख के लिये, *तुलसी रघुनाथगाथा*= तुलसीदास जी, श्रीराम के चरित्रों की कथा, *भाषानिबन्ध*= हिंदी भाषा में लिखते हैं, *मतिमञ्जुलमातनोति* = बहुत ही सुंदर सरस काव्य।

18 पुराण हैं, जैसे भागवत पुराण, गरुड़ पुराण, शिवपुराण, देवीपुराण आदि। 4 वेद हैं, ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद। वेद सबसे आदि ग्रंथ हैं। 6 शास्त्र हैं। वाल्मीकि रामायण है। इन सभी ग्रंथों में व अन्य जगह भी श्री राम की गुणगाथा संस्कृत में पहले से ही कही गयी है। तुलसीदास जी कहते हैं इन सब जगह वर्णित राम कथा को अपने अंतःकरण के सुख के लिये अत्यन्त मनोहर हिंदी में लिखते हैं। इन सभी का सार श्रीरामचरितमानस है। परंतु प्रस्तुत करने का ढंग तुलसीदास जी का अद्भुत है, अनुवाद मात्र नहीं किया है, बल्कि अपने भावों के साथ कथा को प्रस्तुत किया है। उन्हें अनुशासन व मर्यादा बहुत प्रिय है। उस समय संस्कृत को देववाणी, हिंदी को भाषा कहते थे। यह हिंदी का पहला प्रबंध महाकाव्य है और हिंदी में श्रीराम कथा का एकमात्र महाकाव्य है। यह बहुत ही सरस काव्य रचना है, इसे पढ़ते जाओ सब समझ में आता है और रस का संचार भी होता है। इसे पढ़ते समय यह भी स्मरण रखें कि हम एक महाकाव्य का पाठ कर रहे हैं।

दुनियाँ को सिखाने के बजाय अपने मन को सिखाओ

तुलसीदास जी ने यह महाकाव्य अपने आंतरिक सुख के लिये लिखा है। वे ये नहीं कह रहे हैं कि हम तुम्हारे लिये लिख रहे हैं। हम तो अपने लिये लिख रहे

हैं, अपने मन को सुना रहे हैं। हमें भी यह कथा दुनियाँ को सिखाने के बजाय अपने मन को सिखानी है, दुनियाँ को पढ़ाने के बजाय अपने मन को पढ़ाना है। दूसरों को उपदेश न देकर अपने मन को उपदेश देना है। अगर हमारा मन ठीक हो गया तो सारा जगत ठीक लगने लगेगा। यदि दुनियाँ खराब दिखाई दे रही है तो अपने कारण से, यदि अपने आपको ठीक रखोगे तो जगत भी ठीक दिखाई देगा। यदि अपने को जीत लिया तो जगत को जीत लिया।

2. पंचदेवों का स्मरण

(सोरठा 1 से 4)

'सदा भवानी दाहिने सम्मुख रहें गणेश पंचदेव रक्षा करें ब्रह्मा विष्णु महेश' इस प्रकार पाँच देवताओं का आवाहन करके कोई भी शुभ कार्य प्रारंभ करने की अपने यहाँ प्रथा है। तुलसीदास जी इसी का पालन करते हुए श्रीरामकथा लिखने के पहले गणेश जी, सूर्यदेव, विष्णुजी, शंकर जी व पार्वती देवी इन पंच देवताओं का आवाहन करते हैं। इन देवताओं के स्वरूप व गुण बताने के साथ इनसे क्या मांगना है यह भी बताते हैं। यह प्रार्थना अत्यंत सरल व प्रभावशाली है इसे याद कर लेना चाहिये। रामायण पाठ के पहले इसे अवश्य गाते हैं।

गणेश जी के स्मरण से कार्य पूरा होता है

जो सुमिरत सिधि होइ गननायक करिबर बदन ।
करउ अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि सुभ गुन सदन ॥सो 1॥

जो सुमिरत सिधि होइ = जिनका स्मरण करने से सब कार्य सिद्ध होते हैं, *गन नायक* = जो गणों के स्वामी हैं, *करिबर बदन* = जिनका सुंदर हाथी के समान मुख है, *करउ अनुग्रह सोइ* = वे मुझ पर अनुग्रह करें, *बुद्धि रासि सुभ गुन सदन* = आप ज्ञान के निधान व सद्‌गुणों के भंडार हैं।

कार्य प्रारंभ करने के पहले गणेश जी का स्मरण कर लेना चाहिये, क्योंकि इनके स्मरण मात्र से कार्य सिद्ध होता है। वे सद्‌गुण सदन हैं। मां पार्वती श्रद्धा स्वरूप हैं, पिता शंकर विश्वास रूप हैं, जब श्रद्धा व विश्वास आता है तो ज्ञान के देवता गणेश उत्पन्न होते हैं। इसीलिये गणेश शिव-पार्वती के पुत्र हैं।

सूर्यदेव के स्मरण से स्वास्थ्य व स्फूर्ति प्राप्त

मूक होइ बाचाल पंगु चढ़इ गिरिबर गहन ।
जासु कृपाँ सो दयाल द्रवउ सकल कलिमल दहन ॥सो 2॥

मूक होइ बाचाल = जो बोल न सके वह बोलने लगता है, *पंगु चढ़इ गिरिबर गहन* = जो चल नहीं सकता वह विशाल पर्वत चढ़ जाता है, *जासु कृपाँ* = जिनकी कृपा से, *सो दयाल द्रवउ* = ऐसे दयाल प्रभु द्रवित होकर, *सकल कलि मल दहन* = कलियुग के समस्त दोषों को दूर करें।

इस सोरठे में किस देवता की प्रार्थना है यह स्पष्ट नहीं है। लोगों का मानना है कि अन्यत्र गोस्वामी जी ने पंच देवों में सूर्य की भी प्रार्थना की है अत: यहाँ पर भी सूर्यदेव की ही प्रार्थना है। यह सोरठा हमें उत्साहित करता है, यदि हम दुर्बल हैं, मन कमजोर है, हम ठीक से बातचीत भी नहीं कर पाते तो सूर्यदेव का स्मरण करें वे हमारी सब कमियाँ दूर करेंगे। हमें आरोग्य व स्फूर्ति प्रदान करेंगे।

विष्णु जी हमारे हृदय में सदा वास करें

नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन बारिज नयन ।
करउ सो मम उर धाम सदा छीरसागर सयन ॥सो 3॥

नील सरोरुह स्याम = जो नीले कमल के समान श्यामवर्ण हैं, *तरुन अरुन बारिज नयन* = ताजे खिले हुए लाल कमल के समान जिनके नेत्र हैं, *करउ सो मम उर धाम* = वो मेरे हृदय में वास करें, *सदा छीरसागर सयन* = जो सदा क्षीर सागर में शयन करते हैं।

हमारे अंदर तीन तरह के गुण हैं; 1. सत्त्वगुण = सफेद रंग,
2. रजोगुण = लाल रंग और
3. तमोगुण = काला रंग।

भगवान् तो सबके हृदय मे हैं, सत्त्वगुणी भाव मायने क्षीरसागर होगा तो वे दिखाई देंगे, प्रगट होंगे। इस तरह भी समझ सकते हैं कि हे विष्णु जी आप हमारे हृदय में आयें, वास करें ताकि बुराइयाँ दूर हों व सत्त्वगुण की प्रधानता हो।

शंकर जी व पार्वती जी का स्मरण

कुंद इंदु सम देह उमा रमन करुना अयन ।
जाहि दीन पर नेह करउ कृपा मर्दन मयन ।।सो 4।।

कुंद इंदु सम देह = जिनका कुन्द के पुष्प व चन्द्रमा के समान शरीर है, *उमा रमन* = जो पार्वती जी के प्रियतम हैं, *करुना अयन* = जो दया के धाम हैं, *जाहि दीन पर नेह* = जिनको दीनों पर स्नेह है, *करउ कृपा* = वे मुझ पर कृपा करें, *मर्दन मयन* = जो कामदेव को नाश करने वाले हैं।

भगवान् शंकर का शरीर गौर वर्ण का है, कोमल है, दिव्य व प्रकाशमान है। उनके शरीर की उपमा के लिये कुंद के पुष्प से गौर वर्ण व कोमलता ले लिये व चन्द्रमा से दिव्यता व प्रकाश ले लिया। पार्वती की वंदना के लिये कहते हैं कि वे शंकर जी की प्रियतमा हैं। वे दीनों से बहुत स्नेह रखते हैं। शंकर जी की कृपा से व्यक्ति कामनाओं से छूटकर शांति, संतोष व आनंद प्राप्त कर सकता है।

3. श्रीगुरु की महिमा व वन्दना

(सोरठा 5, दोहा 1, दोहा 2 की 2 चौपाई)

श्रीगुरु परहंस सत्यानंद जी कहते हैं कि केवल अच्छे प्रवचन देने वाला शिक्षक है, सुंदर ग्रंथ लिखने वाला लेखक है, चीजों को अध्ययन कर उसके विषय को स्पष्ट रूप से उद्घाटित करने वाला दार्शनिक है ये सब गुरु नहीं हैं। परन्तु जो न अच्छा प्रवचन देने वाला हो, न अच्छा लेखक हो और न ही किसी विषय को स्पष्ट रूप से समझाने वाला हो, फिर भी यदि उसने अपनी आत्मा पर विचार कर लिया हो और गहन अंधकार में टार्च की तरह प्रकाश दे सकता हो, वही गुरु है। ऐसे ही श्रीगुरु की महिमा व वन्दना तुलसीदास जी ने की है। कहते हैं गुरु का शरीर तो देखने में मनुष्य जैसा है पर वे हैं ईश्वर ही। श्रीगुरु के मिलने व उनकी नजदीकी से व्यक्ति में कैसे और क्या परिवर्तन आता है उसका वर्णन इस प्रसंग में किया गया है।

गुरु को मनुष्य रूप में ईश्वर मानकर चरणों की वन्दना

बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि ।
महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर ।।सो 5।।

बंदउँ गुरु पद कंज = कमल के समान गुरु के चरणों की वन्दना करते हैं, *कृपा सिंधु* = जो कृपा के सागर हैं, *नररूप हरि* = जो मनुष्य रूप में भगवान् हैं, *महामोह तम पुंज* = मोह रूपी अन्धकार के भंडार को, *जासु बचन रबि कर निकर* = जिनके वचन सूर्य की किरणों के समान मिटा देते हैं।

हे मेरे गुरु! आप कृपा के सागर हैं, आप की कृपा सदैव मुझ पर बनी रहे। आप तो मनुष्य के शरीर में मेरे प्रभु राम ही हैं। मेरा हृदय मोह रूपी अन्धकार के भंडार से भरा हुआ है। आपके वचन ही सूर्य की किरणों के समान इस अन्धकार को दूर कर सकते हैं। मैं आपके चरण कमलों की वन्दना करता हूँ। जैसे अन्धकार अपने आप दूर नहीं होता, उसे दूर करने के लिये सूर्य का प्रकाश चाहिये उसी प्रकार मोह अपने आप दूर नहीं होता, मोह से छूटने के लिये गुरु के ज्ञान का प्रकाश चाहिये।

गुरु के चरणों की धूलि से शिष्य के चित्त की शुद्धि

बंदउँ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा ॥1:1॥
अमिअ मूरिमय चूरन चारू। समन सकल भव रुज परिवारू ॥1:2॥
सुकृति संभु तन बिमल बिभूती। मंजुल मंगल मोद प्रसूती ॥1:3॥
जन मन मंजु मुकुर मल हरनी। किएँ तिलक गुन गन बस करनी ॥1:4॥

बंदउँ गुरु पद = मैं श्रीगुरु के चरण की धूलि की वंदना करता हूँ, *पदुम परागा* = जो कमल के फूल के मकरंद के समान, *सुरुचि सुबास सरस अनुरागा* = सुंदर, सुगंधित तथा अनुराग के रस से परिपूर्ण है, *अमिअ मूरिमय चूरन चारू* = संजीवनी जड़ी के चूर्ण को चाटने के समान, *समन सकल भव रुज परिवारू* = वह भव रोगों को परिवार सहित समाप्त कर देती है।
सुकृति संभु तन = पुण्यवान पुरुष के समान शंकर जी के शरीर पर, *बिमल बिभूती* = वह लपटी हुई निर्मल भभूत है, *मंजुल मंगल मोद प्रसूती* = जो सुंदर कल्याण व आनंद देने वाली है, *जन मन मंजु मुकुर* = भक्त के सुंदर दर्पण के समान मन के, *मल हरनी* = मैल को दूर करती है, *किएँ तिलक गुन गन बस करनी* = उसके तिलक लगाने से सारे गुण अपने वश में आ जाते हैं।

जैसे कमल का पराग सुरुचिपूर्ण सुगंधित होता है वैसे ही गुरु का स्वभाव, उनका उठना बैठना, लोगों के साथ व्यवहार अत्यंत आकर्षक, मधुर व प्रिय रहता है। उनके निकट जाकर व्यक्ति को शांति मिलती है। उसको एक अपनापन प्राप्त होता है। इसे ही कहा कि सुरुचि व सुबास युक्त। गुरु का प्रेम सबके प्रति रहता है इसी प्रेम को अनुराग कहते हैं। गुरु के चरण धूलि से शिष्य के चित्त की शुद्धि चार तरह के परिवर्तनों से होती है, तुलसीदास जी क्रम से वर्णन करते हैं।

1. मानसिक रोगों की परिवार सहित समाप्ति

श्री गुरुदेव के चरणों की धूलि संजीवनी जड़ी के समान काम करती है। जैसे शरीर में वात, कफ व पित्त से तरह-तरह के रोग होते हैं वैसे ही काम, क्रोध, लोभ से बहुत से मानसिक रोग होते हैं, उनका पूरा परिवार है। गुरु के निकट रहने से, उनकी नजदीकी से, उनकी शिक्षाओं को जीवन में उतारने से व्यक्ति के समस्त मानसिक रोग परिवार सहित समाप्त हो जाते हैं।

2. वैराग्य उत्पन्न कर आंतरिक सुख की प्राप्ति

भगवान् शंकर के शरीर में शमशान की भभूति लपटी रहती है जो वैराग्य का प्रतीक होने से परम कल्याणकारी है वैसे ही गुरु चरणों की धूलि पुण्यवान् मनुष्यों में वैराग्य उत्पन्न कर उनका कल्याण कर आंतरिक सुख प्रदान करती है। वैराग्य से आशय घर-परिवार त्याग नहीं है बल्कि एक संतोष का भाव है।

3. मन दर्पण की सफाई

यदि साफ राख दर्पण में रगड़ दो तो वह चमचमा जाता है, प्रतिबिम्ब एकदम साफ दिखता है। उसी प्रकार गुरु चरणों की सुंदर धूल शिष्यों के हृदय की मलिनता को साफ कर देती है। अर्थात् गुरु सेवा से, उनकी कृपा से तमोगुण व रजोगुण दूर हो जाता है, सत्त्व गुण की प्रधानता हो जाती है।

4. सद्गुणों का आना

जैसे राजतिलक होने पर सारा राज्य राजा के अधीन हो जाता है उसी प्रकार गुरु ने कृपा करके यदि अपने चरणों की धूलि से शिष्य के माथे पर तिलक लगा दिया तो शिष्य के वश में सारे गुण आ जाते हैं, मायने अब उसमें दुर्गुण नहीं आयेंगे।

श्रीगुरु के चरण नख के प्रकाश से राम चरित्रों के दर्शन

चरणों की धूलि से यानि उनकी कृपा से, उनकी नजदीकी से शिष्य का सुधार हो गया, उसके चित्त की शुद्धि हो गयी। इस अवस्था को प्राप्त करने के बाद शिष्य आगे का ज्ञान पाने का अधिकारी बन गया। शिष्य के आगे का विकास अब श्रीगुरु के चरण नख के प्रकाश से होगा। अगली चार चौपाइयों में इसका वर्णन है।

श्रीगुर पद नख मनि गन जोती। सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती ॥1:5॥
दलन मोह तम सो सप्रकासू। बड़े भाग उर आवइ जासू ॥1:6॥
उघरहिं बिमल बिलोचन ही के। मिटहिं दोष दुख भव रजनी के ॥1:7॥
सूझहिं राम चरित मनि मानिक। गुपुत प्रगट जहँ जो जेहि खानिक ॥1:8॥

श्रीगुर पद नख = श्रीगुरु के चरणों के नाखून, *मनि गन जोती* = मणियों के प्रकाश के समान है, *सुमिरत* = जिसके स्मरण से ही, *दिब्य दृष्टि हियँ होती* = हृदय में दिव्य दृष्टि उत्पन्न होती है, *दलन मोह तम सो सप्रकासू* = वह प्रकाश अज्ञान रूपी अंधकार को मिटा देता है, *बड़े भाग* = उसके बड़े भाग्य, *उर आवइ जासू* = जिसके अंदर यह प्रकाश आता है, *उघरहिं बिमल बिलोचन ही के* = हृदय के निर्मल नेत्र खुल जाते हैं, *मिटहिं दोष दुख भव* = इस संसार के दोष व दु:ख दूर हो जाते हैं, *रजनी के* = रात्रि के समान, *सूझहिं राम चरित* = राम के वे चरित्र दिखाई देने लगते हैं, *मनि मानिक गुपुत प्रगट* = जो मणि और माणिक्य के समान गुप्त या प्रकट, *जहँ जो जेहि खानिक* = जहाँ जिस खदान में छिपे हैं।

हृदय में नेत्र तो सबके हैं परंतु वे बंद हैं। जब इस दुनिया में आये तो बंद थे और बंद ही बंद चले जायेंगे। श्रीगुरु के चरण नखों की ज्योति मणियों के प्रकाश के समान है, जिसके स्मरण से ही हृदय के नेत्र खुलते हैं, दिव्य दृष्टि प्राप्त हो जाती है। इन ज्ञान के नेत्रों के खुलने से जगत, ईश्वर व जीव इत्यादि के रहस्य स्पष्ट होने लगते हैं। ज्ञान तत्त्व समझ में आने लगता है। यह समझ में आता है कि जितनी बातें शास्त्रों में लिखी हैं वे कल्पना नहीं हैं, मनगढ़ंत बाते नहीं हैं, ये सब देखे हुए सत्य हैं। जिस प्रकार मणि व माणिक्य प्रकाशित तो रहते हैं पर इनका प्रकाश तरह-तरह की खदानों में छिपा रहता है, इसी प्रकार श्रीराम के गुप्त व प्रगट चरित्रों का प्रकाश हमारे हृदय में ही छिपा हुआ है। श्री गुरु कृपा से यह प्रकाश हमें दिखाई देने लगता है। शिष्य

को यह स्पष्ट हो जाता है कि निर्गुण ब्रह्म ही सगुण रूप धारण करके नाना प्रकार के चरित्र करता है। इन चरित्रों के रहस्य भी ज्ञात होने लगते हैं।

चरण धूलि के अंजन से रहस्यों का दिखना

जथा सुअंजन अंजि दृग साधक सिद्ध सुजान ।
कौतुक देखत सैल बन भूतल भूरि निधान ॥दोहा 1॥

जथा सुअंजन = जैसे विशेष प्रकार का काजल, *अंजि दृग* = आँख में लगाने से, *साधक सिद्ध सुजान* = साधना करने वाले, सिद्ध व जानकार व्यक्ति, *कौतुक देखत* = आसानी से देख लेते हैं, *सैल बन भूतल* = पर्वत पर, जंगल में या जमीन में, *भूरि निधान* = दबा हुआ खजाना।

तुलसीदास जी एक कहावत द्वारा समझाते हैं कि जैसे आँखों में एक विशेष प्रकार का अंजन लगा लेने से पर्वत पर, जंगल में या पृथ्वी में छिपा हुआ धन बड़ी आसानी से दिखाई देने लगता है, उसी प्रकार साधक, सिद्ध व सुजान यदि गुरु के चरणों की रज से बने काजल को अपने नेत्रों में लगावें तो उनके नेत्रों के दोष दूर होकर उन्हें श्रीराम के रहस्य स्पष्ट दिखाई देने लगते हैं।

गुरु चरण धूलि के अंजन से नेत्र दोष दूर होते हैं।

गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन। नयन अमिअ दृग दोष बिभंजन ॥2:1॥

गुरु पद रज = श्री गुरु के चरणों की धूलि, *मृदु मंजुल अंजन* = कोमल व सुंदर अंजन है, *नयन अमिअ* = जो आँखों के लिय अमृत के समान है, *दृग दोष बिभंजन* = आँखों के समस्त दोषों को दूर करता है।

हमारे नेत्र इतने दोषपूर्ण हैं कि परमार्थ, ब्रह्म, ईश्वर की तो छोड़िये यह जगत ही हमें ठीक से दिखाई नहीं देता है। अपनी बुद्धि, भावनाओं, विचारों से दूषित करके हम जगत को देखते हैं। हम गुरु के पास जायें, उनकी बातों को सुनें, उसको जीवन में अपनायें, उनके प्रति समर्पण का भाव रखें, उनकी दी हुई साधना का पालन करें, इन्हीं सब से नेत्रों के रोग दूर होंगे फिर सब ठीक दिखने लगेगा।

गुरु चरण धूलि का अंजन लगाकर रामचरित्रों का वर्णन

तेहिं करि बिमल बिबेक बिलोचन। बरनउँ राम चरित भव मोचन ॥2:2॥

तेहिं = उसी चरण धूलि से बने अंजन, *करि बिमल बिबेक बिलोचन* = विवेक रूपी निर्मल आँख में लगाकर, *बरनउँ* = वर्णन करता हूँ, *राम चरित* = श्रीराम के चरित्रों का, *भव मोचन* = जो संसार रूपी बन्धन को छुड़ाने वाले हैं।

तुलसीदास जी कहते हैं मैं गुरु के चरणों की धूलि से बने अंजन को अपने विवेक रूपी नेत्रों में लगाकर उन्हें निर्मल करके फिर श्रीरामचरित्र का वर्णन करता हूँ। ये रामचरित्र संसार रूपी बंधन से छुड़ाने वाला है। अंजन को आँखों में लगाने के पीछे स्थूल नहीं सूक्ष्म भाव है। गुरु के अनुशासन में रहकर उनके कहे अनुसार जीवन जियें। गुरु की बतायी हुइ साधना करें। धीरे-धीरे हृदय के वैराग्य व विवेक रूपी दोनों नेत्र खुलते हैं।

रामकथा के बीज गुरु ने ही तुलसीदास के अंदर बोये

तुलसीदास जी के गुरु नरहरिदास जी थे। उन्होंने श्रीरामकथा तुलसीदास जी को अनेक बार सुनायी। बीज गुरु ने ही रोपे। फिर उन्हें राम हृदय में दिखे। सारे रामचरित्रों को उन्होंने अपने हृदय में साक्षात् दर्शन किया। उन सबके मनन, चिंतन, दर्शन के बाद श्रीरामचरितमानस लिखी।

श्री स्वामी सत्यानंदजी के रिखिया सत्संग से

गुरु मंत्र व गुरु की आवश्यकता क्यों?

मंत्र तो ईश्वरीय शक्ति है। मंत्रशक्ति से असंभव को संभव किया जा सकता है। ईश्वर तो है मगर किसी ने देखा नहीं। जिसने देखा सो देखा, मगर तुमने तो नहीं देखा। मंत्र ईश्वर की प्रत्यक्ष शक्ति है। मंत्र रूपी इस ईश्वरीय शक्ति की साधना प्रत्येक व्यक्ति को निश्चित रूप से करनी चाहिये। प्रत्येक मंत्र का एक रूप, एक रंग, एक देवता और एक प्रयोजन होता है। इस साधना का सबसे बड़ा नियम यह है कि यह साधना अपनी मर्जी से नहीं करनी चाहिये। इसलिये जीवन में गुरु की आवश्यकता पड़ती है। साधना के क्षेत्र में ज्ञानी गुरु की नहीं, समर्थ गुरु की आवश्यकता है। समर्थ का मतलब है जो इस विद्या का ज्ञाता हो।

उत्तम गुरु बनने के लिये केवल ज्ञान ही पर्याप्त नहीं, उसमें अटूट साहस, प्रबल आत्मबल और अपार सामर्थ्य की आवश्यकता होती है। यदि आप गुरु से प्राप्त मंत्र का जप करते जाओगे तो आपकी भावनाओं में अपने आप परिवर्तन होगा।

मंत्र गुरु और शिष्य के बीच की कड़ी है जो अदृश्य रूप से दोनों के आध्यात्मिक संबन्ध को बनाये रखती है। जिस प्रकार लौकिक जीवन में पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री, भाई-बहन आदि के संबन्ध आवश्यक हैं उसी प्रकार आध्यात्मिक जीवन में भी गुरु-शिष्य संबन्ध परमावश्यक है।



4. सत्संग करें कुसंग से बचे

(दोहा 2 से 7)

पूज्य गुरुदेव स्वामी सत्यानंदजी रिखिया सत्संग में कहते हैं कि अच्छे लोगों की संगति सत्संग है। बुरे लोगों की संगति कुसंग है। अगर तुम बुरे लोगों की संगति में रहोगे तो तुम्हारे मन का नाश होगा, तुम्हारे परिवार का नाश होगा, तुम्हारी संपन्नता भी नष्ट हो जायेगी, हो सकता है कि तुम्हारे संपूर्ण राष्ट्र का भी नाश हो जाए। जहाँ लोगों ने बुरे सुझावों पर ध्यान दिया है, जहाँ नकारात्मक प्रस्तावों मे रुचि दिखाई गई है, वहाँ विनाश ही हुआ है। तुम्हारे व्यक्तिगत जीवन में, अभी से तुम सोचो कि जिन लोगों से तुम्हारा सम्पर्क होता है क्या वे लोग सकारात्मक बुद्धि के हैं? क्या वे अहितकर हैं? क्या वे दुष्ट हैं? निर्णय पूरा का पूरा तुम्हारा होना है और फिर उस निर्णय पर तुम्हारा भाग्य निर्भर है।

तुलसीदासजी इस प्रसंग में अच्छे लोगों व दुष्टों की वन्दना करते हुए उनके लक्षण बताते हैं, कि अपने आप की तुलना इन लक्षणों से करके देखो कि कहीं हमारे अंदर भी खलों जैसी मनोदशा तो नहीं है। यदि है तो तुरन्त सुधरने का प्रयास करें।

पृथ्वी के देवता की वन्दना जो संशय दूर करते हैं

बंदउँ प्रथम महीसुर चरना। मोह जनित संसय सब हरना ॥2:3॥

बंदउँ प्रथम = पहले मैं वन्दना करता हूँ, *महीसुर चरना* = पृथ्वी (मही) के देवता (सुर) के चरणों की, *मोह जनित* = अज्ञान से उत्पन्न, *संसय सब हरना* = सारे संदेह को ये दूर करते हैं।

पृथ्वी के देवता वे हैं जो पहले शास्त्र का अध्ययन करें, उनको ठीक से समझें, वे स्वयं संशय निवृत्त हों, तब वे दूसरों के मोह व संशय को दूर करें। इस अवस्था को प्राप्त व्यक्ति ही पृथ्वी का देवता है। उनकी सबसे पहले वंदना करते हैं।

अच्छे लोगों की वन्दना जो कपास के समान हैं

सुजन समाज सकल गुन खानी। करउँ प्रनाम सप्रेम सुबानी ॥2:4॥
साधु चरित सुभ चरित कपासू। निरस बिसद गुनमय फल जासू ॥2:5॥
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा। बंदनीय जेहिं जग जस पावा ॥2:6॥

सुजन समाज = अच्छे लोग, *सकल गुन खानी* = जो सब तरह के अच्छे गुणों से भरपूर हैं, *करउँ प्रनाम सप्रेम सुबानी* = उन्हें प्रणाम करता हूँ प्रेम पूर्वक मधुर वाणी से, *साधु चरित* = सज्जन लोगों का चरित्र, *सुभ चरित कपासू* = सुंदर कपास के जैसा है, *निरस* = जिसका फल रसहीन, *बिसद गुनमय फल जासू* = विशाल व गुणों से भरपूर रहता है, *जो सहि दुख* = जो कष्टों को सहकर, *परछिद्र दुरावा* = दूसरों के दोषों को ढकते हैं, *बंदनीय जेहिं जग जस पावा* = इसी कारण से संसार में यश पाते हैं व वन्दनीय हैं।

जैसे कपास के फल में रस नहीं होता, वैसे ही साधु को इन्द्रिय भोगो में रस नहीं रहता, वे वैराग्य प्रधान होते हैं। जैसे कपास में सफेद रेशे ही रेशे होते हैं वैसे ही साधु सद्गुणों का भंडार होते हैं। कपास को धुनकर रूई निकालते हैं, रूई को कातकर धागा बनाते हैं, धागों को बिनकर कपड़ा बनता है। अब दर्जी कपड़े को काटकर पहनने योग्य बनाता है। सिले हुए कपड़े को पहनकर व्यक्ति अपने शरीर के दोषों, छिद्रों को ढकते हैं। इसके लिये कपास ने कितना कष्ट सहा? वैसे ही सज्जन भी स्वयं कष्ट सहकर, खराब व्यक्तियों को सुधारते हैं व दूसरों की बुराई नहीं कर उनके दोषों को ढकते हैं। जब हम दूसरों की बुराई करते हैं तो वह सबसे पहले हमारे मन में जाकर अपने गंदे पाँव के दाग वहाँ छोड़ देती है। मन हमारा दूषित होने लगता है।

सत्संग में भक्ति, ज्ञान व कर्म की कथा प्रयाग की त्रिवेणी है

मुद मंगलमय संत समाजू। जो जग जंगम तीरथराजू ॥2:7॥
राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा। सरसइ ब्रह्म बिचार प्रचारा ॥2:8॥

बिधि निषेधमय कलिमल हरनी। करम कथा रबिनंदनि बरनी ॥2:9॥
हरि हर कथा बिराजति बेनी। सुनत सकल मुद मंगल देनी ॥2:10॥
बटु बिस्वास अचल निज धरमा। तीरथराज समाज सुकरमा ॥2:11॥

मुद मंगलमय संत समाजू = प्रसन्नता व कल्याण प्रदान करने वाला भले लोग का सत्संग, *जो जग जंगम तीरथराजू* = जो जीवंत चलता फिरता तीर्थ राज प्रयाग है, *राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा* = राम की भक्ति की चर्चा वहाँ गंगा नदी का प्रवाह है, *सरसइ ब्रह्म बिचार प्रचारा* = सरस्वती नदी ब्रह्म ज्ञान की चर्चा हैं, *बिधि निषेधमय कलिमल हरनी* = कलियुग के दोष दूर करने वाली, *करम कथा* = करने योग्य व न करने योग्य कर्म की चर्चा, *रबिनंदनि बरनी* = सूर्य की पुत्री यमुनाजी के समान हैं, *हरि हर कथा* = राम शिव की कथा, *बिराजति बेनी* = त्रिवेणी के समान शोभायमान है, *सुनत सकल मुद मंगल देनी* = जो सुनने से समस्त आनंद कल्याण प्रदान करने वाली है, *बटु* = अक्षयवट का वृक्ष, *बिस्वास अचल निज धरमा* = स्वधर्म में अचल विश्वास है, *तीरथराज समाज सुकरमा* = सत्संग रूपी तीर्थ में शुभ कर्म ही उसका समाज है।

प्रयागराज जड़ तीर्थ है पर सत्संग चलता-फिरता तीर्थ है। आप अपने गाँव में रहो, आपको कहीं जाना नहीं पड़ेगा, सत्संग करने वाले आपके पास ही आ जायेंगे। प्रयागराज में तीन नदियाँ हैं– गंगा, यमुना व सरस्वती। इनके संगम को त्रिवेणी कहते हैं। सत्संग में श्रीराम की भक्ति की बातें गंगा नदी हैं। जैसे गंगा स्नान से पाप धुलते हैं, उसी प्रकार रामचरित्र सुनने से मन के पाप धुलते हैं। सत्संग में ब्रह्म ज्ञान की बातें जैसे परमात्मा क्या है, उसके लक्षण क्या हैं आदि की जो चर्चा होती है वह सरस्वती नदी की तरह है। जैसे सरस्वती नदी दिखाई नहीं देती है वैसे ही ब्रह्म ज्ञान की बातें दिखाई नहीं देती हैं। यह कर्म करो, यह कर्म वर्जित है इसे मत करो इस प्रकार की कर्मकांड की चर्चा सूर्य की पुत्री यमुना नदी है। सत्संग में ज्ञान, भक्ति व कर्म तीनों का संगम ही त्रिवेणी है। इसके सुनने से मन प्रसन्न होता है। प्रयाग में एक अक्षयवट का वृक्ष है जो सदा बना रहता है, इसका कभी विनाश नहीं होता है। सत्संग में इस बात की चर्चा होती है कि व्यक्ति को सदैव अपने स्वधर्म में विश्वास रखना चाहिये। शुभ कर्म ही उसका परिवार है।

सत्संग हमेशा उपलब्ध, इसका फल इसी शरीर में प्राप्त

सबहि सुलभ सब दिन सब देसा। सेवत सादर समन कलेसा ॥2:12॥
अकथ अलौकिक तीरथराऊ। देइ सद्य फल प्रगट प्रभाऊ ॥2:13॥

सुनि समुझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग ।
लहहिं चारि फल अछत तनु साधु समाज प्रयाग ॥दोहा 2॥

सबहिं सुलभ = सब को आसानी से, *सब दिन सब देसा* = सब समय सब जगह उपलब्ध है, *सेवत सादर समन कलेसा* = इसकी सम्मानपूर्वक सेवा करने से सभी कष्ट दूर होते हैं, *अकथ अलौकिक तीरथराऊ* = सत्संग के तीर्थ की महिमा का वर्णन नहीं कर सकते यह अलौकिक है, *देइ सद्य फल* = इससे तुरन्त लाभ मिलता है, *प्रगट प्रभाऊ* = इसका प्रभाव प्रत्यक्ष है।
सुनि समुझहिं जन मुदित मन = जो लोग इसे प्रसन्नता से सुनते व समझते हैं, *मज्जहिं अति अनुराग* = अत्यंत प्रेमपूर्वक इसमें गोते लगाते हैं, *लहहिं चारि फल* = वे लोग चारों फल प्राप्त कर लेते हैं, *अछत तनु* = इसी शरीर में, *साधु समाज प्रयाग* = सत्संग के प्रयाग में।

सत्संग रूपी तीर्थ सबको, आसानी से, हमेशा, सब जगह उपलब्ध है। जो मनुष्य सत्संग में भगवान् की कथा को प्रसन्न मन से सुनते हैं, समझते हैं और प्रेमपूर्वक इसमें गोते लगाते हैं, वे इसी शरीर के रहते ही धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों फल पा जाते हैं।

सत्संग से जीवन में तुरंत परिवर्तन

मज्जन फल पेखिअ ततकाला। काक होहिं पिक बकउ मराला ॥3:1॥
सुनि आचरज करै जनि कोई। सतसंगति महिमा नहिं गोई ॥3:2॥
बालमीक नारद घटजोनी। निज निज मुखनि कही निज होनी ॥3:3॥

मज्जन फल = सत्संग के तीर्थ में स्नान का फल, *पेखिअ ततकाला* = तुरंत दिखता है, *काक होहिं पिक* = कौआ कोयल बन जाता है, *बकउ मराला* = बगुला हंस बन जाता है, *सुनि आचरज करै जन कोई* = सुनकर कोई आश्चर्य न करे, *सतसंगति महिमा नहिं गोई* = सत्संग का महत्त्व किसी से छिपा नहीं है,

बालमीकि नारद घटजोनी = वाल्मीकि; नारद व अगस्त्य ऋषि ने, *निज निज मुखनि* = स्वयं अपने मुख से, *कही निज होनी* = अपने जीवन की कथा कही है।

सत्संग के प्रयाग में स्नान का फल तत्काल मिलता है। कर्कश आवाज करने वाला कौआ कोयल के समान मीठी आवाज बोलने लगता है। कीड़े-मकोड़े खाने वाला बगुला हंस के समान सात्त्विक व विवेकवान् हो जाता है। वाल्मीकि जी पहले बिल्कुल अशिक्षित, चोरी डकैती मारपीट करने वाले व्यक्ति थे। सप्तऋषि के सत्संग से उन्होंने राम राम को उल्टा करके जपा और इतना परिवर्तन आया कि वे महान् कवि बनकर संस्कृत में रामायण लिख दिये। नारद जी भी सत्संग के प्रभाव से नाम जप करके महान् भक्त बन गये। अगस्त्य ऋषि नीच योनि में जन्मे पर भक्ति व तपस्या से ऋषि बने।

सभी जीवों ने सत्संग से ही सब पाया है

जलचर थलचर नभचर नाना। जे जड़ चेतन जीव जहाना ॥3:4॥
मति कीरति गति भूति भलाई। जब जेहिं जतन जहाँ जेहिं पाई ॥3:5॥
सो जानब सतसंग प्रभाऊ। लोकहुँ बेद न आन उपाऊ ॥3:6॥

जलचर थलचर नभचर नाना = जल में रहने वाले, जमीन पर चलने वाले और आकाश में विचरने वाले नाना प्रकार के, *जे जड़ चेतन जीव जहाना* = सजीव व निर्जीव जितने प्रकार के जीव इस संसार में हैं, *मति कीरति गति भूति भलाई* = सद्बुद्धि; कीर्ति; सद्गति; विभूति; अच्छाइयाँ, *जब जेहिं जतन जहाँ जेहिं पाई* = जिस समय; जिस यत्न से; जिस स्थान पर; जिसने पाई, *सो जानब सतसंग प्रभाऊ* = उसे सत्संग का ही प्रभाव समझना चाहिये, *लोकहुँ बेद न आन उपाऊ* = वेदों व लोक व्यवहार में इनकी प्राप्ति का दूसरा उपाय नहीं है।

सजीव या निर्जीव, जितने भी प्रकार के प्राणी इस संसार में हैं, चाहे वे जल में रहने वाले हों या जमीन पर चलने वाले या आकाश में विचरण करने वाले, उन्होंने जो भी सद्बुद्धि, यश, कीर्ति, जब, जहाँ, जैसे भी पाया है, वह अच्छे लोगों के साथ के कारण ही पाया है। वेदों के अनुसार व लोक व्यवहार में भी ऐसा ही माना जाता है। स्वामी सत्यानन्द जी कहते हैं कि मैंने जवीन में जो भी सफलता पाई उसका एकमात्र कारण है कि मुझे स्वामी शिवानन्द जी का सत्संग प्राप्त हुआ।

सत्संग राम कृपा से ही मिलता है

बिनु सतसंग बिबेक न होई। राम कृपा बिनु सुलभ न सोई ॥3:7॥

बिनु सतसंग = बिना सतसंग के, *बिबेक* = अच्छे बुरे का ज्ञान, *न होई* = नहीं होता है, *राम कृपा बिनु* = श्रीराम की कृपा के बिना, *सुलभ न सोई* = वह आसानी से नहीं होता है।

अच्छे लोगों का साथ कैसे मिले? राम की कृपा चाहिये। जीवन में कुछ-न-कुछ तो अच्छे कर्म होने चाहिये, जिससे भगवान की कृपा प्राप्त हो। उसी से सत्संग प्राप्त होता है। सत्संग से आशय है, अच्छे लोगों की संगति, उनके साथ उठना, बैठना, व्यवहार करना, उनकी बातों को सुनना। इससे धीरे-धीरे यह ज्ञान होने लगता है कि क्या अच्छा है, क्या बुरा है। अच्छी बातों को अपनाने से जीवन में प्रगति होती है।

साधनायें फूल, सत्संग उसका फल

सतसंगत मुद मंगल मूला। सोइ फल सिधि सब साधन फूला ॥3:8॥

सतसंगत = अच्छे लोगों का साथ, *मुद मंगल मूला* = आनंद व कल्याण का स्रोत है, *सोइ फल सिधि* = यही फल की प्राप्ति है, *सब साधन फूला* = सब तरह की साधनायें फूल हैं।

सभी तरह की साधनायें जैसे जप, अनुष्ठान, पूजा, तीर्थयात्रा आदि वृक्ष में लगने वाले फूलों के समान हैं, जैसे फूल, फल में बदल जाते हैं वैसे ही इन साधनाओं का फल सत्संग की प्राप्ति है। सब साधनाओं के करने से ही सत्संग मिलता है।

सत्संग से दुष्ट सुधरते हैं, कुसंग से सज्जन बिगड़ते नहीं

सठ सुधरहिं सतसंगति पाई। पारस परस कुधात सुहाई ॥3:9॥
बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं। फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं ॥3:10॥

सठ सुधरहिं = दुष्ट सुधरते हैं, *सतसंगति पाई* = अच्छे व्यक्तियों का साथ करके, *पारस परस* = पारस के स्पर्श कराने से, *कुधात* = लोहा, *सुहाई* = सुंदर

धातु सोना बन जाता है, *बिधि बस सुजन* = दैव योग से यदि सज्जन लोग, *कुसंगत परहीं* = दुष्टों का साथ कर लेते हैं, *फनि मनि सम* = सर्प की मणि के समान, *निज गुन अनुसरहीं* = अपने गुणों का ही पालन करते हैं।

जैसे पारस पत्थर के स्पर्श कराने से लोहा मूल्यवान् धातु सोना बन जाता है वैसे ही सतसंगत से दुष्ट व्यक्ति के दुर्गुण समाप्त हो जाते हैं, वे सुधर जाते हैं। संतों का काम पारसमणि की तरह से है। जैसे मणि साँप के विषैले मुख में रहकर भी उसके विष को ग्रहण नहीं करती, वह अपना सहज स्वभाव, प्रकाश व सर्पदंश को दूर करने के गुण को नहीं छोड़ती है, वैसे ही ज्ञानवान् व्यक्ति दुष्टों के बीच में रहकर दूसरों को सुधारते हैं, पर दुष्टों का उन पर प्रभाव नहीं पड़ता है।

सत्संग की महिमा का पूरा वर्णन संभव नहीं

बिधि हरि हर कबि कोबिद बानी। कहत साधु महिमा सकुचानी ॥3:11॥
सो मो सन कहि जात न कैसें। साक बनिक मनि गुन गन जैसें ॥3:12॥

बिधि हरि हर = ब्रह्मा विष्णु व महेश, *कबि कोबिद बानी* = कवि; पंडित व सरस्वती भी, *कहत साधु महिमा सकुचानी* = सत्संग की महिमा कहने में संकोच करते हैं, *सो मो सन* = वह महिमा मुझसे, *कहि जात* = वर्णन करते नहीं बनती है, *कैसें साक बनिक* = जिस प्रकार सब्जी बेचने वाला, *मनि गुन गन जैसें* = मणि के गुणों का वर्णन कैसे कर सकता है।

सत्संग की महिमा ब्रह्मा, विष्णु, शिव, कवि, पंडित व सरस्वती भी नहीं बता सकती, तो भला हम उस महिमा को कैसे गायें। यह तो वैसे ही है जैसे सब्जी बेचने वाले से कोई मणि के गुण, दोष व मूल्य पूछे। तुलसीदास जी कहते हैं सत्संग की पूरी महिमा का वर्णन हम नहीं कर सकते हैं।

संत का व्यवहार मित्र व शत्रु से एक समान

बंदउँ संत समान चित हित अनहित नहिं कोइ ।
अंजलि गत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दोइ ॥दोहा 3क॥

बंदउँ संत = संत की वन्दना करते हैं, *समान चित* = जिनका सम भाव होता है, *हित अनहित नहिं कोइ* = उनका मित्र व शत्रु कोई नहीं होता है, *अंजलि गत सुभ सुमन जिमि* = जिस प्रकार अंजलि में सुगंधित पुष्प रखें, *सम सुगंध कर दोइ* = समान रूप से दोनों हाथों को सुगंधित कर देता है।

यदि दोनों हाथों से अंजलि बना लें और उसमें सुंगधित पुष्प रख दें तो पुष्प की सुगंध दोनों हाथों को एक समान सुगंधित कर देती है। वह यह नहीं देखती है कि बायाँ हाथ खराब है तो उसे सुगंधित न करें। इसी प्रकार संत दुष्ट व सज्जन दोनों से समान व्यवहार करते हैं।

संतों से राम चरण में प्रेम प्रदान करने की विनती

संत सरल चित जगत हित जानि सुभाउ सनेहु ।
बालबिनय सुनि करि कृपा राम चरन रति देहु ॥दोहा 3ख॥

संत सरल चित = सज्जन का हृदय सरल होता है, *जगत हित* = संसार का हित करते हैं, *जानि सुभाउ सनेहु* = उनका स्नेहमय स्वभाव जानकर, *बालबिनय* = बालक के समान मैं विनती करता हूँ, *सुनि करि कृपा* = जिसे सुनकर कृपा करके *राम चरन रति देहु* = राम के चरणों में मुझे प्रेम प्रदान कीजिये।

तुलसीदास जी कहते हैं कि सज्जन लोगों का मन सरल होता है, वे सबका हित करते हैं, उनका स्वभाव भी स्नेह से परिपूर्ण होता है इसलिये मैं उनसे एक बालक की तरह विनती करता हूँ जिसे सुनकर वे मुझे स्नेह से भरपूर आशीर्वाद दें, जिससे मुझे राम के चरणों से प्रेम हो जाये। संत से आशय केवल साधु-संन्यासियों से नहीं, बल्कि समाज में सज्जन लोगों से होता है।

अपने अंदर छिपे खल स्वभाव को कैसे पहचानें?

साधु के लक्षण व महिमा के बाद तुलसीदास जी खल स्वभाव वाले लोगों के लक्षण, वे कैसे व्यवहार करते हैं, किन कामों को करने से उन्हें मजा आता है, इस का वर्णन करते हैं। इन लक्षणों से अपने आप को परखें, यदि हमारा व्यवहार भी ऐसा है, तो सुधारने का प्रयास करें।

बहुरि बंदि खल गन सतिभाएँ। जे बिनु काज दाहिनेहु बाएँ ॥4:1॥
पर हित हानि लाभ जिन्ह केरें। उजरें हरष बिषाद बसेरें ॥4:2॥

बहुरि बंदि खल गन सतिभाएँ = अब मैं सच्चे भाव से दुष्टों की वंदना करता हूँ, *जे बिनु काज दाहिनेहु बाएँ* = जो बिना कारण से शत्रु मित्र बनाये घूमते रहते हैं, *पर हित हानि लाभ जिन्ह केरें* = दूसरे के हित की हानि ही जिनके लिये लाभ है, *उजरें हरष बिषाद बसेरें* = दूसरों के बर्बाद होने में जिन्हें हर्ष व दूसरों के बसने में जिन्हें बहुत दु:ख होता है।

हरि हर जस राकेस राहु से। पर अकाज भट सहसबाहु से ॥4:3॥
जे पर दोष लखहिं सहसाखी। पर हित घृत जिन्ह के मन माखी ॥4:4॥

हरि हर जस = राम व शिव की कथा में दोष निकालकर महिमा कम करते हैं, *राकेस राहु से* = जैसे चन्द्रमा को राहु ग्रसकर उसके प्रकाश को कम करता है, *पर अकाज* = दूसरों का काम बिगाड़ने में, *भट सहसबाहु से* = सहस्त्रबाहु के समान बलशाली हैं, *जे पर दोष* = जो दूसरों का दोष, *लखहिं सहसाखी* = एक हजार आँखों से देखते हैं, *पर हित* = दूसरों के हित के लिये, *घृत जिन्ह के मन माखी* = घी में मक्खी के समान हैं।

तेज कृसानु रोष महिषेसा। अघ अवगुन धन धनी धनेसा ॥4:5॥
उदय केत सम हित सबही के। कुंभकरन सम सोवत नीके ॥4:6॥

तेज कृसानु = दूसरों को जलाने में अग्नि, *रोष महिषेसा* = गुस्सा करने में यमराज है, *अघ अवगुन धन धनी धनेसा* = पाप अवगुण में, कुबेर के समान धनी है, *उदय केत सम हित सबही के* = इनके बढ़ने से सबका नुकसान है, *कुंभकरन सम सोवत नीके* = कुंभकरन के समान सोते रहने में ही ठीक हैं।

पर अकाजु लगि तनु परिहरहीं। जिमि हिम उपल कृषी दलि गरहीं ॥4:7॥

पर अकाजु लगि = दूसरों के नुकसान के लिये, *तनु परिहरहीं* = शरीर त्याग देंगे, *जिमि हिम* = जैसे ओले, *उपल कृषी* = फसल खराब करके, *दलि गरहीं* = स्वयं भी गल जाते हैं।

इस प्रकार खलों के ये लक्षण हैं:
1. बिना किसी कारण से किसी को शत्रु बना लेते हैं तो किसी को मित्र।

2. कोई यदि बर्बाद हो रहा है, उसको हानि होती है तो इन्हें मजा आता है।
3. किसी का काम बन रहा है, तरक्की हो रही है तो इन्हें दु:ख होता है।
4. दूसरों की महिमा या यश कम करते रहते हैं।
5. दूसरों का काम बिगाड़ने में पूरी ताकत लगा देते हैं।
6. दूसरों के दोषों को बहुत बारीकी से देखते हैं।
7. गुस्से व दुर्गुण के धनी इनके सोते रहने मे ही भलाई है।

तीन प्रतीकों से खलों की वन्दना

तुलसीदास जी खलों की वंदना करने के लिये तीन प्रतीकों का प्रयोग करते हैं। काव्यात्मक प्रस्तुति के साथ खलों की वंदना है–

1. एक हजार फन वाले शेषनाग जैसे

बंदउँ खल जस सेष सरोषा। सहस बदन बरनइ पर दोषा ॥4:8॥

बंदउँ खल = खलों की वन्दना करता हूँ, *जस सेष सरोषा* = जैसे शेष नाग हों, *सहस बदन* = एक हजार मुखों से, *बरनइ पर दोषा* = दूसरों के दोषों का वर्णन करते हैं।

शेषनाग के एक हजार फन हैं जिससे वे भगवान् की गुणगाथा गाते हैं। खल दूसरे के दोषों का ऐसे विस्तार से वर्णन करेंगे जैसे उनके एक हजार मुख हों। मैं इन्हें हजार मुख वाले शेषनाग के समान समझकर प्रणाम करता हूँ।

2. दस हजार कानों वाले राजा पृथु के समान

पुनि प्रनवउँ पृथुराज समाना। पर अघ सुनइ सहस दस काना ॥4:9॥

पुनि प्रनवउँ = फिर उन्हें प्रणाम करते हैं, *पृथुराज समाना* = राजा पृथु के समान, *पर अघ सुनइ सहस दस काना* = जो दूसरों के दोषों को सुनते हैं दस हजार कानों से।

राजा पृथु ने भगवान् की कथा सुनने के लिये दस हजार कानों का वरदान मांगा था। खलों के भी दस हजार कान हैं, दूसरे के दोषों को सुनने के लिये। ये

बहुत विस्तार से रुचि लेकर दूसरों की बुराइयों को सुनते हैं। मैं इन्हें राजा पृथु के समान जानकर प्रणाम करता हूँ।

3. एक हजार आँखों वाले इन्द्र के समान

बहुरि सक्र सम बिनवउँ तेही। संतत सुरानीक हित जेही ॥4:10॥
बचन बज्र जेहि सदा पिआरा। सहस नयन पर दोष निहारा ॥4:11॥

बहुरि सक्र सम = फिर इन्द्र के समान समझकर, *बिनवउँ तेही* = आपसे विनय करते हैं, *संतत सुरानीक हित जेही* = सदा मदिरा या नशा अच्छा लगता है, *बचन बज्र* = बज्र के समान कठोर बचन, *जेहि सदा पिआरा* = जिन्हें सदा अच्छा लगता है, *सहस नयन* = एक हजार आँखों से, *पर दोष निहारा* = दूसरे के दोषों को देखते हैं।

जैसे इन्द्र की हजार आँखें हैं जिनका वे सदुपयोग करते हैं, पर दुष्ट स्वभाव के लोग दूसरों के दोषों को इतनी बारीकी से देखते हैं जैसे उनके पास भी हजार आँखें हों। दोष देखने में इनको बहुत अच्छा लगता है। इन्द्र के पास देवताओं की सेना है जो उन्हें प्रिय लगती है इसे ही कहते हैं सुरानीक। खलों को नशा प्रिय है वे कोई न कोई नशा अवश्य करेंगे। इन्द्र के पास वज्र है तो खलों के पास कठोर वचन हैं। तुलसीदास जी कहते हैं मैं इनको इन्द्र के समान मानकर विनय करता हूँ।

मित्र व शत्रु दोनों की तरक्की से जलते हैं

उदासीन अरि मीत हित सुनत जरहिं खल रीति ।
जानि पानि जुग जोरि जन बिनती करइ सप्रीति ॥दोहा 4॥

उदासीन अरि मीत = तटस्थ रहकर शत्रु व मित्र, *हित सुनत* = किसी के भी हित की बातें सुनकर, *जरहिं खल रीति* = दुष्ट लोग जलते हैं, *पानि जुग जोरि* = दोनों हाथ जोड़कर, *जन बिनती करइ सप्रीति* = यह जन प्रेम पूर्वक विनती करता है।

खलों का इस प्रकार का स्वभाव होता है कि वे दूसरों की हित की बातें, दूसरों की उन्नति से जलते हैं। दूसरा चाहे उनका मित्र हो, चाहे शत्रु। तुलसीदास जी दोनों हाथ जोड़कर प्रेमपूर्वक, खलों की विनती करते हैं।

वन्दना करने से खल सुधरेंगे नहीं

मैं अपनी दिसि कीन्ह निहोरा। तिन्ह निज ओर न लाउब भोरा ॥5:1॥
बायस पलिअहिं अति अनुरागा। होहिं निरामिष कबहुँ कि कागा ॥5:2॥

मैं अपनी दिसि कीन्ह निहोरा = मैंने अपनी तरफ से विनती कर ली है, *तिन्ह निज ओर न लाउब भोरा* = पर वे अपनी तरफ से कभी नहीं चूकेंगे, *बायस पलिअहिं अति अनुरागा* = जैसे कौआ को बहुत प्रेम से पालिये, *होहिं निरामिष कबहुँ कि कागा* = परंतु वे क्या कभी मांस के त्यागी हो सकते हैं?

तुलसीदासजी कहते हैं कि हम खलों की वन्दना यह सोचकर नहीं करते कि उनमें सुधार होगा। वे तो हमारी निंदा ही करेंगे। वे अपने निंदा करने का स्वभाव छोड़ नहीं सकते। जैसे कौओं को बहुत प्रेम से पालिये, पर वह कभी मांस खाना नहीं छोड़ सकता है।

संत की वन्दना न भी करें, खल की आवश्यक

संतों की वन्दना की क्या जरूरत है, वे तो वैसे ही कृपा करते रहते हैं, परन्तु दुष्टों की वन्दना जरूर करो, ये अपना स्वभाव छोड़ेंगे नहीं। मौका मिलते ही अहित जरूर करेंगे। सहस्त्रबाहु के हजार हाथ थे, इन्द्र की हजार आँखें थीं, पर दुष्टों के तो हजार हाथ, हजार कान, हजार आँखें हैं। इतने शक्तिशाली हैं ये। इसलिये उनकी वन्दना आवश्यक है ताकि वे राहु-केतु जैसे अपनी नजर हमारी तरफ न डालें, अपने दुष्ट स्वभाव की सीमा से हमें बचाये रखें।

साधु के बिछुड़ने से व दुष्ट के मिलने से दुःख होता है

बंदउँ संत असज्जन चरना। दुखप्रद उभय बीच कछु बरना ॥5:3॥
बिछुरत एक प्रान हरि लेहीं। मिलत एक दुख दारुन देहीं ॥5:4॥

बंदउँ संत असज्जन चरना = संत व असज्जन के चरणों की वन्दना करते हैं, *दुखप्रद उभय बीच कछु बरना* = दोनों के बीच दु:ख की बात है, उसका वर्णन करते हैं, *बिछुरत एक प्रान हरि लेहीं* = एक के बिछुड़ने से प्राण निकलने लगते हैं, *मिलत एक दुख दारुन देहीं* = एक के मिलने से भारी दु:ख होता है।

साधु पुरुष के साथ रहो तब तक बड़ा अच्छा लगता है, प्रसन्नता होती है, कोई चिंता व भय नहीं रहता। जब साधु जाने लगे तो बड़ा दु:ख होने लगता है। असाधु लोगों का जैसे ही चेहरा दिखा, तो घबड़ा गये, लगा कहाँ से ये मिल गये। जैसे ही ये मिले दु:ख आ गया।

सज्जन व दुष्ट एक साथ उत्पन्न होते हैं

उपजहिं एक संग जगमाहीं। जलज जोंक जिमि गुन बिलगाहीं ॥5:5॥
सुधा सुरा सम साधु असाधू। जनक एक जग जलधि अगाधू ॥5:6॥
भल अनभल निज निज करतूती। लहत सुजस अपलोक बिभूती ॥5:7॥

उपजहिं एक संग जगमाहीं = ये दोनों संसार में एक साथ पैदा होते हैं, *जलज जोंक* = कमल व जोंक नामक जीव के, *जिमि गुन बिलगाहीं* = जैसे गुण अलग-अलग हैं, *सुधा सुरा सम* = अमृत व विष के समान, *साधु असाधू* = साधु व असाधु हैं, *जनक एक जग* = संसार में दोनों के पिता एक हैं, *जलधि अगाधू* = विशाल समुद्र, *भल अनभल* = साधु व असाधु, *निज निज करतूती* = अपने अपने कर्म के अनुसार, *लहत सुजस अपलोक बिभूती* = यश व कीर्ति पाते हैं।

जिस पानी में कमल का फूल खिलता है, उसी पानी में जोंक नामक जीव उत्पन्न होता है। कमल सुंदर लगता है, वह सौंदर्य व सुगंध प्रदान कर दूसरों को सुख देता है। जोंक नामक जीव जब किसी से चिपक जाता है तो उसका खून पीने लगता है। मुश्किल से छूटता है। अमृत व विष दोनों समुद्र से ही उत्पन्न हुए। इसी प्रकार जगत भी समुद्र की तरह ही है, इसमें ही अमृत के समान साधु व विष के समान दुष्ट लोग उत्पन्न होते हैं। अब असाधु का क्या करें? अमृत को पिओ और विष को शंकर जी की तरह गले में धारण करो। भले व बुरे अपनी-अपनी करनी के अनुसार सुंदर यश या अपयश पाते हैं।

गुण अवगुण सब जानते हैं, जिसे जो अच्छा लगे करता है

सुधा सुधाकर सुरसरि साधू। गरल अनल कलिमल सरि ब्याधू ॥5:8॥
गुन अवगुन जानत सब कोई। जो जेहि भाव नीक तोहि सोई ॥5:9॥

भलो भलाइहि पै लहइ लहइ निचाइहि नीचु ।
सुधा सराहिअ अमरताँ गरल सराहिअ मीचु ॥दोहा 5॥

सुधा सुधाकर सुरसरि साधू = अमृत; चन्द्रमा; गंगाजी व साधु, *गरल अनल कलिमल सरि ब्याधू* = विष; अग्नि; कर्मनाशा नदी; व्याध, *गुन अवगुन जानत सब कोई* = इनके गुण व अवगुण सब जानते हैं, *जो जेहि भाव नीक तेहि सोई* = जिसे जो पसंद है उसके लिये वही ठीक है, *भलो भलाइहि पै लहइ* = भला व्यक्ति भलाई में लगा रहता है, *लहइ निचाइहि नीचु* = नीच व्यक्ति नीचता में ही लगा रहता है, *सुधा सराहिअ अमरताँ* = अमृत की सराहना अमर करने में ही है, *गरल सराहिअ मीचु* = विष की सराहना मारने में ही है।

क्या अच्छा है क्या बुरा है, यह सब जानते हैं। जिसे निंदा करना अच्छा लगता है वह यह जानते हुए भी कि निंदा करना ठीक नहीं है, निंदा करता है। जिसे दोष निकालना अच्छा लगता है, वह किसी में भी दोष निकालकर अपने को गौरवान्वित महसूस करता है। भले व्यक्ति तो भलाई में लगे रहते हैं, नीच व्यक्ति या दुष्ट नीचता के काम में लगे रहते हैं। जैसे अमृत की सराहना अमर करने में होती है और विष की मारने में। संसार का यही सच है। उसको ऐसा ही स्वीकार करो, बस। संसार को ऐसा ही मानकर अपने मन को शांत रखो।

संक्षिप्त वर्णन ताकि गुण अपनायें, अवगुण छोड़ें

खल अघ अगुन साधु गुन गाहा। उभय अपार उदधि अवगाहा ॥6:1॥
तेहि तें कछु गुन दोष बखाने। संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने ॥6:2॥

खल अघ अगुन = खल के पास पाप व अवगुण का, *साधु गुन गाहा* = साधु के पास गुणों का, *उभय अपार उदधि अवगाहा* = दोनों के पास समुद्र के समान विशाल भंडार है, *तेहि तें कछु गुन दोष बखाने* = इसलिये कुछ गुणों व दोषों को वर्णन किया है, *संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने* = क्योंकि बिना पहिचाने उनको अपना या छोड़ नहीं सकते।

गुणों व अवगुणों का संक्षिप्त वर्णन किया है, जिससे कोई अपना सुधार करना चाहे तो उसे पता रहे कि किन गुणों का संग्रह करना है व किन दुर्गुणों को

त्यागना है। अपने भीतर देखें, यदि हमें दूसरों की निंदा करने, क्षति पहुँचाने, कटु वचन बोलने, निंदा सुनने, दोष देखने आदि की आदते हैं और इसी में मन को आनंद मिल रहा है तो समझ लें, हमें नियमित सत्संग से इससे छूटने का प्रयास करना है।

ब्रह्मा जी ने अच्छाई व बुराई को मिलाकर संसार बनाया है

भलेउ पोच सब बिधि उपजाए। गनि गुन दोष बेद बिलगाए ॥6:3॥
कहहिं बेद इतिहास पुराना। बिधि प्रपंचु गुन अवगुन साना ॥6:4॥

भलेउ पोच = अच्छाई-बुराई, *सब बिधि उपजाए* = सब ब्रह्मा ने बनाया है, *गनि गुन दोष* = गुण-दोष का वर्णन कर, *बेद बिलगाए* = वेदों ने अलग-अलग कर दिया, *कहहिं बेद इतिहास पुराना* = वेद पुराण व इतिहास में ऐसा वर्णन है कि, *बिधि प्रपंचु* = ब्रह्मा ने प्रपंच करके *गुन अवगुन साना* = गुण-दोष को आपस में मिला दिया।

वेदों, इतिहास व पुराणों में वर्णन है कि ब्रह्मा जी ने जब सिर्फ अच्छाइयों से संसार बनाने की कोशिश की तो नहीं बना, फिर बुराइयों से बनाने की कोशिश की तो भी नहीं बना। फिर बह्मा जी ने इस सृष्टि को कैसे बनाया? थोड़ी-सी अच्छाई ली, थोड़ी-सी बुराई ली और दोनों को मिला दिया। कैसे? जैसे आटा में पानी मिलाकर उसे सान देते हैं। इस मिश्रण से संसार की रचना कर दी। अच्छाई व बुराई को कैसे पहचानें? इसके लिए ब्रह्मा जी ने वेदों की रचना की। वेदों में गुणों और दोषों का वर्णन करके दोनों को अलग-अलग कर दिया। वेदों ने यह वर्गीकरण किस प्रकार किया इसकी सूची अगली चौपाइयों में समझाते हैं।

वेदों ने गुणों व दोषों को अलग-अलग समझाया

दुख सुख पाप पुन्य दिन राती। साधु असाधु सुजाति कुजाति ॥6:5॥
दानव देव ऊँच अरु नीचू। अमिअ सुजीवनु माहुरु मीचू ॥6:6॥
माया ब्रह्म जीव जगदीसा। लच्छि अलच्छि रंक अवनीसा ॥6:7॥
कासी मग सुरसरि क्रमनासा। मरु मारव महिदेव गवासा ॥6:8॥
सरग नरक अनुराग बिरागा। निगमागम गुन दोष बिभागा ॥6:9॥

दुख सुख = दु:ख व सुख, *पाप पुन्य* = पाप क्या है; पुण्य क्या है, *दिन राती* = दिन व रात्रि, *साधु असाधु* = सज्जन व दुर्जन, *सुजाति कुजाति* = अच्छा स्वभाव व बुरा स्वभाव, *दानव देव* = दानव व देवता, *ऊँच अरु नीचू* = उच्च विचार व निम्न विचार, *अमिअ सुजीवनु* = अमृत व सुंदर जीवन, *माहुरु मीचू* = विष व मरण, *माया ब्रह्म* = माया और ब्रह्म, *जीव जगदीसा* = जीव व ईश्वर, *लच्छि अलच्छि* = लक्ष्मी और दरिद्रता, *रंक अवनीसा* = भिखारी व राजा, *कासी मग* = काशी नगर व मगहर नगर, *सुरसरि क्रमनासा* = गंगा जी व कर्मनाशा नदी, *मरु मारव* = मारवाड़ देश व मालवा देश, *महिदेव गवासा* = देवता व कसाई, *सरग नरक* = स्वर्ग व नर्क, *अनुराग बिरागा* = आसक्ति व विरक्ति, *निगमागम* = वेदों ने, *गुन दोष बिभागा* = गुणों व दोषों को अलग-अलग किया।

ब्रह्मा जी द्वारा गुण-दोष के मिश्रण से बनाये जगत् में से क्या गुण है जिसे ग्रहण करना है और क्या दोष है जिनका त्याग करना है, वेदों ने अलग-अलग करके वर्णन किया है। तुलसीदास जी दो विपरीत बातों की जोड़ी बनाकर इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं:

1. प्रत्येक व्यक्ति सुख चाहता है, इसलिये सुख अच्छा है। दु:ख कोई नहीं चाहता है, इसलिये दु:ख बुरा है। वेदों ने समझाया है कि किस कार्य को करने से दु:ख और किस कार्य को करने से सुख मिलेगा।
2. प्रत्येक व्यक्ति अच्छे व बुरे कर्म करता है। वेदों ने बताया है कि इन कर्मों का फल पाप है, इन कर्मों का फल पुण्य है। इसी प्रकार दिन के उजाले व रात्रि के अंधकार का वर्णन है।
3. सज्जन कौन है, दुर्जन कौन है, इनके लक्षणों का अलग-अलग करके वर्णन कर दिया।
4. सुजाति से आशय अच्छे स्वभाव वाले लोग, कुजाति से आशय बुरे स्वभाव के लोग हैं। जैसे कपिला गाय सीधी होती है और दूध भी ज्यादा देती है।
5. दूसरों को कष्ट देने में जिन्हें अच्छा लगे वे दानव हैं, दूसरों को सुख देने में जो सुखी हों वे देवता हैं। इसी प्रकार ऊँचा विचार क्या है? नीच विचार क्या है? वेदों ने वर्णन कर दिया।
6. अमृत क्या है? जिससे सुन्दर जीवन प्राप्त होता है। विष क्या है? जिससे मृत्यु प्राप्त होती है।

7. ब्रह्म नित्य, आनन्दस्वरूप व चेतन है। माया आदि-अंत वाली, मिथ्या है। ब्रह्म का लक्षण जानकर ज्ञानी व्यक्ति ब्रह्म के दर्शन, अनुभव कर आनन्दित होते हैं। अज्ञानी व्यक्तियों को माया ही माया दिखती है और सदैव दु:खी रहते हैं।
8. ईश्वर व जीव के अंतर का वर्णन करके बताया कि दोनों में ब्रह्म है, परन्तु एक ऊँचा है तो दूसरा नीचा है।
9. संसार में एक ओर धन-सम्पत्ति है तो दूसरी ओर दरिद्रता है। कोई राजा है तो कोई भिखारी।
10. पवित्र नगर के लक्षण बताये जैसे– काशी नगरी, जहाँ शिव का निवास है, वहाँ मृत्यु से मुक्ति मिलती है। दूसरी ओर अपवित्र देश मगहर है, जहाँ मरने पर नर्क मिलता है।
11. भगवान के चरणों से निकली पवित्र नदी गंगा है, जहाँ स्नान से पाप नष्ट होकर पुण्य बढ़ते हैं। अपवित्र नदी कर्मनाशा है, जहाँ स्नान से पुण्य नष्ट होते हैं और पाप बढ़ते हैं।
12. संसार में कहीं मारवाड़ देश है तो कहीं मालवा। कहीं देवत्व स्वभाव के लोग हैं तो कहीं कसाई स्वभाव के। कहीं स्वर्ग के समान सुख है तो कहीं नर्क के समान दु:ख है। कहीं आसक्ति है तो कहीं वैराग्य है।

अच्छाई व बुराई में अच्छाई ग्रहण करें, बुराई छोड़ दें

जड़ चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार ।
संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार ॥दोहा 6॥

अस बिबेक जब देइ बिधाता। तब तजि दोष गुनहिं मनु राता ॥7:1॥

जड़ चेतन गुन दोषमय = सजीव व निर्जीव को, गुणों व दोषों को मिलाकर, *बिस्व कीन्ह करतार* = ब्रह्माजी ने संसार को रचा है, *संत हंस गुन गहहिं* = संत हंस के समान गुणों को ग्रहण करते हैं, *पय परिहरि बारि बिकार* = दूध में से पानी को छोड़कर दूध को पीते हैं, *अस बिबेक जब देइ बिधाता* = जब विधाता इस प्रकार का विवेक दे, *तब तजि दोष गुनहिं मनु राता* = तब मन दोषों को छोड़कर गुणों को ग्रहण करे।

जैसे हंस को यदि दूध में पानी मिलाकर पीने को दो तो वह दूध पी लेगा पानी को छोड़ देगा। इसी प्रकार हमें जीवन में अच्छा व बुरा एक साथ मिलेगा। हमें अपनी समझदारी से अच्छाई को ग्रहण कर लेना है, बुराई को छोड़ देना है।

श्री स्वामी सत्यानंदजी के रिखिया सत्संग से

विविधता में ही सुंदरता

इस संसार में विविधता का सृजन ईश्वर ने किया है। संसार में यदि सिर्फ आम के ही पेड़ होंगे तो नीरस लगेगा। आम, बबूल, नीम, पीपल, बरगद, सभी तरह के फूल, फल वाले पेड़ होने चाहिये तब कहेंगे सुन्दर, अति सुन्दर। विविधता में ही सुंदरता होती है।

दुनियाँ में प्रत्येक अँगूठे की छाप अलग-अलग

मजे की बात यह है कि इस दुनिया में कोई भी दो व्यक्ति एक समान नहीं होते। दो भाई-बहन हैं पर दोनों में फर्क होता है। जुड़वाँ बच्चों में भी फर्क होता है। और यह भी वैज्ञानिक तथ्य है कि दुनिया में दो अँगूठों का एक सा निशान नहीं होता है। हर एक अँगूठे की छाप अलग होती है। अद्‌भुत नहीं है क्या? आश्चर्य की बात है कि ईश्वर कैसे इतनी विविधता की सृष्टि करता है? उनकी योजनायें विलक्षण होती हैं व उनके सोचने का ढंग निराला होता है। अँगूठे की छाप पहचान की सर्वश्रेष्ठ विधि है। अँगूठे को कोई बदल नहीं सकता।

पति-पत्नी का स्वभाव एक न रहने पर भी प्रेम से रह सकते हैं

यदि दो अँगूठों की छाप एक समान नहीं है, तो इसका मतलब है कि दुनिया में कोई भी दो आदमी एक तरह के नहीं होते। इसका अर्थ है कि तुम्हारा विचार मेंरे विचार से नहीं मिलेगा। पर इसका यह मतलब नहीं है कि तुम्हारे व मेरे बीच झगड़ा होना ही चाहिये। दो व्यक्ति अलग-अलग विचार रखते हुए भी एक साथ प्रेम से रह सकते हैं। इसी प्रकार पति और पत्नी का विचार एक हो कोई, जरूरी तो नहीं। अगर तुम सोचो, पति-पत्नी का स्वभाव बिल्कुल एक जैसा हो तब जाकर शादी सफल होगी, तो ऐसा नहीं हो सकता। और अगर ऐसा सोच रहे हो तो भूल कर रहे हो।

झगड़े की जड़ फर्क नहीं, मनुष्य का अपना अहंकार है

मजे की बात तो यह है कि सारा गणित जोड़-घटाव पर ही चलता है, जोड़-जोड़ पर ही नहीं चलता है। इसलिये धर्मों में अन्तर है, भाषाओं में अन्तर है। व्याकरण में अन्तर है। कपड़े में भिन्नता है। और यदि सारे झगड़े का कारण केवल फर्क है, तब तो कभी मिटेगा नहीं। झगड़े का कारण मनुष्य की अपनी कमजोरी है, अपने मन की उपज है। अपना अहम भाव है। झगड़े का कारण आदमी के अपने अन्दर में है, उसको ठीक किया जाये। किसी भी व्यक्ति को कितना भी समझाओ वह बदल नहीं सकता जब तक कि वह अपने दिमाग को ठीक नहीं करता है।



सज्जन की चूक भक्त सुधार लेते हैं

काल सुभाउ करम बरिआईं। भलेउ प्रकृति बस चुकइ भलाईं ॥7:2॥
सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं। दलि दुख दोष बिमल जसु देहीं ॥7:3॥
खलउ करहिं भल पाइ सुसंगू। मिटइ न मलिन सुभाउ अभंगू ॥7:4॥

काल सुभाउ करम बरिआईं = समय; स्वभाव व कर्म की प्रबलता से, *भलेउ प्रकृति बस चुकइ भलाईं* = प्रकृति के बस में होने के कारण अच्छे लोग भी भलाई करने से चूक जाते हैं, *सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं* = भगवान् के भक्त उन चूकों को सुधार कर, *दलि दुख दोष* = दु:ख व दोषों को दूर करके, *बिमल जसु देहीं* = निर्मल यश प्रदान करते हैं, *खलउ करहिं भल पाइ सुसंगू* = दुष्ट स्वभाव वाले लोग भी अच्छा काम कर देते हैं सत्संग पाकर के, *मिटइ न मलिन सुभाउ अभंगू* = परन्तु उनका मलिन स्वभाव नहीं मिटता है।

हरिजन, भगवान् के भक्त हैं, ये परमात्म भाव मे स्थित हैं, इनमें दोष आदि बिल्कुल नहीं हैं। काकभुसुंडि जी हरिजन हैं। लोमष ऋषि को जब क्रोध आया तो काकभुसुंडि जी ने यह कहकर कि यह क्रोध तो भगवान् ने हमारी भलाई के लिये ऋषि के मन में उत्पन्न कर दिया है, लोमष ऋषि की गलती सुधार कर उन्हें यश प्रदान किया। खलों से भी कई बार चूक हो जाती है। वे गलती से सत्संग में चले जाते हैं। जरा देर के लिये उनका खल स्वभाव छूट

जाता है। पर उनके अंदर मलिनता बनी ही रहती है। जहाँ सत्संग से बाहर आयेंगे फिर उनके दोष शुरू हो जायेंगे।

संत कुवेष में भी आदरणीय, दुष्ट अच्छे वेष में भी निंदनीय

लखि सुबेष जग बंचक जेऊ। बेष प्रताप पूजिअहिं तेऊ ॥7:5॥
उघरहिं अंत न होइ निबाहू। कालनेमि जिमि रावन राहू ॥7:6॥
किएहुँ कुबेषु साधु सनमानू। जिमि जग जामवंत हनुमानू ॥7:7॥

लखि सुबेष = अच्छा वेष धारण करके, *जग बंचक जेऊ* = जो संसार को ठगते हैं, *बेष प्रताप पूजिअहिं तेऊ* = अच्छे वेष के कारण वे भी पूजे जाने लगते हैं, *उघरहिं अंत न होइ निबाहू* = बात खुलने पर उनका वही हाल होता है, *कालनेमि जिमि रावन राहू* = जो रावण, कालनेमि व राहु का हुआ, *किएहुँ कुबेषु* = खराब वेष धारण करने पर, *साधु सनमानू* = सज्जन का आदर ही होता है, *जिमि जग जामवंत हनुमानू* = जैसे संसार में जामवंत व हनुमान का होता है।

कभी-कभी खल लोग ऊपर से अच्छा वेष बना लेते हैं जिसके कारण वे समाज में आदर पाने लगते हैं और संसार को ठगते रहते हैं। एक न एक दिन यह बात खुल ही जाती है। उनका हाल वही होता है जो रावण, कालनेमि व राहु का हुआ। कालनेमि नामक राक्षस ने साधु का वेष धारण करके हनुमानजी को मूर्ख बनाने की कोशिश की, परन्तु बात खुल गई, हनुमानजी ने उसका वध कर दिया। रावण संन्यासी का वेष रखकर सीताजी से भिक्षा माँगने आया, सीता जी का हरण किया, बाद में प्रभु राम ने उसे कुल सहित मारा। तीसरा उदाहरण राहु का है। बुरा वेष बना लेने पर भी साधु का सम्मान ही होता है। जैसे जामवंत ब्रह्मा जी के अवतार हैं वेष बना लिया रीक्ष का, हनुमान जी शंकर जी ही हैं, वेष बना लिया बंदर का। दोनों के गुणों के कारण पूजा होती है। वेष ज्यादा समय नहीं चलता, आंतरिक गुणों से ही सम्मान मिलता है।

कुसंग से हानि व सत्संग से लाभ

हानि कुसंग सुसंगति लाहू। लोकहुँ बेद बिदित सब काहू ॥7:8॥

हानि कुसंग = बुरी संगत से नुकसान, *सुसंगति लाहू* = अच्छी संगति से लाभ, *लोकहुँ बेद* = वेदों में किया है, *बिदित सब काहू* = और सबको पता है।

सत्संग से होने वाले लाभ व कुसंग से होने वाली हानि का प्राकृतिक चीजों जैसे हवा, पानी, धुँआ, धूल, चन्द्रमा का प्रकाश इत्यादि के उदाहरण द्वारा वर्णन करते हैं।

हवा के संग धूल आकाश में, पानी के संग कीचड़ बनती है

गगन चढ़इ रज पवन प्रसंगा। कीचहिं मिलइ नीच जल संगा ॥7:9॥

गगन चढ़इ = आकाश में चढ़ जाती है, *रज पवन प्रसंगा* = धूल वायु के साथ मिलकर, *कीचहिं मिलइ* = धूल कीचड़ बन जाती है, *नीच जल संगा* = जल के साथ मिलकर।

धूल की दो गतियाँ हैं, उसके दो साथी हैं, एक हवा दूसरा पानी। यदि वह हवा का साथ करती है तो उसकी गति ऊपर की ओर हो जाती है वह वायु के साथ आकाश में चढ़ जाती है। वही धूल यदि पानी का, जिसकी गति नीचे की ओर है, साथ करती है तो अधोगति को प्राप्त होते हुए कीचड़ बन जाती है।

सज्जन का तोता राम राम, दुष्ट का अपशब्द रटता है

साधु असाधु सदन सुक सारीं। सुमिरहिं राम देहिं गनि गारीं ॥7:10॥

साधु असाधु सदन = सज्जन व असज्जन के घर में, *सुक सारीं* = जो तोता मैना रहते हैं, *सुमिरहिं राम देहिं गनि गारीं* = साधु के यहाँ तो राम राम बोलते हैं, असज्जन के यहाँ अपशब्द कहते हैं।

साधु के घर के तोता-मैना राम-राम कहते हैं, असाधु के यहाँ अपशब्द कहते हैं। जब पक्षी पर घर के वातावरण का इतना प्रभाव पड़ता है तो बच्चों पर बड़ों के झगडों का, बातचीत के तौर-तरीकों का कितना प्रभाव पड़ता होगा। यदि माता-पिता आपस में लड़ेंगे, अपशब्द कहेंगे तो बच्चे भी वैसा ही बर्ताव करेंगे।

धुआँ संगत से कालिख या स्याही या पानी बनता है

धूम कुसंगति कारिख होई। लिखिअ पुरान मंजु मसि सोई ॥7:11॥
सोइ जल अनल अनिल संघाता। होइ जलद जग जीवन दाता ॥7:12॥

धूम कुसंगति = धुआँ या भाप बुरी संग में मिलकर, *कारिख होई* = काला करता है, *लिखिअ पुरान मंजु मसि सोई* = उसी को यदि एकत्रित कर लें तो सुंदर स्याही बनकर लिखने के काम आता है, *सोइ जल अनल अनिल* = वही भाप या धुआँ; पानी; अग्नि; वायु, *संघाता होइ जलदजग जीवन दाता* = तीनों के सहयोग से बादल बनकर सबको जीवन देता है।

कुसंग के कारण धुआँ कालिख कहलाता है, उसी धएँ को यदि ठीक से एकत्रित कर लें तो सुंदर स्याही होकर पुराण लिखने के काम आता है। और वही धुआँ या भाप, जल, अग्नि व वायु के साथ मिलकर बादल बनकर संसार को जीवन देने वाला पानी बरसाता है।

सुसंग से कोई वस्तु शुभ व कुसंग से वही अशुभ हो जाती है

ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुजोग सुजोग ।
होहिं कुबस्तु सुबस्तु जग लखहिं सुलच्छन लोग ॥दोहा 7 क॥

ग्रह भेषज = ग्रह, औषधि, *जल पवन पट* = पानी; वायु व वस्त्र, *पाइ कुजोग सुजोग* = कुसंग या सत्संग पाकर के, *होहिं कुबस्तु सुबस्तु जग* = संसार में शुभ या अशुभ वस्तु बन जाते हैं, *लखहिं सुलच्छन लोग* = समझदार लोग यह बात जानते हैं।

ग्रह– एक ही ग्रह जन्मपत्री के एक खाने में है तो अच्छा फल देने वाला है, दूसरे खाने में चला गया तो बुरा फल देने लगता है। ग्रह वही है, खाने में परिवर्तन से मारक हो जाता है। **औषधि–** विषैली औषधि भी जब दूसरी दवा के साथ मिलाकर शोधन की जाती है तो रोग दूर करने वाली बन जाती है। **जल–** गंगा नदी का जल पाप धोने वाला होता है तो कर्मनाशा नदी का जल पाप बढ़ाने वाला है। **पवन–** फूलों के ऊपर से निकली तो हवा सुगंधित हो गई वही हवा दूषित पदार्थ के ऊपर से निकली तो दुर्गन्धित हो गई। **वस्त्र–**

श्मशान का वस्त्र तो अपवित्र माना जाता है वही वस्त्र भगवान् के उपर चढ़ा तो पवित्र हो जायेगा। वस्त्र वही है। इस प्रकार संगत से एक ही वस्तु शुभ व अशुभ बन जाती है।

चन्द्रमा के एक ही प्रकाश को शुक्ल व कृष्ण पक्ष कहते हैं

सम प्रकाश तम पाख दुहुँ नाम भेद बिधि कीन्ह ।
ससि सोषक पोषक समुझि जग जस अपजस दीन्ह ॥दोहा 7 ख॥

सम प्रकाश तम पाख दुहुँ = 15 दिन की अवधि में एक समान उजाला व अँधेरा रहता है, *नाम भेद बिधि कीन्ह* = पर ब्रह्माजी ने नाम अलग-अलग कर दिये, *ससि सोषक पोषक* = घटने वाला चन्द्रमा व बढ़ने वाला चन्द्रमा, *समुझि जग* = संसार में लोग समझते हैं, *जस अपजस दीन्ह* = उसे यश व अपयश से जोड़ते हैं।

महीने के 15-15 दिनों के दो पखवाड़ों में उजियाला व अँधेरा समान ही रहता है, पर एक को शुक्ल पक्ष कहते हैं जो यशकारी व अच्छा माना जाता है, दूसरे को कृष्ण पक्ष कहते हैं जो अपयशकारी माना जाता है।

5. सियाराम रूप में जीवों की वन्दना

(दोहा 7 ग, 7 घ, 8)

परम पूज्य स्वामी सत्यानंद जी कहते हैं कि अपने विकास के एक निश्चित बिंदु पर, मनुष्य ने यह अनुभव किया कि सम्पूर्ण जगत् सीता-राम से ओत-प्रोत है, ईश्वर और उसकी माया से व्याप्त है। मैं उनका नमन करता हूँ, इस जगत की सभी वस्तुओं को अपनी करबद्ध वन्दनायें अर्पित करता हूँ, क्योंकि समस्त सत्ता में, ब्रह्माण्डीय अस्तित्व से सूक्ष्मतम प्राणी तक वह व्याप्त है। भगवान् सब रूपों में है– वृक्षों में है, वनस्पतियों में है, जानवरों में है, अमीर में है, गरीब में है, सदाचारी में है, दुराचारी में है, ज्ञानी में है, अज्ञानी में है। सबमें भगवान् उसी तरह से व्याप्त है जिस प्रकार से बल्ब और माइक्रोफोन में एक ही बिजली है। ईश्वर एक ऐसी शक्ति का नाम है जो तत्काल मेरे पास है, जो तत्काल मेरे अंदर है, जो तत्काल मेरे सामने है, जिसका मैं अनुभव नहीं करता। तुलसीदास जी कहते हैं *'सीय राममय सब जग जानी। करऊँ प्रनाम जोरि जुग पानी'*। सब को यह मानकर प्रणाम करते हैं कि सब के अंदर सीता

राम विराजमान हैं। वे अपनी बुद्धि का अभिमान त्याग करके सबको प्रणाम करते हैं, सबका आशीर्वाद माँगते हैं।

सभी में राम हैं इसलिये सबको प्रणाम

जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि ।
बंदउँ सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि ॥7 ग॥

देव दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गंधर्ब ।
बंदउँ किंनर रजनिचर कृपा करऊ अब सर्ब ॥7 घ॥

जड़ चेतन जग जीव जत = संसार में जितने भी निर्जीव या सजीव प्राणी हैं, *सकल राममय जानि* = सभी के अंदर राम जी हैं ऐसा समझकर, *बँदउ सब के पद कमल* = सब के कमल के समान चरणों की वन्दना करता हूँ, *सदा जोरि जुग पानि* = हमेशा दोनों हाथ जोड़कर के।
देव दनुज नर नाग खग = देवता; दैत्य; मनुष्य; सर्प; पक्षी, *प्रेत पितर गंधर्ब* = प्रेत; पितर; गंधर्व, *बंदउँ* = वंदन करता हूँ, *किंनर रजनिचर* = किन्नर; राक्षस, *कृपा करऊ अब सर्ब* = अब आप सब हमारे ऊपर कृपा करें।

जड़ मायने निर्जीव जैसे पत्थर, कागज आदि, चेतन मायने सजीव जैसे मनुष्य, पक्षी, देवता, दैत्य, प्रेत, पितर, राक्षस गंधर्व आदि। मैं दोनों हाथ जोड़कर जड़ व चेतन सभी के कमल के समान चरणों की वन्दना यह समझकर करता हूँ कि उनके अंदर राम जी विराजमान हैं। आप सब मुझ पर कृपा करिये।

84 लाख योनियों के जीवों को सीता-राम मय जानकर प्रणाम

आकर चारि लाख चौरासी। जाति जीव जल थल नभ बासी ॥8:1॥
सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी ॥8:2॥
जानि कृपाकर किंकर मोहू। सब मिलि करहु छाड़ि छल छोहू ॥8:3॥

आकर चारि = जन्म के आधार पर 4 तरह के जीव हैं, *लाख चौरासी जाति जीव* = 84 लाख तरह के प्राणियों के प्रकार, *जल थल नभ बासी* = और

ये सब पानी; जमीन या आकाश में रहते हैं, *सीय राममय सब जग जानी* = सारे संसार में सीता राम व्याप्त है; ऐसा समझकर, *करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी* = दोनो हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूँ, *जानि कृपाकर किंकर मोहू* = मुझे कृपा करने वाले राम का दास समझकर, *सब मिलि करहु छाड़ि छल छोहू* = सब मिलकर छल कपट छोड़कर कृपा करें।

जन्म के आधार पर जीवों को 4 भागों में बाँटते हैं। **1.** अण्डे से पैदा होने वाले जैसे मुर्गी, चिड़िया आदि, **2.** गर्भ से पैदा होने वाले जैसे मनुष्य, गाय, बैल आदि, **3.** पसीने से पैदा होने वाले जीव, **4.** जमीन से पैदा होने वाले जीव जैसे पेड़ पौधे आदि । इन चार तरह से पैदा होने वाले जीवों की 84 लाख तरह की योनियाँ हैं। ये प्राणी तीन स्थानों में रहते हैं जमीन पर, पानी में या आकाश में। इन सबके अंदर राम व उनकी महामाया शक्ति सीता व्याप्त हैं। तुलसीदासजी दोनो हाथ जोड़कर समस्त जीवों के अंदर व्याप्त राम व सीता को प्रणाम करते हैं। वे कहते हैं कि मैं कृपा करने वाले राम का सेवक हूँ, ऐसा समझकर आप सब मिलकर, छल कपट छोड़कर मुझ पर कृपा करें।

श्री स्वामी सत्यानंदजी के रिखिया सत्संग से

यह मनुष्य शरीर 84 लाखवाँ योनि है

तुम 83,99,999 कक्षाओं में तो पढ़ ही चुके हो, अब यह मनुष्य शरीर 84 लाखवाँ है। कभी तुम कीड़े थे, कभी मकोड़े थे, फिर चिड़िया बन गये, कभी केचुआ बन गये, कभी कुत्ता बन गये, कभी गदहा बन गये। हर योनि में जाकर सीखा है। अब यह मनुष्य शरीर में आकर शरीर का विकास पूरा हो जाता है। शरीर का विकास प्रकृति ने यहीं तक रखा है। इसके बाद बुद्धि का, चेतना का विकास होगा। जिसको मन कहो, सजगता कहो, यह कोई चीज है जो दिखाई नहीं देती। हम देख रहे हैं कि हमारे अंदर में कोई चीज है जो विकसित होती है, जो सब चीजों को पढ़ती है, रूप-रंग को देखती है, दु:ख-सुख को देखती है, अनुभव करती है। तुम मेरी बात सुन भी रहे हो, तुमको मालूम भी होता है, तुम सुन रहे हो। यह चेतना का विकास हुआ। जानवरों में चेतना नहीं है।

भगवान् को गरीब में भी देखो

ईश्वर की साधना और उसकी पूजा अनेकों प्रकार से होती है। यह बात तो एकदम ठीक है और सच है कि भगवान् गिरिजाघर में, मंदिर में हैं, निश्चित रूप से हैं, किन्तु क्या तुमने यह कभी सोचा है कि भगवान् तो गरीब में भी मौजूद है, दु:खी दीन लोगों में भी है? ऐसे गरीब और असहाय की सहायता यदि तुम नहीं करते हो तो उसके अंदर के भगवान् को तुम स्वीकार नहीं करते हो। सब धर्म एक ही बात कहते हैं, दीन दु:खियों की सेवा भगवान् की सर्वोतम पूजा है। अमीर आदमी भी दु:खी है, कोई बात नहीं, उन्हें रात को नींद नहीं आती, व्यग्रता है, तनाव है, ब्लड प्रेशर है। उनके अंदर के भगवान् की सेवा करनी चाहिये, उनको आसन सिखा देते हैं, प्राणायाम सिखा देते हैं। परंतु जो भगवान् भूखे व्यक्ति में है, जो भगवान् अपाहिज में है, उनके लिये क्या सोचा है तुम लोगों ने? मंदिर में भगवान् को देखना सरल है, परंतु किसी गरीब या पीड़ित में भगवान् को देखना कठिन है। भगवान् को सभी आदमी केवल मंदिर में ही देखना चाहते हैं। भगवान् को गरीब में देखने की कोशिश करो।

ईश्वर के अस्तित्व को तुम भूल गये हो

तुम अपने आप में इतने मशगूल हो कि तुम भूल ही गये हो कि ईश्वर का अस्तित्व भी है। तुम बहुत आत्मकेन्द्रित हो, स्वार्थी हो। मैं, मेरी पत्नी, मेरा परिवार हरदम मेरा-मेरा कहते रहते हो। बस, इसके बाद दुनिया खत्म। केवल अपनी प्रगति के लिये, केवल अपने फायदे के लिये, जो आदमी परिश्रम करता है, उस आदमी का वह फल अल्पकालिक होता है। और उसको संतोष भी नहीं होता, हमेशा भय बना रहता है। बेटा पैदा हुआ, पता नहीं जिंदा रहेगा कि नहीं। कभी दूसरों के बच्चों की पढ़ाई की व्यवस्था के लिये, दूसरों की लड़की की शादी के लिये, दूसरों के इलाज के लिये भी सोचो।



बुद्धि का अभिमान त्याग करके सबसे आशीर्वाद माँगते हैं

निज बुधि बल भरोस मोहि नाहीं। तातें बिनय करउँ सब पाहीं ॥8:4॥
करन चहउँ रघुपति गुन गाहा। लघु मति मोरि चरित अवगाहा ॥8:5॥
सूझ न एकउ अंग उपाऊ। मन मति रंक मनोरथ राऊ ॥8:6॥
मति अति नीच ऊँचि रुचि आछी। चहिअ अमिअ जग जुरइ न छाछी ॥8:7॥

निज बुधि बल = अपने बुद्धि व बल पर, *भरोस मोहि नाहीं* = मुझे भरोसा नहीं है, *तातें बिनय करऊँ सब पाहीं* = इसलिये आप सबसे विनती करता हूँ, *करन चहउँ रघुपति गुन गाहा* = मैं श्रीराम के गुणों का वर्णन करना चाहता हूँ, *लघु मति मोरि* = मेरी बुद्धि छोटी है, *चरित अवगाहा* = पर चरित्र विशाल हैं, *सूझ न एकउ अंग उपाऊ* = काव्य का एक भी अंग समझ नहीं आ रहा है, *मन मति रंक* = मन व बुद्धि कंगाल हैं, *मनोरथ राऊ* = पर इच्छा राजा बनने की है, *मति अति नीच* = बुद्धि नीची है, *ऊँचि रूचि आछी* = पर इच्छा ऊँची है, *चहिअ अमिअ* = अमृत पाने की लालसा है, *जग जुरइ न छाछी* = पर जुगाड़ छाछ का भी नहीं है।

तुलसीदास जी को पता है कि अपनी सीमित बुद्धि व बल का अभिमान लेकर राम की कथा नहीं हो सकती। अभिमान बुद्धि को कमजोर करता है तो निरभिमान उसे मजबूत बनाता है। इनके बीच समन्वय बनाना चाहिये ताकि अभिमान भी न हो और अपने पर विश्वास भी रहे, और कर्त्ताभाव भी न रहे। जो कुछ करो समझो कि मनुष्यों व देवताओं के सहयोग से हो रहा है। इसलिये वे सबसे विनती करते हैं कि सब मुझे आशीर्वाद प्रदान करें ताकि मैं यह कार्य पूरा कर सकूँ।

6. सज्जन कथा सुन प्रसन्न होंगे, दुष्ट मजाक बनाकर हँसेंगे

(दोहा 8 व 9)

तुलसीदास जी बताते हैं कि इस कथा को कौन किस तरह से सुनेगा। मैंने तो इस महान् रामकथा को वैसे ही लिखने का प्रयास किया है जैसे छोटा बालक जिसे बोलना नहीं आता फिर भी वह तुतलाकर ही बोलने की कोशिश करता है। बालक के माता-पिता तोतल बातों को भी सुनकर प्रसन्न होते हैं वैसे ही सज्जन लोग कथा को सुनकर आनंद लेंगे। दुष्ट लोग इसका मजाक बनाकर उपहास करके आनंद लेंगे। मेरा तो दोनों में ही हित है।

सज्जन अपने बालक की बात जैसे कथा को मन से सुनेंगे

छमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई। सुनिहहिं बालबचन मन लाई ॥8:8॥
जौं बालक कह तोतरि बाता। सुनहिं मुदित मन पितु अरु माता ॥8:9॥

छमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई = मेरा ढीठ स्वभाव है सज्जन मुझे क्षमा करें, *सुनिहहिं बालबचन मन लाई* = मुझ बालक के वचन को मन लगाकर सुनेंगे, *जौं बालक कह तोतरि बाता* = जब बालक तुतलाकर बोलता है, सुनहिं *मुदित मन पितु अरु माता* = माता और पिता उसे प्रसन्न मन से सुनते हैं।

इतनी महान् कथा का वर्णन हमसे नहीं बनता पर हमने भी ठान लिया है कि हम वर्णन तो करेंगे ही। मेरी इस जिद को सज्जन लोग क्षमा करेंगे। बालक को जब बोलना नहीं आता तो भी वह तुतलाकर बोलने का प्रयास करता है। उसके माता-पिता अपने बालक के इस प्रकार तुतलाकर बोलने पर भी प्रसन्न मन से उसकी बातों को सुनते हैं और उसे बार-बार प्रोत्साहित करते हैं। उल्टा सीधा बोलता है तो भी सुनकर प्रसन्न होते हैं। इसी प्रकार ये सज्जन लोग मेरे माता-पिता हैं, वे मुझ बालक की बात को मुदित मन से सुनकर प्रसन्न होंगे।

चार तरह के लोग कथा का मजाक बनाकर हँसेंगे

हँसिहहिं कूर कुटिल कुबिचारी। जे पर दूषन भूषनधारी ॥8:10॥

हँसिहहिं कूर कुटिल कुबिचारी = क्रूर स्वभाव; कुटिल स्वभाव व बुरे विचार वाले लोग मजाक बनाकर हँसेंगे, *जे पर दूषन भूषनधारी* = दूसरों के दोष ही जिनका आभूषण है।

1. क्रूर स्वभाव वाले– इन लोगो में सहनशीलता नहीं होती, 100 में यदि 99 बातें अच्छी हों और एक गलत हो तो उसी एक को लेकर बैठ जायेंगे, उसी की ही बातें करेंगे।
2. कुटिल स्वभाव वाले– ये लोग मानते हैं कि जो वे कहें सही बाकी सब गलत। ये चाहे कितना गलत बोलें सब सही, दूसरा जितना भी सही बोले सब गलत।
3. बुरे विचार वाले– जिनका सोचने का तरीका ही ठीक नहीं है।
4. दूसरे के दोषों को ही अपना आभूषण मानने वाले– इस स्वभाव के लोग कहेंगे, अरे! तुलसीदास को जब राम की कथा सुनानी ही थी तो वह वाल्मीकि की तरह या वेद व्यास की तरह सुनाते, हिंदी में ही लिखना शुरू कर दिये, यह भी कोई कथा है।

दूसरों की रचना सुन प्रशंसा करने वाले कम होते हैं

निज कबित्त केहि लाग न नीका। सरस होउ अथवा अति फीका ॥8:11॥
जे पर भनिति सुनत हरषाहीं। ते बर पुरुष बहुत जग नाहीं ॥8:12॥
जग बहु नर सर सरि सम भाई। जे निज बाढ़ि बढ़हि जल पाई ॥8:13॥
सज्जन सकृत सिंधु सम कोई। देखि पूर बिधु बाढ़इ जोई ॥8:14॥

निज कबित्त केहि लाग न नीका = अपनी रचना किसे अच्छी नहीं लगती, *सरस होउ अथवा अति फीका* = रस से भरी हो या बिल्कुल रसहीन हो, *जे पर भनिति सुनत हरषाहीं* = जो दूसरे की रचना सुनकर प्रसन्न हों, *ते बर पुरुष बहुत जग नाहीं* = ऐसे उत्तम पुरुष ज्यादा नहीं हैं, *जग बहु नर* = संसार मे ज्यादा मनुष्य, *सर सरि सम भाई* = नदी तालाब समान हैं, *जे निज बाढ़ि बढ़हि जल पाई* = जो अपने ही पानी से बढ़ते हैं, *सज्जन सकृत* = अच्छा मनुष्य, *सिंधु सम कोई* = समुद्र के समान कम हैं, *देखि पूर बिधु* = पूर्ण चन्द्रमा को देखकर, *बाढ़इ जोई* = जो बढ़ता है।

भाग छोट अभिलाषु बड़ करउँ एक बिस्वास ।
पैहहिं सुख सुनि सुजन सब खल करिहहिं उपहास ॥दो 8॥

भाग छोट अभिलाषु बड़ = भाग्य छोटा है पर इच्छा बड़ी है, *करउँ एक बिस्वास* = पर एक विस्वास है, *पैहहिं सुख सुनि सुजन सब* = अच्छे लोग इसे सुनकर प्रसन्न होंगे, *खल करिहहिं उपहास* = दुष्ट इसे सुनकर उपहास करेंगे।

तुलसीदास जी कहते हैं कि अपनी रचना तो सबको अच्छी लगती है, चाहे वह रस से भरी हो या नीरस हो, जैसे नदी या तालाब जो अपने ही पानी से बढ़ते हैं। दूसरों की रचना सुनकर प्रसन्न होने वालों की संख्या संसार में कम है, जैसे समुद्र जो पूर्ण चन्द्रमा को देखकर बढ़ता है। कहते हैं कि मेरा भाग्य कम है, परन्तु इच्छा बड़ी है, फिर भी एक विश्वास है कि इस रचना को पढ़कर अच्छे लोग प्रसन्न होंगे, दुष्ट इसका उपहास करेंगे।

मेरी कम बुद्धि व हिंदी में कविता है तो लोग हँसेंगे ही

खल परिहास होइ हित मोरा। काक कहहिं कलकंठ कठोरा ॥9:1॥
हंसहिं बक दादुर चातकही। हँसहिं मलिन खल बिमल बतकही ॥9:2॥

कबित रसिक न राम पद नेहू। तिन्ह कहँ सुखद हास रस एहू ॥9:3॥
भाषा भनिति भोरि मति मोरी। हँसिबे जोग हँसें नहिं खोरी ॥9:4॥

खल परिहास होइ हित मोरा = दुष्टों के हँसने से मेरा हित ही होगा, *काक कहहिं कलकंठ कठोरा* = कौआ कहता है कोयल का गला कठोर है, *हंसहिं बक* = हंस पर बगुला हँसता है, *दादुर चातकही* = मेढक हँसता है पपीहा पर, *हंसहिं मलिन खल बिमल बतकही* = दुष्ट स्वभाव के लोग निर्मल वाणी पर हँसते हैं, *कबित रसिक* = जिन्हें लौकिक रचना में रस आता है, *न राम पद नेहू* = राम के चरणों में प्रेम नहीं, *तिन्ह कहँ सुखद हास रस एहू* = उनके लिये इस कविता में सुखद हास्य रस है, *भाषा भनिति* = हिंदी भाषा में यह कविता है, *भोरि मति मोरी* = मेरी बुद्धि कम है, *हँसिबे जोग* = लोग हँसेंगे, *हँसे नहिं खोरी* = इसलिये हँसने में उनका दोष नहीं है।

तुलसीदास जी कहते हैं कि खल स्वभाव के लोग हमारी रचना का उपहास करके मजा लेंगे। इससे हमारा हित ही है, कैसे भी खलों को प्रसन्नता तो होगी ही। जैसे कौआ कहता है कोयल का कंठ कठोर है, बगुला हंस पर हँसता है, मेढ़क पपीहा का उपहास करता है, वैसे ही दुष्ट स्वभाव के लोग निर्मल वाणी पर हँसते हैं। जिन्हें लौकिक रचना में रस आता है, जिन्हें राम चरणों में प्रेम नहीं, उनके लिये इस कविता में सुखद हास्य रस है। मेरी बुद्धि कम है, कविता भी हिन्दी भाषा में है, तो लोग हँसेंगे। हँसने वालों का दोष नहीं है।

जिन्हें राम में प्रेम है उन्हें मीठी, अन्य को फीकी लगेगी

प्रभु पद प्रीति न सामुझि नीकी। तिन्हहि कथा सुनि लागिहि फीकी ॥9:5॥
हरि हर पद रति मति न कुतरकी। तिन्ह कहँ मधुर कथा रघुबर की ॥9:6॥
राम भगति भूषित जियँ जानी। सुनिहहिं सुजन सराहि सुबानी ॥9:7॥

प्रभु पद प्रीति = प्रभु राम के चरणों में प्रेम नहीं, *न सामुझि नीकी* = न ठीक समझ है, *तिन्हहि कथा सुनि लागिहि फीकी* = उन्हें यह कथा सुनकर फीकी लगेगी, *हरि हर पद रति* = राम व शंकर के चरणों में जिन्हें प्रेम है, *मति न कुतरकी* = मन में कुतर्क नहीं है, *तिन्ह कहँ मधुर कथा रघुबर की* = उन्हें श्रीराम की यह कथा मीठी लगेगी, *राम भगति भूषित* = यह कथा राम की

भक्ति से शोभित है, *जियँ जानी* = ऐसा मन में समझकर, *सुनिहहिं सुजन सराहि सुबानी* = सज्जन लोग इसे सुनकर सुंदर वाणी से प्रशंसा करेंगे।

यदि श्रीराम के चरणों में प्रेम है, शंकर जी से प्रेम है, बुद्धि में कुतर्क नहीं है, तो यह राम-कथा सुनकर मीठी लगेगी, अन्यथा फीकी लगेगी। यह कविता राम की भक्ति से परिपूर्ण है, ऐसा समझने वाले सज्जन लोग, इसे सुनकर सुन्दर वाणी से प्रशंसा करेंगे।

7. इसमें 'राम' नाम पिरोया है यही इसका एकमात्र गुण है

(दोहा 9 से 13)

सुंदर मोतियों में बहुत बारीकी से छेद करके उसमें कारीगर धागा पिरोकर माला बना देते हैं। उस माला को लोग गले में पहनते हैं, मोतियों की सुंदरता दिखती है, पर सबमें धागा ही पिरोया रहता है। तुलसीदास जी कहते हैं कि इस ग्रंथ में जितनी भी कविता है, दोहे, चौपाइयाँ, छंद, अलंकार हैं वे सब मोतियों के समान हैं, उनमें बहुत सावधानी से छेद करके, ताकि उनकी सुंदरता व काव्यात्मकता बनी रहे, राम चरित्रों को पिरो दिया है। इसमें पिरोये गये राम नाम का, उनके चरित्रों का ही महत्त्व है, उसी पर सब ध्यान दें, वही इस ग्रंथ का मुख्य आधार है। इस सुंदर रामचरितमानस की माला को लोग हृदय में धारण करें मायने इसका नियमित पाठ करें, उसमें लिखी बातों को समझकर हृदय में धारण करें, व्यावहारिक जीवन में अपनायें फिर देखें जीवन में प्रेम ही प्रेम आ जायेगा। इस प्रेम की सुंदरता चारों तरफ फैलेगी।

मुझे कविता लिखना नहीं आता, फिर भी लोग मेरी रचना सुनेंगे

कबि न होउँ नहिं बचन प्रबीनू। सकल कला सब बिद्या हीनू ॥9:8॥
आखर अरथ अलंकृति नाना। छंद प्रबंध अनेक बिधाना ॥9:9॥
भाव भेद रस भेद अपारा। कबित दोष गुन बिबिध प्रकारा ॥9:10॥
कबित बिबेक एक नहिं मोरें। सत्य कहउँ लिखि कागद कोरें ॥9:11॥

कबि न होउँ नहिं बचन प्रबीनू = मैं न तो कवि हूँ न वाक्य रचना में कुशल हूँ, *सकल कला सब विद्या हीनू* = सब कलाओं व सभी तरह की विद्या से रहित हूँ, *आखर अरथ अलंकृति नाना* = काव्य रचना के लिये शब्द अर्थ अलंकार तरह-

तरह के होते हैं, *छंद प्रबंध अनेक बिधाना*= छंद व उनकी रचना के अनेक नियम हैं, *भाव भेद रस भेद अपारा*= भावों के प्रकार व रसों के प्रकार बहुत से हैं, *कबित दोष गुन बिबिध प्रकारा*= कविता के गुण व दोष बहुत प्रकार के हैं, *कबित बिबेक एक नहिं मोरें*= काव्य संबंधी एक भी बात का ज्ञान मुझमें नहीं है, *सत्य कहऊँ लिखि कागद कोरें*= सत्य कहता हूँ कोरे कागज में लिखकर यानि शपथ पूर्वक।

भनिति मोरि सब गुन रहित बिस्व बिदित गुन एक ।
सो बिचारि सुनिहहिं सुमति जिन्ह कें बिमल बिबेक ॥दोहा 9॥

भनिति मोर सब गुन रहित= मेरी कविता में कोई गुण नहीं है, *बिस्व बिदित गुन एक*= पर इसमें विश्व प्रसिद्ध एक गुण है, *सो बिचारि*= उसे ही समझकर, *सुनिहहिं सुमति जिन्ह कें बिमल बिबेक*= अच्छी बुद्धि व निर्मल ज्ञान वाले लोग इसे सुनेंगे।

तुलसीदास जी कहते हैं कि काव्य रचना करने के लिये शब्दों का ज्ञान, तरह-तरह के अलंकारों का अभ्यास, भावों व रसों की समझ, छंदों की रचना के नियम, कविता के गुण-दोष इत्यादि की जानकारी होनी चाहिये। परन्तु मैं तो न कवि हूँ, न वाक्य रचना में कुशल हूँ, न मुझमें कला है न विद्या है। मैं कोरे कागज पर लिखकर शपथपूर्वक कहता हूँ कि काव्य संबंधी एक भी ज्ञान मुझमें नहीं है। मेरी कविता में कोई गुण नहीं है, फिर भी इसे अच्छी बुद्धि वाले सुनेंगे, क्योंकि संसार में प्रसिद्ध एक गुण इसमें है, वह क्या है? अगली चौपाई में वर्णन करते हैं।

तुलसीदास जी सर्वगुण संपन्न हैं उनकी यह भावोक्ति निरहंकारिता का सूचक है। इतने महान् साहित्य रचना के लिये व्यक्ति को कैसे अपने आप को खाली कर प्रभु को समर्पित करना होता है, यह बात यहाँ समझने की है। प्रभु में समर्पण के बाद सब गुण व कला स्वयं प्रगट हो जाते हैं। इन सब बातों के गंभीर भावों को, उनके भीतर छिपे रहस्यों से शिक्षा लेने की जरूरत है। श्रीरामचरितमानस में काव्य कला के सभी गुण हैं।

क्योंकि इसमें पवित्र राम नाम है जो वेदों का सार है

एहि महँ रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुरान श्रुति सारा ॥10:1॥
मंगल भवन अमंगल हारी। उमा सहित जेहि जपत पुरारी ॥10:2॥

एहि महँ रघुपति नाम उदारा = इसमें राम का नाम है जो श्रेष्ठ है, *अति पावन* = जो अत्यंत पवित्र है, *पुरान श्रुति सारा* = जो पुराणों व उपनिषदों का सार है, *मंगल भवन* = यह मंगल प्रदान करने वाला, *अमंगल हारी* = अमंगल दूर करने वाला है, *उमा सहित जेहि जपत पुरारी* = पार्वती जी सहित जिसे शंकर जी जपते हैं।

राम का अवतार कैसे हुआ, उन्होंने लीलायें कैसे कीं, उनके चरित्र क्या हैं, इन सबका वर्णन व स्मरण भी राम के नाम का जप ही है। चाहे राम का नाम कहो, चाहे चरित्र कहो, चाहे महिमा कहो, चाहे तत्त्व कहो, ये सब एक ही बात है। नाम में पवित्रता की बात क्या है? पवित्रता यह है कि जो नाम जपता है उसके अंदर के विकार दूर होते हैं, चित्त शुद्ध होता रहता है। विकार दूर होने का प्रमाण क्या है? मन में शांति आना, संतोष का भाव आना, भय चिंतायें आदि दूर होना। जब चित्त शुद्ध होगा तो अमंगल समाप्त हो जायेंगे व सब मंगल होने लगेगा। अमंगल में दु:ख है, मंगल में सुख है। इस ग्रंथ का नियमित पाठ करके व्यक्ति स्वयं इन परिवर्तनों का अनुभव कर सकता है।

माहात्म्य को ध्यान रखकर पाठ करें

राम नाम इतना महिमावान है कि भगवान् शिव स्वयं माँ पार्वती के साथ राम राम जपते रहते हैं। अपने शास्त्रों में बार-बार कहा गया है कि माहात्म्य को ध्यान में रखते हुए ही आध्यात्मिक साधना, पूजा, पाठ, ग्रंथों का अध्ययन करें। महिमा को ध्यान में रखकर पढ़ा हुआ ग्रंथ भीतर रुकता है। यदि बेकार समझकर ग्रंथ को पढ़ रहे हैं तो उसका लाभदायी फल प्राप्त नहीं होगा।

राम नाम से ही कविता की सुंदरता है

भनिति बिचित्र सुकबि कृत जोऊ। राम नाम बिनु सोह न सोऊ ॥10:3॥
बिधुबदनी सब भाँति सँवारी। सोह न बसन बिना बर नारी ॥10:4॥
सब गुन रहित कुकबि कृत बानी। राम नाम जस अंकित जानी ॥10:5॥
सादर कहहिं सुनहिं बुध ताही। मधुकर सरिस संत गुनग्राही ॥10:6॥

भनिति बिचित्र= कोई कविता बहुत अच्छी है, *सुकबि कृत जोऊ*= अच्छे कवि ने रचना की है, *राम नाम बिनु* = बिना राम नाम के, *सोह न सोऊ* = वह भी शोभा नहीं देती है, *बिधुबदनी सब भाँति सँवारी*= चन्द्रमा के समान मुख वाली सभी तरह से सुसज्जित, *सोह न बसन बिना बर नारी* = वस्त्र के बिना वह सुंदर स्त्री भी शोभायमान नहीं होती, *सब गुन रहित* = जिस रचना में एक भी गुण नहीं है, *कुकबि कृत बानी* = खराब कवि की रचना भी, *राम नाम जस अंकित जानी* = यदि उसमें रामजी के चरित्रों का वर्णन है, *सादर कहहिं सुनहिं बुध ताही* = तो बुद्धिमान लोग उसे आदरपूर्वक कहते व सुनते हैं, *मधुकर सरिस संत गुनग्राही* = भौरा के समान संत गुण ग्रहण करते हैं।

राम कृपा से इस रचना में काव्य के सब गुण आ गये

जदपि कबित रस एकउ नाहीं। राम प्रताप प्रगट एहि माहीं ॥10:7॥

जदपि= यद्यपि, *कबित रस*= कविता का रस, *एकउ नाहीं*= एक भी नहीं है, *राम प्रताप*= राम जी के प्रताप से, *प्रगट एहि माहीं*= इसमें कविता के गुण प्रकट हो गये हैं।

तुलसीदास जी ने जानबूझकर छंद-अलंकारों का वर्णन नहीं किया, काव्य के गुण लाने के पीछे नहीं पड़े, राम के चरित्र को ही महत्त्व दिया। उनके कहने का आशय है कि श्रीराम के चरित्र स्वयं इतने उल्लासदायी हैं कि हृदय में अपने आप कविता बन जाती है।

राम के गुणों का पान करें, कविता के दोष न देखें

सोइ भरोस मोरें मन आवा। केहिं न सुसंग बड़प्पनु पावा ॥10: 8॥

सोइ भरोस मोरें मन आवा= यही भरोसा मेरे मन में आया कि, *केहिं न सुसंग बड़प्पनु पावा*= ऐसा कौन है जिसने सत्संग से बड़ाई न पाई हो।

तुलसीदास जी कहते हैं कि मेरे मन में यही एक भरोसा है कि भले संग से सबको बड़प्पन मिलता है। इस ग्रंथ में प्रभु राम के चरित्रों व उनके नाम का ही महत्त्व है, वही गुणकारी है न कि कविता। इस प्रसंग मे पाँच उदाहरणों से

समझाते हैं कि कैसे कविता के दोष न देखकर इसके राम नाम के गुण का ही लोग पान करके अपना कल्याण करें।

1. जैसे धुआँ अगर के साथ सुगंधित हो जाता है

धूमउ तजइ सहज करुआई। अगरु प्रसंग सुगंध बसाई ॥10: 09॥
भनिति भदेस बस्तु भलि बरनी । राम कथा जग मंगल करनी ॥10:10॥

धूमउ तजइ सहज करुआई = धुँआ भी त्याग देता है अपने सहज कड़वापन को, *अगरु प्रसंग* = अगर के साथ मिलकर, *सुगंध बसाई* = उसमें सुगंध आ जाती है, *भनिति भदेस* = इसी प्रकार हमारी कविता अच्छी नहीं है, *बस्तु भलि बरनी* = पर उसमें अच्छी बातों का वर्णन है, *राम कथा जग मंगल करनी* = राम कथा का वर्णन है जिससे यह रचना भी संसार का मंगल करने वाली बन गयी।

धुएँ का स्वभाव है कड़वापन। पर वह जब सुगंधित अगरबत्ती के साथ हो जाता है तो उसका कड़वापन दूर हो जाता है, वही धुआँ हमें सुगंधित लगने लगता है। इसी प्रकार हमारी कविता अच्छी नहीं है परंतु इसमें श्रीराम के चरित्रों के वर्णन के कारण यह संसार का मंगल करने वाली बन गयी।

2. जैसे गंगा की टेढ़ी धार पवित्र जल से पावन है

मंगल करनि कलिमल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की ।
गति कूर कबिता सरित की ज्यों सरित पावन पाथ की ॥छंद॥

मंगल करनि = यह मंगल प्रदान करनेवाली है, *कलिमल हरनि* = कलियुग के मल को साफ करने वाली है, *तुलसी कथा रघुनाथ की* = तुलसीदास की यह राम कथा, *गति कूर कबिता सरित की* = नदी की धार की तरह यह कविता टेढ़ी मेढ़ी है, *ज्यों सरित पावन पाथ की* = परंतु गंगाजी के जल के समान पवित्र है।

गंगाजी की धारा टेढ़ी-मेढ़ी है परंतु उसमें पवित्र जल होने के कारण लोग उसके टेढ़ेपन का विचार नहीं कर उसमें स्नान कर पवित्र होते हैं। वैसे ही हमारी रचना भी टेढ़ी-मेढ़ी है परंतु इसमें राम का पवित्र नाम भरा हुआ है। इसलिये यह कथा भी गंगा की तरह कलियुग के मल को दूर करने वाली व मंगल करने वाली है।

3. जैसे श्मशान की भभूति शंकर के संग पवित्र हो जाती है

प्रभु सुजस संगति भनिति भलि होइहि सुजन मन भावनी ।
भव अंग भूति मसान की सुमिरत सुहावनि पावनी ॥छंद ॥

प्रभु सुजस संगति = प्रभु राम के यश के संग के कारण, *भनिति भलि होइहि* = यह रचना अच्छी हो जायेगी, *सुजन मन भावनी* = अच्छे लोगों के मन को भाने लगेगी, *भव अंग भूति मसान की* = शंकरजी के शरीर में जब श्मशान की भभूति लग जाती है, *सुमिरत सुहावनि पावनी* = वह भभूति भी सुंदर लगने लगती है, उसके स्मरण करते ही हम पवित्र हो जाते हैं।

श्मशान की भभूति अपवित्र है पर उसे जब शंकर जी अपने शरीर में लगा लेते हैं तो वह भभूति भी परम पवित्र करने वाली बन जाती है। उसके स्मरण मात्र से ही लोगों का कल्याण हो जाता है। मेरी यह सामान्य रचना भी राम कथा की संगति के कारण अच्छी होकर अच्छे लोगों के मन को भाने लगेगी।

4. जैसे सामान्य लकड़ी चंदन के साथ खुशबू देने लगती है

प्रिय लागिहि अति सबहि मम भनिति राम जस संग ।
दारु बिचारु कि करइ कोउ बंदिअ मलय प्रसंग ॥दो 10 क॥

प्रिय लागिहि अति = अत्यंत अच्छी लगेगी, *सबहि मम भनिति* = सबको मेरी यह कविता, *राम जस संग* = राम के यश के संग से, *दारु बिचारु कि करइ कोउ* = उस लकड़ी के बारे में कोई विचार नहीं करता है, *बंदिअ* = उसे चंदन ही मानता है, *मलय प्रसंग* = मलयाचल से आई लकड़ी को।

मलायाचल के चंदन के पेड़ों में बहुत खुशबू रहती है, जिसके कारण जो अन्य पेड़ होते हैं उनमें भी उसकी सुगंध आ जाती है। लोग उसे भी चंदन जैसा समझने लगते हैं। मेरी कविता भी राम के यश के वर्णन के कारण लोगों को प्रिय लगेगी।

5. जैसे काली गाय देखने में कम अच्छी पर दूध गुणकारी

स्याम सुरभि पय बिसद अति गुनद करहिं सब पान ।
गिरा ग्राम्य सिय राम जस गावहिं सुनहिं सुजान ॥दो 10 ख॥

स्याम सुरभि पय = काली गाय का दूध, *बिसद अति* = बहुत गुणकारी होता है, *गुनद करहिं सब पान* = गुणों के कारण सब लोग उसे पीते हैं, *गिरा ग्राम्य* = उसी तरह हिंदी भाषा में, *सिय राम जस* = सीता व राम के यश का वर्णन है, *गावहिं सुनहिं सुजान* = बुद्धिमान लोग सुनेंगे व सुनायेंगे।

काली गाय जो सुरभि कहलाती है कहने को तो काली है, कम अच्छी दिखती है, पर उसका दूध अत्यंत गुणकारी होता है। लोग गाय की सुंदरता न देखकर उसके गुणकारी दूध को पीते हैं। हमारी कविता भी बोलचाल की ग्रामीण हिंदी भाषा में है परंतु इसमें प्रभु राम के नाम, उनके यश का वर्णन है, इसलिये बुद्धिमान व्यक्ति कविता के दोष न देखकर इसे आदरपूर्वक पढ़ेंगे, सुनेंगे व सुनायेंगे।

कविता की सुंदरता कवि में नहीं, लोगों के पढ़ने में है

मनि मानिक मुकुता छबि जैसी। अहि गिरि गज सिर सोह न तैसी ॥11:1॥
नृप किरीट तरुनी तनु पाई। लहहिं सकल सोभा अधिकाई ॥11:2॥
तैसेहिं सुकबि कबित बुध कहहीं। उपजहिं अनत अनत छबि लहहीं ॥11:3॥

मनि मानिक मुकुता छबि जैसी = मणि; माणिक व मोती की जैसी सुंदर छबि है, *अहि गिरि गज सिर सोह न तैसी* = वह सर्प; पर्वत या हाथी के सिर पर वैसी शोभा नहीं पाती है, *नृप किरीट तरुनी तनु पाई* = राजा के मुकुट व युवती के शरीर में, *लहहिं सकल सोभा अधिकाई* = ही ये सब अधिक शोभा को प्राप्त होते हैं, *तैसेहिं सुकबि कबित बुध कहहीं* = बुद्धिमान लोग कहते हैं कि सुकवि की कविता भी, *उपजहिं अनत* = उत्पन्न कहीं और होती है, *अनत छबि लहहीं* = शोभा कहीं और पाती है।

मणि सर्प से प्राप्त होती है, माणिक पर्वत से मिलता है, मोती हाथी के मस्तक में रहती है। परंतु इनकी शोभा उत्पत्ति स्थल पर नहीं है, दूसरी जगह है। मणि की शोभा राजा के मुकुट में, माणिक्य राजा के गले की माला में, मुक्ता स्त्रियों के आभूषणों में शोभा पाते हैं। इसी तरह कवि के लेखन के द्वारा काव्य रचना उत्पन्न होती है, लेकिन इसकी शोभा तो समाज में है जब लोग उसका आदर करें, उसे सुनें, सुनावें।

सरस्वती जी का स्मरण, आगमन व रामचरित्रों में उनका स्नान

भगति हेतु बिधि भवन बिहाई। सुमिरत सारद आवति धाई ॥11:4।।
राम चरित सर बिनु अन्हवाएँ। सो श्रम जाइ न कोटि उपाएँ ॥11:5॥
कबि कोबिद अस हृदयँ बिचारी। गावहिं हरि जस कलि मल हारी ॥11:6॥
कीन्हें प्राकृत जन गुन गाना। सिर धुनि गिरा लगत पछिताना ॥11:7॥

भगति हेतु =भक्ति के लिये, *बिधि भवन बिहाई* = ब्रह्मा जी के घर को छोड़कर, *सुमिरत* = कवि के स्मरण करने से, *सारद आवति धाई* = सरस्वती जी दौड़ी चली आती हैं, *राम चरित सर* = राम के चरित्र के सरोवर में, *बिनु अन्हवाएँ* = बिना स्नान कराये, *सो श्रम जाइ* = सरस्वती जी के दौड़कर आने की वह थकान दूर नहीं होती है, *न कोटि उपाएँ* = चाहे दूसरे करोड़ उपाय कर लें, *कबि कोबिद* = कवि व पंडित, *अस हृदयँ बिचारी* = अपने हृदय में ऐसा विचार करके, *गावहिं हरि जस* = राम के यश का गान करते हैं, *कलि मल हारी* = जो कलियुग के पाप को दूर करने वाला है, *कीन्हें प्राकृत जन गुन गाना* = संसारी मनुष्यों का गुन गान करने से, *सिर धुनि गिरा लगत पछिताना* = सिर धुनकर सरस्वती जी पछताने लगती हैं।

सरस्वती जी परा रूप धारण किये हुए हमारे व्यक्तित्व के अंदर छिपी हुई गहराई में रहती हैं। जब स्मरण करते हैं तो वे पश्यन्ति रूप धारण कर हमारे मन-बुद्धि में भाव उत्पन्न करती हैं। वे मध्यमा रूप में भावों सें शब्द उत्पन्न करती हैं। फिर बैखरी रूप धारण कर कण्ठ से शब्दों के रूप में निकलती हैं। इस प्रसंग में तुलसीदास जी कहते हैं कि स्मरण करते ही सरस्वती जी ब्रह्म लोक से दौड़ी आती हैं। कवि यदि उनका उपयोग राम की यशगाथा गाने के लिये न करके साधारण मनुष्यों के गुण-गाण करने के लिये करता है, तो वे पछताने लगती हैं, अपना सिर धुनने लगती हैं कि कहाँ से हम इसके बुलाने पर आ गये। उनकी थकान श्रीराम चरित्रों का वर्णन करने यानि उसमें स्नान कराने से ही दूर होती है।

सरस्वती के विचारों की वर्षा से कविता के मोती बने

हृदय सिंधु मति सीप समाना। स्वाति सारदा कहहिं सुजाना ॥11:8॥
जौं बरसइ बर बारि बिचारू। होहिं कबित मुकुतामनि चारू ॥11:9॥

हृदय सिंधु = हृदय समुद्र के समान है, *मति सीप समाना* = बुद्धि सीप के समान है, *स्वाति सारदा* = सरस्वती जी स्वाति नक्षत्र के समान हैं, *कहहिं सुजाना* = ऐसा बुद्धिमान लोग कहते हैं, *जौं बरसइ बर बारि बिचारू* = यदि इसमें श्रेष्ठ विचार जो जल के समान है की वर्षा होती है, *होहिं कबित* = तो कविता बन जाती है, *मुकुतामनि चारू* = मोती के समान सुंदर।

हृदय बहुत व्यापक तत्त्व है जिसकी तुलना समुद्र से की है। बुद्धि सीप के समान है। सरस्वती जी को स्वाति नक्षत्र के जल की वर्षा के समान कहते हैं। स्मरण करने से जब सरस्वती जी आती हैं, तो सुंदर विचार रूपी जल हृदय में बरसता है। हृदय में स्थित बुद्धि, कविता की रचना करती है, कहते हैं मानो सीप ने मोती का रूप ले लिया हो। बुद्धि हृदय में वास करती है, जब उसे बाहर के जगत से संपर्क कराना होता है तो वह मस्तिष्क से अपना संबंध जोड़ती है, इसलिये लोग मानते हैं कि बुद्धि मस्तिष्क में रहती है।

उन मोतियों में रामचरित्र का धागा पिरोकर माला तैयार की है

जुगुति बेधि पुनि पोहिअहिं रामचरित बर ताग ।
पहिरहिं सज्जन बिमल उर सोभा अति अनुराग ॥दोहा 11॥

जुगुति बेधि = उस मोती के समान कविता में युक्ति से छेद करके, *पुनि पोहिअहिं रामचरित बर ताग* = उसमें फिर राम के सुंदर चरित्रों का धागा पिरोते हैं, *पहिरहिं सज्जन बिमल उर* = इस माला को सज्जन अपने निर्मल हृदय में पहनते हैं, *सोभा अति अनुराग* = जिससे अत्यधिक प्रेम की शोभा प्राप्त होती है।

सरस्वती जी की कृपा से सुंदर विचारों के मोती बने, उन मोतियों में युक्ति से छेद कर दिया। अब रामचरित्रों का सुंदर धागा लिया, इस धागे में छेद किये हुए मोतियों को पिरोकर माला बना दी। यह माला ही श्रीरामचरितमानस है। इस ग्रंथ में चौपाइयाँ, दोहे, सोरठे, छंद, अलंकार इत्यादि मोती के समान हैं, जिनमें तुलसीदास जी ने युक्ति से छेद किया है ताकि काव्यात्मकता बनी रहे, फिर राम के सुंदर चरित्रों को उनमें धागे के समान पिरो दिया है। इस सुंदर माला को अच्छे लोग अपने निर्मल हृदय में

धारण करते हैं जिससे अत्यधिक प्रेम की प्राप्ति होती है। आशय स्पष्ट है श्रीरामचरितमानस का नियमित पाठ करें, उसमें लिखी बातों को समझकर हृदय में धारण करें, व्यावहारिक जीवन में अपनायें फिर देखें जीवन में प्रेम ही प्रेम आ जायेगा। तुलसीदास जी जिस भाव से जो बात कहते हैं उसे ध्यान दें तो बात स्पष्ट हो जायेगी। इतनी सुंदर बात वे कितनी सफलता से बोलते हैं यही उनकी महिमा है।

कलियुग में कर्म कौआ जैसा, पर वेष हंस के समान

जे जनमे कलिकाल कराला। करतब बायस बेष मराला ॥12:1॥
चलत कुपंथ बेद मग छाँड़े। कपट कलेवर कलि मल भाँड़े ॥12:2॥
बंचक भगत कहाइ राम के। किंकर कंचन कोह काम के ॥12:3॥

जे जनमे कलिकाल कराला = जिनका जन्म घोर कलियुग में हुआ है, *करतब बायस* = उनके कार्य कौआ के समान हैं, *बेष मराला* = पर वेष हंस के समान रखे रहते हैं, *चलत कुपंथ बेद मग छाँड़े* = वे वेद मार्ग पर न चलकर गलत रास्ते पर चलते हैं, *कपट कलेवर* = ये कपट की मूर्ति हैं, *कलि मल भाँड़े* = कलियुग के पाप से भरे हुए घड़े हैं, *बंचक* = ये ठग हैं, *भगत कहाइ राम के* = अपने को राम का भक्त कहते हैं, *किंकर कंचन कोह काम के* = पर ये सेवक हैं धन, क्रोध व काम के।

घोर कालियुग में जन्म लेने वाले मनुष्यों के कर्म तो कौए के समान रहते हैं, परन्तु ऊपरी वेष हँस के समान, सफेद, साफ-सुथरा रखते हैं। वे वेदों द्वारा बनाये हुए मार्ग पर न चलकर गलत रास्ते पर चलते हैं। कलियुग के पाप से भरे हुए ये कपटी व ठग हैं। कहते तो हैं अपने को राम का भक्त, परन्तु प्रेम करते हैं धन से, क्रोध से, तरह-तरह की कामनाओं से।

मैं भी उन्हीं में से, अपने अवगुण को संक्षेप में कहा है

तिन्ह महँ प्रथम रेख जग मोरी। धींग धरमध्वज धंधक धोरी ॥12:4 ॥
जौं अपने अवगुन सब कहऊँ। बाढ़ई कथा पार नहिं लहऊँ ॥12:5॥
ताते मैं अति अलप बखाने। थोरे महुँ जानिहहिं सयाने ॥12:6॥

तिन्ह महँ प्रथम रेख जग मोरी = ऐसे लोगों में सबसे पहले मेरी गिनती है, *धींग धरमध्वज धंधक धोरी* = धर्म का झूठा झंडा लिये घूमता रहता हूँ, *जौं अपने अवगुन सब कहऊँ* = यदि मैं अपने सारे अवगुण कहूँ तो, *बाढ़ई कथा पार नहिं लहऊँ* = कथा बहुत बड़ी हो जायेगी पूरी नहीं हो पायेगी, *ताते मैं अति अलप बखाने* = इसलिये मैंने कम शब्दों में कहा है, *थोरे महुँ जानिहहिं सयाने* = कम शब्दों में ही बुद्धिमान समझ जायेंगे।

कलियुग के इस प्रकार के लोगों में मैं भी हूँ, मैं तो सबसे आगे हूँ, क्योंकि मैं धर्म का झूठा झंडा लिये घूमता रहता हूँ। मैं अपने सारे अवगुणों का वर्णन करूँ तो कथा लम्बी हो जायेगी, इसलिये संक्षेप में कह दिया है। कम शब्दों में ही बुद्धिमान् समझ जायेंगे।

मेरी विनती है भगवान् की कथा में दोष न निकालें

समुझि बिबिधि बिधि बिनती मोरी। कोउ न कथा सुनि देइहि खोरी ॥12:7॥
एतेहु पर करिहहिं जे असंका। मोहि ते अधिक ते जड़ मति रंका ॥12:8॥

समुझि बिबिधि बिधि बिनती मोरी = मेरी अनेक प्रकार से विनती को समझकर, *कोउ न कथा सुनि देइहि खोरी* = कोई भी इस कथा को सुनकर दोष न दे, *एतेहु पर करिहहिं जे असंका* = इतने पर भी जो शंका करेंगे, *मोहि ते अधिक ते* = तो वे मुझसे भी अधिक, *जड़ मति रंका* = मूर्ख व बुद्धि के कंगाल हैं।

तुलसीदासजी हाथ जोड़कर बार-बार बिनती करते हैं कि यह भगवान् की कथा है, इसका सबको आदर करना चाहिये, इस कथा को लेकर हमें दाेष न दें। इसके बावजूद भी जो शंका करेंगे वे मुझसे भी ज्यादा मूर्ख हैं।

भगवान् की कथा इतनी ही नहीं है, यह भाव रखें

कबि न होउँ नहिं चतुर कहावउँ। मति अनुरूप राम गुन गावउँ ॥12:9॥
कहँ रघुपति के चरित अपारा। कहँ मति मोरि निरत संसारा ॥12:10॥
जेहिं मारुत गिरि मेरु उड़ाहीं। कहहु तूल केहि लेखे माहीं ॥12:11॥
समुझत अमित राम प्रभुताई। करत कथा मन अति कदराई ॥12:12॥

कबि न होउँ = मैं कवि नहीं हूँ, *नहिं चतुर कहावउँ* = न चतुर कहलाता हूँ, *मति अनुरूप* = अपनी बुद्धि के अनुसार, *राम गुन गावउँ* = राम जी के गुण गाता हूँ, *कहँ रघुपति के चरित अपारा* = कहाँ तो श्रीरघुनाथजी के अपार चरित्र, *कहँ मति मोरि* = कहाँ मेरी बुद्धि, *निरत संसारा* = जो संसार में आसक्त है, *जेहिं मारुत गिरि मेरु उड़ाहीं* = जिस हवा से सुमेरू जैसे पर्वत उड़ जाते हैं, *कहहु तूल केहि लेखे माहीं* = कहिये तो उसके सामने रुई किस गिनती में है? *समुझत अमित राम प्रभुताई* = श्रीराम की अपार महिमा को समझकर, *करत कथा मन अति कदराई* = कथा लिखने में मेरा मन बहुत हिचकता है।

सारद सेस महेस बिधि आगम निगम पुरान ।
नेति नेति कहि जासु गुन करहिं निरंतर गान ॥दोहा 12॥

सारद सेस महेस बिधि = सरस्वती जी; शेष नाग; शंकर जी; ब्रह्मा जी; *आगम निगम पुरान* = शास्त्र; वेद व पुराण, *नेति नेति कहि* = इतना ही नहीं, इतना ही नहीं कहकर, *जासु गुन करहिं निरंतर गान* = जिनके गुण का सदा गुणगान किया करते हैं।

सरस्वती जी, शेषनाग, शंकर जी, ब्रह्माजी, शास्त्र, वेद व पुराण भगवान के गुणों की कथा कहने के बाद कहते हैं कि यह इतनी ही नहीं है, जितनी हमारी बुद्धि में आयी कह दिया। तुलसीदास जी कहते हैं, राम के चरित्र अपार हैं, मेरी बुद्धि बहुत कम है, क्योंकि यह तो संसार में आसक्त है, फिर भी अपनी बुद्धि के अनुसार कथा कहता हूँ। श्रीराम की महिमा तो उस वायु के समान है, जिसके प्रभाव से सुमेरू जैसा पर्वत उड़ जाये और मैं, उस वायु के सामने रूई के समान हूँ, इतना फर्क है। इन सब बातों पर विचार करने के बाद कथा लिखने में मेरा मन बहुत सकुचा रहा है। आशय है कि हमें रामायण या अन्य धार्मिक, आध्यात्मिक ग्रंथ पढ़ने के बाद यह अहंकार नहीं आये कि हमें सब आता है। ज्ञान अपार है, बुद्धि में जितना समाया उतना हमें पता है।

चरित्रों का वर्णन भजन है, अतः सबने वर्णन किया

सब जानत प्रभु प्रभुता सोई। तदपि कहें बिनु रहा न कोई ॥13:1॥
तहाँ बेद अस कारन राखा। भजन प्रभाउ भाँति बहु भाषा ॥13:2॥

सब जानत = सभी लोग जानते थे, *प्रभु प्रभुता सोई* = प्रभु की उस महानता को, *तदपि कहें बिनु* = फिर भी महिमा बिना कहे, *रहा न कोई* = कोई न रह सका, *तहाँ बेद अस कारन राखा* = वेदों मे इसका कारण बताया गया है, *भजन प्रभाउ भाँति बहु भाषा* = भजन का बहुत अधिक प्रभाव है इसे अनेक प्रकार से समझाया है।

सब लोगों ने वर्णन इसलिये नहीं किया कि हमसे पहले वाले ठीक से कह नहीं पाये तो हम कह देंगे। इसकी वजह वेदों में बतायी है कि भगवान् के चरित्रों का वर्णन करना एक तरह से भजन है। वर्णन करने वाले को बहुत लाभ प्राप्त होता है। उन बातों को ध्यान में रखते हुए सब कवियों ने भगवान् के दिव्य चरित्रों का वर्णन किया। गोस्वामीजी इस बात को जानते थे, तभी उन्होंने यह मार्ग पकड़ा।

राम के 9 निर्गुण लक्षण, इन्हीं राम ने अवतार लिया है

एक अनीह अरूप अनामा। अज सच्चिदानंद पर धामा ॥13:3॥
ब्यापक बिस्वरूप भगवाना। तेहिं धरि देह चरित कृत नाना ॥13:4॥
सो केवल भगतन हित लागी। परम कृपाल प्रनत अनुरागी ॥13:5॥

1. एक = वे एक हैं, *2. अनीह* = कोई कामना नहीं, *3. अरूप* = कोई रूप नहीं, *4. अनामा* = कोई नाम नहीं, *5. अज* = अजन्मा हैं, *6. सच्चिदानंद* = जो सत्; चित्; आनंदस्वरूप हैं, *7. पर धामा* = परमधाम हैं, *8. ब्यापक* = सर्वव्यापक हैं, *9. बिस्वरूप* = सारा जगत ही उनका रूप है, *भगवाना तेहिं* = ऐसे लक्षणों वाले भगवान, *धरि देह चरित कृत नाना* = शरीर धारण करके बहुत से चरित्र करते हैं, *सो केवल भगतन हित लागी* = वे केवल भक्तों के हित के लिये, *परम कृपाल* = बहुत कृपालु हैं, *प्रनत अनुरागी* = शरण में आये हुए के प्रेमी हैं।

रामचरितमानस में राम के चरित्रों व उनके नाम का ही वर्णन किया गया है। तुलसीदास जी इस प्रसंग में राम के 9 निर्गुण लक्षणों का वर्णन करके बताते हैं कि ये राम परब्रह्म ही हैं जिन्होंने भक्तों के हित के लिये महाराज दशरथ के यहाँ अवतार लिया है। उनके चरित्रों का वर्णन ही श्रीरामचरितमानस में किया है।

राम एक हैं, वेदांत में इसे अद्वैत कहते हैं

संसार में देखें तो कोई भी वस्तु एक नहीं मिलेगी, दो, तीन, चार, सौ इत्यादि मिलेंगी। संसार ऐसी विचित्र वस्तु है कि उसमें एक कुछ भी नहीं है। भगवान के अनेक लक्षणों में एक लक्षण है कि वह एक है। वेदांत की भाषा में इसको अद्वैत कहते हैं, तुलसीदास जी ने सरलीकृत करके ''एक'' कह दिया। एक राम की कोई कामना नहीं है। वह शुद्ध चेतन स्वरूप है। कामना तब हो जब दो वस्तुयें हों। शुद्ध चेतना में कामना उत्पन्न ही नहीं होती है।

राम निराकार भी हैं

संसार में जितनी वस्तुयें हैं सबके रूप हैं व अलग-अलग नाम भी हैं। घर में बालक पैदा हो गया एक नया रूप आ गया। फिर उसका एक नाम रख देते हैं। जैसे-जैसे रूप बढ़ते जायेंगे वैसे-वैसे नाम भी बढ़ते जायेंगे। परब्रह्म का कोई रूप नहीं हैं। परमात्मा एक हैं, उनका आकार भी नहीं है, वे निराकार हैं, इसलिये उनका कोई नाम भी नहीं है। जब दो वस्तुयें हो तो नाम की जरूरत है।

राम अजन्मा हैं पर अवतार लेते हैं

राम अजन्मा हैं, वे सदा अपनी सत्ता से विद्यमान हैं। जन्म होता है वस्तुओं का जैसे लोहे से तलवार बना दी। राम भूतकाल में भी थे, वर्तमान में भी हैं, भविष्य में भी रहेंगे। ब्रह्म अवतार लेता है, उनका जन्म नहीं होता।

राम सत्, चित्, आनंदस्वरूप हैं

सत मायने वह सदा है, अनादि, अनंत है। चित् मायने वह चेतना है, कहीं कुछ भी चेतना दिखायी दे वह परमात्मा की ही है। वह आनंद का स्वरूप ही है। आनंद की प्राप्ति परमात्मा से ही हो सकती है।

राम को पाना व्यक्ति का अंतिम लक्ष्य

वे परमधाम हैं उसके बाद कुछ भी नहीं है। यदि कोई अपना विकास करना चाहे तो धीरे-धीरे विकास करते हुए परमात्मा तक पहुँच जाये। उसके बाद का रास्ता ठप्प। इसे कहते हैं परमधाम। राम परमधाम हैं।

राम सब में व्याप्त हैं

समुद्र की तरफ देखो उसमें करोड़ों तरंगें दिखेंगी, उन तरंगों में क्या है? समुद्र का जल ही तो है, तरंगें समुद्र के जल के अतिरिक्त कुछ नहीं हैं। सभी तरंगों में समुद्र का जल व्याप्त है। इसी प्रकार इतने विशाल संसार में परमात्मा ही व्याप्त है। उसके अतिरिक्त कहीं कुछ नहीं। इस लक्षण को कहते हैं सर्वव्यापकता। यह सारा जगत् उन्हीं का रूप है, इसलिये उन्हें विश्वरूप भी कहते हैं।

मनुष्य जैसे राम को सर्वव्यापक कैसे मानें?

प्रश्न है यदि राम मनुष्य जैसे हैं तो सर्वव्यापक कैसे हुए? आप उन्हें मनुष्याकार रूप में स्मरण करो पर सदा याद रखो कि जो सर्वव्यापक तत्त्व है, विश्वरूप है उसी ने मनुष्य का रूप भी धारण किया हुआ है। फिर प्रश्न आता है कि उनकी कोई इच्छा नहीं थी तो शरीर क्यों धारण किये? भक्त लोग जब प्रार्थना करते हैं तो उनके हित के लिये वे मनुष्य बनकर अवतार ले लेते हैं। आज भी भक्त प्रेम से बुलाये वे कोई न कोई रूप रखकर आते हैं, उसे दर्शन देकर अंतर्धान हो जाते हैं। राम के संबंध में ठीक-ठीक ज्ञान पाने के लिये ये सब लक्षण अच्छे से समझकर याद कर लें। रामायण पढ़ते समय इनका ध्यान रखें।

राम के सगुण लक्षण

जेहि जन पर ममता अति छोहू। जेहिं करुना करि कीन्ह न कोहू ॥13:6॥
गई बहोर गरीब नेवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू ॥13:7॥

जेहि जन पर ममता अति छोहू = जो भक्तों को अपना ही मानते हैं व बहुत प्रेम करते हैं, *जेहिं करुना करि* = जिस पर उन्होंने एक बार कृपा कर दी, *कीन्ह न कोहू* = उस पर फिर कभी क्रोध नहीं करते, *गई बहोर* = जाकर वापस आना, *गरीब नेवाजू* = गरीबों पर कृपा करने वाले, *सरल सबल* = सरल व शक्तिमान, *साहिब रघुराजू* = सबके स्वामी राम हैं।

तुलसीदास जी इस प्रसंग में राम के सगुण चरित्रों व गुणों का वर्णन करके बताते हैं कि इन्हीं के बल पर मैं रामकथा कहने जा रहा हूँ।

राम ने जिस पर कृपा की उस पर क्रोध नहीं करते

जो राम की शरण में आया उसके ऊपर कृपा तो करते ही हैं, साथ में राम को ममता भी हो जाती है। वे मानते हैं कि यह मेरा ही है, मेरा ही स्वरूप है। फिर उससे प्रेम भी करने लगते हैं। राम ने यदि एक बार किसी पर कृपा कर दी तो उसकी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले लेते हैं, उसके दुर्गुणों पर क्रोध नहीं करते बल्कि उसे सुधारते रहते हैं।

राम, खोई बुद्धि वापस दिलाने वाले व गरीब नेवाजू हैं

अगर किसी की बुद्धि खो गई है तो भगवान राम उसे वापस दिला देते हैं, यानि बिगड़ी बात को बना देते हैं। *'गरीब नेवाजू'* शब्द उर्दू भाषा से लिया है। गरीब का आशय उस व्यक्ति से है जो कहता है, हे प्रभु हमसे कुछ नहीं बनता है, हम गरीब हैं, हमारा काम सुधारो, तो भगवान श्रीराम उस व्यक्ति को अपनी शरण में लेकर उसका काम बना देते हैं। और जो व्यक्ति कहता है कि हमसे सब काम बनता है, तो प्रभु उससे कहते हैं, ठीक है, तुम सब करते रहो।

राम सबल, सरल हैं व सबके स्वामी हैं

जीवन में हम देखते हैं कि जो सरल होता है वह दुर्बल रहता है, जो सबल होते हैं वे कठोर होते हैं। धनवान व शक्तिमान व्यक्ति आम आदमी की पहुँच से बाहर हो जाता है। श्रीराम ऐसे नहीं हैं, वे शक्तिमान हैं पर साथ में सरल भी हैं। *साहिब* मायने सबका स्वामी। *रघुराजू* मायने रघुवंश में अवतार लेने वाले राम।

राम के गुणों से बल पाकर रामकथा कहूँगा

बुध बरनहिं हरि जस अस जानी। करहिं पुनीत सुफल निज बानी ॥13:8॥
तेहिं बल मैं रघुपति गुन गाथा। कहिहउँ नाइ राम पद माथा ॥13:9॥

बुध बरनहिं हरि जस अस जानी = बुद्धिमान लोग ऐसा समझकर भगवान् के यश का वर्णन करके, *करहिं पुनीत सुफल निज बानी* = अपनी वाणी को पवित्र व अच्छा बनाते हैं, *तेहिं बल* = उसी बल से, *मैं रघुपति गुन गाथा कहिहउँ* = मैं श्रीराम के गुणों की कथा कहूँगा, *नाइ राम पद माथा* = राम के चरणों में सिर नवाकर के।

भगवान् के ये सब लक्षण समझकर बुद्धिमान लोग उनके यश का वर्णन करके अपनी वाणी को पवित्र बनाते हैं। तुलसीदास जी कहते हैं इन्हीं सब बातों के स्मरण से मुझे बल मिल रहा है, इसी बल के आधार पर मैं रामकथा कहूँगा।

8. कवियों व वेदों की वन्दना

(दोहा 13 से 15)

तुलसीदासजी कहते हैं कि श्रीराम कथा को मुनियों व कवियों ने पहले ही गाया है। मुनि वाल्मीकि ने पहले ही सस्कृत में रामायण नाम के ग्रंथ में श्रीरामकथा का वर्णन किया है। वेदव्यास जी ने भी संस्कृत में रामकथा का वर्णन किया है। इनके द्वारा लिखी गयी श्रीरामकथा मेरे लिये पुल का काम करेगी। मैं कोई नयी रचना नहीं कर रहा हूँ, इन सब पूर्व लिखित ग्रंथों के आधार पर ही रामकथा लिखूँगा। सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग, कलियुग के सभी कवियों व चारों वेदों की भी वन्दना करके उनसे आशीर्वाद माँगते हैं।

मुनियों द्वारा लिखी रामकथा मेरे लिये पुल का काम करेगी

मुनिन्ह प्रथम हरि कीरति गाई। तेहिं मग चलत सुगम मोहि भाई॥13:10॥

अति अपार जे सरित बर जौं नृप सेतु कराहिं।
चढ़ि पिपीलिकउ परम लघु बिनु श्रम पारहि जाहिं॥दोहा 13॥

मुनिन्ह प्रथम = मुनियों ने पहले ही, *हरि कीरति गाई* = भगवान् की महिमा कही है, *तेहिं मग चलत* = उसी रास्ते पर चलने में, *सुगम मोहि भाई* = मेरे लिये अत्यंत सरल है।

अति अपार जे सरित बर = अत्यंत विशाल जो श्रेष्ठ नदियाँ हैं, *जौं नृप सेतु कराहिं* = यदि राजा उन पर पुल का निर्माण करा दें, *चढ़ि पिपीलिकउ* = उस पर चढ़कर चीटियाँ भी, *परम लघु* = जो अत्यंत छोटी हैं, *बिनु श्रम पारहि जाहिं* = आसानी से नदियाँ पार कर लेती हैं।

नदी के ऊपर जब राजा पुल बनवा देते हैं तो अत्यंत छोटी चीटियाँ भी पुल के सहारे बिना परिश्रम के नदी पार कर लेती हैं। तुलसीदासजी कहते हैं इसी

प्रकार मुनियों द्वारा लिखित रामकथा मेरे लिये पुल का काम करेगी, उसी के सहारे मैं रामचरित्रों का वर्णन आसानी से कर सकता हूँ।

रामकथा के पुल का निर्माण मैं भी करूँगा

एहि प्रकार बल मनहि देखाई। करिहउँ रघुपति कथा सुहाई ॥14:1॥

एहि प्रकार बल मनहि देखाई = इस प्रकार से अपने मन को बल दिखाकर, *करिहउँ रघुपति कथा सुहाई* = श्री राम की सुंदर कथा की रचना करूँगा।

श्रीराम की चरित्र गाथा गाने से पहले तुलसीदासजी को कई प्रकार के संकोच लगते हैं, उन सबका वे उल्लेख करते जाते हैं। उन्हें राम के श्रेष्ठ चरित्रों की तुलना में अपनी भाषा हीन दिखाई देती है। फिर उन्हें लगता है राम के चरित्र तो अपार हैं, हम उनका कहाँ तक वर्णन कर पायेंगे? फिर उनहोंने देखा कि बहुत से मुनियों ने, कवियों ने, वेदों ने राम की कथा गायी है। कहते हैं कि उन सबसे प्रेरणा मिली व हिम्मत बँधी कि मैं भी राम की कथा गा सकता हूँ। वे पाठकों व श्रोताओं के मन में भी यही बल उत्पन्न करना चाहते हैं। यहाँ पर 'कहिहउँ' की जगह 'करिहउँ' शब्द आ गया। तात्पर्य है हम भी श्रीरामचरितमानस रूपी पुल की रचना करेंगे जिसका अध्ययन करके लोग संसार सागर से पार हो जायेंगे। तुलसीदास जी की शब्द रचना को बहुत बारीकी से समझते जायें।

काव्य रचना के लिये व्यास जी का स्मरण

ब्यास आदि कबि पुंगव नाना। जिन्ह सादर हरि सुजस बखाना ॥14:2॥
चरन कमल बंदउँ तिन्ह केरे। पुरवहुँ सकल मनोरथ मेरे ॥14:3॥

ब्यास आदि कबि पुंगव नाना = व्यास इत्यादि अनेक श्रेष्ठ कवि, *जिन्ह सादर हरि सुजस बखाना* = जिन्होनें आदर से राम चरित्रों को गाया है, *चरन कमल बंदउँ तिन्ह केरे* = कमल के समान उनके चरणों की वन्दना करते हैं, *पुरवहुँ सकल मनोरथ मेरे* = मेरी सभी मनोकामनाओं को पूरा करें।

समस्त धार्मिक व आध्यात्मिक कार्य भगवान् का स्मरण करके किये जाते हैं। कार्य जिस प्रयोजन से होता है उस देवता का भी स्मरण करते हैं, इसलिये यहाँ

काव्य रचना के लिये काव्य के देवता व्यास जी का स्मरण कर उनकी वन्दना करते हैं, ताकि उनका बल प्राप्त हो।

व्यास जी भगवान् को हर रूप में एक समान देखते हैं

व्यास जी सतयुग, द्वापर युग व त्रेता युग के कवि हैं, कलियुग के नहीं। व्यास जी ने श्रीराम ही नहीं बल्कि श्रीकृष्ण, शिव, देवी इत्यादि सब का वर्णन बहुत आदर के साथ किया है। जितने आदरपूर्वक उन्होंने भगवान् शिव की कथा सुनायी है उतने ही आदर से भगवान् राम की कथा कही है। उतने ही आदरपूर्वक श्रीकृष्ण की कथा सुनायी। देवी भागवत में पूरे आदर के साथ देवी की महिमा का वर्णन किया है। व्यासजी की इतनी विशाल बुद्धि है कि वे भगवान् को हररूप में एक समान देखते हैं। व्यासजी ने वेदों को वर्गीकृत करके चार भागों में लिखा, 18 पुराणों की रचना की, ब्रह्म सूत्र, महाभारत, स्मृति ग्रंथ इत्यादि लिखे हैं।

वर्तमान, भूत व भविष्य के कवियों को प्रणाम

कलि के कबिन्ह करउँ परनामा। जिन्ह बरने रघुपति गुन ग्रामा ॥14:4॥
जे प्राकृत कबि परम सयाने। भाषाँ जिन्ह हरि चरित बखाने ॥14:5॥
भए जे अहहिं जे होइहहिं आगें। प्रनवउँ सबहि कपट सब त्यागें ॥14:6॥

कलि के कबिन्ह = कलियुग के कवियों को, *करउँ परनामा* = प्रणाम करते हैं, *जिन्ह बरने* = जिन्होंने वर्णन किया है, *रघुपति गुन ग्रामा* = श्रीरामजी के गुण समूहों को, *जे प्राकृत कबि परम सयाने* = जो बहुत बुद्धिमान प्राकृत कवि हैं, *भाषाँ जिन्ह हरि चरित बखाने* = जिन्होंने भाषा में रामचरित्रों का वर्णन किया है, *भए* = जो कवि हो चुके हैं, *जे अहहिं* = जो इस समय वर्तमान में हैं, *जे होइहहिं आगें* = जो आगे होंगे, *प्रनवउँ सबहि* = उन सबको प्रणाम करते हैं, *कपट सब त्यागे* = सब प्रकार के कपट त्याग करके।

तुलसीदास जी अपने समकालीन कवियों जैसे सूरदास, मीरा आदि को प्रणाम करते हैं। एक समय में पाली भाषा, बोल-चाल की भाषा थी। पाली में भी श्रीराम कथा लिखी गई। इसके बाद बोल-चाल की भाषा सूरसेनी, मागध, प्राकृत और संस्कृत इत्यादि भाषाओं का मिलाजुला रूप हो गई,

इसमें रचना करने वालों को भाषा कवि कहते थे। अपने पूर्व के कवियों जैसे कबीरदास व कालिदास को प्रणाम करते हैं। तुलसीदासजी को लगा कि हमारे गाने के बाद कथा समाप्त नहीं होगी, आगे भी चलती रहेगी, तो वे भविष्य के कवियों को भी प्रणाम करते हैं।

तुलसीदासजी का विशाल अध्ययन

श्रीराम चरित्र गुणगाथा का इतिहास बहुत पुराना है। तुलसीदासजी के ग्रंथों में प्रसंगों व संदर्भों को देखने से लगता है कि उन्होंने वेदों, पुराणों, वेदव्यास जी, वाल्मीक जी, प्राकृत कवियों, कलियुग के कवियों सबको पढ़ा, उनका अध्ययन विशाल है।

सब प्रसन्न हों वरदान दें कि अच्छे लोग इस रचना को पढ़ें

होहु प्रसन्न देहु बरदानू। साधु समाज भनिति सनमानू ॥14:7॥
जो प्रबंध बुध नहिं आदरहीं। सो श्रम बादि बाल कबि करहीं ॥14:8॥

होहु प्रसन्न देहु बरदानू = आप सब प्रसन्न होकर मुझे वरदान दीजिये, *साधु समाज* = अच्छे लोगों के बीच में, *भनिति सनमानू* = मेरी कविता को सम्मान मिले, *जो प्रबंध* = जिस रचना को, *बुध नहिं आदरहीं* = बुद्धिमान लोग आदर नहीं करते, *सो श्रम बादि* = वह परिश्रम व्यर्थ है, *बाल कबि करहीं* = ऐसी रचना करने वाले बालकवि ही कहलाते हैं।

तुलसीदास जी जानते थे कि असाधु लोग तो इसे पढ़ेंगे नहीं, वे इसकी निंदा करेंगे। बुद्धिमान लोग जो वेद, उपनिषद, गीता पढ़ते हैं वे हिंदी में लिखी रचना का सम्मान नहीं करेंगे तो ऐसे लोग इसका आदर करें। बुद्धिमान लोग जिस रचना का आदर नहीं करते, उसका लेखक, बालकवि कहलाता है, उसका परिश्रम व्यर्थ है।

टाट जैसी मेरी कविता में, राम चरित्र, रेशम के धागे जैसे चमकें

कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कहँ हित होई ॥14:9॥
राम सुकीरति भनिति भदेसा। असमंजस अस मोहि अँदेसा ॥14:10॥
तुम्हरी कृपाँ सुलभ सोउ मोरे। सिअनि सुहावनि टाट पटोरे ॥14:11॥

कीरति भनिति भूति = कीर्ति; कविता व संपति, *भलि सोई* = वही अच्छी कहलाती है, *सुरसरि सम* = जिससे गंगा नदी के समान, *सब कहँ हित होई* = सबका हित होता है, *राम सुकीरति* = श्रीराम की कीर्ति, *भनिति भदेसा* = और मेरी हिंदी भाषा की कविता में, *असमंजस* = तालमेल नहीं बैठता है, *अस मोहि अँदेसा* = ऐसा मुझे संशय है, *तुम्हरी कृपाँ* = हे कवियों आपकी कृपा से, *सुलभ सोउ मोरे* = मेरे लिये यह बात भी अच्छी हो सकती है, *सिअनि सुहावनि* = सिलाई अच्छी लगती है, *टाट पटोरे* = टाट के कपड़े पर, रेशम के धागे से।

श्रीराम के सुंदर चरित्र तो रेशम के धागे के समान हैं, परंतु मेरी हिंदी भाषा की रचना तो टाट के कपड़े के समान है। इन दोनों का आपस में तालमेल नहीं बैठता है। परंतु हे कवियों, आप कृपा करें जिससे टाट के कपड़े पर भी रेशम की सिलाई सुंदर दिखे। मेरी साधारण कविता में भी श्रीराम चरित्रों की महिमा, उनकी चमक बनी रहे।

कवियों से निर्मल बुद्धि प्रदान करने की विनती

सरल कबित कीरति बिमल सोइ आदरहिं सुजान ।
सहज बयर बिसराइ रिपु जो सुनि करहिं बखान ॥दो 14क॥
सो न होइ बिनु बिमल मति मोहि मति बल अति थोर ।
करहु कृपा हरि जस कहउँ पुनि पुनि करउँ निहोर ॥दो 14ख॥
कबि कोबिद रघुबर चरित मानस मंजु मराल ।
बालबिनय सुनि सुरुचि लखि मो पर होहु कृपाल ॥दो 14ग॥

सरल कबित = कविता सरल हो, *कीरति बिमल* = उसमें निर्मल चरित्र का वर्णन हो, *सोइ आदरहिं सुजान* = उसी का सज्जन लोग सम्मान करते हैं, *सहज बयर बिसराइ रिपु* = स्वाभाविक वैर को भूलकर शत्रु भी, *जो सुनि करहिं बखान* = कविता सुनकर उसकी तारीफ करें, *सो न होइ बिनु बिमल मति* = वह बिना अच्छी बुद्धि के हो नहीं सकती, *मोहि मति बल अति थोर* = मेरा सामर्थ्य और बुद्धि कम है, *करहु कृपा हरि जस कहउँ* = आप कृपा करें जिससे राम के यश कह सकूँ, *पुनि पुनि करउँ निहोर* = बार-बार आप से निवेदन करते हैं, *कबि कोबिद* = हे कवियों व आचार्यों, *रघुबर चरित*

मानस मंजु मराल = आप तो रामचरित्ररूपी मानसरोवर के सुंदर हंस हैं, *बालबिनय सुनि* = मुझ बालक की विनती सुनकर, *सुरुचि लखि* = मेरी सुंदर रुचि देखकर, *मो पर होहु कृपाल* = मुझ पर कृपा करें।

सज्जन लोग उसी कविता का आदर करते हैं, जो सरल हो, निर्मल चरित्र का उसमें वर्णन हो और उसे सुनकर शत्रु भी वैर भाव भूलकर सराहना करने लगें। ऐसी कविता करने के लिये निर्मल बुद्धि होनी चाहिये। तुलसीदास जी बार-बार विनती करते हैं कि हे कवियों, आप तो रामचरित्ररूपी मानसरोवर के सुंदर हंस हैं, मुझे बालक समझकर, मेरी रुचि देखकर, मुझ पर कृपा करें, मुझे ऐसी बुद्धि प्रदान करें ताकि मैं भी श्रीराम के यश का वर्णन कर सकूँ।

मुनि वाल्मीकि की वन्दना

बंदउँ मुनि पद कंजु रामायन जेहिं निरमयउ ।
सखर सुकोमल मंजु दोष रहित दूषन सहित ॥सो 14घ॥

बंदउँ मुनि पद कंजु = कमल के समान मुनि के चरणों की वंदना करते हैं, *रामायन जेहिं निरमयउ* = जिन्होंने रामायण की रचना की, *सखर* = जिसमें खर की कठोरता का वर्णन है, *सुकोमल मंजु* = पर कविता कोमल व सुंदर है, *दोष रहित* = जो दोष रहित है, *दूषन सहित* = पर दूषन जैसे दोषपूर्ण राक्षस का वर्णन है।

सब कवियों की वन्दना के बाद तुलसीदास जी सोरठे में अलग से वाल्मीकि जी की वन्दना करते हैं। वाल्मीकि जी आदि कवि हैं, उन्होंने ही रामायण की रचना की है। काव्यात्मक शैली में इस रचना की दो विशेषतायें बताते हैं।

1. खर जैसे राक्षस की कठोरता का वर्णन है, परन्तु कविता कोमल व सुन्दर है।
2. दूषण जैसे दोषपूर्ण राक्षस का वर्णन है, परन्तु रचना दोष रहित है।

आजकल लोग तुलसीदास जी की रचना को ही रामायण बोलने लगे हैं। इनकी वन्दना का तत्काल प्रभाव हुआ वाल्मीकि जी का काव्यत्व तुलसीदासजी पर अवतीर्ण होकर यह श्रेष्ठ अलंकारमय पंक्ति बन गयी।

चारों वेदों की वन्दना

बंदउँ चारिउ बेद भव बारिधि बोहित सरिस ।
जिन्हहि न सपनेहुँ खेद बरनत रघुबर बिसद जसु ॥सो 14ङ॥

बंदउँ चारिउ बेद = चारों वेदों की वंदना करते हैं, *भव बारिधि* = जो संसार समुद्र को पार करने के लिये, *बोहित सरिस* = जहाज के समान हैं, *जिन्हहि न सपनेहुँ खेद* = जिन्हें स्वप्न में भी थकावट नहीं होती है, *बरनत रघुबर बिसद जसु* = श्रीराम के विशाल यश का वर्णन करने में।

श्रीराम के यश का विस्तृत वर्णन चारों वेदों में किया गया है। यह संसार समुद्र के समान है, जिसे पार कर पाना कठिन है। वेदों का ज्ञान, संसार पार करने में एक जहाज के समान सहायता करता है। तुलसीदास जी ने वेदों की वंदना की, उसका प्रभाव यह हुआ कि रामचरितमानस वेदों का सार बन गयी।

ब्रह्मा जी की वन्दना

बंदउँ बिधि पद रेनु भव सागर जेहिं कीन्ह जहँ ।
संत सुधा ससि धेनु प्रगटे खल बिष बारुनी ॥सो 14च॥

बंदउँ बिधि पद रेनु = ब्रह्मा जी के चरण रज की वंदना करता हूँ, *भव सागर जेहिं कीन्ह* = जिन्होंने संसार सागर बनाया है, *जहँ संत सुधा ससि धेनु प्रगटे* = जहाँ एक ओर संत; अमृत; चन्द्रमा; गाय प्रगट हुए, *खल बिष बारुनी* = तो दूसरी तरफ राक्षस, जहर व मदिरा उत्पन्न हुई।

ब्रह्माजी ने संसार की रचना अच्छाइयों से की तो ज्यादा दिन नहीं चला, बुराइयों से की तो लोग आपस में लड़ गये, संसार समाप्त हो गया। फिर क्या किया? अच्छाइयों व बुराइयों को मिला दिया। एक ओर संत, अमृत व चन्द्रमा बना दिया तो दूसरी तरफ राक्षस, जहर व मदिरा उत्पन्न कर दी। ऐसे महान् ब्रह्माजी की वंदना करते हैं।

देवता, विप्र, बुद्धिमान व ग्रहों की वन्दना

बिबुध बिप्र बुध ग्रह चरन बंदि कहउँ कर जोरि ।
होइ प्रसन्न पुरवहु सकल मंजु मनोरथ मोरि ॥सो 14छ॥

बिबुध बिप्र बुध ग्रह = देवता; शास्त्र के ज्ञाता; बुद्धिमान; ग्रह, *चरन बंदि कहउँ कर जोरि* = इनके चरणों की वंदना करके हाथ जोड़कर कहता हूँ, *होइ प्रसन्न* = आप सब प्रसन्न होवें, *पुरवहु सकल मंजु मनोरथ मोरि* = मेरी सभी सुंदर मनोकामना को पूरा करें।

देवता, शास्त्र का ज्ञान रखने वाले विप्र, बुद्धिमान लोग और ग्रहों के चरणों की वंदना करके हाथ जोड़ प्रार्थना करते हैं कि आप सब प्रसन्न होकर, मेरी सुन्दर मनोकामना को पूरा करें। तुलसीदास जी की विनम्र प्रार्थनाओं का फल पूरी रचना में दिखता है। जगह-जगह प्रसंग के अनुसार देवता बाजे बजाते हैं, फूलों की वर्षा करते हैं। सभी मंगल कार्यों में ग्रह अनुकूल रहते हैं, विप्र उपस्थित रहते हैं। बुद्धिमान लोग आज भी इस रचना का आदर करते हैं, शोध-ग्रंथ लिखते हैं।

सरस्वती जी व गंगा जी की वन्दना

पुनि बंदउँ सारद सुरसरिता। जुगल पुनीत मनोहर चरिता ॥15:1॥
मज्जन पान पाप हर एका। कहत सुनत एक हर अबिबेका ॥15:2॥

पुनि बंदउँ = फिर मैं वन्दना करता हूँ, *सारद सुरसरिता* = सरस्वती जी; देवनदी गंगाजी, *जुगल पुनीत मनोहर चरिता* = दोनों पवित्र व मनोहर चरित्र वाली हैं, *मज्जन पान पाप हर एका* = स्नान व जलपान से एक पाप दूर करती हैं, *कहत सुनत एक हर अबिबेका* = कहने व सुनने से एक अज्ञान का नाश कर देती हैं।

सरस्वती जी व देवनदी गंगा की वंदना करता हूँ, ये दोनों पवित्र हैं, इनके चरित्र मनोहर हैं। गंगा में स्नान करने व जल पीने से पाप मिट जाते हैं। सरस्वती जी का स्मरण करके कथा कहने व सुनने से अज्ञान समाप्त हो जाता है। गंगा की धारा की तरह आज भी यह रचना कल्याण करती है और सरस्वती की कृपा से अज्ञान दूर करती है।

9. शंकर-पार्वती के वरदान से दोहे व चौपाइयाँ मंत्र बन गये

(दोहा 15)

तुलसीदास जी कहते हैं कि शंकर-पार्वती मेरे माता-पिता व गुरु हैं, यदि वे मुझ पर सचमुच प्रसन्न हों, तो मैंने श्रीरामचरितमानस के सुनने व सुनाने से होने

वाले जो प्रभाव लिखे हैं, वे सब सच हो जायें। शंकर जी ने वरदान दे दिया। इस ग्रंथ के दोहे व चौपाइयाँ हैं तो हिंदी में पर इनका प्रभाव मंत्र के समान है। समय के साथ यह बात सत्य साबित हो चुकी है। बहुत से लोगों को इसके निरंतर अध्ययन से भक्ति, शांति, विश्राम प्राप्त हुआ है, प्रभु राम के दर्शन हुए हैं। यह पूर्णत: सिद्ध ग्रंथ है।

शंकर-पार्वती मेरे माता-पिता व गुरु

गुर पितु मातु महेस भवानी। प्रनवउँ दीनबंधु दिन दानी ॥15:3॥

गुर पितु मातु महेस भवानी = शंकर व पार्वती मेरे गुरु व माता-पिता हैं, *प्रनवउँ दीनबंधु* = मैं उन्हें प्रणाम करता हूँ; वे दीनों पर दया करने वाले हैं, *दिन दानी* = नित्य दान करने वाले हैं।

माता-पिता बिना किसी बदले की कामना से पुत्र का पालन-पोषण करते हैं उसको शिक्षा भी देते हैं, गुरु भी बिना किसी स्वार्थ के शिष्य के हित की कामना करता है। तुलसीदासजी कहते हैं मेरे माता-पिता व गुरु तीनों ही शंकर-पार्वती हैं। इस बात को याद रखें कि शंकर जी विश्वास हैं व पार्वती जी श्रद्धा हैं। आध्यात्मिक जीवन का पालन-पोषण, श्रद्धा व विश्वास द्वारा ही होता है। यदि श्रद्धा है तो हृदय में पार्वती जी हैं, उनकी कुछ न कुछ कृपा है, यदि भगवान् में विश्वास है तो यह समझो शंकर जी की कृपा है। आध्यात्मिक जीवन में श्रद्धा व विश्वास माता-पिता की तरह कल्याण करने वाले हैं। शंकर जी अवढर दानी भी कहलाते हैं। जब देते हैं तो यह नहीं देखते कि इसे दें कि न दें, जो माँगो सो देंगे।

शिव जी का राम जी के साथ तीन तरह का रिश्ता – रामेश्वरम्

सेवक स्वामि सखा सिय पी के। हित निरुपधि सब बिधि तुलसी के ॥15:4॥

सेवक स्वामि सखा = सेवक, स्वामी, मित्र, *सिय पी के* = सीता जी के पति के, *हित निरुपधि* = बिना किसी बाधा के हित करने वाले, *सब बिधि तुलसी के* = सब प्रकार से तुलसीदास की।

समुद्र के तट पर श्रीराम ने शिवलिंग की स्थापना करके उसका नाम 'रामेश्वरम्' रखा। प्रभु राम ने कहा इसका आशय है ये राम के ईश्वर हैं। इस प्रकार शंकर स्वामी व राम सेवक हो गये। शंकर जी ने कहा नहीं 'रामेश्वरम्' का आशय है राम ही जिनके ईश्वर हैं। इस प्रकार राम स्वामी व शंकर सेवक बन गये। संतों ने कहा नहीं 'रामेश्वरम्' का आशय है राम व ईश दोनों समतुल्य हैं, ईश मायने शंकर। इस प्रकार यहाँ पर रिश्ता समकक्ष हो गया, इसलिये राम व शंकर मित्र हो गये। शंकर जी सब प्रकार से तुलसीदास जी का हित करते हैं।

श्री स्वामी सत्यानंदजी के रिखिया सत्संग से

शिव व राम के रिश्ते का गुप्त रहस्य

राम व शिव दोनों एक दूसरे के मित्र हैं, दोनों एक दूसरे के भक्त हैं, दोनों एक दूसरे के शिष्य हैं, दोनों एक दूसरे का आदर करते हैं, दोनों एक दूसरे को बहुत प्यार करते हैं, और दोनों एक दूसरे के प्रति समर्पित हैं। राम जी शिव जी का ध्यान करते हैं, और शिव जी राम जी का। शिव जी राम जी का नाम जपते हैं और राम जी शिव जी का नाम जपते हैं। शिवजी वहाँ जहाँ राम। वे राम जी की शादी में पहुँच गये। जब वे खेल रहे थे तब पहुँच गये। जब राम जी का राज्याभिषेक हुआ, तब पहुँच गये। *'जपहिं सदा रघुनायक नामा'* शंकर जी हमेशा राम जी का नाम जपते हैं, राम जी हमेशा शंकर जी की पूजा करते हैं। यह उनकी कमजोरी है। यह उनका असली बिंदु है। यही उनका गुप्त रहस्य है।

राम और शिव का विलक्षण संबंध

जब मैं 6 साल का था, तब से रोज नाम रामायण गा रहा हूँ। बचपन में हमने राम को अपना आदर्श स्वीकार किया। मगर जब हमारी दीक्षा हुई तो मेरे गुरु स्वामी शिवानंदजी ने 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र दिया। हमने अपने गुरु जी से कहा 'स्वामीजी हमारे लिये तो यह बहुत कठिन है'। उन्होंने कहा 'राम जी को बना लो अपना इष्ट देव और 'ॐ नमः शिवाय' को बना लो अपना इष्ट मंत्र, तब से मैं 'ॐ नमः शिवाय' जपता हूँ और राम जी का ध्यान करता हूँ। लोग समझते हैं कहीं भगवान् नाराज तो नहीं हो जायेंगे। अरे! भगवान् कभी नाराज नहीं होते। जब शिव जी को पता चला कि यह

लड़का राम जी का ध्यान कर रहा है और नाम मेरा जप रहा है तो बोले 'अति सुंदर'। और जब राम जी को पता चला कि मेरा ध्यान करता है और नाम शिव जी का जपता है तो उन्होंने कहा 'अति उत्तम'।



शंकर जी के वरदान से रामचरितमानस के दोहे व चौपाई मंत्र हैं

कलि बिलोकि जग हित हर गिरिजा। साबर मंत्र जाल जिन्ह सिरिजा ॥15:5॥
अनमिल आखर अरथ न जापू। प्रगट प्रभाउ महेस प्रतापू ॥15:6॥
सो उमेस मोहि पर अनुकूला। करिहिं कथा मुद मंगल मूला ॥15:7॥

कलि बिलोकि = कलियुग को देखकर, *जग हित हर गिरिजा* = संसार के हित के लिये शिव-पार्वती ने, *साबर मंत्र जाल जिन्ह सिरिजा* = साबर मंत्र समूह की रचना की, *अनमिल आखर* = इनके अक्षर बेमेल हैं, *अरथ न* = इनका कोई अर्थ नहीं होता है, *जापू* = जाप की कोई विधि नहीं है, *प्रगट प्रभाउ महेस प्रतापू* = फिर भी शिवजी के प्रभाव से इनका प्रभाव प्रत्यक्ष है, *सो उमेस मोहि पर अनुकूला* = वही शिव जी मुझ पर कृपा करें, *करिहिं कथा मुद मंगल मूला* = इस कथा को मोद और मंगल का स्रोत बना दें।

शिव-पार्वती ने देखा कलियुग आ रहा है, लोगों की बुद्धि बदल रही है, वेद शास्त्रों को समझने की ताकत लोगों में नहीं रहेगी, न वे अध्ययन कर पायेंगे, न उपासना कर पायेंगे। तो लोगों को सरल साधना बतानी चाहिये। एक बार शंकर जी साबर यानि भील लोगों के बीच एक शबर बनकर आ गये। उन्होंने देखा ये लोग तो कोई मंत्र ठीक से बोल नहीं सकते। तो उनके लिये एक ऐसा मंत्र बना दिया जो मात्र ध्वनि थी, उसका कोई अर्थ व जप नहीं था। फिर भी शंकर जी के आशीर्वाद से वह मंत्र जैसा प्रभावी बन गया।

तुलसीदासजी कहते हैं, हे उमापति शिवजी! हमारी कविता जिसका कि अर्थ भी है वाक्य भी है, पर कृपा करें, मुझ पर प्रसन्न होकर हमारी इस श्रीरामकथा को मोद और मंगल का स्रोत बना दें। इसको सुनकर सबका कल्याण हो और सब सुखी हों। तुलसीदास जी ने वरदान माँगा व शंकर जी ने दे दिया। शंकर जी ने मानो कहा कि तुम्हारी कविता कैसी भी हो, परंतु यह मंत्र की तरह सिद्ध करने वाली होगी, जैसे मंत्र फलदायी होता है वैसे

ही इन दोहों और चौपाइयों में मंत्र की शक्ति आ जायेगी। कोई व्यक्ति चाहे तो इसके नियमित पाठ से इसके अंदर निहित मंत्र शक्ति का स्वयं अनुभव कर सकता है।

शिव-पार्वती की कृपा प्राप्त अब उत्साह से वर्णन करुँगा

सुमिरि सिवा सिव पाइ पसाऊ। बरनउँ रामचरित चित चाऊ ॥15:8॥
भनिति मोरि सिव कृपाँ बिभाती। ससि समाज मिलि मनहुँ सुराती ॥15:9॥

सुमिरि सिवा सिव = पार्वती व शिव जी का स्मरण करके, *पाइ पसाऊ* = उनका प्रसाद पाकर के, *बरनउँ रामचरित* = मैं रामचरित्रों का वर्णन करता हूँ, *चित चाऊ* = चित्त में उत्साह के साथ, *भनिति मोरि सिव कृपाँ* = मेरी कविता शिव जी की कृपा से, *बिभाती* = ऐसे शोभायमान होगी, *ससि समाज मिलि मनहुँ सुराती* = जैसे तारागणों के सहित चन्द्रमा के साथ रात्रि शोभित होती है।

तुलसीदासजी कहते हैं, पहले तो संकोच लगता था, राम की कथा कहने में, फिर कवियों की वन्दना की तो कुछ हिम्मत बँधी, अब शंकर जी की वन्दना से बहुत उत्साह आ गया है। अब चित्त में उत्साह के साथ रामकथा कहूँगा। जिस प्रकार पूर्णिमा की रात्रि चन्द्रमा व तारों के कारण अत्यंत शोभायमान हो जाती है उसी प्रकार मेरी कविता तो पूर्णिमा की रात्रि के अंधकार के समान है, इसमें राम जी के चरित्र चन्द्रमा के समान व अन्य पात्र तारों के समान हैं। उन सबके साथ मिलकर मेरी कविता भी शोभायमान बन जायेगी।

कथा सुनने व कहने की विधि व फल

जे एहि कथहि सनेह समेता। कहिहहिं सुनिहहिं समुझि सचेता॥15:10॥
होइहहिं राम चरन अनुरागी। कलि मल रहित सुमंगल भागी॥15:11॥

जे एहि कथहि सनेह समेता = जो इस कथा को प्रेम सहित, *कहिहहिं सुनिहहिं* = कहेंगे या सुनेंगे, *समुझि सचेता* = समझकर व सावधानीपूर्वक सजग होकर, *होइहहिं राम चरन अनुरागी* = उन्हें श्री राम के चरणों में

प्रेम होगा, *कलि मल रहित* = उनके कलियुग के पाप दूर होंगे, *सुमंगल भागी* = वे लोग सुंदर कल्याण प्राप्त करेंगे।

इस पावन कथा को कैसे सुनना व कहना है उसका तरीका बताते हैं। इसे सचेत होकर सुनें, यानि मन, बुद्धि लगाकर सुनें। सुनने के बाद उसे चित्त में अच्छी तरह से धारण करें। इसके बाद उसे समझने की कोशिश करें। सुनाने वाले भी सचेत होकर कथा कहें, व्यर्थ की बातें न कहें। यह तभी होगा जब कथा में प्रेम होगा। इस विधि से सुनी कथा तीन चरणों में फल देती है। **1.** काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि कलियुग के मल कहलाते हैं, ये सब दूर होते हैं। **2.** कलियुगी मल दूर होने से मन शुद्ध होता है, जिसके कारण श्रीराम की भक्ति हृदय में उत्पन्न होती है। **3.** भक्ति के आने से आनंद व मंगल की प्राप्ति होती है।

रामचरितमानस सिद्ध ग्रंथ है

सपनेहुँ साचेहुँ मोहि पर जौं हर गौरि पसाउ ।
तौ फुर होउ जो कहेउँ सब भाषा भनिति प्रभाउ ॥दोहा 15॥

सपनेहुँ साचेहुँ मोहि पर = स्वप्न में भी सचमुच में मुझ पर, *जौं हर गौरि पसाउ* = यदि शिव-पार्वती प्रसन्न हों, *तौ फुर होउ* = तो सच हो जाये, *जो कहेउँ सब* = जो मैंने सब कहा है, *भाषा भनिति प्रभाउ* = हिंदी में लिखी इस कविता का फल।

यदि मुझ पर शिवजी व पार्वतीजी स्वप्न में भी सचमुच प्रसन्न हों, तो मैंने इस हिंदी भाषा में रचित कविता का जो प्रभाव कहा है, वह सब सच हो जाये। यह बात सत्य साबित हो चुकी है। बहुत से लोगों को श्रीरामचरितमानस के निरंतर अध्ययन से भक्ति, शांति, विश्राम प्राप्त हुआ है, प्रभु राम के दर्शन हुए हैं। यह पूर्णत: सिद्ध ग्रंथ है।

10. श्रीरामचरितमानस के पात्रों का परिचय व वंदना

(दोहा 16,17,18)

श्रीरामचरितमानस एक प्रबंध महाकाव्य है। तुलसीदास जी इस महाकाव्य के नायकों का परिचय उनकी विशेषता बताकर देते हैं, उनकी वंदना भी करते हैं।

इस ग्रंथ का पाठ करते समय मन में इसे याद रखना चाहिये। साधकों के लिये इन सबके चरित्र बहुत प्रेरक तत्त्व हैं। हर एक पात्र कुछ न कुछ प्रेरणा देने में समर्थ है, जो जैसा दे सकता है उससे वही मांगते हैं।

अयोध्या पवित्र, सरयू पापनाशिनी, नगरवासी राम को प्रिय

बंदउँ अवध पुरी अति पावनि। सरजू सरि कलि कलुष नसावनि ॥16:1॥
प्रनवउँ पुर नर नारि बहोरी। ममता जिन्ह पर प्रभुहि न थोरी ॥16:2॥
सिय निंदक अघ ओघ नसाए। लोक बिसोक बनाइ बसाए ॥16:3॥

बंदउँ अवध पुरी = अयोध्या पुरी की वंदना करते हैं, *अति पावनि* = जो अत्यंत पवित्र है, *सरजू सरि* = वहाँ सरयू नदी है, *कलि कलुष नसावनि* = जो कलियुग के पापों का नाश करती है, *प्रनवउँ पुर नर नारि बहोरी* = नगर में रहने वाले नर व नारियों को प्रणाम करता हूँ, *ममता जिन्ह पर प्रभुहि न थोरी* = जिन पर प्रभु राम को थोड़ी ममता नहीं है यानि बहुत ममता है, *सिय निंदक* = सीता जी की निंदा करने वाले, *अघ ओघ नसाए* = के पाप का नाश करके, *लोक बिसोक बनाइ बसाए* = उसको शोकरहित करके अपने धाम में बसा दिया।

अयोध्या पुरी की वंदना करता हूँ, जो अत्यन्त पवित्र है। यहाँ सरयू नदी बहती है जो कलियुग के पापों का नाश करती है। इस नगर में रहने वाले नर व नारियों को प्रणाम करता हूँ, क्योंकि ये सब राम को बहुत प्रिय हैं। प्रियता का प्रमाण है कि अयोध्यावासी ने सीताजी की निन्दा करने का पाप किया परन्तु राम ने उसके अपराध को क्षमा करके, अपना धाम प्रदान किया।

कौसल्या माँ पूर्वदिशा के समान जिनसे राम प्रगट हुए

बंदउँ कौसल्या दिसि प्राची। कीरति जासु सकल जग माची ॥16:4॥
प्रगटेउ जहँ रघुपति ससि चारू। बिस्व सुखद खल कमल तुसारू ॥16:5॥

बंदउँ कौसल्या = कौसल्या जी की वंदना करते हैं, *दिसि प्राची कीरति जासु* = जो पूर्व दिशा के समान हैं, जिनकी कीर्ति, *सकल जग माची* = समस्त संसार में फैल रही है, *प्रगटेउ जहँ रघुपति* = जिनसे श्रीराम प्रकट

हुए, *ससि चारू* = जो सुंदर चंद्रमा के समान हैं, *बिस्व सुखद* = जो संसार को सुख देने वाले, *खल कमल तुसारू* = जो दुष्टों का वैसे नाश करते हैं जैसे पाला कमल का करता है।

माँ कौशल्या की वंदना करता हूँ, जिनकी कीर्ति सारे संसार में फैली है। जैसे पूर्व दिशा से चन्द्रमा का उदय होता है, उसी प्रकार माँ कौसल्या से सुन्दर चन्द्रमा के समान राम प्रगट हुए। जैसे चन्द्रमा का उदय सुखदायी होता है वैसे ही राम सबको सुख देते हैं। राम दुष्टों का वैसे ही नाश करते है जैसे पाला कमल का करता है।

राजा दशरथ पुण्य की मूर्ति, रानियाँ मंगल की मूर्ति

दसरथ राउ सहित सब रानी। सुकृत सुमंगल मूरति मानी ॥16:6॥
करउँ प्रनाम करम मन बानी। करहु कृपा सुत सेवक जानी ॥16:7॥

दसरथ राउ सहित सब रानी = राजा दशरथ व उनकी सब रानियाँ, *सुकृत सुमंगल मूरति मानी* = को पुण्य व सुंदर कल्याण की मूर्ति मानकर, *करउँ प्रनाम करम मन बानी* = कर्म; मन व वचन से प्रणाम करता हूँ, *करहु कृपा सुत सेवक जानी* = मुझे अपने पुत्र का सेवक जानकर कृपा करें।

महाराज दशरथ ने इतने अधिक सत्कर्म किये हैं कि उन्हें पुण्य की मूर्ति कहते हैं। जब अच्छे कर्म होंगे तो मंगल भी होगा, इसलिये रानियों को सुमंगल की मूर्ति कहते हैं। अच्छे कर्म व मंगल साथ-साथ चलते हैं। जिसके घर परमात्मा ने अवतार लिया है वह तो बड़ा भारी पुण्यात्मा होगा ही। तुलसीदास जी प्रभु राम के सेवक हैं, श्रीराम हैं महाराज दशरथ के पुत्र, इसलिये दशरथ जी का स्तर बहुत ऊँचा हो गया। उनके ऊँचे स्तर को देखते हुए कर्म, वचन एवं मन से वंदना करते हुए उनसे विनती करते हैं कि अपने पुत्र का सेवक जानकर मुझ पर कृपा करें।

विधाता ने दशरथ जी व रानियों को बनाया पर राम को नहीं

जिन्हहि बिरचि बड़ भयउ बिधाता। महिमा अवधि राम पितु माता ॥16:8॥

जिन्हहि बिरचि= जिनकी रचना करके, *बड़ भयउ बिधाता*= ब्रह्मा जी ने बड़ाई प्राप्त की, *महिमा अवधि राम पितु माता*= श्रीराम के माता-पिता होने के कारण से ये महिमा की सीमा हैं।

इस चौपाई को बहुत ही सावधानी व गंभीरता से समझें। यहाँ पर 'जिन्हहि' शब्द कौसल्या जी, दशरथ जी व उनकी रानियों के लिये है। इन सब की रचना विधाता ने की है। ध्यान दें, श्रीराम को विधाता ने नहीं बनाया है। वे स्वयं माँ कौसल्या व महाराज दशरथ के यहाँ प्रकट हुए हैं। राम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न व सीता ये सब विधाता की रचना नहीं हैं। ये अलौकिक हैं। पंचतत्त्वों के नहीं हैं। स्वयं अपनी सत्ता से विद्यमान हैं। इस बात का उल्लेख आगे भी है। जब राम, सीता व लक्ष्मण वन में जाते हैं, ब्रह्मा जी इन्हें देखकर कहते हैं, अरे ये कौन हैं, इनकी रचना तो मैंने की ही नहीं?

राजा दशरथ को शरीर से ज्यादा प्रेम राम में

बंदउँ अवध भुआल सत्य प्रेम जेहि राम पद ।
बिछुरत दीनदयाल प्रिय तनु तृन इव परिहरेउ ॥दो 16॥

बंदउँ अवध भुआल= अवध के राजा की वंदना करता हूँ, *सत्य प्रेम जेहि राम पद*= जिन्हें राम के चरणों में सच्चा प्रेम था, *बिछुरत दीनदयाल*= दीनों पर दया करने वाले राम के बिछुड़ते ही, *प्रिय तनु तृन इव*= अपने प्रिय शरीर को तिनके के समान समझकर, *परिहरेउ*= त्याग दिया।

यहाँ पर महाराज दशरथ की विशेषता बता दी कि वे राम के सच्चे प्रेमी हैं, राम वनवास गये इन्होंने कहा बिना राम के ये शरीर का क्या करेंगे? शरीर से ज्यादा राम में प्रेम है। राम के बिछुड़ते ही अपने शरीर को वैसे ही त्याग दिया जैसे हम बिना महत्त्व की वस्तु को त्याग देते हैं। अपने शरीर से ज्यादा भगवान् से प्रेम करें।

महाराज जनक विदेह हैं, यही रामचरितमानस का रहस्य है

प्रनवउँ परिजन सहित बिदेहू। जाहि राम पद गूढ़ सनेहू ॥17:1॥
जोग भोग महँ राखेउ गोई। राम बिलोकत प्रगटेउ सोई ॥17:2॥

प्रनवउँ परिजन सहित बिदेहू = परिवार सहित राजा जनक को प्रणाम करता हूँ, *जाहि राम पद गूढ़ सनेहू* = जिनका राम के चरणों में गूढ़ प्रेम था, *जोग भोग महँ* = योग व भोग में, *राखेउ गोई* = उस प्रेम को छिपा कर रखा था, *राम बिलोकत प्रगटेउ सोई* = राम को देखते ही वह प्रेम प्रकट हो गया।

जनक जी में क्या विशेष बात है? वे विदेह हैं, उनका देह है ही नहीं। उनका देह नहीं है तो वे कैसे जीवित हैं? उनका देह तो है, पर उन्हें देह का अभिमान नहीं है। वे आत्म भाव में रहते हैं। यही रामचरितमानस या अध्यात्म ज्ञान का रहस्य है। आत्मज्ञान के लिये शरीर को छोड़ने की आवश्यकता नहीं, शरीर को कष्ट देने, उससे नफरत की जरूरत नहीं है। मन में कुछ मिनट के लिये नियमित ऐसा भाव लायें कि मैं शरीर नहीं, मैं प्राण नहीं, मन नहीं, बुद्धि नहीं, मैं आत्मा हूँ, इस शरीर को देखने वाला हूँ। इसे ही विदेह कहते हैं। कुछ क्षण के लिये विदेह भाव का अभ्यास करने से देह को दिनभर अच्छा लगेगा।

जनक जी की भक्ति योग व भोग में छिपी थी

राजा जनक ज्ञान योगी थे, जिसके कारण उनकी भक्ति ऊपर से नहीं दिखती थी, वे ज्ञानी दिखते थे। वे जनकपुर के राजा भी थे, राजा के भोग उन्हें प्राप्त थे, इसलिये भी बाहर से देखने में वे भक्त नहीं लगते थे। राम को विश्वामित्र जी के साथ पहली बार जनकपुर में देखते ही, जनक जी को ब्रह्म भाव भूल गया, राजा का भाव भी भूल गया, उनका भक्ति भाव, प्रेम भाव सामने आ गया।

भरत, नेम व ब्रत का पालन करते हुए सदा राम चरन में लीन

प्रनवउँ प्रथम भरत के चरना। जासु नेम ब्रत जाइ न बरना ॥17:3॥
राम चरन पंकज मन जासू। लुबुध मधुप इव तजइ न पासू ॥17:4॥

प्रनवउँ प्रथम भरत के चरना = सबसे पहले भरत जी के चरणों को प्रणाम करते हैं, *जासु नेम ब्रत* = जिनका नियम व ब्रत, *जाइ न बरना* = का वर्णन नहीं किया जा सकता है, *राम चरन पंकज* = राम के कमल के समान चरणों में, *मन जासू* = जिनका मन, *लुबुध मधुप इव* = भौंरे की तरह लुभाया रहता है, *तजइ न पासू* = कभी उनका पास नहीं छोड़ता है।

अभी तक विधाता के बनाये लोगों की वन्दना हुई। अब दिव्य व अलौकिक पात्रों में सबसे पहले भरत जी की वन्दना है। भरत जी नेम व व्रत दोनों का पालन करते हैं। वे श्रीराम के आदेश का पालन करने के लिये 14 वर्ष तक पूरे अयोध्या राज्य की सावधानी पूर्वक व्यवस्था देखते हैं, पर रहते हैं नंदीग्राम में तपस्वी के वेष में। जैसे भौरा फूल के चारों ओर मंडराता रहता है, वैसे ही भरत जी का मन कमल के समान सुंदर प्रभु राम के चरणों में सदैव लगा रहता है।

लक्ष्मण, राम की कीर्ति पताका को सदा ऊँचा रखते हैं

बंदउँ लछिमन पद जल जाता। सीतल सुभग भगत सुख दाता ॥17:5॥
रघुपति कीरति बिमल पताका। दंड समान भयउ जस जाका ॥17:6॥

बंदउँ लछिमन पद = लक्ष्मण जी के चरणों की वंदना करता हूँ, *जल जाता* = जो कमल के समान हैं, *सीतल* = जो शीतल है, *सुभग* = सुंदर है, *भगत सुख दाता* = जो भक्तों को सुख देने वाले हैं, *रघुपति कीरति बिमल पताका* = श्रीराम की कीर्ति की सुंदर पताका के लिये, *दंड समान* = डंडे के समान, *भयउ जस जाका* = उनका यश है।

लक्ष्मण जी की विशेषता है कि वे श्रीराम के यश की पताका के डंडे हैं। एक डंडा लो उसमें पताका लगा दो, पताका किसके बल पर ऊँची रहेगी? डंडे के बल पर, जितना ऊँचा डंडा उतनी ऊँची पताका। बिना डंडे के पताका नहीं रहेगी। इसलिये लक्ष्मण जी डंडे के समान सदा राम के साथ रहते हैं, उनकी कीर्ति पताका सदा ऊँची रखते हैं। लक्ष्मण जी क्रोधी स्वभाव के नहीं हैं, तुलसीदास जी कहते हैं वे शीतल हैं, सुंदर हैं, भक्तों को सुख देने वाले हैं। उन्होनें कभी अपने लिये क्रोध नहीं किया, जहाँ कहीं भी लोगों ने राम के यश की पताका को झुकाने की कोशिश की, उन्होंने क्रोध प्रकट कर पताका को ऊपर उठा दिया। धनुष यज्ञ के प्रसंग में श्रीराम के सामने जब जनक जी ने कहा कि लगता है पृथ्वी पर कोई वीर नहीं है, राम की पताका नीचे होने लगी, लक्ष्मण तुरंत उठे, नाराजगी प्रगट करते हुए कहा कि जहाँ रघुवंश का कोई व्यक्ति बैठा हो वहाँ ऐसी बातें नहीं कही जातीं। राम का यश-पताका को ऊँचा करके फहरा दिया।

शेषनाग के अवतार व सुमित्रापुत्र लक्ष्मण सदा अनुकूल रहें

सेष सहस्त्रसीस जग कारन। जो अवतरेउ भूमि भय टारन ॥17:7॥
सदा सो सानुकूल रह मो पर। कृपासिंधु सौमित्रि गुनाकर ॥17:8॥

सेष सहस्त्रसीस = एक हजार फन वाले शेषनाग, *जग कारन* = जिनके ऊपर यह संसार टिका है, *जो अवतरेउ* = उन्हीं ने अवतार लिया है, *भूमि भय टारन* = पृथ्वी का भय दूर करने के लिये, *सदा सो सानुकूल रह मो पर* = वे मुझ पर सदा अनुकूल रहें, *कृपासिंधु सौमित्रि* = आप कृपा के सागर हैं, महारानी सुमित्रा के पुत्र हैं, *गुनाकर* = आप गुणों की खान हैं।

लक्ष्मण जी एक हजार फन वाले शेषनाग के अवतार हैं। ये शेषनाग सारे जगत का कारण हैं यानि इन्हीं के फनों पर यह संसार टिका हुआ है। पृथ्वी का भय मिटाने के लिये ये महाराज दशरथ की रानी सुमित्रा के पुत्र बनकर अवतरित हुए हैं। जैसे लक्ष्मण जी सदैव राम की पताका को ऊँचा रखते हैं, तुलसीदास जी विनती करते हैं कि हे गुणों की खान व कृपा के सागर लक्ष्मण जी आप सदा हमारे अनुकूल रहें ताकि हम भी श्रीराम कथा सुनाकर प्रभु राम के यश को सदैव ऊँचा बनाये रखें।

शत्रुघ्न जी, वीर हैं सुशील हैं व भरत के समान हैं

रिपुसूदन पद कमल नमामी। सूर सुसील भरत अनुगामी॥17:9॥

रिपुसूदन पद कमल नमामी = शत्रुघ्न जी के चरण कमल में प्रणाम करता हूँ, *सूर सुसील* = जो वीर हैं व समस्त सुंदर गुणों से भरपूर हैं, *भरत अनुगामी* = भरत जी के गुण भी इनमें विद्यमान हैं।

शत्रुघ्न जी प्रभु राम के तीसरे भाई हैं। इनकी तीन विशेषतायें हैं– 1. वीर हैं, 2. सुशील हैं मायने समस्त सुंदर गुण उनमें विद्यमान हैं, 3. भरत अनुगामी हैं यानि भरत जी के जो गुण हैं वे भी इनमें विद्यमान हैं। अनुगामी मायने यह नहीं कि भरतजी के पीछे-पीछे घूमते रहते हैं, बल्कि जैसा भरत का स्वभाव ऐसा इनका स्वभाव, जैसे भरत के हृदय में राम के प्रति प्रेम है वैसे ही इनके हृदय में प्रेम है। ये सदा भरत के साथ रहते हैं जैसे लक्ष्मण सदा राम के साथ रहते हैं।

रामचरितमानस में इनकी वीरता कहीं दिखाई नहीं देती है। बाद में जब श्रीराम ने अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा छोड़ा तब उसकी रक्षा के लिये इन्हें ही नियुक्त किया, जहाँ भी युद्ध की स्थिति हुई शत्रुघ्न जी ने ही युद्ध किया, निशाचरों को भी मारा।

हनुमान जी महावीर हैं, उनके हृदय में राम का वास है

महाबीर बिनवउँ हनुमाना। राम जासु जस आप बखाना ॥17:10॥

प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यानघन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर ॥दोहा 17॥

महाबीर बिनवउँ हनुमाना = महावीर हनुमान जी की विनती करता हूँ, *राम जासु जस आप बखाना* = जिसके यश का राम स्वयं वर्णन करते हैं। *प्रनवउँ पवनकुमार* = पवन-पुत्र हनुमान जी को प्रणाम करते हैं, *खल बन पावक* = जो दुष्ट विचारों के वन को अग्नि से जला देते हैं, *ग्यानघन* = जो दृढ़ ज्ञान से भरपूर हैं, *जासु हृदय आगार* = जिनके हृदय रूपी घर में, *बसहिं राम सर चाप धर* = राम धनुष बाण लेकर निवास करते हैं।

तुलसीदास जी ने तीन भाइयों के साथ ही हनुमान जी की वन्दना की है। प्रभु राम के लिये हनुमान जी भी भाइयों से कम नहीं हैं। राम जी के तीनों भाई भी हनुमान जी को अपने भाई की तरह ही मानते हैं। ये ज्ञानी व भक्त के साथ महावीर भी हैं। इनकी विशेषता है कि प्रभु राम स्वयं इनका यश गाते हैं व धनुष बाण लेकर हनुमान जी के घर में यानि हृदय में सदा वास करते हैं। हनुमान जी से प्रार्थना है कि वे हमारे मन में वन के समान जो बुरे विचार रहते हैं उन्हें जलाकर समाप्त कर दें।

सुग्रीव, जामवंत, विभीषण, अंगद व वानर समाज की वंदना

कपिपति रीछ निसाचर राजा। अंगदादि जे कीस समाजा ॥18:1॥
बंदउँ सब के चरन सुहाए। अधम सरीर राम जिन्ह पाए ॥18:2॥

कपिपति रीछ निसाचर राजा = कपियों के राजा सुग्रीव; रीछों के राजा जामवंत जी; निशाचरों के राजा विभीषण, *अंगदादि जे कीस समाजा* = अंगद सहित

समस्त वानर समाज, *बंदउँ सब के चरन सुहाए* = सबके सुंदर चरणों की वंदना करता हूँ, *अधम सरीर राम जिन्ह पाए* = जिन्होंने अधम शरीर में भी राम को प्राप्त कर लिया।

रामचरितमानस के ये सब पात्र पशु या राक्षस जाति के हैं, इनके चरण सुंदर नहीं हैं, इनके शरीर भी अधम कहलाते हैं, पर इनकी विशेषता है कि इन्होंने अपनी भक्ति व सेवा से ऐसे अधम शरीर में भी राम को प्राप्त कर लिया। इसलिये तुलसीदास जी इनके चरणों को सुंदर मानते हैं, इनकी वंदना करते हैं। सुंदर रूप, सुंदर वस्त्र व आभूषण धारण करने से कोई सुंदर नहीं होता है, सुंदरता तो तब है जब ज्ञान हो, भक्ति हो, परमार्थ हो, लोकोपकारी कार्य हों।

श्रीराम के जितने भी निष्काम उपासक हैं सबकी वंदना

रघुपति चरन उपासक जेते। खग मृग सुर नर असुर समेते ॥18:3॥
बंदउँ पद सरोज सब केरे। जे बिनु काम राम के चेरे ॥18:4॥

रघुपति चरन उपासक जेते = श्रीराम के चरणों की उपासना करने वाले जो लोग हैं, *खग मृग सुर नर असुर समेते* = पशु; पक्षी; देवता; मनुष्य; असुर सहित, *बंदउँ पद सरोज सब केरे* = सबके कमल के समान चरणों की वंदना करते हैं, *जे बिनु काम राम के चेरे* = जो बिना किसी लालच के राम के सेवक हैं।

पक्षी में जटायु का उदाहरण है जिसने सीता जी को बचाने के लिये रावण से युद्ध करके अपनी जान गंवा दी। वह तो पक्षियों में भी अधम है फिर भी उसके महान् कार्य को देखते हुए श्रीराम ने उसे अपनी गोद में लिटाया, उसका अंतिम संस्कार किया। राम की सेवा मायने राम के बनाये संसार की सेवा। तुलसीदास जी निष्काम भाव से राम की सेवा करने वाले समस्त प्राणियों के चरणों की वंदना करते हैं।

शुकदेव जी, सनकादि व नारद जी की वन्दना

सुक सनकादि भगत मुनि नारद। जे मुनिबर बिग्यान बिसारद ॥18:5॥
प्रनवउँ सबहि धरनि धरि सीसा। करहु कृपा जन जानि मुनीसा ॥18:6॥

सुक सनकादि भगत मुनि नारद = शुकदेव जी; सनकादि; नारद मुनि ये सब राम के भक्त हैं, *जे मुनिबर बिग्यान बिसारद* = ये सब मुनि हैं व विज्ञान के विशारद हैं, *प्रनवउँ सबहि धरनि धरि सीसा* = इन सबको धरती पर सिर रखकर प्रणाम करता हूँ, *करहु कृपा जन जानि मुनीसा* = आप सब मुनिगण मुझे अपना दास समझकर कृपा करें।

शुकदेव व्यास जी के पुत्र, जन्म से ही ज्ञानी व भक्त

शुकदेव जी व्यास जी के पुत्र हैं। पूर्व जन्म में तोता थे, तब शंकर जी जब पार्वती जी को अमर कथा सुना रहे थे, इन्होंने भी सुन ली। तोता का शरीर छूटने पर व्यास पुत्र बने। जन्म से ही ज्ञान, विज्ञान व भक्ति की बातें करते रहे। ये सदा 16 वर्ष की आयु के रहते हैं।

सनकादि ब्रह्मा जी के चार मानस पुत्र हैं

सनक, सनंदन, सनातन व सनतकुमार इन चारों को सनकादि कहते हैं। ये ब्रह्मा जी के संकल्प से उत्पन्न हुए हैं इसीलिए ब्रह्मा जी के मानस पुत्र कहलाते हैं। ये सदा पाँच वर्ष के दिगंबर बालक बने रहते हैं। परम ज्ञानी, भक्त, विरक्त व दिव्य हैं। सदा विचरण करते रहते हैं, भगवान् की कथा कहना व सुनना इनका व्यसन है।

नारद जी राम के परम भक्त

नारद जी मुनि हैं, इनकी कथा रामचरितमानस में नारद मोह के नाम से है। पूर्व जन्म में ये दासी पुत्र थे। भगवान् का नाम जप करके ये परम भक्त व ज्ञानी बन गये। ये भक्ति, ज्ञान व वैराग्य से भरपूर हैं। तुलसीदास जी इनकी महिमा को देखते हुए, जमीन पर मस्तक रखकर इन्हें प्रणाम करके इनकी कृपा मांगते हैं।

सीता जी जनकनंदिनी, राम की प्रियतमा व जगतजननी हैं

जनकसुता जग जननि जानकी। अतिसय प्रिय करुनानिधान की ॥18:7॥
ताके जुग पद कमल मनावउँ। जासु कृपाँ निरमल मति पावउँ ॥18:8॥

जनकसुता = राजा जनक की पुत्री, *जग जननि जानकी* = जगत को बनाने वाली सीता जी, *अतिसय प्रिय करुनानिधान की* = जो करुणानिधान श्रीराम

को बहुत अधिक प्रिय हैं, *ताके जुग पद कमल मनावउँ* = उनके कमल के समान दोनों चरणों में प्रणाम करता हूँ, *जासु कृपाँ निरमल मति पावउँ* = जिनकी कृपा से मेरी बुद्धि निर्मल हो।

यह चौपाई बहुत सुंदर है, अपनी बुद्धि का विकास करने के लिये इसका पाठ करते रहना चाहिये। तुलसीदास जी इस चौपाई में चार बातों से माँ सीता की महानता प्रस्तुत करके उनका परिचय देते हैं, उन्हें प्रणाम कर निर्मल बुद्धि प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

1. जन्म– सीता जी राजा जनक की पुत्री हैं इसलिये जानकी कहलाती हैं। जनक जी विदेह हैं अत: उन्हें वैदेही भी कहते हैं। जिनके पिता इतने ज्ञानवान् हों कि उन्हें देह का अभिमान ही न हो तो उनकी पुत्री भी तो देहाभिमान रहित व ज्ञानवती होगी।
2. साथ– सीता जी का साथ श्रीराम का है। ये राम की पत्नी हैं। सदैव उनके साथ रहती हैं। इनकी महिमा इसलिये भी है कि राम को ये अत्यंत प्रिय हैं ।
3. कर्म– सीता जी श्रीराम की महामाया शक्ति हैं इसलिये जगत को बनाने वाली हैं। ये विद्यामाया हैं, ये परम शक्ति हैं। इन्होंने राजा जनक के यहाँ अवतार लिया है।
4. गुण– इनकी उपासना करने से व्यक्ति की बुद्धि का विकास होता है। इनकी शक्ति, बुद्धि को शुद्ध एवं निर्मल कर देती है। उस बुद्धि को यदि संसार में लगा दो तो लौकिक उपलब्धि प्राप्त होगी, यदि राम भक्ति में लगा दो तो ज्ञान की प्राप्ति होगी। जीवन में उपलब्धि को हासिल करने के लिये बुद्धि चाहिये जिसके लिये सीता जी का ध्यान करें, उनके चरणों की उपासना करें, धीरे-धीरे बुद्धि निर्मल हो जायेगी।

तुलसीदास जी की प्रभु राम तक पहुँच सीता जी से है

तुलसीदास जी की एक रचना है विनय पत्रिका, जिसमें वे प्रभु राम को विनय पूर्वक एक पत्र लिखते हैं। यह पत्रिका वे सीता जी के हाथ में देकर उनसे प्रार्थना करते हैं: "हे माँ! कभी अवसर पाकर के, प्रभु राम से हमारी चर्चा चला देना, कह देना कि तुलसीदास बड़ा दीन है, बड़ा दु:खी है, उसका भी कुछ ख्याल करो।"

राम सर्वसमर्थ हैं

पुनि मन बचन कर्म रघुनायक। चरन कमल बंदउँ सब लायक ॥18:9॥
राजिवनयन धरें धनु सायक। भगत बिपति भंजन सुखदायक ॥18:10॥

पुनि मन बचन कर्म रघुनायक = फिर मैं मन, वचन और कर्म से रघुनाथ जी के, *चरन कमल बंदउँ* = कमल के समान चरणों की वंदना करता हूँ, *सब लायक* = जो सर्वसमर्थ हैं, *राजिवनयन* = जिनके कमल के समान सुंदर नेत्र हैं, *धरें धनु सायक* = जो धनुष बाण धारण किये हैं, *भगत बिपति भंजन सुखदायक* = जो भक्तों के कष्टों को दूर कर उन्हें सुख प्रदान करते हैं।

रामचरितमानस के सभी पात्रों की वन्दना व उनकी विशेषता बताने के बाद तुलसीदास जी श्रीराम के लिये 'सब लायक' कहते हैं, मायने सब प्रकार से योग्य, सर्वसमर्थ। श्रीराम के ये धनुष-बाण लकड़ी या लोहे के नहीं बने हैं। ये अलौकिक हैं। ये बाण भक्त की विपत्ति को समाप्त करने वाले हैं। इन बाणों ने लंका में रावण, कुंभकर्ण का नाश किया। कोई दुःख, कोई संकट रह ही नहीं सकता ऐसे हैं प्रभु राम के बाण। यदि किसी से पूछो क्या चाहिये जीवन में, तो कहेगा बस सुख चाहिये, आनंद चाहिये, दुःख एक भी न हो। इस प्रकार का सुख सिर्फ राम ही दे सकते हैं, वे सुखदायक हैं।

राम व सीता का एकत्व

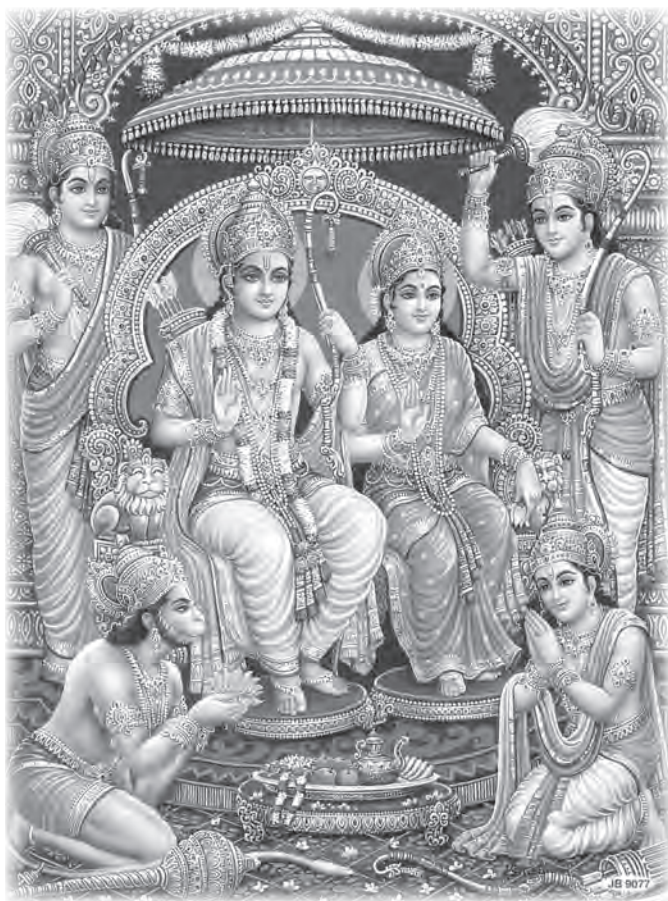
गिरा अरथ जल बीचि सम कहिअत भिन्न न भिन्न ।
बंदउँ सीता राम पद जिन्हहि परम प्रिय खिन्न ॥दोहा 18॥

गिरा अरथ = वाणी व उसका अर्थ, *जल बीचि सम* = जल व उसकी तरंग के समान, *कहिअत भिन्न न भिन्न* = कहने में अलग-अलग हैं पर वास्तव में ये एक ही हैं, *बंदउँ सीता राम पद* = उन सीताराम के चरणों की वंदना करता हूँ, *जिन्हहि परम प्रिय खिन्न* = जिन्हें दीन बहुत प्रिय हैं।

तुलसीदास जी इस दोहे में सीता व राम को एक कर देते हैं। जैसे जल का नाम जल है उसकी तरंग का नाम तरंग है, दो अलग चीजे हैं, अब दोनों को जरा अलग करके देखो, पानी से तरंग को निकालो अलग से हाथ में कुछ

नहीं आयेगा, कुछ है ही नहीं वह तरंग जल ही है, जल से अलग कुछ नहीं है। जल व तरंग को एक दूसरे से बहुत प्रेम है वहाँ वियोग हो ही नहीं सकता। बस ऐसा ही प्रेम राम-सीता में है वे तत्त्वत: एक ही हैं, अलग-अलग हैं ही नहीं, दोनों अलग-अलग हो भी नहीं सकते। इसी प्रकार वाणी व उसका अर्थ या नाम व रूप अलग-अलग नहीं हो सकते, देखने में नाम व रूप अलग है पर हैं एक ही।

यहाँ पर खिन्न के मायने रोता हुआ दु:खी व्यक्ति नहीं है। जो राम की शरण में है, निरहंकारी है, उन्हीं पर आश्रित है, उसे खिन्न कहते हैं। ऐसे व्यक्ति सीता-राम को बहुत प्रिय हैं।



11. राम नाम की महिमा

(दोहा 19 से 27)

स्वामी सत्यानंद जी रिखिया सत्संग में कहते हैं कि तुम भगवान पर अविश्वास कर सकते हो। ठीक है। तुम्हें राम के अस्तित्व पर शंका हो सकती है या प्रश्न हो सकता है, कृष्ण के अस्तित्व पर या तुम प्रश्न पूछ सकते हो शिव के अस्तित्व के बारे में। सब ठीक है, पर मैं भगवान के बारे में बात नहीं कर रहा हूँ। मैं बोल रहा हूँ नाम के बारे में। नाम पर कभी शंका मत करना। जब राम का नाम लेते हो तो तुम्हारा मन, तुम्हारा हृदय, तुम्हारा पूरा जीवन ऐसे धुल जाता है, जैसे राम का नाम डिटरजेंट पाउडर हो। यह बात पक्की है कि संसार रूपी काजल की कोठरी में, जिसको प्रपंच और माया कहते हैं, हम जो आए हैं, थोड़ा दाग तो सबको लगता ही है, रोजाना लगता है, उससे तुम बच नहीं सकते हो। यह भगवान का नाम मामूली चीज नहीं है। यह भगवान का नाम आत्मबम है। तुम्हारे अंदर में जितनी माया, मलिनता, कोढ़, गंदगी, भय, निराशा, जितनी भी आसुरी शक्ति है सबको समाप्त कर देगा। मेरा कहना है कि रोज जब भी तुमको समय मिले भगवान् का नाम जपो। 1 घण्टा जपो, 2 घण्टा जपो। समय मिले तो कभी 1 दिन, कभी 2 दिन, कभी 9 दिन या साल भर का अनुष्ठान करो। यही एकमात्र रास्ता है।

तुलसीदास जी ने सबकी वन्दना एक या दो पंक्तियों में की है, परंतु नाम की महिमा बहुत विस्तार से 9 दोहे व 72 चौपाइयों में की है। वे कहते हैं हमें जो भी उपलब्धि हुई इसी राम नाम जप से हुई। राम नाम तो बहुत लोग जपते हैं, परंतु महिमा जाने बिना। महिमा जानकर यदि नाम जप करें तो वह जल्दी फलदायी होगा। राम नाम जपने वालों या गुरु मंत्र का जप करने वालों या भगवान के किसी भी अन्य नाम का जप करने वालों को नाम महिमा का यह प्रसंग बहुत ही सावधानी पूर्वक पाठ करके, इसे समझने का प्रयास करना चाहिये। इस पूरे प्रसंग का प्रस्तुतीकरण नौ शीर्षकों में किया गया है।

1. राम नाम की महिमा

प्रथम आठ चौपाइयों में तुलसीदास जी राम नाम की महिमा बताते हैं। राम नाम किसका बीज मंत्र है, कैसे यह अपने आप में महामंत्र व पूर्ण मंत्र है इसे समझाते हैं। शिव, पार्वती, गणेश जी की पौराणिक कथाओं का उदाहरण देकर इसकी महिमा बताते हैं, जिससे इसका महत्त्व हमें आसानी से समझ आये, चित्त में इसकी महिमा सदा बनी रहे।

राम नाम अग्नि, चन्द्रमा व सूर्य का बीज मंत्र है

बंदउँ नाम राम रघुबर को। हेतु कृसानु भानु हिमकर को ॥19:1॥

बंदउँ नाम राम रघुबर को = मैं वंदना करता हूँ राम नाम की जिन्होंने रघुकुल में जन्म लिया है, *हेतु* = जो कारण या बीज हैं, *कृसानु भानु हिमकर को* = अग्नि, सूर्य व चन्द्रमा के।

राम नाम में "र" शब्द अग्नि का बीज मंत्र है जो वैराग्य का प्रतीक है। "अ" शब्द सूर्य का बीज मंत्र है जो ज्ञान का प्रतीक है। "म" शब्द चन्द्रमा का बीज मंत्र है जो भक्ति का प्रतीक है। इस प्रकार राम नाम जपने से व्यक्ति को वैराग्य, ज्ञान व भक्ति तीनों की प्राप्ति होती है। राम नाम का जप अपने आप में एक संपूर्ण साधना है।

राम नाम स्वयं में पूर्ण मंत्र है

बिधि हरि हरमय बेद प्रान सो। अगुन अनूपम गुन निधान सो ॥19:2॥

बिधि हरि हरमय = यह ब्रह्मा, विष्णु व महेश का रूप हैं, *बेद प्रान सो* = यह वेदों का प्राण यानि ॐ है, *अगुन अनूपम* = राम नाम निर्गुण व अद्वितीय है, *गुन निधान सो* = राम नाम गुणों का भंडार भी है, यह सगुण भी है।

ॐ में तीन अक्षर अ उ म होते हैं, राम में भी र अ म हैं। उ की जगह र है। जितनी सामर्थ्य ओम की है उतनी राम की है। अन्य कोई भी मंत्र हो उसके पहले ॐ लगाते हैं परंतु राम के पहले ॐ नहीं लगाते, क्योंकि राम स्वयं ही ओम है। "राम" नाम स्वयं में पूर्ण मंत्र है। यह न समझें के इसमें ओम नहीं लगा है। इसके आगे-पीछे कुछ लगाने की जरुरत नहीं है। बस आप राम नाम की महिमा को ध्यान में रखते हुए जपते जायें राम राम राम राम राम राम राम राम राम ।

राम नाम महामंत्र है जिसे शिव सदा जपते हैं

महामंत्र जोइ जपत महेसू। कासीं मुकुति हेतु उपदेसू ॥19:3॥

महामंत्र जोइ जपत महेसू = राम नाम महामंत्र है जिसका शंकर जी जप करते हैं, *कासीं मुकुति हेतु उपदेसू* = काशी में मुक्ति के लिये राम नाम का उपदेश शंकर जी देते हैं।

प्रभु राम ने स्वयं शंकर जी से कहा कि जो लोग काशी में शरीर त्यागें उनके दाहिने कान में आप राम बोलें, इस प्रकार जब प्राणी के कान में राम नाम गुंजायमान होगा तो शरीर त्यागने पर वे मुक्त हो जायेंगे। मंत्र देने के विधान के अनुसार जो व्यक्ति दूसरों को मंत्र देता है उसे वह मंत्र स्वयं भी जपना पड़ता है। इसलिये शंकर जी सदा महामंत्र राम नाम जपते रहते हैं।

राम नाम के कारण गणेश जी प्रथम पूजनीय बने

महिमा जासु जान गनराऊ। प्रथम पूजिअत नाम प्रभाऊ ॥19:4॥

महिमा जासु जान = जिसकी महिमा जानने से, *गनराऊ* = गणेशजी, *प्रथम पूजिअत* = सबसे पहले पूजे जाते हैं, *नाम प्रभाऊ* = राम नाम के प्रभाव से।

पौराणिक कथा के अनुसार एक बार प्रतिस्पर्धा आयोजित की गई कि जो ब्रह्माण्ड का चक्कर पहले लगा कर आयेगा उसकी पूजा सबसे पहले होगी। सब देवता अपने वाहनों से चल दिये। गणेश जी का वाहन चूहा था, वे धीरे-धीरे चल रहे थे, रास्ते में नारद जी मिले उन्होंने कहा राम का नाम ब्रह्माण्ड से बड़ा है तुम पृथ्वी पर राम नाम लिखकर उसकी परिक्रमा लगा दो। गणेश जी ने राम नाम लिखकर उसकी परिक्रमा लगा दी और ब्रह्मा जी से जाकर मिले, उन्हें विजयी घोषित किया गया। गणेश जी प्रथम पूजनीय बन गये, उन्हें राम नाम की महिमा भी पता चल गयी।

राम नाम को उल्टा जपकर वाल्मीकि जी महान् कवि बने

जान आदिकबि नाम प्रतापू। भयउ सुद्ध करि उलटा जापू ॥19:5॥

जान आदिकबि नाम प्रतापू = आदिकवि वाल्मीकि जी नाम का प्रताप जानकर, भयउ सुद्ध = वे पवित्र हो गये, *करि उलटा जापू* = उल्टा राम का जप करके यानि मरा मरा मरा कहकर।

वाल्मीकि जी पहले सबको मारते थे, सप्तऋषि के कहने से मरा मरा तेजी से जपने लगे, थोड़ी देर बाद अपने आप वह राम राम निकलने लगा। वे जपते-जपते शुद्ध हो गये। उनके हृदय में श्रीराम के चरित्रों का प्रकाश दिखाई देने लगा। उन्होंने संस्कृत में रामायण जैसे महान् ग्रंथ की रचना की।

राम नाम विष्णु सहस्त्रनाम के समान

सहस नाम सम सुनि सिव बानी। जपि जेईं पिय संग भवानी ॥19:6॥
हरषे हेतु हेरि हर ही को। किय भूषन तिय भूषन ती को ॥19:7॥

सहस नाम सम = राम नाम विष्णु सहस्त्र नाम के समान है, *सुनि सिव बानी* = शंकर जी से यह बात सुनकर, *जपि* = राम नाम का जप करके, *जेईं पिय संग भवानी* = पार्वती जी ने शंकर जी के साथ भोजन कर लिया, *हरषे हेतु हेरि हर ही को* = राम नाम के प्रति पार्वती के हदय में विश्वास देखकर शंकर जी प्रसन्न होकर, *किय भूषन तिय भूषन ती को* = पतिव्रताओं की शिरोमणि पार्वती जी को अपना भूषण बना लिया यानि उन्हें अपने वाम भाग में धारण करके अर्द्धनारीश्वर बन गये।

पार्वतीजी रोज विष्णु सहस्त्रनाम के जप के बाद ही भोजन करती थीं। एक दिन शंकर जी को भूख लगी, पार्वती जी ने कहा आप भोजन कर लें, अभी हम पाठ करेंगे हमें देर लगेगी। शंकर जी ने कहा विष्णु सहस्त्रनाम के बराबर राम नाम है, तुम एक बार राम नाम बोलकर हमारे साथ भोजन करने आओ। पार्वती जी राम नाम कहकर शंकर जी के साथ भोजन करने लगीं। पार्वती का विश्वास देखकर शिव जी ने प्रसन्न होकर उन्हें अपने वाम अंग में धारण कर लिया। शिव जी का यह रूप अर्द्धनारीश्वर कहलाता है जो उनकी प्रसन्नता का सूचक है।

राम नाम के प्रभाव से कालकूट जहर अमृत बन गया

नाम प्रभाउ जान सिव नीको। कालकूट फलु दीन्ह अमी को ॥19:8॥

नाम प्रभाउ जान सिव नीको = राम नाम के प्रभाव को शिव जी अच्छे से जानते हैं, *कालकूट फलु* = जिसके कारण कालकूट जहर ने, *दीन्ह अमी को* = उन्हें अमृत के समान फल दिया ।

समुद्र मंथन के समय कालकूट विष उत्पन्न हुआ, यह सबको जला रहा था, देवताओं की प्रार्थना करने पर शिवजी ने राम नाम लिया और उसे पी गये। वैसे तो यह विष शंकर जी को जला देता परंतु यह उनके लिये अमृत बन गया। इस संसार में भी विष के समान नाना प्रकार के दु:ख व क्लेश हैं, जिसके हृदय में राम नाम है, उसके लिये ये दु:ख व क्लेश भी कल्याणकारी ही बन जाते हैं।

2. 'रा', 'म' अक्षरों की महिमा 12 प्रतीकों से

गोस्वामी तुलसीदास जी दो दोहे व 8 चौपाइयों में **रा म** की तुलना 12 प्रतीकों से करके सुंदर काव्यात्मक प्रस्तुति करते हुए इनकी महिमा का वर्णन करते हैं।

सावन-भादो जैसे रा-म से हृदय में भक्ति की वर्षा

बरषा रितु रघुपति भगति तुलसी सालि सुदास।
राम नाम बर बरन जुग सावन भादव मास ॥दोहा 19॥

बरषा रितु रघुपति भगति = श्रीराम की भक्ति वर्षा ऋतु के समान है, *तुलसी* = तुलसीदास जी कहते हैं कि, *सालि सुदास* = धान के खेत के समान भक्त लोग हैं, *राम नाम बर बरन जुग* = राम नाम के सुंदर दोनों वर्ण 'रा' और 'म', *सावन भादव मास* = सावन व भादो के महीने हैं।

जब सावन व भादो के दोनों महीने आते हैं तब वर्षा होती है, खेत लहलहाने लगते हैं, चारों ओर आनंद छा जाता है। इसी प्रकार जब व्यक्ति के हृदय में 'रा', 'म' दोनों वर्ण आते हैं, तो हृदय में राम की भक्ति बरसने लगती है। भक्त का हृदय आनंद से भर जाता है। जैसे बिना पानी के खेत सूख जाते हैं, वैसे ही बिना भक्ति के जीवन कष्टमय बना रहता है।

रा-म वर्णमाला की दो आँखें, स्मरण करने में आसान

आखर मधुर मनोहर दोऊ। बरन बिलोचन जन जिय जोऊ ॥20:1॥
सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू। लोक लाहु परलोक निबाहू ॥20:2॥

आखर मधुर मनोहर दोऊ = दोनों अक्षर मधुर व मनोहर हैं, *बरन बिलोचन जन जिय जोऊ* = यदि वर्णमाला को शरीर मान लें तो इसकी ये दो आँखें हैं,

सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू = स्मरण करने में आसान व सबको सुख देने वाले हैं, *लोक लाहु* = ये इस जीवन को सुखी बनाते हैं, परलोक निबाहू = मरने के बाद परलोक को भी सुधारते हैं।

दोनों अक्षर मधुर व मनोहर हैं। यदि वर्णमाला को शरीर मान लें तो ये इसकी दो आँखों के समान हैं। ये स्मरण करने में आसान व सबको सुख देने वाले हैं। इस जीवन को तो सुखी बनाते ही हैं, मरने के बाद परलोक को भी सुधार देते हैं।

'रा' राम और 'म' लक्ष्मण के समान तुलसीदास को प्रिय

कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके। राम लखन सम प्रिय तुलसी के ॥20:3॥

कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके = कहने में, सुनने में, स्मरण करने में बहुत अच्छे हैं, *राम लखन सम प्रिय तुलसी के* = 'रा', राम के समान, 'म', लक्ष्मण के समान तुलसीदास जी को प्रिय हैं।

अपने मुँह से राम कहो तो अच्छा लगता है। दूसरा राम कहता है, हम सुनते हैं तो सुनने में अच्छा लगता है। यदि हम राम नाम का स्मरण, उनके स्वरूप का चिंतन करते हैं तो भी अच्छा लगता है। जिस प्रकार राम व लक्ष्मण तुलसीदासजी को बहुत प्रिय हैं, इसी प्रकार 'रा', राम के समान और 'म', लक्ष्मण के समान दोनों अक्षर भी तुलसीदास को बहुत प्रिय हैं।

रा ब्रह्म, म जीव के समान सदा साथ में रहते हैं

बरनत बरन प्रीति बिलगाती। ब्रह्म जीव सम सहज सँघाती ॥20:4॥

बरनत बरन = रा, म वर्ण को अलग-अलग वर्णन करने में, *प्रीति बिलगाती* = दोनों शब्दों का आपस का प्रेम समाप्त हो जाता है, *ब्रह्म जीव सम* = जिस प्रकार ब्रह्म व जीव, *सहज सँघाती* = सहज रूप से साथ-साथ रहते हैं।

यदि रा और म दोनों वर्णों को अलग-अलग करके बोलें तो मंत्र दोष हो जायेगा, इन दोनों शब्दों की आपस की प्रीति समाप्त हो जायेगी। अत: सदैव

राम के दोनों वर्णों का एक साथ ही जप करें। कहें राम राम राम। जिस प्रकार से ब्रह्म व जीव सहज रूप से साथ-साथ रहते हैं उसी प्रकार दोनों वर्ण साथ ही रहते हैं। जहाँ जीव है वहाँ ब्रह्म है, जहाँ म वहाँ रा।

रा, म नर नारायण के समान दो भाई

नर नारायन सरिस सुभ्राता। जग पालक बिसेषि जन त्राता ॥20:5॥

नर नारायन सरिस सुभ्राता = नर व नारायण के समान सुंदर भाई हैं, *जग पालक* = जो संसार का पालन करते हैं, *बिसेषि जन त्राता* = विशेष रूप से भक्त जनों की रक्षा करते हैं।

बद्रिका आश्रम के आगे एक नारायण आश्रम है जहाँ नर नारायण दो भाई रहते हैं, इन दोनों में आपस में खूब पटती है, दोनों सदा साथ-साथ रहते हैं, दोनों में बहुत प्रेम है, वे दोनों साथ में तपस्या करते हैं। इसी प्रकार रा व म दो भाई हैं। राम के जप से रा व म दोनों अक्षर मिलकर भक्त की इस संसार की आवश्यकताओं की पूर्ति तो करते ही हैं, परमार्थिक लक्ष्य भी प्राप्त करा देते हैं।

रा व म कर्णफूल व सूर्य चन्द्रमा जैसे जगत के पोषक

भगति सुतिय कल करन बिभूषन। जग हित हेतु बिमल बिधु पूषन ॥20:6॥

भगति सुतिय = ये भक्ति रूपी सुंदर स्त्री के, *कल करन बिभूषन* = कानों के कर्णफूल के समान हैं, *जग हित हेतु* = संसार के हित के लिये, *बिमल बिधु पूषन* = निर्मल चन्द्रमा व सूर्य के समान हैं।

मंत्र को जपते-जपते अंत में वह कान में सुनाई देने लगता है, इसीलिये इसे कान का कर्णफूल कहा गया है। जब मंत्र सिद्ध हो जाता है तब मंत्र न जपो तब भी बिना प्रयास के जप चलता रहता है। इसको अजपाजप भी कहते हैं। कान में निरंतर राम राम शब्द का उच्चारण होता अनुभव होगा, यह जप की पूर्णावस्था है। सूर्य व चन्द्र जगत का पालन-पोषण प्रकाश देकर, वर्षा व शीतलता द्वारा करते रहते हैं। परंतु इनमें भी कुछ दोष हैं। रा व म

भी जगत का पोषण सूर्य व चन्द्र की तरह करते रहते हैं, परंतु इनमें किसी तरह का दोष नहीं है।

रा कछुआ, म शेषनाग हैं जिस पर जगत टिका है

स्वाद तोष सम सुगति सुधा के। कमठ सेष सम धर बसुधा के॥20:7॥

स्वाद तोष सम = रा स्वाद व म संतोष के समान हैं, *सुगति सुधा के* = मोक्ष रूपी अमृत के, *कमठ सेष सम* = रा कछुआ व म शेषनाग के समान हैं, *धर बसुधा के* = जो पृथ्वी को धारण किये हैं।

परमगति यानि मोक्ष रूपी अमृत के मिलने से जो स्वाद व संतुष्टि मिलती है वैसे ही रा स्वाद है व म संतोष है। पुराणों के अनुसार शेषनाग अपने सिर पर इस पृथ्वी को धारण किये हैं, वे ही पृथ्वी का आधार हैं। शेषनाग स्वयं कछुआ के ऊपर बैठे रहते हैं। अपने अंदर देखें तो हमारा शरीर पृथ्वी है, ब्रह्म कछुआ है, और जीव शेषनाग है, ब्रह्म के ऊपर जीव टिका है, जीव के ऊपर हमारा शरीर टिका है। इस प्रसंग में 'रा' कछुआ है, 'म' शेषनाग है, रा म पर ही यह जगत टिका है।

भक्त की जीभ यशोदा माँ है, उसमें रा कृष्ण, म बलदेव हैं

जन मन मंजु कंज मधुकर से। जीह जसोमति हरि हलधर से ॥20:8॥

जन मन मंजु कंज = भक्तों के मन के सुंदर कमल में, *मधुकर से* = भौंरे के समान हैं, *जीह जसोमति* = जीभ जो यशोदा के समान है, *हरि हलधर से* = उसके लिये कृष्ण बलदेव के समान हैं।

जिस प्रकार भौंरे कमल के पुष्प के चारों ओर मकरंद के कारण मंडराते रहते हैं उसी प्रकार 'रा' 'म' रूपी दो भौंरे भक्तों के हृदय जो कमल पुष्प के समान कोमल व सुंदर हैं, के चारों ओर मंडराते रहते हैं। यशोदा माता जीभ के समान है, जैसे कृष्ण व बलराम जब आकर यशोदा माता की गोद में बैठते हैं तो माँ आनंदित हो जाती है वैसे ही जब 'रा' व 'म' जीभ में आते हैं तो मन आनंदित हो जाता है।

रा छत्र म मुकुटमणि के समान सब वर्णों के ऊपर बैठे हैं

एकु छत्रु एकु मुकुटमनि सब बरननि पर जोउ ।
तुलसी रघुबर नाम के बरन बिराजत दोउ ॥दोहा 20॥

एकु छत्रु = एक छत्र के समान, *एकु मुकुटमनि* = एक मुकुटमणि के समान, *सब बरननि पर जोउ* = सब वर्णों के ऊपर ये 'रा' 'म' शोभायमान हैं, *तुलसी* = तुलसीदासजी कहते हैं, *रघुबर नाम के बरन बिराजत दोउ* = रघुबर के नाम 'रा' 'म' के दोनों वर्ण सभी वर्णों के ऊपर बैठे हैं।

तुलसीदासजी कहते हैं कि रघुबर के नाम राम के दोनों वर्ण वर्णमाला के सब अक्षरों के ऊपर बहुत शोभा देते हैं। रा छत्र रूप में (ि) और म मुकुटमणि के समान (ँ) विराजमान रहते हैं। हमें भी सबसे ऊपर होने के लिये 'रा म' का आश्रय लेना चाहिये।

3. राम के नाम व राम के रूप में संबंध

भगवान जब अवतार लेते हैं तो एक रूप धारण करते हैं और उनका एक नाम होता है। जितने रूप वे धारण करते हैं उतने उनके नाम हो जाते हैं। जैसे राम रूप में वे धनुषबाण धारण किये हुए हैं, श्यामवर्ण हैं और उनका नाम राम है।

इस प्रसंग में बहुत बारीकी से दोनों का संबंध समझाकर कहते हैं कि यह विषय समझाने में कठिन है, आप स्वयं जप करके इसका अनुभव करें। इस प्रसंग का वर्णन आठ चौपाइयों में किया है।

नाम पुकारने से उसका रूप आ जाता है

समुझत सरिस नाम अरु नामी। प्रीति परसपर प्रभु अनुगामी ॥21:1॥

समुझत सरिस नाम अरु नामी = समझने में नाम और रूप एक समान लगते हैं, *प्रीति परसपर* = दोनों में आपस में प्रेम है, *प्रभु अनुगामी* = पर एक मालिक है एक सेवक है।

सामान्यतया समझने में तो नाम और नामी एक समान दिखायी देते हैं, और दोनों में आपस में प्रेम भी रहता है। जहाँ रूप वहाँ नाम, जहाँ नाम वहाँ

रूप। परंतु वास्तव में नाम स्वामी है व रूप उसका सेवक है। जैसे स्वामी के बुलाने से सेवक आता है उसी प्रकार नाम पुकारने से उस नाम का रूपधारी भी आता है। आप राम का नाम जपोगे तो उनका रूप भी आपके हृदय में आ जायेगा। इसलिये नाम और रूप में नाम प्रधान है और रूप उसके आधीन है।

नाम व रूप ईश्वर की दो उपाधियाँ हैं

नाम रूप दुइ ईस उपाधी। अकथ अनादि सुसामुझि साधी ॥21:2॥

नाम रूप दुइ ईस उपाधी = नाम व रूप ईश्वर की दो उपाधियाँ हैं, *अकथ अनादि* = इनका वर्णन नहीं किया जा सकता इनका संबंध अनादि है, *सुसामुझि साधी* = इस संबंध को वही समझ सकता है जिसकी बुद्धि विकसित होगी।

भगवान जब अवतार लेते हैं तो एक रूप धारण करते हैं और उनका एक नाम होता है। इन दोनों उपाधियों को धारण करने पर वे सगुण ईश्वर कहलाते हैं। जितने रूप वे धारण करते हैं उतने उनके नाम हो जाते हैं। जैसे राम रूप में वे धनुषबाण धारण किये हुए हैं, श्यामवर्ण हैं और उनका नाम राम है। कृष्ण रूप में वे बंसी धारण किये हैं, मोर का मुकुट लगाये हैं नाम है कृष्ण। शिव रूप में वे जटा धारण किये हैं, मस्तक पर चन्द्रमा है, सिर से गंगाजी बह रही हैं, नाम है शिव। नाम व रूप का संबंध अनादि है, अकथनीय है, जिसकी बुद्धि तेज होगी वही इस रहस्य को समझ सकता है।

रूप व नाम में कौन बड़ा है कहना कठिन है

को बड़ छोट कहत अपराधू। सुनि गुन भेदु समुझिहहिं साधू ॥21:3॥

को बड़ छोट कहत अपराधू = कौन बड़ा है कौन छोटा है यह कहना अपराध है, *सुनि गुन भेदु* = इनके गुण व भेद सुनकर, *समुझिहहिं साधू* = सज्जन लोग स्वयं ही समझ लेंगे।

नाम व रूप की तुलना करके यदि कोई कहे कि नाम बड़ा है रूप छोटा है या नाम छोटा है रूप उससे बड़ा है तो ऐसा कहना अपराध है या गलत है। दोनों

के गुण भेद महिमा के आधार पर सज्जन लोग निर्णय ले लेंगे। जो बात हम नहीं समझा पाये वह सज्जन स्वयं समझ लेंगे।

रूप की पहचान नाम से ही होती है

देखिअहिं रूप नाम आधीना। रूप ग्यान नहिं नाम बिहीना ॥21:4॥
रूप बिसेष नाम बिनु जानें। करतल गत न परहिं पहिचानें ॥21:5॥

देखिअहिं = देखने में, *रूप नाम आधीना* = रूप नाम के अधीन है, *रूप ग्यान* = रूप का ज्ञान, *नहिं नाम बिहीना* = बिना नाम जाने नहीं हो सकता है, *रूप बिसेष* = कोई विशेष रूप है, *नाम बिनु जानें* = उसके नाम की जानकारी नहीं है, *करतल गत* = वह वस्तु या रूप हथेली पर ही रखी हो, *न परहिं पहिचानें* = तो भी हम पहचान नहीं सकते हैं।

जनकपुरी में राम व लक्ष्मण को विश्वामित्र जी के साथ देखकर जनक जी की नजरें उन पर टिकी रह गयीं, उन्हें लगा ये तो साक्षात् भगवान ही हैं। पर वे बिना नाम जाने उनके रूप को पहचान नहीं पाये। विश्वामित्र जी द्वारा राम व लक्ष्मण नाम बताने पर जनक जी को उनके रूप का ज्ञान हो गया। इसी प्रकार जब हनुमान जी पहली बार अपने प्रभु राम से मिले तो उन्होंने पूछा आप कौन हैं? लगते तो भगवान हैं? तब श्रीराम ने कहा हम अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र हैं। मेरा नाम राम है। यह मेरा छोटा भाई लक्ष्मण है। जैसे ही उन्होंने नाम बताया हनुमान जी ने कहा, समझ गये आप तो मेरे प्रभु राम हैं।

वस्तु हाथ में हो परंतु बिना नाम उसका पहचान नहीं

कोई वस्तु हो और उसका नाम हम नहीं जानते, वह वस्तु हाथ पर रखी हो, फिर भी पहचान में नहीं आ सकती। वस्तु की पहचान नाम से ही होती है। वस्तु का रूप तो सामने आ गया पर वह वस्तु है क्या, नाम से ही समझ में आता है। इस प्रकार नाम की प्रधानता है, रूप उसके अधीन है।

पर बिना रूप देखे नाम पुकारें तो वह रूप आ जायेगा

सुमिरिअ नाम रूप बिनु देखें। आवत हृदयँ सनेह बिसेषें ॥21:6॥
नाम रूप गति अकथ कहानी। समुझत सुखद न परति बखानी ॥21:7॥

सुमिरिअ नाम = नाम का स्मरण करें, *रूप बिनु देखें* = बिना रूप के देखे, *आवत हृदयँ सनेह बिसेषें* = तो भी वह रूप हृदय में आ जाता है प्रेम के साथ, *नाम रूप गति* = नाम और रूप के साथ-साथ चलने का, *अकथ कहानी* = वर्णन कठिन है, *समुझत सुखद* = समझने में आसान व सुखद है, *न परति बखानी* = पर वर्णन करने में कठिन है।

कोई रूप न भी दिखाई दे तो भी नाम पुकारने से वह आ जाता है। मान लो अंधेरे में कोई व्यक्ति है, जो दिखाई नहीं देता है, आप उसका नाम बुलावें वह हाँ बोलेगा और आपके पास आ जायेगा। ऐसे ही भगवान सबके हृदय में वास करते हैं, हमें दिखाई नहीं देते पर नाम पुकारेंगे तो जरूर आ जाते हैं। जैसे ही नाम लेते हैं रूप हृदय में प्रगट हो जाता है।

स्वयं नाम जप करके इसकी महिमा का अनुभव करें

नाम व रूप साथ-साथ क्यों चलते हैं इसका वर्णन शब्दों से कर पाना बहुत मुश्किल है। इन अति सूक्ष्म बातों का वर्णन करने में भाषा असमर्थ है। परंतु ये बातें समझने में आसान हैं। यदि हमारी बुद्धि में नाम और रूप का मधुर संबंध समझ में आ जाये तो यह बहुत सुखद है।

राम नाम निर्गुण व सगुण दोनों का बोध करा देता है

अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी। उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी ॥21:8॥

अगुन सगुन बिच = निर्गुण व सगुण के बीच में, *नाम सुसाखी* = नाम सुंदर साक्षी है, *उभय प्रबोधक* = यह दोनों का बोध करा देता है, *चतुर दुभाषी* = यह चतुर दुभाषिये जैसे कार्य करता है।

राम का नाम कैसे भगवान के सगुण रूप व निर्गुण दोनों से मिलवाता है, इस पूरी प्रक्रिया को ध्यान से समझने का प्रयास करें। जब हम राम राम राम का जप करते हैं, तो दो चीजें रहती हैं एक हम, हमें पता है कि हम जप कर रहें हैं, दूसरी राम नाम की ध्वनि। राम राम कहते कहते धीरे-धीरे उनका सुंदर सगुण रूप दिखायी देने लगता है, वे धनुष बाण लिये हैं, सिर पर मुकुट है, नीले रंग का सुंदर शरीर है। अब भी दो चीजे हैं, हम हैं और राम का रूप

है। राम नाम से हमारा मन हटकर रूप पर आ जाता है। इस प्रकार राम नाम हमें सगुण राम से मिलवा देता है।

पर हम राम को देखते कैसे हैं? एक तीसरी चीज है, चेतना का प्रकाश। जैसे एक कमरे में हम आपको देख रहे हैं, और अपने आप को भी देख रहे हैं, परंतु कमरे में फैला हुआ प्रकाश भी तो है, जिससे हम देख रहे हैं। इसी प्रकार हृदय में चेतना का प्रकाश है, जिससे हम राम के रूप को देख रहे हैं।

वहाँ पर सूर्य, चन्द्रमा या बिजली का प्रकाश नहीं है। पर राम का रूप हृदय पर ज्यादा देर ठहरता नहीं, वे अपने नाम व रूप की उपाधि को छोड़कर अप्रकट हो जाते हैं, दिखाई देते हैं फिर लुप्त होते हैं, यह क्रम चलता रहता है। तो क्या चेतना का प्रकाश भी अप्रकट हो जाता है? नहीं, वह सदा बना रहता है, फिर हमारा ध्यान चेतना की तरफ जाता है। राम के रूप को प्रगट-लुप्त देखते-देखते हमारी भी नाम व रूप की उपाधि छूट जाती है, हम चेतना के प्रकाश को देखने लग जाते हैं, उस अव्यक्त तक पहुँच जाते हैं। सगुण रूप अप्रगट इसलिये हो जाता है ताकि हम उनके निर्गुण रूप को भी पहचान सकें, वे हमको अप्रकट तक ले जाते हैं, और वहाँ हम निर्गुण का साक्षात्कार लेते हैं। अब न हम हैं, न नाम है, न रूप है, बस चेतना का प्रकाश है। इस प्रकार नाम पहले सगुण से मिलवाता है, फिर निर्गुण तक ले जाता है।

स्वामी सत्यानंद जी के रिखिया सत्संग से

'एक राम दशरथ का बेटा, एक राम सब घट में बैठा, एक राम ने जगत पसारा, एक राम जगत से न्यारा।' ये चार चरण हैं, आँखें खोलो, देखो रामजी बैठे हैं। आँखें बंद करो, वही रामजी जो यहाँ दिखाई देते थे, वे नहीं हैं, वे दूसरे रामजी हैं। ठीक है न? वे दूसरे रामजी हैं। ये राम जी पत्थर के बने हैं, वे रामजी चेतना के बने हैं। यह राम भौतिक पत्थर हैं, उस राम का रूप मन है। फिर और गहराई में जाते हो, जब मैं खत्म हो जाता है, मेरा नाम, रूप, खत्म हो जाता है, फिर वे दिखाई देते हैं। तो वे संगमरमर के राम नहीं हैं, वे मन के राम नहीं हैं, वे ओजस्वी चेतना के राम हैं। वहाँ उस विभूति में राम की सूरत होती है। और जब मन डूब जाता है, जब इन्द्रियाँ डूब जाती हैं, जब चेतना डूब जाती है, जब मैं नहीं रहता, जब तू नहीं रहता, जब कोई भी नहीं रहता तब चेतना के एक आयाम में वही राम दिखाई देता है। वह राम

संगमरमर का नहीं है, वह राम मनोरूप भी नहीं है, वह राम बुद्धि भी नहीं है, वह राम परात्पर राम है। अनुभवातीत राम है।



4. राम नाम जप से लाभ

इस प्रसंग में 2 दोहों व 8 चौपाइयों में राम नाम जप से प्राप्त होने वाली उपलब्धियाँ एवं जप की विधि का वर्णन है। शुरुआत में कहते हैं कि राम नाम का दीपक हमारे अंदर व बाहर प्रकाश फैलाता है और अंत के दोहे में बताते हैं कि राम नाम तो अमृत कुण्ड है, जिसमें भक्त सदा डूबे रहकर, अमृत पान का आनंद लेते रहते हैं।

नाम का दीपक मन के अंदर व बाहर प्रकाश देता है

राम नाम मनिदीप धरु जीह देहरीं द्वार ।
तुलसी भीतर बाहेरहुँ जौं चाहसि उजिआर ॥दो 21॥

राम नाम मनिदीप= राम का नाम मणि का दीपक है, *धरु जीह देहरीं द्वार*= जिसे जीभ रूपी देहली पर रखो, *तुलसी*= तुलसीदास जी कहते हैं, *भीतर बाहेरहुँ*= मन के अंदर व बाहरी जगत में, *जौं चाहसि उजिआर*= यदि उजाला चाहते हो।

जैसे घर के दरवाजे पर दीपक रख दो या बल्ब जला दो तो उसका प्रकाश घर के अंदर भी रोशनी देगा व घर के बाहर भी। उसी प्रकार से यदि राम राम राम राम मुँह से जपेंगे तो उसका प्रभाव मन के अंदर व बाहर दोनों जगह अनुभव होगा। नाम जप के प्रभाव से भले लोगों का साथ होगा, व्यक्ति व परिस्थितियाँ अनुकूल होंगी, संसार के काम अपने आप बनने लगेंगे। नाम जप से मन शुद्ध होगा, मन में शांति व संतोष आयेगा। इस प्रकार सांसारिक जीवन के संकटों को राम नाम जप दूर करता है व मन के अंदर अज्ञान दूर कर वहाँ ज्ञान का प्रकाश लाता है।

नाम जप से व्यक्ति जागता है, ब्रह्म सुख अनुभव करता है

नाम जीहँ जपि जागहिं जोगी। बिरति बिरंचि प्रपंच बियोगी ॥22:1॥
ब्रह्मसुखहि अनुभवहिं अनूपा। अकथ अनामय नाम न रूपा ॥22:2॥

नाम जीहँ जपि = नाम को जीभ से जपकर के, *जागहिं जोगी* = योगी जग जाते हैं, *बिरति बिरंचि प्रपंच बियोगी* = ब्रह्मा जी द्वारा बनाये हुए प्रपंच से छूट कर वैराग्यवान बन जाते हैं, *ब्रह्म सुखहि अनुभवहिं* = वे ब्रह्म सुख की अनुभूति करते हैं, *अनूपा अकथ अनामय नाम न रूपा* = यह सुख अद्वितीय है, इसका वर्णन नहीं किया जा सकता है, यह विकाररहित है, इस सुख का न नाम है न रूप है।

तुलसीदास जी कहते हैं कि नाम जप से व्यक्ति जाग जाता है। तो क्या हम सो रहे हैं? हाँ हम मोहमयी निद्रा में सो रहे हैं। ब्रह्मा जी ने प्रपंच से जगत बनाया है, प्रपंच मायने पाँच-पाँच चीजों से रचना की है। पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, पाँच प्राण, पाँच महाभूत, पाँच विषय इत्यादि। इसी प्रपंच की माया में हम सो रहे हैं। निद्रा से आशय है कि हम सारा जीवन निंदा-स्तुति, सुख-दु:ख, अच्छा-बुरा में ही उलझे रह जाते हैं। दिखते तो जगे हैं पर सारा जीवन स्वप्न ही देखते रहते हैं। सोते ही सोते हमारी यात्रा एक शरीर से दूसरे शरीर में होती रहती है। नाम जप के प्रभाव से हमारा ध्यान इस प्रपंच से कुछ देर के लिये छूट जाता है, इसे विरक्ति कहते हैं। इसके बाद हमें ब्रह्म के सुख यानि राम के सुख का अनुभव होता है। यह सुख कैसा है? कहते हैं यह सुख अकथनीय, अद्वितीय है। इसकी तुलना संसार के किसी भी अन्य सुख से नहीं की जा सकती है।

नाम जप से गूढ़ रहस्यों की जानकारी

जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ। नाम जीहँ जपि जानहिं तेऊ ॥22:3॥

जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ = जो जानना चाहते है गूढ़ रहस्यों को, *नाम जीहँ जपि* = नाम को जीभ से जपकर, *जानहिं तेऊ* = वो लोग उन रहस्यों को जान सकते हैं।

यहाँ पर गूढ़ गति से आशय है ज्योतिष विज्ञान जिसमें भविष्य की घटनाओं को जान सकते हैं, सूर्य विज्ञान जिसमें एक धातु को दूसरी धातु में परिवर्तित कर सकते हैं इत्यादि विद्याओं से है। ये जितनी भी गूढ़ गतियाँ हैं वे अपने मन व बुद्धि के सूक्ष्म स्तर पर कार्य करती हैं। जब मन बहुत शांत होकर व्यापक हो जाता है तब उसमें इन सूक्ष्म शक्तियों का रहस्य उद्घाटित होता है। नाम

जप सरल व सुरक्षित तरीका है। संसार के किसी भी क्षेत्र में हम यदि विशेष योग्यता चाहते हैं तो मन का शांत व एकाग्र होना आवश्यक है, मंत्र जप से इसे आसानी से पाया जा सकता है।

आठ प्रकार की सिद्धियों की प्राप्ति

साधक नाम जपहिं लय लाएँ। होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएँ ॥22:4॥

साधक = साधना करने वाले लोग, *नाम जपहिं लय लाएँ* = लय लगाकर नाम जप करके, *होहिं सिद्ध* = सिद्ध होकर, *अनिमादिक पाएँ* = आठ प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त करते हैं।

जो साधक लय लगाकर नाम जप करते हैं उन्हें अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्य, प्राकाम्य, ईशत्व व वशत्व ये आठ तरह की सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं।

जिन्हें ज्ञान व भक्ति पानी है उन्हें सिद्धियों से बचकर रहना है

ज्ञान व भक्ति की ऊँचाई तक पहुँचने से पहले अनेक सिद्धियाँ आती हैं। जो इनके आकर्षण में फँस गया उसका विकास वहीं रुक गया। किसी को लगा हम तो मन की बात जान लेते हैं, या किसी को कोई रोग है उसके ऊपर हाथ फेरा रोग ठीक हो जाता है। जैसे ही व्यक्ति ने सिद्धि प्रयोग करना शुरू किया यात्रा वहीं रुक गयी। इसलिये ज्ञान व भक्ति के साधकों को सिद्धियों से बचकर अपनी यात्रा जारी रखनी चाहिये।

नाम जप से संकट दूर

जपहिं नामु जन आरत भारी। मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी ॥22:5॥

जपहिं नामु = नाम जप करके, *जन आरत भारी* = जो लोग भारी संकट में हैं, *मिटहिं कुसंकट* = उनके खराब संकट दूर हो जाते हैं, *होहिं सुखारी* = वे सुखी हो जाते हैं।

जीवन में अनेक प्रकार की तकलीफें आ जाती हैं। किसी को बीमारी है, किसी का मुकदमा चल रहा है, किसी को आर्थिक हानि है। इस प्रकार के

लोगों को आर्त कहते हैं। आर्त भाव से भी यदि नाम जप करें तो बुरे कष्ट भी दूर हो जाते हैं। संकट दूर होने से व्यक्ति सुखी हो जाता है।

राम के चारों प्रकार के भक्तों को नाम का ही आधार है

राम भगत जग चारि प्रकारा। सुकृती चारिउ अनघ उदारा ॥22:6॥
चहू चतुर कहुँ नाम अधारा। ग्यानी प्रभुहिं बिशेषि पिआरा ॥22:7॥

राम भगत = रामजी के भक्त, *जग चारि प्रकारा* = संसार में चार प्रकार के हैं, *सुकृती चारिउ अनघ उदारा* = चारों प्रकार के भक्त पुण्यात्मा, पापरहित व श्रेष्ठ हैं, *चहू चतुर* = चारों ही चतुर भक्तों को, *कहुँ नाम अधारा* = केवल नाम का ही आधार है, *ग्यानी प्रभुहिं बिशेषि पिआरा* = ज्ञानी भक्त भगवान को विशेष प्रिय है।

राम नाम जप करने वाले भक्तों को चार श्रेणियों में विभक्त करते हैं। ये चारों राम नाम पर ही आश्रित रहते हैं, इसलिये श्रीराम को ये प्रिय हैं।

1. ज्ञानी भक्त– इस श्रेणी के भक्त प्रभु राम को विशेष प्रिय हैं। ये समस्त प्रपंचों से विरक्त होकर ब्रह्म ज्ञान प्राप्त कर उसी में मग्न रहते हैं।
2. जिज्ञासु भक्त– जो गूढ़ रहस्यों को जानना चाहते हैं।
3. अर्थार्थी भक्त– जो सिद्धियाँ या अन्य लौकिक चीजें पाना चाहते हैं।
4. आर्त भक्त– जो किसी संकट में पड़ गये हैं, उससे छूटना चाहते हैं।

कलियुग में नाम जप विशेष प्रभावी, दूसरा उपाय नहीं

चहुँ जुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ। कलि बिसेषि नहिं आन उपाऊ ॥22:8॥

चहुँ जुग = चारों युगों में, *चहुँ श्रुति* = चारों वेदों में, *नाम प्रभाऊ* = नाम का प्रभाव है, *कलि बिसेषि नहिं आन उपाऊ* = कलियुग में विशेष रूप से नाम का प्रभाव है, दूसरा उपाय नहीं है।

राम नाम का प्रभाव चारों युगों में व चारों वेदों में है। अन्य युगों में नाम के अतिरिक्त, ध्यान, यज्ञ, पूजा, उपासना इत्यादि की भी साधनायें हैं, परन्तु कलियुग में केवल नाम ही प्रभावी उपाय है, दूसरा नहीं।

राम नाम तो अमृत कुण्ड है

सकल कामना हीन जे राम भगति रस लीन ।
नाम सुप्रेम पियूष ह्रद तिन्हहुँ किए मन मीन ।।दो 22।।

सकल कामना हीन जे = सभी तरह की कामनाओं को छोड़कर जो, *राम भगति रस लीन* = राम के भक्ति रस में लीन रहते हैं, *नाम सुप्रेम पियूष ह्रद तिन्हहुँ* = वे भी नाम के प्रेम रूपी अमृत कुण्ड में, *किए मन मीन* = मछली के समान अपने मन को डुबोकर रखते हैं।

किसी की सारी कामनायें पूरी हो गयीं हों, उसे आत्मज्ञान हो गया, भगवान की भक्ति मिल गयी, उसे अब कोई कामना नहीं है तो क्या उसे जप करने की आवश्यकता नहीं? तुलसीदास जी कहते हैं ऐसे लोग भी अपने आत्मज्ञान को, भक्ति को सदा बनाये रखने के लिये अपने हृदय में राम नाम का अमृत कुण्ड बना लेते हैं। उस अमृत कुण्ड में अपने मन को सदा डुबाये रखते हैं, जैसे मछली सदा अपने को पानी में डुबाये रखती है।

5. ब्रह्म के सभी रूपों से नाम श्रेष्ठ है

ब्रह्म के कई स्वरूप हैं जैसे सगुण, निर्गुण, साकार, निराकार इत्यादि, इन सबसे नाम श्रेष्ठ है। इस प्रसंग में एक दोहे व आठ चौपाइयों में यह समझाते हैं कि किन कारणों से नाम श्रेष्ठ है।

सगुण व निर्गुण से बड़ा राम नाम

अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा। अकथ अगाध अनादि अनूपा ।।23:1।।
मोरें मत बड़ नामु दुहू तें। किए जेहिं जुग निज बस निज बूतें ।।23:2।।
प्रौढ़ि सुजन जनि जानहिं जन की। कहउँ प्रतीति प्रीति रुचि मन की ।।22:3।।

अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा = ब्रह्म का स्वरूप निर्गुण व सगुण दोनों है, *अकथ* = जो अकथनीय है, *अगाध* = जिसकी गहराई नहीं नापी जा सकती, *अनादि* = जिसका आदि-अंत नहीं है, *अनूपा* = जिसकी तुलना नहीं की जा सकती है, *मोरें मत बड़ नामु दुहू तें* = मेरे मत के अनुसार इन दोनों से नाम बड़ा है, *किए जेहिं जुग निज बस निज बूतें* = जिसने अपने बल से दोनों को

अपने बस में कर रखा है, *प्रौढ़ि* = अतिशयोक्ति या अहंकार से युक्त, *सुजन जनि जानहिं जन की* = सज्जन लोग हमारी इस बात को न समझें, *कहउँ प्रतीति प्रीति रुचि मन की* = मैं अपने मन के प्रेम, विश्वास व रुचि से यह बात कह रहा हूँ।

ब्रह्म का स्वरूप

यहाँ पर रूप की जगह स्वरूप शब्द का प्रयोग किया है। इन दोनों में फर्क को समझें। रूप धारण भी किये जाते हैं और छोड़ भी दिये जाते हैं। स्वरूप सदा उसी के साथ रहता है। सत्, चित्, आनंद ये तीनों ब्रह्म के स्वरूप लक्षण हैं जो सदा उसके साथ रहते हैं। ये तीनों बुद्धि के लिये अलग हैं, पर हैं एक ही, जो सत् यानि जो सदा विद्यमान है वही चेतना है, जो चेतना है वही आनंद है।

माया के कारण निर्गुण ब्रह्म सगुण दिखने लगता है

ब्रह्म की शक्ति माया है, जिसके व्याकृत व अव्याकृत दो रूप हैं। जब वह माया प्रगट न होकर अव्यक्त रूप से ब्रह्म में विद्यमान है तो उसे निर्गुण ब्रह्म कहते हैं। जब माया जगत की रचना करने लगे, उस माया के साथ जो ब्रह्म है वह सगुण ब्रह्म है, इसे ईश्वर भी कहते हैं। लेकिन ये सगुण व निर्गुण दो-दो ब्रह्म नहीं हैं। जैसे एक पुरुष चुपचाप बैठा है तो पुरुष हो गया, जब संगीत बजाने लगा तो संगीतकार हो गया, पर है तो वही पुरुष ही।

ब्रह्म को समझने के लिये चार लक्षण भी समझ लें

पूरे रामचरितमानस में ये चार बातें बार-बार कहकर तुलसीदास जी इन लक्षणों का हमें अच्छी तरह अभ्यास करा देना चाहते हैं। बालकाण्ड में ही कम से कम 25 बार इसका उल्लेख है। वे बताना चाहते हैं कि शब्द मात्र से ही आप ब्रह्म को नहीं जान सकते हैं, शब्दों से तो संकेत दिया गया है, रास्ता बताने का प्रयास किया है। इन संकेतों के सहारे आगे बढ़ने का अभ्यास गुरु के दिशा निर्देशन में करें।

1. अकथ– हमने कहने की कोशिश की है, जहाँ तक कह सकते थे कह दिया है। वह जैसा वाणी में आया, जैसा कहा, जैसा आपने बुद्धि में धारण किया, ब्रह्म उतना ही नहीं है। फिर कैसा है? आपकी बुद्धि में जितना आये उसके सहारे आगे बढ़ो तब पता चले वह कैसा है।

2. अगाध– अगाध मायने जिसकी गहराई न नापी जा सके। यहाँ पर अगाध मायने अनंत भी है। यह देश, काल, वस्तु की सीमा से परे है। जैसे कहें दो हजार वर्ष पहले शुरू हुआ तीन हजार वर्ष तक चलेगा तो वस्तु काल की सीमा में आ गयी। जगत काल के अंतर्गत है, परंतु परमात्मा काल की सीमा में नहीं है। परमात्मा कहाँ से कहाँ तक है यह नहीं बताया जा सकता इसलिये देश की सीमा में नहीं है।
3. अनादि– ब्रह्म कहाँ से प्रारंभ होकर कहाँ समाप्त होता है यह नहीं कहा जा सकता है। इसका न तो प्रारंभ है न अंत है। वह अस्तित्व में कब आया? वह तो सदा से है। उसकी सीमा कहाँ से कहाँ तक है? वह सर्वत्र विद्यमान है।
4. अनूप– वह उपमा रहित है। वह अद्वितीय है। उपमा उस वस्तु की दी जाती है जिसकी समानता करने वाली दूसरी वस्तु हो। कभी कभी समझाने के लिये कह देते हैं कि आकाश के समान इसे अनंत समझ लो। पर आकाश में चेतना व आनंद नहीं है इसलिये ब्रह्म आकाश के समान नहीं है।

इतना महान् ब्रह्म नाम के वश में है

ब्रह्म के लक्षणों से उसकी महिमा बताने के बाद कहते हैं कि नाम ने तो इस ब्रह्म को भी अपने बस में कर रखा है। यदि हम किसी का नाम पुकारें वह आये ही न, यदि आये तो बिना रुके भाग जाये, उसे कहेंगे कि वह हमारे बस में नहीं है। नाम के साथ ऐसा नहीं है, जब आप राम राम राम कहोगे तो राम का रूप जो सगुण ब्रह्म है आयेगा, ठहरेगा, पहले ही कह चुके हैं रूप नाम के आधीन है। वह सगुण राम फिर निर्गुण से भी मिलवायेगा। इस प्रकार ये दोनों नाम के बस में है।

नाम, ब्रह्म के निर्गुण व सगुण दोनों स्वरूपों से बड़ा है

इतना समझाने के बाद तुलसीदास जी कहते हैं कि मेरे मत से तो राम का नाम इन दोनों से बड़ा है। नाम के सहारे यदि हम सगुण राम तक व निर्गुण राम तक पहुँच जाते हैं तो इसका मतलब है नाम बड़ा है। यदि राम नाम का सहारा न लो तो ब्रह्म जहाँ का तहाँ बना रहे, हम भी जहाँ हैं वहीं बने रहें। ब्रह्म चाहे जितना बड़ा हो हम नाम के सहारे वहाँ तक पहुँच ही जाते हैं।

यह तुलसीदास जी का स्वयं का अनुभव है

तुलसीदासजी कहते हैं कि सज्जन लोग ऐसा न समझें कि मैं कोई अहंकार पूर्वक या अतिशयोक्तिपूर्ण बात कर रहा हूँ। मैं तो अपने मन के विश्वास, प्रेम रुचि से इस बात को कह रहा हूँ कि राम नाम सगुण व निर्गुण ब्रह्म से बड़ा है। हमने स्वयं राम नाम जपा है, वह राम नाम हमको जहाँ तक ले जा सकता था वहाँ तक ले भी गया है, और उसे हमने अपने अनुभव से समझा है। यह हमारी बुद्धि की कल्पना मात्र नहीं है। इस बात को प्रतिपादित करने के लिये अगली चौपाइयों में कुछ उदाहरण देंगे।

लकड़ी में छिपी अग्नि निर्गुण, जलती अग्नि सगुण ब्रह्म

एकु दारुगत देखिअ एकू। पावक सम जुग ब्रह्म बिबेकू ॥23:4॥
उभय अगम जुग सुगम नाम तें। कहेउँ नामु बड़ ब्रह्म राम तें ॥23:5॥

एकु दारुगत = एक अग्नि लकड़ी (दारु = लकड़ी) के अंदर है यानि प्रकट नहीं है, *देखिअ एकू* = एक अग्नि लकड़ी के जलने पर दिखती है, *पावक सम* = अग्नि के समान, *जुग ब्रह्म बिबेकू* = दोनों ब्रह्म यानि सगुण व निर्गुण, का ज्ञान है, *उभय अगम* = इन दोनों को समझना कठिन है, *जुग सुगम नाम तें* = इन दोनों तक पहुँचना आसान है नाम के सहारे, *कहेउँ नामु बड़ ब्रह्म राम तें* = इसीलिये मैंने राम नाम को ब्रह्म से बड़ा कहा है।

भारतीय परंपरा में दार्शनिक चिंतक सिद्धांत को समझाने के लिये उदाहरण भी देते हैं। यहाँ पर तुलसीदास जी लकड़ी में अग्नि का उदाहरण देकर अपने सिद्धांत को समझा रहे हैं।

निर्गुण ब्रह्म बिना जलती लकड़ी में व्याप्त अग्नि के समान

आप अपने हाथ में एक लकड़ी लो, उसके ऊपर, नीचे, अंदर, झांककर देखो, कहीं भी अग्नि नहीं दिखेगी। पर उस पूरी लकड़ी के अंदर अग्नि व्याप्त है। उस अग्नि से न हाथ जलेगा, न खाना पकेगा, उससे कोई लाभ नहीं मिलेगा। उसमें व्याप्त अग्नि निर्गुण ब्रह्म के समान है, जो सब जगह व्याप्त है पर वह न दिखता है, न कुछ देता है, न कुछ बनाता है, न बिगाड़ता है। इसे कहा है 'एकु दारुगत' यानि एक अग्नि लकड़ी में छिपी है।

सगुण ब्रह्म जलती लकड़ी में दिखती अग्नि के समान

अब उस लकड़ी में आग जला दो, लकड़ी जैसे ही जलती है उसमें छिपी हुई अग्नि प्रकट होकर दिखने लगती है। इस जलती हुई अग्नि से आप खाना पका लो, हाथ सेंक लो, जैसा चाहे उपयोग करके अपना कल्याण करो। इस जलती हुई अग्नि के समान सगुण ब्रह्म है। ब्रह्म सगुण हो गया तो दिखने लगा, यह क्षमा, दया, करुणा इन गुणों से संपन्न हो गया, पाप को दूर करने वाला, मन को शांति देने वाला बन जाता है, हमारे जीवन की सब समस्या दूर करता रहता है। इसे कहा है 'देखिअ एकू' मायने दिखती अग्नि के समान।

दोनों तक पहुँच कठिन, नाम आसानी से पहुँचा देता है

राम चाहे सगुण अवतार लेकर आयें, चाहे वे निर्गुण ब्रह्म बने रहें, दोनों स्वरूपों तक पहुँचना अगम है। मायने वे शरीर की पहुँच के बाहर हैं, वे हाथों से पकड़ में नहीं आते, वे आँखों से नहीं दिखते, इन्द्रियों की पकड़ के बाहर हैं। पर उनके राम नाम में इतनी शक्ति है कि उसके सहारे आप धीरे-धीरे उनके दोनों स्वरूपों तक पहुँच सकते हो। इसलिये मैंने कहा है कि राम का नाम ब्रह्म वाले राम से बड़ा है।

आनंदमय ब्रह्म सबमें, पर सब दुःखी क्यों? नाम से आनंद प्राप्त

ब्यापकु एकु ब्रह्म अबिनासी। सत चेतन घन आनँद रासी ॥23:6॥
अस प्रभु हृदयँ अछत अबिकारी। सकल जीव जग दीन दुखारी ॥23:7॥
नाम निरूपन नाम जतन तें। सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन तें ॥23:8॥

ब्यापकु एकु ब्रह्म अबिनासी = ये सगुण व निर्गुण सर्वत्र व्याप्त हैं; एक हैं; और कभी समाप्त न होने वाले हैं, *सत चेतन घन आनँद रासी* = ये सदैव हैं; चेतन हैं व आनंद हैं, *अस प्रभु हृदयँ अछत अबिकारी* = ऐसा ही निर्विकारी ब्रह्म हमारे हृदय में निवास करता है, *सकल जीव जग दीन दुखारी* = फिर भी संसार के सारे जीव दीन व दुःखी हैं, *नाम निरूपन* = नाम की महिमा की जानकारी होने पर, *नाम जतन तें* = तरीके से नाम जपने से, *सोउ प्रगटत* = वह वैसे ही प्रकट हो जाता है, *जिमि मोल रतन तें* = जैस रत्न की जानकारी होने से उसका मूल्य पता चलता है।

तुलसीदास ब्रह्म के और लक्षण बताते हैं। ब्रह्म के दोनों स्वरूप सर्वत्र व्याप्त हैं, ब्रह्म एक ही है, अनेक नहीं हैं। आज अगर हमारे अंदर ब्रह्म के आनंद का अनुभव होता है तो वह उसी ब्रह्म का है जिसे दस हजार वर्ष पहले ऋषि-मुनियों ने अनुभव किया था। समय के साथ यह बदलता नहीं है, सदा एक सा रहता है। हिमालय पर्वत में जो ब्रह्म अनुभूत होगा वही यहाँ भी होगा। यह कभी समाप्त नहीं होता है, ऐसा नहीं है कि पूर्व काल में ब्रह्म था, लोगों ने अनुभव किया अब नहीं है। वह सदा है, चेतन है, व आनंदमय है। ऐसा ब्रह्म हमारे अंदर निर्विकार होकर बैठा है। ऐसा नहीं है कि वह हमारे अंदर आया तो हमारी कलुषित बुद्धि के असर से वह कलुषित हो गया, उसकी चेतना चली गयी, उसका आनंद समाप्त हो गया। नहीं, वह तो हमारे अंदर भी वैसे ही आनंदमय, चेतनमय विराजमान है। अब प्रश्न है कि इसके बाद भी संसार के सब प्राणी दु:खी व परेशान क्यों हैं? इसे तुलसीदास जी एक उदाहरण से समझाते हैं।

जैसे हमारे पास अत्यंत कीमती मणि हो और हम उसकी कीमत न जानने के कारण गरीबी से जीवन जी रहे हैं। हमें कोई मणि का जानकार मिले, वह हमें मणि के लक्षणों से परिचित कराकर विश्वास दिला दे कि वास्तव में यह मूल्यवान् है। अब हमें जतन करना होगा यानि मणि को निखारना, मशीन से आकार देना व चमकाना होगा। इसके बाद जौहरी के पास जायें तब उसका मूल्य प्राप्त होगा और हम अपनी गरीबी से छुटकारा पा लेंगे। ठीक इसी प्रकार कोई गुरु हमें बताये कि हमारे अंदर ब्रह्म विद्यमान है, वह ही आनंद है, हम बेकार दु:खी हैं, और उसे पाने के लिये हमें राम नाम की महिमा ठीक से समझाये। यह हुआ 'नाम का निरूपन'। फिर हम ठीक प्रकार से राम राम राम जप करें। जप करते-करते वह आनंद हमारे अंदर प्रगट हो जायेगा। इसे कहते हैं 'नाम जतन तें'। नाम जप से ही अपने अंदर बैठे आनंद को हम पा सकते हैं। नाम की महिमा न जानने व ठीक से जप न करने के कारण हम सब आनंदमय ब्रह्म के अपने अंदर रहते हुए भी दीन व दु:खी बने रहते हैं।

नाम जप विधि से करें

जैसे औषधि ठीक ढंग से, सही मात्रा में खायी जाये तभी फायदा होता है, वैसे ही जप भी तरीके से करें। पहले मुँह से बोल कर कहें राम राम राम। मन को शांति मिलेगी। फिर बुदबुदा कर गले में जप करें, राम राम राम, मन अंतर्मुखी होगा, राम तो अपने हृदय में ही हैं, नाम राम तक ले जायेगा। अब मानसिक

जप करें, मन में ही बोलें राम राम राम। जैसे बाहर जीभ व कान हैं वैसे ही अपने हृदय में भी हैं, हृदय की जीभ से राम राम राम बोलें, हृदय के कान से ही सुनें राम राम राम। यदि आपको 15 मिनट जप करना है तो 5 मिनट बोल कर, 5 मिनट बुदबुदाकर व 5 मिनट मन में जप करें। जब अच्छे से मन अभ्यस्त हो जाये तब सिर्फ मानसिक जप ही कर सकते हैं।

इस प्रकार नाम सगुण व निर्गुण से बड़ा है

निरगुन तें एहि भाँति बड़ नाम प्रभाउ अपार ।
कहउँ नामु बड़ राम तें निज बिचार अनुसार ॥दो 23॥

निरगुन तें एहि भाँति = निर्गुण ब्रह्म से इस प्रकार, *बड़ नाम प्रभाउ अपार* = नाम का प्रभाव अत्यंत बड़ा है, *कहऊँ नामु बड़ राम तें* = राम से भी राम का नाम बड़ा है, *निज बिचार अनुसार* = यह बात मैं अपने विचार के अनुसार कहता हूँ।

अब तुलसीदास जी निष्कर्ष निकालते हुए कहते हैं कि इसीलिये मेरे विचार से नाम का प्रभाव निर्गुण ब्रह्म से अत्यंत ज्यादा है। और राम नाम की महिमा राम से भी बड़ी है, अपार है, मुझसे जितना बन सकता था मैंने वर्णन कर दिया।

6. राम से बड़ा राम का नाम, रामचरितमानस की विषय सूची

यह ग्रंथ धार्मिक, आध्यात्मिक और ऐतिहासिक होने के साथ ही काव्यात्मकता, साहित्य व रस से परिपूर्ण है। प्रसंग राम नाम महिमा का ही चल रहा है, इसी के अंदर तुलसीदास जी इस ग्रंथ की विषय-सूची बड़े ही रोचक तरीके से प्रमुख घटनाओं की तुलना राम नाम से करते हुए दे रहे हैं। 2 दोहे व 16 चौपाइयों में विषय-सूची है, इसका प्रेम पूर्वक पाठ राम नाम की महिमा को तो चित्त में बैठायेगा ही, साथ में संक्षिप्त रामायण पाठ हो जायेगा।

राम ने अवतार लिया, कष्ट सहा, नाम बिना कष्ट सहे फलदायी

राम भगत हित नर तनु धारी। सहि संकट किए साधु सुखारी ॥24:1॥
नामु सप्रेम जपत अनयासा। भगत होहिं मुद मंगल बासा ॥24:2॥

राम भगत हित नर तनु धारी = राम भक्तों के हित के लिये मनुष्य शरीर धारण करके, *सहि संकट किए साधु सुखारी* = स्वयं संकट सहकर भक्तों को सुखी करते हैं, *नामु सप्रेम जपत* = नाम को प्रेमपूर्वक जपने से, *अनयासा* = बिना राम के प्रयास किये, *भगत होहिं मुद मंगल बासा* = भक्तों को आनंद व मंगल की प्राप्ति होती है।

ब्रह्म ने भक्तों के हित के लिये दशरथ जी के यहाँ राम का शरीर धारण करके अवतार लिया। वे वन में गये, युद्ध किये, अनेक कष्ट सहकर निशाचरों का वध करके अपने भक्तों को सुखी किया। राम नाम भक्तों को सुखी करने के लिये परिश्रम नहीं करता। जो नाम को प्रेम से जपता है उसका काम बिना राम के प्रयास के ही हो जाता है। वह प्रेम से राम राम राम राम राम कहते-कहते ही आनंद व मंगल का घर बन जाता है।

राम ने एक अहिल्या को उद्धारा, नाम ने करोड़ों की बुद्धि को सुधारा

राम एक तापस तिय तारी। नाम कोटि खल कुमति सुधारी ॥24:3॥

राम एक तापस तिय तारी = राम ने एक तपस्वी की पत्नी का उद्धार किया, *नाम कोटि खल कुमति सुधारी* = नाम ने करोड़ों दुष्टों की बुद्धि को सुधारा।

रामचरितमानस में वर्णित घटनायें ऐतिहासिक सत्य हैं, साथ ही आध्यात्मिक प्रतीक भी हैं। प्रभु राम ने अहिल्या के पत्थर रूप शरीर पर चरण स्पर्श किया तो वह श्राप मुक्त हो गयी, उसमें चेतना वापस आ गयी, प्रभु राम की वंदना करके आनंद से अपने पति गौतम ऋषि के पास ब्रह्म लोक चली गई। हमारी बुद्धि भी पत्थर के समान हो गयी है, राम के नाम का स्पंदन जैसे ही बुद्धि का स्पर्श करता है, वह चेतन हो जाती है, उसके विकार दूर हो जाते हैं। राम के नाम ने तो करोड़ों की बिगड़ी बुद्धि को सुधार कर उनका उद्धार किया है।

राम ने एक ताड़का को मारा, नाम अनेकों की दुराशा दूर करता है

रिषि हित राम सुकेतुसुता की। सहित सेन सुत कीन्हि बिबाकी ॥24:4॥
सहित दोष दुख दास दुरासा। दलइ नामु जिमि रबि निसि नासा ॥24:5॥

रिषि हित = ऋषि के हित के लिये, *राम सुकेतुसुता की* = राम ने सुकेतु की पुत्री ताड़का को, *सहित सेन सुत* = उसकी सेना व पुत्र सहित, *कीन्हि बिबाकी* = समाप्त कर दिया, *सहित दोष दुख दास दुरासा* = भक्त के दोष, दु:ख व दुराशा को, *दलइ नामु* = राम नाम समाप्त कर देता है, *जिमि रबि निसि नासा* = जैसे सूर्य अंधकार को समाप्त कर देता है।

ताड़का, उसके पुत्र सुबाहु व मारीच, ये सब ऋषि विश्वामित्र के यज्ञ में बाधा उत्पन्न कर उन्हें परेशान करते थे। यज्ञ की रक्षा के लिये ऋषि, प्रभु राम व लक्ष्मण को महाराज दशरथ के यहाँ से ले आये। राम ने ताड़का व सुबाहु को मार दिया पर मारीच को ऐसा बाण मारा कि वह समुद्र के उस पार लंका में जाकर गिरा, मरा नहीं। नाम तो बिना किसी प्रयास के भक्तों के दोषों व दु:खों को वैसे ही समाप्त कर देता है जैसे सूर्य के आने से अंधकार अपने आप दूर हो जाता है।

राम ने शिव-धनुष तोड़ा, नाम संसार के भय समाप्त करता है

भंजेउ राम आपु भव चापू। भव भय भंजन नाम प्रतापू ॥24:6॥

भंजेउ राम आपु भव चापू = राम ने अपने लिये शिव जी का धनुष तोड़ा, *भव भय भंजन नाम प्रतापू* = पर नाम का प्रताप तो संसार के भय को दूर करता है।

यज्ञ की रक्षा करके राम व लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ जनकपुर में सीता स्वयंवर में पहुँचते हैं। जो शिवजी का धनुष तोड़ेगा उसी के साथ सीता जी का विवाह होगा। राम ने शिवजी का धनुष किसके लिये तोड़ा? तो कहते हैं "आपु" मायने अपने लिये, सीता जी से विवाह करने के लिये। पर राम नाम का प्रताप तो ऐसा है कि वह संसार के भय का भंजन करने वाला है। इस प्रकार नाम का प्रभाव ज्यादा है।

राम ने एक दंडकवन पावन किया, नाम ने अनेकों को पवित्र किया

दंडक बनु प्रभु कीन्ह सुहावन। जन मन अमित नाम किए पावन ॥24:7॥

दंडक बनु = दंडक वन को, *प्रभु कीन्ह सुहावन* = प्रभु राम ने सुहावन बना दिया, *जन मन अमित* = अनेकों मनुष्यों के मन को, *नाम किए पावन* = राम नाम ने पवित्र बना दिया।

श्रीराम का विवाह हो गया, अयोध्या में वनवास हुआ, चित्रकूट में निवास करके दंडक वन की तरफ चल दिये। चित्रकूट के आगे से मुंबई तक दंडक वन का विस्तार था। यह वन एक ऋषि के श्राप से अपवित्र था, उजड़ा पड़ा था। जब प्रभु राम के चरण दंडक वन में पड़े तो वह श्रापमुक्त होकर पवित्र व सुंदर बन गया। हमारा मन दण्डक वन जैसे उजाड़ है, नाना प्रकार के आँधी तूफान चलते रहते हैं। राम नाम जब हृदय में आता है तो यह मन पवित्र हो जाता है, मन में सुंदरता व शांति आ जाती है। इस प्रकार नाम ने अनेकों के मन को पवित्र किया है।

राम ने निशाचर मारे, नाम कलियुग के समस्त निशाचर मारता है

निसिचर निकर दले रघुनंदन। नामु सकल कलि कलुष निकंदन ॥24:8॥

निसिचर निकर दले रघुनंदन = राक्षसों के समूहों को राम ने मारा, *नामु सकल कलि कलुष* = नाम तो कलियुग के समस्त दोषों को, *निकंदन* = जड़ से उखाड़कर फेंक देता है।

राम ने ताड़का, खर दूषण, रावण इत्यादि निशाचरों को मारा पर हमारे मन में आज भी कलियुग के निशाचर काम, क्रोध, मोह, मद हैं जो हमें कष्ट पहुँचाते रहते हैं। जब क्रोध आता है तो व्यक्ति चिल्लाता है, चिड़-चिड़ाता है, यह निशाचर हृदय में अपनी ज्वाला फैलाकर दुःख देता है, चेहरा टेढ़ा कर देता है, लाल कर देता है। राम का नाम इन सबसे हमें छुटकारा दिला देता है।

राम से भक्तों का उद्धार, नाम से दुष्टों का भी उद्धार

सबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्हि रघुनाथ ।
नाम उधारे अमित खल बेद बिदित गुन गाथ ॥दो 24॥

सबरी गीध सुसेवकनि = सबरी व जटायु जैसे अच्छे सेवकों को, *सुगति दीन्हि रघुनाथ* = अच्छी गति राम ने प्रदान की, *नाम उधारे अमित खल* = नाम ने अनेकों दुष्टों का भी उद्धार किया है, *बेद बिदित गुन गाथ* = वेदों ने भी नाम की महिमा गायी है।

राम दंडक वन के पंचवटी में ठहरे, वहाँ रावण ने सीता जी का हरण किया। जटायु, सीता को बचाने के लिये रावण से युद्ध करके घायल हो गया, प्रभु राम ने उसे अपनी गोद में लिटाया, उसके प्राण गोद में ही निकले, प्रभु ने अपने हाथों से उसका अंतिम संस्कार किया। शबरी राम की परम भक्त थी, राम ने उसे दर्शन दिये, उसके हाथ से बेर खाये। इस प्रकार राम ने अच्छे सेवकों को सुगति दी। परंतु नाम ने तो अनगिनत दुष्टों का भी उद्धार किया है। तुलसीदास जी अपनी बात का समर्थन करने के लिये वेदों का उद्धरण देते हैं, कहते हैं नाम की महिमा तो वेदों ने भी बताई है। हम जो महिमा कह रहे हैं वह सच है, मनगढंत नहीं है।

राम की शरण में सुग्रीव विभीषण, नाम की शरण में अनेकों

राम सुकंठ विभीषन दोऊ। राखे सरन जान सबु कोऊ ॥25:1॥
नाम गरीब अनेक नेवाजे। लोक बेद बर बिरिद बिराजे ॥25:2॥

राम सुकंठ बिभीषण दोऊ = राम ने सुग्रीव व विभीषण दोनों को, *राखे सरन जान सबु कोऊ* = अपनी शरण में रखा यह सबको पता है, *नाम गरीब अनेक नेवाजे* = पर नाम ने तो अनेक गरीबों को शरण दी, *लोक बेद बर बिरिद बिराजे* = इस नाम का श्रेष्ठ यश सब वेदों में भी कहा है और सब लोग भी जानते हैं।

सीता जी को खोजते राम व लक्ष्मण वन में घूम रहे हैं, हनुमान जी से मुलाकात होती है, वे सुग्रीव से प्रभु की मित्रता करवा देते हैं। सुग्रीव को राम बालि के भय से मुक्त करते हैं। सीता जी की खोज के लिये हनुमान जी लंका जाते हैं, विभीषण को राम शरण में आने की प्रेरणा देकर, सीता का पता लगाकर प्रभु राम को बताते हैं। विभीषण को रावण लंका से निकाल देता है, वह श्रीराम की शरण में आता है। राम उसे अपनी शरण प्रदान कर लंका

का राजा बना देते हैं। परंतु नाम तो किसी भी दीन व अनाथ को शरण प्रदान करता है। नाम ने तो अनेकों गरीबों पर कृपा की है।

राम ने परिश्रम से समुद्र पार किया, नाम लेने से संसार समुद्र पार

राम भालु कपि कटकु बटोरा। सेतु हेतु श्रमु कीन्ह न थोरा ॥25:3॥
नामु लेत भवसिंधु सुखाहीं। करहु बिचारु सुजन मन माहीं ॥25:4॥

राम भालु कपि कटकु बटोरा = रामजी ने भालुओं और बंदरों की सेना एकत्रित की, *सेतु हेतु श्रमु कीन्ह न थोरा* = और समुद्र पर पुल बाँधने के लिये बहुत मेहनत की, *नामु लेत भवसिंधु सुखाहीं* = परंतु नाम लेने से ही संसार समुद्र सूख जाता है, *करहु बिचारु सुजन मन माहीं* = सज्जनगण मन में विचार करिये।

श्रीराम वानर व भालु की सेना लेकर समुद्र के किनारे पहुँचते हैं। देखते हैं कि समुद्र अथाह और विशाल है, लंका तक पहुँचने के लिये इसे कैसे पार करेंगे? विभीषण की सलाह पर प्रभु तीन दिन तक समुद्र से विनती करते रहे कि वह पार जाने के लिये रास्ता प्रदान करे। तीन दिन बाद राम ने क्रोध किया, अग्नि बाण संधान किया, तब समुद्र प्रकट होकर पुल बाँधने की सलाह देता है। वानर व भालुओं ने बहुत परिश्रम करके पुल बाँधा, उससे पूरी सेना लंका पहुँची। राम ने इतने परिश्रम से समुद्र पर पुल बनाकर उसे पार किया। हमने अपने अंदर तरह-तरह की वासनाओं और राग-द्वेष से मानसिक कल्पनाओं का एक समुद्र बना लिया है, इसी में डूबे रहकर हम दु:खी होते रहते हैं। राम का नाम तो बिना परिश्रम के इस समुद्र को सुखा देता है, क्या इस पार क्या उस पार? इसके सूखते ही हमारे जीवन में आनंद व सुख आ जाता है।

राम ने परिश्रम से रावण मारा, नाम लेने से ही मोहरूपी रावण समाप्त

राम सकुल रन रावनु मारा। सीय सहित निज पुर पगु धारा ॥25:5॥
राजा रामु अवध रजधानी। गावत गुन सुर मुनि बर बानी ॥25:6॥
सेवक सुमिरत नामु सप्रीती। बिनु श्रम प्रबल मोह दलु जीती ॥25:7॥
फिरत सनेहँ मगन सुख अपनें। नाम प्रसाद सोच नहिं सपनें ॥25:8॥

राम सकुल रन रावनु मारा = राम जी ने कुल सहित रावण को मार दिया, *सीय सहित निज पुर पगु धारा* = सीता जी सहित अपने पुर अयोध्या चले गये, *राजा रामु अवध रजधानी* = राम राजा बन गये, अयोध्या उनकी राजधानी बन गई, *गावत गुन सुर मुनि बर बानी* = देवता और मुनि सुंदर वाणी से जिनके गुण गाते हैं, *सेवक सुमिरत नामु सप्रीती* = भक्त प्रेम पूर्वक नाम स्मरण करके, *बिनु श्रम* = बिना परिश्रम के ही, *प्रबल मोह दलु जीती* = परम शक्तिशाली मोह की सेना को जीत लेते हैं, *फिरत सनेहँ मगन सुख अपनें* = अपने सुख में ही मग्न हुए, आनंदमय घूमते हैं, *नाम प्रसाद सोच नहिं सपनें* = नाम के प्रसाद से उन्हें सपने में भी कोई चिन्ता नहीं सताती।

श्रीराम वानर सेना सहित लंका पहुँचते हैं, रावण से युद्ध होता है, राम बहुत परिश्रम करके रावण को मार देते हैं। फिर सीता जी, लक्ष्मण व हनुमान सहित श्रीराम वानर सेना के प्रमुख सेनापतियों को लेकर अयोध्या वापस आते हैं। राम जी का अयोध्या में राज्याभिषेक होता है। इस प्रकार यहाँ तक रामचरितमानस की विषय सूची तुलसीदास जी प्रस्तुत करते हैं।

अपने अंदर बैठे मोह के लिये एक विशेषण लगाते हैं 'प्रबल'। कहने का तात्पर्य है कि यह बाहर के रावण से ज्यादा शक्तिशाली है। यह मोह हमसे मीठी-मीठी बातें करता है, इसलिये इसे अपना शत्रु समझना बहुत मुश्किल होता है। अहंकार, राग, द्वेष, छल, प्रपंच, पाखंड आदि इसकी सेना हैं। ऐसे शक्तिशाली मोह की सेना को राम का नाम जपकर बिना परिश्रम के आसानी से जीत सकते हैं। मोह को जीता हुआ व्यक्ति अपने सुख में मग्न हुआ आनंदपूर्वक घूमता रहता है। एक बार मोह को मार दिया तो फिर वह दुबारा पैदा होने वाला नहीं है। सदा के लिये छुटकारा मिल गया। उसे स्वप्न में भी कोई दु:ख नहीं होता है।

मोह जीते व्यक्ति के लिये सारा संसार अपना है

मोह के बंधन में व्यक्ति एक परिवार या एक स्थान को ही अपना समझते हुए उसी में बँधा रहता है, जहाँ मोह समाप्त हुआ सारा संसार ही उसे अपना लगने लगता है। मोह को जीता हुआ व्यक्ति अपने ही सुख यानि आत्म सुख में निमग्न रहता है। यही ज्ञान है, यही भक्ति है, यही सुख है, यही आनंद है। इस आनंद में वह स्वतंत्र विचरण करता हुआ सबका कल्याण करता रहता है।

राम नाम वर देने वाले को भी वरदान देने में समर्थ

ब्रह्म राम तें नामु बड़ बर दायक बर दानि ।
रामचरित सत कोटि महँ लिय महेस जियँ जानि ॥दोहा 25॥

ब्रह्म राम तें = सगुण व निर्गुण ब्रह्म से व दशरथ पुत्र राम से, *नामु बड़* = नाम बड़ा है, *बर दायक* = यह वरदान देने वाले को भी, *बर दानि* = वरदान देता है, *रामचरित सत कोटि महँ* = सौ करोड़ रामचरित्र में से, *लिय महेस जियँ जानि* = राम नाम को सार समझकर शंकर जी ने ग्रहण किया।

वर देने वाले कौन हैं? ब्रह्मा, विष्णु व महेश। जब रावण ने तपस्या की तब इन देवों ने ही वरदान दिया। शंकर जी क्या करते हैं? राम का नाम जपते हैं। ब्रह्मा जी भी नाम जपते हैं। ये नाम क्यों जपते हैं? ताकि इन्हें वरदान देने की शक्ति प्राप्त हो। तो क्या हम इन देवताओं से भी श्रेष्ठ हैं? हमें नाम जप की आवश्यकता नहीं? हमें अपनी स्थिति देखनी चाहिये, हम कैसे कष्टों में, दु:खों में जी रहे हैं, इन सबसे छुटकारा पाने के लिये हमें भी नाम जप करना चहिये।

सतकोटि रामायण का सार है राम, जिसे शंकर जी ने लिया

वाल्मीकि जी की लिखी रामायण शतकोटि यानि 100 करोड़ श्लोकों की रामायण कहलाती है, अभी जो उपलब्ध है, वह उसका संक्षिप्त रूप है। पुराण की कथा के अनुसार जब रामायण तैयार हुई तो वाल्मीकि जी ने ब्रह्मा, विष्णु, महेश सहित तीनों लोकों के लोगों को इसे सुनाया, सबने ने कहा यह बहुत अच्छी है, हमें भी यह मिलनी चाहिये। रामायण का विभाजन किया गया, सबको बाँट दी गई। बाँटते-बाँटते एक श्लोक बचा, इसके शब्द भी बाँट दिये गये, तब दो शब्द बचे 'रा', 'म'। शंकर जी ने कहा सब बाँट दिया, हमें ये दो शब्द ही दे दो, इसी से हमारा काम चल जायेगा। इतनी विशाल रामायण का सार क्या था? 'रा', 'म', शंकर जी ने बहुत चतुराई से सार ले लिया। कोई कितना भी विस्तार करे सबका सार 'राम' ही है।

7. नाम के प्रताप से पूजनीय बने व सुधरे लोगों के उदाहरण

प्रभु राम के नाम की महिमा तुलसीदासजी ने अनेकों प्रकार से बतायी है, अब एक नये प्रकार से बता रहे हैं। नाम के प्रभाव से किस प्रकार के लोगों

में क्या परिवर्तन होता है, कैसे व्यक्ति क्या से क्या बन जाता है, व्यक्ति कहाँ से कहाँ पहुँच जाता है।

शंकर जी मंगलकारी व अविनाशी हो गये

नाम प्रसाद संभु अबिनासी। साजु अमंगल मंगल रासी ॥26:1॥

नाम प्रसाद = राम नाम के प्रभाव से, *संभु अबिनासी* = शंकर जी अविनाशी हो गये, *साजु अमंगल* = उनकी वेशभूषा व साज शृंगार देखने में अमंगल है, *मंगल रासी* = परंतु वे मंगल ही मंगल से भरे हैं।

नाम महिमा प्रसंग में शंकर जी का नाम कई बार लिया गया है, सब जगह प्रयोजन अलग-अलग है। यहाँ पर शिव पुराण की एक कथा है, जिसके अनुसार शंकर जी राम का नाम जपते-जपते अविनाशी हो गये। दूसरी बात उनका रहन-सहन, वेष-भूषा, ऊपर से देखने में अमंगल लगती है। वे श्मशान की भस्म लपेटे हैं, जटाये हैं, बाघम्बर पहने हैं, सर्प लटक रहे हैं, बैल पर सवार हैं। ऊपर से अमंगल पर अंदर से मंगल की राशि हैं। आज भी देखें तो बहुत से लोगों की वेषभूषा एकदम साधारण रहती है, पर आंतरिक ज्ञान बहुत रहता है। अपने यहाँ आंतरिक विकास पर ज्यादा जोर दिया जाता है न कि ऊपरी रहन सहन पर।

कथा लिखना, सुनना, सुनाना भी नाम जप है

सुक सनकादि सिद्ध मुनि जोगी। नाम प्रसाद ब्रह्मसुख भोगी ॥26:2॥

सुक = शुकदेव जी, *सनकादि* = सनक; सनंदन; सनातन व सनतकुमार चारों, *सिद्ध* = जिनका चित्त शांत है, *मुनि* = जिनका मन भगवान में लगा है, *जोगी* = जिनका भगवान से योग या संपर्क हो गया है, *नाम प्रसाद* = नाम के प्रभाव से, *ब्रह्म सुख भोगी* = आत्मा के सुख में मग्न रहते हैं।

नाम जप के बारे में व्यापक बुद्धि रखनी चाहिये, इससे आशय सिर्फ नाम जपने से नहीं है। जप के कई प्रकार हैं। शुकदेव जी ने भागवत कथा सुनाई, वे भगवान की स्तुति वन्दना गाते थे। भगवान का ध्यान, उनके चरित्रों का

स्मरण, चरित्रों को गाना भी नाम जप की ही साधना है। तुलसीदास जी अपने प्रभु राम की कथा सुना रहे हैं मायने वे राम राम राम का जप ही कर रहे हैं। सनकादि भी सदा भगवान की कथा सुनते व सुनाते रहते हैं।

नारद जी राम व शिव दोनों के प्रिय हो गये

नारद जानेउ नाम प्रतापू। जग प्रिय हरि हरि हर प्रिय आपू ॥26:3॥

नारद जानेउ नाम प्रतापू = नारदजी नाम के प्रताप को जानते हैं, *जग प्रिय हरि* = संसार प्रेम करता है राम से, *हरि हर प्रिय* = राम प्रेम करते हैं शंकर से और शंकर प्रेम करते हैं राम से, *आपू* = ये दोनों प्रेम करते हैं नारद जी से।

भागवत में नारद जी की कथा का वर्णन है। वे पूर्वजन्म में दासी पुत्र थे। कुछ संत लोग गाँव में आये, उनके सत्संग से उन्होंने नाम जपना प्रारंभ किया। माँ की सेवा करते रहे व नाम जपते रहे। माँ के देहांत के बाद वन में नाम जपते रहे। दूसरे जन्म में नारद का शरीर प्राप्त किया। नाम जप से नारद जी की ऊँचाई क्या हो गयी? राम व शंकर दोनों ही नारद से प्रेम करने लगे। नारद जी कहाँ से कहाँ पहुँच गये। सत्संग का जीवन में अत्यंत सूक्ष्म प्रभाव पड़ता है, व्यक्ति में आंतरिक परिवर्तन आते हैं जो दिखाई नहीं देते हैं।

प्रहलाद राक्षस कुल में जन्मे पर भक्त शिरोमणि बन गये

नामु जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू। भगत सिरोमनि भे प्रहलादू ॥26:4॥

नामु जपत = नाम जप से, *प्रभु कीन्ह प्रसादू* = भगवान की कृपा से, *भगत सिरोमनि भे प्रहलादू* = श्रेष्ठ भक्तों में प्रह्लाद का नाम हो गया।

प्रह्लाद के पिता हिरण्यकश्यप एक राक्षस थे। प्रह्लाद पर भारी अंकुश था कि वह भगवान का नाम न ले, उसके अंदर भक्ति न आये, आध्यात्मिक चेतना जागृत ही न हो। इसके लिये हजार कोशिशें की गईं। इन विपरीत परिस्थितियों में भी वह राम का नाम जपता रहा, उसके हृदय में भक्ति आ ही गई, ज्ञान आ गया। हिरण्यकश्यप बहुत नाराज हुआ, उसने कहा ये क्या राम राम जपते रहते हो, मेरे अलावा भगवान कौन है? प्रह्लाद ने कहा वह तो सर्वव्यापी है,

सब जगह है, तुम राजा हो, बहुत शक्तिशाली हो इसका मायने तुम भगवान नहीं हो गये। प्रह्लाद ने कहा इस खंभे में भी भगवान हैं, हिरण्यकश्यप ने वह खंभा ही तोड़ दिया, उसमें से नरसिंह रूप में भगवान प्रगट हुए और उसका वध कर दिये। प्रह्लाद नाम जप के प्रभाव से श्रेष्ठ भक्तों में शामिल हो गया। पुराणों में 14 श्रेष्ठ भक्त हैं, उन्हीं में से एक प्रह्लाद हैं।

ध्रुव ने व्यथित होकर नाम जपा पर अचल स्थान प्राप्त किया

ध्रुवँ सगलानि जपेउ हरि नाऊँ। पायउ अचल अनूपम ठाऊँ ॥26:5॥

ध्रुवँ सगलानि = ध्रुव ने अपमान से व्यथित होकर, *जपेउ हरि नाऊँ* = राम का नाम जपकर, *पायउ अचल अनूपम ठाऊँ* = अचल और अद्वितीय स्थान प्राप्त किया।

एक बार ध्रुव अपने ही पिता की गोद में बैठना चाहते थे, परंतु सौतेली माँ ने तिरस्कारपूर्वक उसे गोद से उतार दिया। ध्रुव अत्यंत व्यथित होकर अपनी माँ के पास गये। उनकी माँ ने कहा भगवान का नाम जप करके उनकी कृपा प्राप्त करो। 6 साल का बालक ध्रुव नाम जपने के लिये वन को निकल पड़ा। 6 महीने में भगवान उसके सामने प्रकट हो गये। इस प्रकार ग्लानि सहित नाम जपने पर भी भगवान प्रसन्न हो गये। भगवान ने कहा तुम्हें राज्य व पिता का प्यार दोनों मिलेगा तुम वापस घर जाओ। वे वापस आकर राज्य व पिता का प्यार पाये। वर्षों तक राज्य करने के बाद ध्रुव को फिर ग्लानि हुई कि हमने भगवान की तपस्या की, वे प्रकट हुए और हमने यह राज्य जो कि कभी न कभी नष्ट होगा क्यों माँग लिया? वे राज्य को अपने पुत्रों को सौंपकर फिर वन में गये। दुबारा ग्लानि सहित तपस्या की। फिर भगवान प्रकट हुए इस बार ध्रुव ने भगवान की भक्ति मांग ली। भगवान ने प्रसन्न होकर उन्हें अचल गति प्रदान कर दी। प्रतीक रूप में आकाश में ध्रुव नाम का तारा है, वह अटल है, सब तारे उसके चारों तरफ घूमते रहते हैं, सप्त ऋषि के सात तारे भी उसके चारों तरफ चक्कर लगाते हैं, यह स्थिर रहता है।

हनुमान ने नाम के बल से राम को अपने बस में कर लिया

सुमिरि पवनसुत पावन नामू। अपने बस करि राखे रामू ॥26:6॥

सुमिरि पवनसुत पावन नामू = पवन पुत्र हनुमान ने राम के पवित्र नाम का जप करके, *अपने बस करि राखे रामू* = प्रभु राम को अपने बस में कर लिया।

हनुमान जी ने राम का नाम जपा तो उनकी क्या स्थिति हुई? राम राम राम जप करके वे राम के भक्त बन गये, ज्ञानियों में श्रेष्ठ, सकल गुण निधान हो गये । वे ऐसे भक्त हो गये कि राम को भी अपने बस में कर लिया। सुंदरकाण्ड में प्रभु राम को कहना पड़ा कि हे पुत्र हनुमान हम तो तुम्हारे ऋणी हो गये। इस प्रकार राम अपने आप को हनुमान के आधीन स्वीकार कर लेते हैं।

अत्यंत पापी भी नाम के प्रभाव से मुक्त होता है

अपतु अजामिलु गजु गनिकाऊ। भए मुकुत हरि नाम प्रभाऊ ॥26:7॥

अपतु = अत्यंत पापी, *अजामिलु गजु गनिकाऊ* = अजामिल; हाथी; गणिका, *भए मुकुत* = पापों से मुक्त हो गये, *हरि नाम प्रभाऊ* = भगवान के नाम जप के प्रभाव से।

अजामिल अत्यंत पापी था, उसने अपने पुत्र का नाम नारायण रख लिया। अपने पुत्र को बुलाने के लिये नारायण बोलता था। नारायण नारायण बोलने से ही उसके अंदर परिवर्तन आ गया फिर उसने तपस्या का ज्ञान पाया और मुक्त हुआ।

पिंगला नाम की एक गणिका थी। उसने एक तोता पाला और उसे राम राम बोलना सिखाती थी। उसे सिखाते-सिखाते उसके मुँह से भी राम नाम का जप होने लगा। तोता भी राम नाम बोलने लगा। बाद में दोनों एक साथ मर गये। नाम के प्रभाव से गणिका व तोते भगवान के धाम गये।

गज की कथा के अनुसार एक शक्तिशाली हाथी क्षीरसागर के पास एक द्वीप के तालाब में स्नान कर रहा था, इतने में एक मगरमच्छ ने उसका पैर पकड़ लिया। हाथी को जब यह विश्वास हो गया कि अपनी पूरी ताकत लगाने के बाद भी अपने बल पर मैं इस मगरमच्छ से पैर नहीं छुड़ा सकता तब उसने भगवान का स्मरण किया। भगवान उसकी पुकार सुनकर नंगे पाव ही दौड़े और मगरमच्छ से हाथी की रक्षा की।

हमारा मन हाथी, मोह मगरमच्छ, संसार समुद्र है

हमारा मन हाथी के समान शक्तिशाली है, इसे मोह रूपी मगरमच्छ संसार सागर में घसीटे लिये जा रहा है। हम कई बार इस मोह से छूटने की कोशिश करते हैं, अपनी पूरी ताकत लगा देते हैं, पर मोह से छूट नहीं पाते। मन को भगवान का आश्रय लेना ही पड़ता है, उनका नाम जपने से, वे हमारे लिये आज भी वैसे ही दौड़े चले आयेंगे जैसे हाथी को बचाने आये थे। आप स्वयं नाम जप करके इसके प्रभाव का अनुभव करें।

पापी के शरीर में भी जीव, आत्मा व परमात्मा तो है ही

ऐसा आप नहीं कह सकते कि भगवान सर्वव्यापक है, इस दुष्ट को छोड़कर। आप ऐसा सोचकर भगवान की सर्वव्यापकता में ही दोष लगा देंगे। उसे सर्वव्यापक होने के लिये पापी के हृदय में भी रहना ही पड़ेगा। ऊपर से व्यक्ति बुरा हो सकता है पर अंदर तो परमात्मा का निवास है ही। अत: सभी को नाम जपना चाहिये।

राम स्वयं अपने नाम की पूरी महिमा नहीं सुना सकते

कहौं कहाँ लगि नाम बड़ाई। रामु न सकहिं नाम गुन गाई ॥26:8॥

कहौं कहाँ लगि नाम बड़ाई = नाम की बड़ाई मैं कहाँ तक करूँ, *रामु न सकहिं नाम गुन गाई* = राम स्वयं भी नाम की पूरी महिमा नहीं कह सकते।

तुलसीदासजी को कहते-कहते लगने लगा कि नाम की जितनी महिमा थी वह सब हमने सुना दी, लेकिन अभी ऐसा नहीं है कि खत्म हो जायेगी, अभी कई दोहों में और चलने वाली है। अत: कहते हैं कि राम स्वयं भी अपने नाम की महिमा सुनाने लगें तो हार जायेंगे। इस प्रकार नाम की महिमा इतनी ज्यादा है।

राम नाम कल्पतरु के वृक्ष के समान कल्याणकारी

नामु राम को कलपतरु कलि कल्यान निवासु ।
जो सुमिरत भयो भाँग तें तुलसी तुलसीदासु ॥दोहा 26॥

नामु राम को कलपतरु = राम का नाम कल्पतरु के वृक्ष के समान है, *कलि कल्यान निवासु* = नाम जप ही कलियुग में कल्याण का घर है, *जो सुमिरत* = राम नाम का स्मरण करने से, *तुलसीदासु* = तुलसीदास जी, *भाँग तें* = भांग के पौधे से, *भयो तुलसी* = तुलसी का पौधा बन गये।

जैसे कल्पतरु के पौधे से जो मांगो मिलता है वैसे ही राम नाम जप के प्रभाव से जो माँगो मिलता है। लौकिक व परलौकिक दोनों कामनायें पूरी होती हैं। कलियुग में कहीं भी कल्याण नहीं है, सब जगह अशांति है। हर जगह व्यक्ति परेशान है। यदि कोई नाम जप रहा है तो समझो वह अपने चारों तरफ घेरा बना लेता है। उस घेरे के अंदर ही शांति से आप बैठ सकते हैं।

तुलसीदास स्वयं भांग के पौधे से तुलसी का पौधा बन गये

अब तुलसीदास जी स्वयं का अनुभव बताते हैं कि राम नाम कितना कल्याणकारी है, इस पर सबको विश्वास करना चाहिये। कहते हैं मैं पहले तो भांग के पौधे के समान था। भांग में सब दोष ही दोष हैं, यह बुद्धि का नाश करने वाला, कुसंग में ले जाने वाला है। हमने राम नाम जपा जिससे ऐसा परिवर्तन आया कि हम तुलसी का पौधा बन गये। तुलसी में गुण ही गुण है, तुलसी स्वास्थ्य प्रदान करती है, उसका सेवन यदि न भी करें सिर्फ पौधे के पास जायें, उसमें जल चढ़ावें इतने से ही उनकी कृपा प्राप्त होती है। तुलसी एक विशेष प्रकार की गंध छोड़ती है, उसकी गंध विशेष प्रकार का शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक परिवर्तन लाती है। तुलसी व्यक्ति का कल्याण करती है। हमें निराशा की भावना छोड़कर आशा पूर्वक नाम जपना चाहिये, यह नाम जप सबका कल्याण करने वाला है।

8. कलियुग में नाम जप ही एकमात्र साधन

नाम जप की महिमा कई प्रकार से बताते हुए अब समापन कर रहे हैं। कलियुग में नाम जप ही एकमात्र साधन है। नाम जप के लिये कोई शर्त या तैयारी की आवश्यकता नहीं घोर पापी भी यदि नाम का जप करे, तो उसके अंदर परिवर्तन आयेगा वह धीरे-धीरे पाप कर्म करना छोड़ देगा।

हमेशा नाम जप से जीवों के शोक दूर हुए हैं

चहुँ जुग तीनि काल तिहुँ लोका। भए नाम जपि जीव बिसोका ॥27:1॥

चहुँ जुग = चारों युग में, *तीनि काल* = तीनों काल में, *तिहुँ लोका* = तीनों लोकों में, *नाम जपि* = नाम जप करके, *भए जीव बिसोका* = जीव शोक रहित हुए हैं।

सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग व कलियुग ये चार युग हैं। भूतकाल, वर्तमान काल व भविष्य काल ये तीन काल हैं। स्वर्गलोक, मृत्युलोक व पाताललोक ये तीन लोक हैं। हम लोग मृत्युलोक में हैं इसके नीचे भी लोक हैं व इसके ऊपर भी लोक हैं। हम मध्य में हैं। नाम जप की साधना प्रत्येग युग में, सभी कालों में और सभी लोकों में जीवों के शोक दूर करती है, यह लाभकारी है।

सभी पुण्यों का फल राम नाम में प्रेम होना है

बेद पुरान संत मत एहू। सकल सुकृत फल राम सनेहू ॥27:2॥

बेद पुरान संत मत एहू = वेद पुराण व संतों का यही मत है, *सकल सुकृत फल* = सभी पुण्यों का फल है, *राम सनेहू* = राम नाम में प्रेम होना।

यदि किसी को नाम से प्रेम हो जाये वह नाम जपने लगे तो समझो यह उसके पुण्य का फल है। राम नाम जप करना अध्यात्म के क्षेत्र में सबसे सरल व बड़ी महिमामयी साधना है। हमें सहज विश्वास ही नहीं होता है कि इतने सरल काम से कैसे शोक, रोग, दोष दूर हो जायेंगे? लगता है जैसे नाम की महिमा बढ़ा-चढ़ाकर बतायी जा रही है। हमारे पापों के उदय के कारण ऐसा लगता है, हमें विश्वास ही नहीं होता है। यदि पुण्य हो तो चित्त शुद्ध हो, नाम जप के लिये कुछ तो चित्त की शुद्धता चाहिये, अन्यथा हम जप कर ही नहीं पायेंगे।

सतयुग में ध्यान, त्रेता में यज्ञ व द्वापर में पूजा करते हैं

ध्यानु प्रथम जुग मख बिधि दूजें। द्वापर परितोषत प्रभु पूजें ॥27:3॥

ध्यानु प्रथम = ध्यान करना प्रथम युग यानि सतयुग की साधना है, *जुग मख बिधि दूजें* = यज्ञ करना दूसरे युग यानि त्रेता युग की साधना है, *द्वापर परितोषत प्रभु पूजें* = तीसरे युग द्वापर में भगवान के चरणों की वन्दना व पूजा साधना है।

सतयुग में मन शुद्ध रहता है, उसमें मलिनता बिल्कुल नहीं रहती, अत: ध्यान की साधना की जाती है। साधनाओं में सर्वश्रेष्ठ ध्यान साधना है, एक प्रकार से यह अंतिम साधना है। त्रेता में मन में थोड़ी मलिनता आ जाती है, इसलिये यज्ञ करते हैं। यज्ञ से आशय अग्नि में आहुतियाँ देने बस से नहीं है, इसके मायने है बिना किसी स्वार्थ के जन कल्याण के कार्य करें। सभी कर्म यज्ञ हैं यदि वे कर्त्ताभाव त्यागकर किये जायें। द्वापर में सत्त्वगुण और घट जाता है रजोगुण बढ़ जाता है अत: लोगों से लोककल्याण का कार्य भी नहीं हो पाता। इस युग में भगवान की उपासना करने की साधना का विधान है। भगवान की पूजा करो, उनसे प्रार्थना करो।

कलियुग में नाम जप की साधना करते हैं

कलि केवल मल मूल मलीना। पाप पयोनिधि जन मन मीना ।।27:4।।
नाम कामतरु काल कराला। सुमिरत समन सकल जग जाला ।।27:5।।
राम नाम कलि अभिमत दाता। हित परलोक लोक पितु माता ।।27:6।।
नहिं कलि करम न भगति बिबेकू। राम नाम अवलंबन एकू ।।27:7।।

कलि केवल = कलियुग ही एक ऐसा युग है, *मल मूल मलीना* = मल का मूल है इसमें सारे दोष हैं, *पाप पयोनिधि* = पाप का समुद्र है, *जन मन मीना* = मन इस पाप समुद्र में डूबा रहता है जैसी मछली पानी में डूबी रहती है, *नाम कामतरु* = राम नाम कल्पवृक्ष के समान है, *काल कराला* = कलियुग बड़ा भयंकर समय है, *सुमिरत समन सकल जग जाला* = नाम स्मरण करने मात्र से संसार के सभी जंजाल नष्ट हो जाते हैं, *राम नाम कलि अभिमत दाता* = राम का नाम कलियुग में मन चाहा फल देने वाला है, *हित परलोक* = परलोक को सुधारने वाला, *लोक पितु माता* = और इस लोक में माता पिता के समान है, *नहिं कलि करम न भगति बिबेकू* = कलियुग में कर्म; भक्ति व ज्ञान ये तीनों साधनायें करना कठिन है, *राम नाम अवलंबन एकू* = इस युग में राम नाम ही एकमात्र सहारा है।

कलियुग में व्यक्ति पाप को छोड़ना ही नहीं चाहता है। वह समझता है भ्रष्टाचार, अत्याचार, चोरी, ठगी करें तभी जीवन चल सकता है अन्यथा भूखे मर जायेंगे। व्यक्ति ने अपनी कल्पना से तेरा-मेरा करके एक जाल बिछा

रखा है, मनगढ़ंत बहुत सारी बातें बना रखी हैं, इन्हीं में उलझ कर वह दु:खी होता रहता है। राम नाम इस जाल को ही नष्ट कर दु:ख दूर कर देता है।

ये चारों युग हमारे अंदर भी हैं, ये साधना का क्रम हैं

बड़े ही सरल व सुंदर शब्दों में साधना का क्रम भी बता दिया गया है। सबसे पहले कलियुग की साधना, नाम का जप प्रारंभ करें। नाम जप से पाप कटेंगे, चित्त शुद्ध होगा। फिर भगवान में मन लगने लगेगा, अब द्वापर की साधना पूजा पाठ उपासना शुरू करें। इसके बाद त्रेता युग की साधना निष्काम कर्म करें। जनकल्याण के कार्य में बिना किसी स्वार्थ के जुट जायें। ये कार्य करते-करते मन एकदम एकाग्र होने लगेगा। अंत में सतयुग की साधना ध्यान प्रारंभ करें। आप अपनी साधना का आरंभ एकदम सरल नाम जप से प्रारंभ कर दें।

कपट से निपटने में राम नाम व हनुमान ही समर्थ हैं

कालनेमि कलि कपट निधानू। नाम सुमति समरथ हनुमानू ॥27:8॥

कालनेमि कलि कपट निधानू = कालनेमि राक्षस व कलियुग दोनों ही कपट से भरपूर हैं, *नाम सुमति समरथ हनुमानू* = इनसे निपटने में राम नाम वैसा ही समर्थवान व बुद्धिमान है जैसे हनुमान जी हैं।

जब हनुमान जी संजीवनी जड़ी बूटी लेने जा रहे थे तब रास्ते में कालनेमि नामक राक्षस ने कपट से साधु का वेष बनाकर उनका रास्ता रोकने की कोशिश की, हनुमानजी ने बुद्धिमानी व ताकत से कालनेमि के कपट का अंत कर लक्ष्मण जी को बचाया। कलियुग हमारे साथ कैसे कपट करता है? जिन कामों के करने से या जिस प्रकार का जीवन जीने से कष्ट ही कष्ट है, उन्हें ही करने के लिये यह हमें प्रेरित करता है और उनमें अच्छाइयाँ भी बताता है। यही कलियुग का कपट है। राम नाम भी हनुमान की तरह कपट को नष्ट कर हमारे जीवन की रक्षा कर हमें सुख, शांति व आनंद प्रदान करता है।

राम नाम नरसिंह भगवान की तरह भक्तों की रक्षा करता है

राम नाम नरकेसरी कनककसिपु कलिकाल।
जापक जन प्रहलाद जिमि पालिहि दलि सुरसाल ॥दोहा 27॥

राम नाम नरकेसरी = राम का नाम नरसिंह भगवान के समान है, *कनककसिपु कलिकाल* = हिरण्यकश्यप राक्षस के समान कलियुग है, *जापक जन प्रह्लाद जिमि* = नाम जप करने वाले भक्त प्रह्लाद के समान हैं, *पालिहि दलि सुरसाल* = जो रक्षा करता है देवताओं के शत्रु को मारकर।

जिस प्रकार हिरण्यकश्यप भक्त प्रह्लाद को परेशान करता था उसी प्रकार कलियुग भी भक्तों को बहुत परेशान करता है। जो भक्त नाम जप करते हैं वे प्रह्लाद की तरह हैं। जैसे प्रह्लाद की रक्षा करने के लिये भगवान ने नरसिंह रूप में अवतार लेकर हिरण्यकश्यप को मार दिया था उसी प्रकार राम नाम भक्तों की कलियुग से रक्षा करता है।

नौ दोहों में रामनाम महिमा, नौ की संख्या पूर्ण है

इस प्रकार से 19वें दोहे से शुरू करके 27वें दोहे तक 9 दोहों में रामनाम महिमा पूरी होती है। इन नौ दोहों में प्रत्येक में 8 चौपाइयाँ हैं इस प्रकार 72 चौपाइयाँ हुई। तुलसीदासजी जब किसी बात को पूरी ताकत लगाकर कहना चाहते हैं तो 9 संख्या तक पहुंचते हैं। वे पूरा बल लगाकर राम नाम महिमा का वर्णन करते हैं। संख्या विशारद के अनुसार नौ की संख्या पूर्ण संख्या कहलाती है, यह कभी घटती नहीं सदा नौ ही रहती है। यदि 9 बोले तो 9, 9 दूनी बोलें तो 18, 1 + 8 = 9, 9 तिया 36 तो 3 + 6 = 9 होगें। इसी प्रकार 72 चौपाइयों में 7 + 2 = 9 होते हैं।

9. राम राम कैसे भी कहें वह मंगलकारी है

नाम जप को निश्चित समय में, स्नान वगैरह करके, प्रसन्न मन से विधि विधान से करें तो बहुत अच्छा है, यदि आप ऐसा नहीं कर सकते तो क्या नाम जप न करें या जप फलदायी नहीं होगा? इस प्रश्न का समाधान तुलसीदास जी इस एक चौपाई में कर रहे हैं।

भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ। नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ ॥28:1॥

भायँ = अच्छे भाव से या प्रेम से, *कुभायँ* = बुरे भाव से या वैर से, *अनख* = नाराजगी से, *आलसहूँ* = आलस्य से, *नाम जपत* = नाम जप करने से, *मंगल दिसि दसहूँ* = दसों दिशाओं में कल्याण होता है।

तुलसीदासजी की प्रबंध रचना का एक विधान है कि पिछले दोहे, चौपाइयों के प्रसंग को आगे की चौपाइयों से जोड़ते हैं। एक कड़ी को दूसरी कड़ी से जोड़ते हैं। इसलिये नाम जप की महिमा में एक चौपाई और कहते हैं।

यदि हम शंकर जी की तरह प्रेम भाव से राम नाम जपें तो कल्याण है, रावण की तरह वैर भाव से भी राम का स्मरण करें तो भी कल्याण ही है। यदि नाराजगी से, जैसे भगवान ने यह ठीक नहीं किया, ऐसा नहीं किया, वैसा नहीं किया, इस भाव से जपें तो भी कल्याण है। आलस्य में जम्हाई लेते हुए राम राम कहें, नींद आ रही है, बहुत उत्साह नहीं है फिर भी राम नाम कहें तो भी वह पाप को नष्ट करता है।

स्वामी सत्यानंदजी के रिखिया सत्संग से

राम नाम आराधना: शिव जी अवश्य आयेंगे

अगहन का महीना जिसे मार्गशीर्ष कहते हैं, यह महीना सबसे शुद्ध, सबसे महान् और सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण है सभी महीनों में। इस महीने रिखिया में राम नाम आराधना का अनुष्ठान होगा। अत: इस एक महीने के लिये राम, राम, राम, राम तुम सब जपोगे, मैं जपूंगा, सभी कोई जपेंगे, पूरा वातावरण जपेगा, इस स्थान के देवता जपेंगे, यह आम का पेड़ भी जपेगा, माइक जपेगा, वीडियो जपेगा, दिन जपेगा और रात जपेगी-राम राम राम। यह जो राम नाम आराधना है, इसमें हमने केवल एक चीज रखी है, भगवान शिव जी को हम यहाँ आने के लिये विवश कर रहे हैं। यह निश्चित है, यह सही है, और इस पर हर व्यक्ति को विश्वास रखना चाहिये। हमारे संत-महात्मा कपोल कल्पित गप नहीं लगाते थे। सन्त तुलसीदास गंभीर थे, वे ऐसे ही नहीं थे। जीवन को, सृष्टि को, वेदांत दर्शन, अद्वैत वेदांत दर्शन, विशिष्ट अद्वैत दर्शन को उन्होंने गंभीरता से लिया। ऐसे ही बच्चों की तरह नहीं लिया। समझाया उन्होंने। वे एक भक्त थे, धर्मपरायण थे और उनको श्रीराम के दर्शन प्राप्त थे। तुलसीदासजी ने शिव जी के मुख से पार्वती जी को कहलवाया है और राम जी के मुख से कहलवाया है। उसका यही निचोड़ है कि जहाँ राम का नाम उच्चारण होगा, जहाँ राम की पूजा होगी, जहाँ राम की आराधना होगी वहाँ शिव जी अवश्य आयेंगे। इसलिये नहीं कि वे तुमको दर्शन देने आयेंगे, बल्कि इसलिये कि वे राम नाम सुनने आयेंगे।

भगवान की पूजा करो, यही सरल सिद्धांत है

श्रीमद्‌भागवत में कहते हैं कि हे भगवान्! तुम रूपरहित हो, किंतु मैंने मन को एकाग्र करने के लिये तुम्हारी मूर्ति बनाई। तुम शब्द से परे हो, वाणी से परे हो किंतु मैंने तुम्हें अपने वाणी का विषय बनाया और स्तोत्र द्वारा तुम्हारी पूजा की। तुम तो सर्वव्यापक हो, परंतु तुम्हें मैंने एक स्थान पर प्रतिष्ठा देकर तुम्हारी पूजा की। मैं बहुत कमजोर हूँ, बहुत सीमित हूँ, मैं मन के द्वारा बँधा हुआ हूँ। मैं निराकार नहीं हूँ, असीमित नहीं हूँ, सर्वव्यापक नहीं हूँ, सर्वज्ञ नहीं हूँ, मुझे माफ करना। सीधी बात कह दी। इसलिये साकार-निराकार में न उलझ कर अपने धर्म के अनुसार देवी-देवताओं, पंच देवों की पूजा करनी चाहिये। यही सरल सिद्धांत है।

भगवान के नाम को मैं राम कहता हूँ, यह मेरा स्पष्ट मत है

रूप की पूजा नहीं करनी चाहिये, ऐसा कहना मूर्खता है। तुम्हें अपनी साधना की शुरुआत एक रूप के साथ करनी चाहिये, राम ही हो ऐसा जरूरी नहीं है। राम, यह तो नाम है, अंग्रेजी में इसे गॉड कहते हैं, फारसी में अल्लाह कहते हैं, वेदान्त में ब्रह्म कहते हैं, बाकी सब परमात्मा कहते हैं। मैं राम कहता हूँ। और यह मेरा स्पष्ट मत है।



12. राम स्वामी हैं मैं उनका सेवक हूँ, प्रभु से रिश्ता बनायें

(दोहा 28 व 29)

इस प्रसंग में तुलसीदास जी दशरथ पुत्र राजा राम से अपना रिश्ता सेवक का जोड़कर उनकी वन्दना करते हैं, उनका स्मरण करते हैं। कहते हैं कि मुझ जैसे कुसेवक के दोषों पर प्रभु ने ध्यान ही नहीं दिया, मेरे अंदर के भक्ति भाव को पहचान कर मुझ पर कृपा कर दी। मैं अपने प्रभु की गुणगाथा लिखने के लिये महाकाव्य की रचना करना चाहता हूँ, मेरे प्रेम को देखकर उन्होंने हमें स्वीकृति दे दी। भगवान से कोई रिश्ता बना लें फिर उनका स्मरण, ध्यान, पूजा करें बहुत जल्दी ही प्रेम का भाव आयेगा, आनंद की प्राप्ति होगी।

स्वामी सत्यानंदजी के रिखिया सत्संग से

भगवान के साथ रिश्ता जोड़ना

भगवान की पूजा करना ठीक है और बहुत सरल है, कोई भी कर सकता है। धूप उठा लिया, चन्दन उठा लिया, अक्षत दिया, नमः नमः कर दिया। फोटो रख लिया जय जगदीश हरे गा दिया, खतम। भगवान के बारे में सुनना, सुनाना, ग्रंथ पढ़ना बहुत अच्छा लगता है। परंतु भगवान के साथ अपना रिश्ता जोड़ना, अपना रिश्ता समझना, और उस रिश्ते के मुताबिक अनुभव करना बड़ा कठिन है। जिसने यह ठीक से कर लिया समझो उसको भगवान मिल गये। जैसे ही तुम किसी के साथ रिश्ता जोड़ते हो एक भाव या भावना का जन्म होता है। वात्सल्य भाव बेटे के साथ, माधुर्य भाव स्त्री-पुरुष के साथ, इष्ट भाव भगवान् के साथ, दास्य भाव मालिक के साथ। जैसे ही तुम बोलते हो मैं भगवान् का दास या सेवक हूँ तो तुम्हारे अंदर ठीक वैसा ही भाव आना चाहिये जैसे तुम्हारे घर में नौकर का तुम्हारे प्रति होता है। भगवान के साथ माता, पिता, पुत्र, बंधु, सखा, पति, परमेश्वर, मालिक या तुम्हारी आत्मा, बस इतने ही रिश्ते जोड़े जा सकते हैं। यह मत कहो कि भगवान मेरे भतीजे हैं। नहीं। भगवान के साथ बस इन्हीं में से एक रिश्ता जोड़ लो।

मेरा भगवान के साथ मालिक-सेवक का संबंध

हमने एक निर्णय कर लिया है कि भगवान् के साथ हमारा एक रिश्ता पक्का है। आप मेरे मालिक और मैं आपका दास। राम जी के साथ बिल्कुल सीधा-साधा संबंध है। वे मालिक हैं, वे हमारे सरकार और हम उनके नौकर हैं। यह हमारा संबंध निश्चित हो चुका है। यहाँ रिखिया आने के बाद राम जी मालिक और सीता जी मलकिनी हुईं। हम उनको माँ भी नहीं कहते, बहन भी नहीं कहते, देवी भी नहीं कहते। वे हमारी क्या हुईं? मलकिनी। बोलती हैं, 'सत्यानंद, जल्दी से गिलास साफ करके लाओ। तुम्हारे सरकार आये हैं, दूध बनाकर लाओ।' हाँ मलकिनी। यह भाव होना चाहिये।

मैं देहबुद्धि वाला इसलिये दास भाव स्वीकार किया

हनुमान जी कहते हैं कि देहबुद्धि में मैं भगवान श्रीराम का दास हूँ। मैं भी देहबुद्धि वाला आदमी हूँ, अतः मैंने दास भाव स्वीकार किया है। हमेशा ऐसा अनुभव हुआ कि मैं सेवक हूँ और हमेशा वही करूंगा जो वे बोलेंगे। मेरी कोई

इच्छा नहीं है। मेरी कोई प्राथमिकता नहीं, मुझे चुनने का कोई अधिकार नहीं, मेरा कोई दर्शन नहीं, मेरा कोई सम्प्रदाय नहीं। मालिक का धर्म ही दास का धर्म होता है, मालिक की जाति ही दास की जाति होती हैं। मालिक का हुक्म ही सेवक के लिये सब कुछ होता है। एक सेवक अपना निर्णय खुद नहीं ले सकता, यह तो मालिक को ही निर्णय लेना है। मुझे पूरा विश्वास है, क्योंकि अपने जीवन में मैंने दो बार उनकी आवाज सुनी है, वह आवाज मेरे मन की आवाज नहीं थी। वह बाहरी आवाज है, जिसे मैंने अंदर से सुना और जो मैंने सुना वह सत्य हुआ, यही सबूत है।



दशरथ पुत्र राम को प्रणाम कर कथा कहेंगे

सुमिरि सो नाम राम गुन गाथा। करउँ नाइ रघुनाथहि माथा॥28:2॥

सुमिरि सो नाम = उसी राम नाम का स्मरण करके, *राम गुन गाथा करउँ* = राम के गुणों की गाथा का वर्णन करता हूँ, *नाइ रघुनाथहि माथा* = दशरथ पुत्र रघुनाथ राम को सिर नवाकर प्रणाम करके।

तुलसीदास जी को राम नाम का स्मरण करने से इतना बल प्राप्त हो गया कि पहले राम की गुणगाथा गाने की हिम्मत नहीं पड़ती थी, अब उत्साह आ गया। दूसरी बात कहते हैं कि रघुनाथ जी यानि दशरथ पुत्र राम को सिर नवाकर प्रणाम करके कथा आरंभ करते हैं।

प्रभु ने मेरा सब प्रकार से सुधार किया है

मोरि सुधारिहि सो सब भाँती। जासु कृपा नहिं कृपाँ अघाती ॥28:3॥

मोरि सुधारिहि सो सब भाँती = मेरा तो सब प्रकार से सुधार कर दिया है, *जासु कृपा नहिं कृपाँ अघाती* = प्रभु राम ने इतनी कृपा की उस कृपा से कृपा भी नहीं अघाती।

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि मेरे प्रभु राम ने मेरा सब प्रकार से सुधार करके मुझ पर बहुत कृपा की है। पर प्रभु राम को अभी भी लगता है कि अभी पूरी कृपा की ही नहीं है। तुलसीदास जी अपने अनुभव से हमें प्रेरणा दे रहे हैं।

कलियुग में हम लोग अज्ञान के प्रभाव से दुर्गुणी हो जाते हैं, जिससे हमें दुख व क्लेश उठाने पड़ते हैं। यदि हम श्रीरामचरितमानस का अध्ययन करके प्रभु राम की महिमा को जानें व उनको हृदय से स्मरण करें तो वे हम पर भी अनुग्रह कर हमारे सभी दु:ख, क्लेश व विकारों को दूर करके हमारा सुधार करेंगे।

अपनी प्रतिज्ञा के पालन में हमें सुधारा

राम सुस्वामि कुसेवकु मोसो। निज दिसि देखि दयानिधि पोसो ॥28:4॥

राम सुस्वामि = राम बहुत अच्छे स्वामी हैं, *कुसेवकु मोसो* = मैं उनका बुरा सेवक हूँ, *निज दिसि देखि दयानिधि* = दया के सागर राम ने अपनी ओर देखकर के, *पोसो* = अपनी प्रतिज्ञा का पालन किया है।

प्रभु राम ने प्रतिज्ञा ले रखी है कि जो भी हमारी शरण में आयेगा चाहे वह कितना भी पतित हो, बुरा हो हम उसका सुधार करेंगे उसकी रक्षा करेंगे। जब मेरे स्वामी ने मेरी ओर व मेरे अवगुणों की ओर देखा तो उन्हें अपनी प्रतिज्ञा याद आ गयी, उसी के पालन के लिये उन्होंने मेरा सब प्रकार से सुधार किया।

राजा प्रजा की बात सुनकर भाव पहचान लेते हैं

लोकहुँ बेद सुसाहिब रीती। बिनय सुनत पहिचानत प्रीती ॥28:5॥

लोकहुँ बेद = लोक में यह बात प्रसिद्ध है, *सुसाहिब रीती* = अच्छे मालिक या राजा की यह रीति भी है, *बिनय सुनत पहिचानत प्रीती* = वे लोगों की प्रार्थना सुनकर उनका प्रेम पहचान लेते हैं।

अच्छे स्वामी या राजा से विनती तो सभी लोग करते हैं, वे सबकी सुनकर यह पहचान लेते हैं कि व्यक्ति किस भाव से प्रार्थना कर रहा है। साहिब उर्दू शब्द है, सुसाहिब मतलब राजा भी होता है।

राजा की सराहना कर प्रजा उससे प्रार्थना करती है

गनी गरीब ग्राम नर नागर। पंडित मूढ़ मलीन उजागर ॥28:6॥
सुकबि कुकबि निज मति अनुहारी। नृपहि सराहत सब नर नारी ॥28:7॥

गनी गरीब = अमीर-गरीब, *ग्राम नर नागर* = ग्रामीण-शहरवासी, *पंडित मूढ़* = पंडित-मूर्ख, *मलीन उजागर* = बदनाम-यशस्वी, *सुकबि कुकबि* = अच्छा कवि-बुरा कवि, *निज मति अनुहारी* = अपनी बुद्धि के अनुसार, *नृपहि सराहत सब नर नारी* = राजा की सराहना सब लोग करते हैं।

राज दरबार में राजा के सामने उसकी सराहना तो सभी वर्ग के लोग अपनी बुद्धि के अनुसार करते हैं। चाहे वे गरीब वर्ग के हों या अमीर, गाँव में रहते हों या शहर में, विद्वान् हों या मूर्ख, बदनाम हों या यशस्वी, अच्छे कवि हों या कुकवि हों।

राजा सबकी सुनकर उनके भाव को पहचान लेते हैं

साधु सुजान सुसील नृपाला। ईस अंस भव परम कृपाला ॥28:8॥
सुनि सनमानहिं सबहि सुबानी। भनिति भगति नति गति पहिचानी ॥28:9॥

साधु सुजान सुसील नृपाला = सज्जन; ज्ञानवान व सुशील राजा, *ईस अंस भव* = जो ईश्वर का अंश कहलाता है, *परम कृपाला* = ऐसा कृपालु राजा, *सुनि सनमानहिं सबहि सुबानी* = सबकी सुनकर मीठी वाणी से सबको आदर देता है, *भनिति भगति नति गति पहचानी* = उनकी वाणी में भक्ति, विनय व चालाकी को पहचान करके।

राजा में क्या गुण होने चाहिये? उसे सज्जन, ज्ञानवान, गुणवान व सब पर दया करने वाला होना चाहिये। राजा सबका पालन पोषण करता है इसलिये उसे पृथ्वी पर ईश्वर का अंश मानते हैं। राजा सबकी बातें सुनकर उसके अंदर के भाव को पहचान लेता है कि वह किसलिये प्रशंसा कर रहा है। राजा शब्द के पीछे न जाकर उसके भाव को पहचान कर उसी अनुसार व्यवहार करते हैं।

राजा राम तो हमारा प्रेम भाव पहचानेंगे ही

यह प्राकृत महिपाल सुभाऊ। जान सिरोमनि कोसलराऊ ॥28:10॥
रीझत राम सनेह निसोतें। को जग मंद मलिनमति मोतें ॥28:11॥

यह प्राकृत महिपाल सुभाऊ = यह तो संसारी राजाओं का स्वभाव है, *जान सिरोमनि कोसलराऊ* = कोसलपुर के राजा राम तो चतुरशिरोमणि हैं, *रीझत*

राम सनेह निसोतें = राम तो विशुद्ध प्रेम से रीझते हैं, *को जग मंद मलिनमति मोतें* = मेरे समान इस संसार में मलिन व मंद बुद्धि का और कौन होगा?

तुलसीदास जी कहते हैं कि जब संसार के राजा सबकी सुनकर उसके पीछे के भाव को पहचान लेते हैं तब हमारे राजा राम की बात ही क्या है? वे तो ज्ञानियों में सर्वश्रेष्ठ हैं, चतुर शिरोमणि हैं, वे तो मुझ जैसे मंदमति सेवक के शब्दों के पीछे छिपे प्रेम को पहचान ही लेंगे। हमारे राजा राम को तो केवल विशुद्ध प्रेम चाहिये, उसी से वे रीझते हैं। कोई कहे हम अशिक्षित हैं, हमें भाषा का ज्ञान नहीं, हम कैसे प्रार्थना करें? अरे, जैसी भाषा है वैसी प्रार्थना करो, वे सबकी भाषा जानने वाले हैं, वे भाव स्वयं समझ लेंगे। संस्कृत में भगवान की प्रार्थना नहीं कर सकते तो हिंदी में ही करें, किसी भी भाषा या शब्दावली से भगवान को मतलब नहीं है, वे तो केवल भाव को देखते हैं। भगवान का नाम लो प्रेम से, जितना प्रेम होगा भगवान की कृपा प्राप्त करने में उतनी ही सुगमता होगी।

ज्ञानी अपने को अज्ञानी व अज्ञानी ज्ञानी मानता है

ज्ञान का एक लक्षण यह भी है कि जब ज्ञान प्राप्त होता है तो पता चलता है कि दुनियाँ में जो अनंत ज्ञान है उसका एक अंश हमारे पास है, अत: हम मंदमति हैं। अज्ञान का यह लक्षण है कि जो जानता कुछ नहीं है उसे उसका अज्ञान यह समझाता है कि तुमसे ज्यादा जानने वाला दुनियाँ में कोई है ही नहीं।

राजा राम ने मुझ जैसे कुसेवक की बात मान ली

सठ सेवक की प्रीति रुचि रखिहहिं राम कृपालु ।
उपल किए जलजान जेहिं सचिव सुमति कपि भालु ॥दो 28 क॥

सठ सेवक की = मेरे जैसे कुसेवक की, *प्रीति रुचि* = प्रेम व रुचि, *रखिहहिं राम कृपालु* = कृपालु प्रभु राम ने मान लिया, *उपल किए जलजान जेहिं* = जिन्होंने पत्थर को जहाज बना दिया, *सचिव सुमति कपि भालु* = बंदर व भालुओं को बुद्धिमान मंत्री बना दिया।

मैं कुसेवक हूँ, फिर भी मैं चाहता हूँ कि अपने आराध्य प्रभु राम की यश और महिमा की गुणगाथा गाऊँ और एक महाकाव्य की रचना करुँ। राम इतने

कृपालु हैं कि हमारी इस बात को सहर्ष स्वीकार कर लिया। पत्थर का स्वभाव होता है कि वह स्वयं पानी में डूब जाता है, और जो उस पत्थर को पकड़ता है वह भी डूब जाता है। आपकी कृपा से पत्थर तैरने लगे जिससे पुल बन गया, उसके सहारे पूरी सेना समुद्र पार कर गयी। वानर व भालु में ज्ञान तो होता नहीं, आपने उन्हें सद्‌बुद्धि देकर उन्हें अपना मंत्री बना लिया। मंत्री तो राजा से ज्यादा ज्ञानवान होता है।

हे प्रभु, आप मेरे कारण उपहास सहते हैं

हौंहु कहावत सबु कहत राम सहत उपहास ।
साहिब सीतानाथ सो सेवक तुलसीदास ॥दो 28 ख॥

हौंहु = मैं हूँ; मैं आपका सेवक हूँ, *कहावत* = मैं कहलाता भी हूँ यानि लोग कहते हैं तो मैं उसे स्वीकार करता हूँ, *सबु कहत* = सब लोग ऐसा कहते हैं, *राम सहत उपहास* = पर हे प्रभु राम आपको व्यंग सहना पड़ता है कि, *साहिब सीतानाथ सो* = मालिक तो श्रीराम जैसे महान् हैं, *सेवक तुलसीदास* = और उनका सेवक तुलसीदास जैसा मंदमति हैं।

तुलसीदास जी कहते हैं कि हे नाथ! मैं आपका सेवक हूँ, लोग मुझे सेवक कहते हैं तो मैं स्वीकार भी करता हूँ कि हाँ हूँ। परन्तु लोग फिर उपहास उड़ाते हैं कि कहाँ तो मालिक सीतानाथ जैसा महिमावान् और कहाँ उनका यह बुद्धिहीन सेवक तुलसीदास। मेरे स्वामी इतने कृपालु हैं कि अपने इस सेवक के लिये यह उपहास सहते हैं।

मेरी भक्ति पहचान कर प्रभु राम ने कृपा कर दी

अति बड़ि मोरि ढिठाई खोरी। सुनि अघ नरकहुँ नाक सकोरी ॥29:1॥
समुझि सहम मोहि अपडर अपनें। सो सुधि राम कीन्हि नहिं सपनें ॥29:2॥
सुनि अवलोकि सुचित चख चाही। भगति मोरि मति स्वामि सराही ॥29:3॥

अति बड़ि मोरि ढिठाई खोरी = मेरा स्वभाव ढीठ व बहुत खराब है, *सुनि अघ* = मेरे पापों को सुनकर, *नरकहुँ नाक सकोरी* = नर्क ने भी नाक सिकोड़ ली है, *समुझि सहम मोहि अपडर अपनें* = मैं अपने ही दोषों को

याद कर के डर जाता हूँ, *सो सुधि राम कीन्हि नहिं सपनें* = पर प्रभु राम ने मेरे दोषों को स्वप्न में भी ध्यान नहीं दिया, *सुनि* = मेरे बारे में सुनकर, *अवलोकि* = मुझे देखकर, *सुचित चख* = अपने अच्छे नेत्रों से, *चाही* = देखकर, *भगति मोरि मति स्वामि सराही* = मेरे भक्ति भाव व सद्‌बुद्धि की स्वामी राम ने सराहना की।

मैं इतना ठीक व बुरे स्वभाव का हूँ कि नर्क ने भी मुझे स्थान देने से मना कर दिया। मैं अपने ही अवगुणों को याद करके डर जाता हूँ। परन्तु राम ने मेरे दोषों को स्वप्न में भी ध्यान नहीं दिया।

विनय पत्रिका में तुलसीदास जी माँ सीता व लक्ष्मण जी से विनती करते हैं कि आप दोनों प्रभु राम तक हमारी प्रार्थना पहुँचा देना कि तुलसीदास जैसा भी उनका एक सेवक है, जो द्वार पर बैठा हुआ उनकी प्रतीक्षा करता रहता है, उनकी कृपा चाहता है। इन दोनों ने राम जी को बता दिया कि आपका ऐसा एक भक्त है। प्रभु ने सुना इसलिये कहते हैं "सुनि" प्रभु राम ने कहा बुलाओ तुलसीदास को। पता चला कि वह आ नहीं रहा है, उसकी हिम्मत नहीं पड़ती है। प्रभु ने कहा अरे बुलाओ तो उसे। तुलसीदास जी को फिर से बुलाया गया, वे गये, प्रभु ने उनकी तरफ देखा इसलिये कहते हैं "अवलोकि"। तुलसीदास जी ने अपने प्रभु को देखकर प्रार्थना की तो उनकी वाणी अटपटी हो गई। वे ठीक से प्रार्थना नहीं कर पाये। पर प्रभु ने उनके हृदय के अंदर के भक्ति भाव को, उनकी सद्‌बुद्धि को पहचान लिया, इसलिये कहते हैं "सुचित चख चाही"। भक्ति भाव देखकर प्रभु ने तुलसीदास जी पर कृपा कर दी।

हृदय के भाव देखकर राम जी प्रसन्न होते हैं

कहत नसाइ होइ हियँ नीकी। रीझत राम जानि जन जी की ॥29:4॥
रहति न प्रभु चित चूक किए की। करत सुरति सय बार हिए की ॥29:5॥

कहत नसाइ = कहने से बात बिगड़ती है, *होइ हियँ नीकी* = पर हृदय अच्छा होना चाहिये, *रीझत राम* = राम प्रसन्न होते हैं, *जानि जन जी की* = भक्त के हृदय के प्रेम भाव को जानकर, *रहति न प्रभु चित* = प्रभु राम के चित्त में याद नहीं रहती है, *चूक किए की* = भक्त द्वारा की हुई गलती की, *करत सुरति* = याद करते व कहते रहते हैं, *सय बार हिए की* = अच्छे काम को सौ-सौ बार।

यदि हम प्रभु से कुछ कहते हैं, उनकी प्रार्थना करते हैं, पूजा करते हैं और कहते-कहते हमारे शब्द बिगड़ जायें, राग गड़बड़ हो जाये तो कोई बात नहीं। पर हमारा हृदय शुद्ध और भाव अच्छे हों तो राम अपने भक्त के हृदय के भाव जानकर ही प्रसन्न होते हैं, शब्दावली पर प्रसन्न नहीं होते हैं। भक्त द्वारा की हुई गलती को वे भूल जाते हैं और अच्छाई को बार-बार याद करते हैं।

राम भक्तों के दोषों पर ध्यान नहीं देते

जेहिं अघ बधेउ ब्याध जिमि बाली। फिरि सुकंठ सोइ कीन्हि कुचाली ॥29:6॥
सोइ करतूति बिभीषन केरी। सपनेहुँ सो न राम हियँ हेरी ॥29:7॥
ते भरतहि भेंटत सनमाने। राजसभाँ रघुबीर बखाने ॥29:8॥

जेहिं अघ = जिस पाप के कारण, *बधेउ ब्याध जिमि बाली* = बालि को प्रभु ने व्याध की तरह मारा था, *फिरि सुकंठ* = फिर सुग्रीव ने भी, *सोइ कीन्हि कुचाली* = वही कुचाल की, *सोइ करतूति बिभीषन केरी* = वैसी ही करनी विभीषण ने की थी, *सपनेहुँ सो न राम हियँ हेरी* = पर राम जी ने स्वप्न में भी उसका मन में विचार नहीं किया, *ते भरतहि भेंटत सनमाने* = भरत जी से मिलते समय उनका सम्मान किया, *राजसभाँ रघुबीर बखाने* = राजसभा में भी उनके गुणों का वर्णन किया।

प्रभु राम के सुग्रीव व विभीषण शरणागत भक्त हैं। इन दोनों के मन में भी बालि व रावण की तरह राज्य व स्त्री के प्रति वासना है। सुग्रीव ने राज्य प्राप्ति के बाद अपने भाई बालि की पत्नी तारा को अपनी पत्नी बना लिया व विभीषण ने रावण की पत्नी मंदोदिरी को अपनी पत्नी बना लिया। इस प्रकार जिस अपराध के लिये राम जी ने बालि व रावण को मारा वही कुचाल इन दोनों भक्तों ने भी कीया। परंतु प्रभु ने अपने भक्तों की करनी पर ध्यान न देकर राज्यसभा में उनका सम्मान किया व सराहना की।

भक्त व अभक्त के दोषों में फर्क के रहस्य को समझें

ऐसा नहीं है कि प्रभु अपनी आँखें बंद करके भक्तों का पक्षपात करते हैं। इसके रहस्य को समझना चाहिये। अभक्त अपने दोषों को दोष नहीं समझता

इसलिये वह पतन की ओर जा रहा है। भक्त अपने दोषों को दुर्गुण समझकर उनसे छुटकारा पाने का प्रयास करता है। वह प्रभु से विनय करता है कि मुझमें इतनी शक्ति नहीं कि मैं अपने दोषों से छुटकारा पा सकूँ, आप कृपा करिये मुझमें सामर्थ्य दीजिये। सुग्रीव व विभीषण प्रभु श्रीराम से सदैव अपनी वासना से छुटकारा पाने का अनुरोध करते रहते हैं। समय आने पर वे उससे छूट भी जाते हैं। पर रावण और बालि ने कभी भी अपने दुर्गुणों को स्वीकार नहीं किया।

प्रभु भक्तों के गुण ही देखते हैं

सुग्रीव व विभीषण में गुण भी बहुत हैं। श्रीराम उन्हीं की ओर ध्यान देते हैं। अयोध्या वापस आकर भरत जी से मिलते समय राज्यसभा में इन दोनों की बहुत प्रशंसा की। कहा कि इन दोनों ने अपने राज्य सुख त्यागकर मेरी बहुत सेवा की।

वानरों को अपने समान बनाया, वैसी कृपा मुझ पर करें

प्रभु तरु तर कपि डार पर ते किए आपु समान ।
तुलसी कहूँ न राम से साहिब सीलनिधान ॥दोहा 29 क॥

प्रभु तरु तर = प्रभु राम तो पेड़ के नीचे हैं, *कपि डार पर* = वानर पेड़ की शाखाओं पर रहने वाले हैं, *ते किए आपु समान* = ऐसे वानरों को भी प्रभु ने अपने समान बना लिया, *तुलसी* = तुलसीदास जी कहते हैं, *कहूँ न राम से साहिब सीलनिधान* = राम के समान शीलनिधान स्वामी कहीं नहीं हैं।

राम निकाईं रावरी है सबही को नीक ।
जौं यह साँची है सदा तौ नीको तुलसीक ॥दोहा 29 ख॥

राम निकाईं रावरी है सबही को नीक = हे राम जी आपकी अच्छाई से सभी का भला है, *जौं यह साँची है सदा* = यदि यह बात सत्य है, *तौ नीको तुलसीक* = तो यह तुलसीदास के लिये भी अच्छा है।

कितना भी पतित व्यक्ति क्यों न हो, परंतु वह समर्पण भाव से प्रभु के निकट चला जाये तो प्रभु उसका सारा जिम्मा स्वयं ले लेते हैं। तुलसीदास

जी कहते हैं हे प्रभु, जो वानरों के बारे में वर्णन किया गया है यदि वह सब कुछ सत्य है तो इसमें मेरी बहुत ही भलाई है। क्योंकि मेरे अंदर भी वानरों आदि के समान बहुत-सी हीनतायें हैं। परंतु आप अपने सुशील स्वभाव के कारण मेरी हीनताओं की ओर ध्यान न देकर, अवश्य ही मेरा उद्धार करेंगे।

सबको प्रणाम करके कथा प्रारंभ करते हैं

एहि बिधि निज गुन दोष कहि सबहि बहुरि सिरु नाइ ।
बरनउँ रघुबर बिसद जसु सुनि कलि कलुष नसाइ ॥दो 29 ग॥

एहि बिधि निज गुन दोष कहि = इस प्रकार अपने गुण दोषों को कहकर, *सबहि बहुरि सिरु नाइ* = सबको फिर से सिर नवाकर, *बरनउँ रघुबर बिसद जसु* = श्रीराम जी के निर्मल यश का वर्णन करता हूँ, *सुनि कलि कलुष नसाइ* = जिसके सुनने से कलियुग के पाप नष्ट होते हैं।

इस प्रकार मैंने अपने अपार दोषों का वर्णन कर दिया है। गुण तो मुझमें एक ही है कि मैं श्रीराम का सेवक हूँ और मुझे विश्वास है कि वे मेरे एक गुण को देखकर ही मुझ पर कृपा करेंगे। अब तक जिनकी वन्दना करते आया हूँ उन सबको पुन: सिर नवाकर श्रीराम की निर्मल यशगाथा का वर्णन प्रारंभ करता हूँ।



13. रामकथा की परंपरा

(दोहा 30)

भारत की अनुपम आध्यात्मिक संस्कृति की यह परंपरा है कि भगवान की कथा कहने वाला व्यक्ति यह कहता है कि यह ज्ञान हमने परंपरा से प्राप्त किया है। मारे गुरु ने यह ज्ञान दिया जिसे आगे अन्य लोगों को बता रहे हैं। व्यक्ति यह नहीं कहता कि मैं अपने मन से कह रहा हूँ। तुलसीदास जी इसी भारतीय संस्कृति के परिपोषक हैं, इसकी रक्षा करने वाले व इसे आगे बढ़ाने वाले हैं। इस प्रसंग में यह कथा कहाँ से प्रारंभ हुई व तुलसीदास जी को अपने गुरु से कैसे प्राप्त हुई इसका वर्णन हैं।

याज्ञवल्क्य जी ने भरद्वाज मुनि को रामकथा सुनाई

जागबलिक जो कथा सुहाई। भरद्वाज मुनिबरहि सुनाई ॥30:1॥
कहिहउँ सोइ संबाद बखानी। सुनहुँ सकल सज्जन सुखु मानी ॥30:2॥

जागबलिक = मुनि याज्ञवल्क्य जी ने, *जो कथा सुहाई* = जिस सुंदर कथा को, *भरद्वाज मुनिबरहि सुनाई* = भरद्वाज मुनि को सुनाया था, *कहिहउँ सोइ संबाद बखानी* = उसी संवाद को मैं कहूँगा, *सुनहुँ सकल सज्जन सुखु मानी* = सज्जन लोग सुख मानकर उसी कथा को सुनें।

जो सुंदर रामकथा याज्ञवल्क्य जी ने भरद्वाज जी को सुनाई उसी का वर्णन तुलसीदास जी करने जा रहे हैं। कथा सुनने वाले और कथा सुनाने वाले, दोनों ही ऋषि हैं, मुनि हैं और अत्यंत ज्ञानी हैं। बहुत पढ़े-लिखे बुद्धिजीवी लोग या वेदांत का ज्ञान रखने वाले कभी- कभी सोचते हैं कि हमें तो वैसे ही इतना ज्ञान है, इस कथा की क्या जरूरत? यह कथा तो अज्ञानी या कम समझदार व्यक्ति के लिये है। ऐसे व्यक्ति ज्ञान के अभिमान के कारण कथा सुनने की प्रवृत्ति खो बैठते हैं। शास्त्र कहते हैं कि ज्ञानी को भी कथा अवश्य सुननी चाहिये।

रामकथा के प्रथम रचयिता शिव जी, प्रथम श्रोता पार्वती जी

संभु कीन्ह यह चरित सुहावा। बहुरि कृपा करि उमहि सुनावा ॥30: 3॥

संभु कीन्ह यह चरित सुहावा = शंकर जी ने इस सुंदर चरित्र की रचना की, *बहुरि* = बाद में, *कृपा करि उमहि सुनावा* = बहुत कृपा करके पार्वती जी को सुनाया।

श्रीराम के अवतार, चरित्र व लीलाओं को सबसे पहले शिव जी ने भाषाबद्ध करके शब्द रूप में तैयार किया और उसको अपने हृदय में रखा। बाद में पार्वती जी के पूछने पर उन्हें यह कथा सुनाई। रामकथा के प्रथम रचयिता भगवान शंकर जी व प्रथम श्रोता माँ पार्वती जी हैं।

कथा सुनाने की विधि: पहले कथा मन में कह लें

किसी भी कथा या ज्ञान को सुनाने के पहले उसे अपने मन में कह लें जिससे वह शब्दगत होकर हृदय में विद्यमान हो जाती है। मन में कहने से यदि कहीं अटक रहे हैं या कोई शंका है, तो उसे समझकर दूर कर सकते हैं। शिव जी ने रचना करके मन में रखा फिर किताब की तरह एक-एक पन्ने आते गये, वे कहते गये, कहते गये।

जिज्ञासा प्रगट करने पर कथा या ज्ञान सुनायें

एक नियम यह भी है कि शास्त्रों का ज्ञान बिना पूछे नहीं बताना चाहिये। जब किसी के अंदर जिज्ञासा आये वह पूछे तब उसे सुनायें, तभी वह ठीक से सुनता है, उस पर असर भी होता है। पार्वती जी सदा शंकर जी के साथ रहती हैं, पर उन्होंने जब पूछा तभी शंकर जी ने सुनाया। परंतु यह कथा गुप्त रखने के लिये भी नहीं है। इसका आशय है कि कथा सुनाने के पहले लोगों को इसकी महिमा बतायें। महिमा सुनकर जब उसके मन में जिज्ञासा उत्पन्न हो तब कथा सुनानी चाहिये।

शंकर जी ने काकभुशुण्डि जी को रामकथा प्रदान की

सोइ सिव कागभुसुंडिहि दीन्हा। राम भगत अधिकारी चीन्हा ॥30:4॥

सोइ सिव = इसी कथा को शिव जी ने, *कागभुसुंडिहि दीन्हा* = काकभुशुण्डि जी को प्रदान किया, *राम भगत अधिकारी चीन्हा* = राम जी का भक्त व कथा का अधिकारी समझकर।

शंकर जी ने काकभुशुण्डि जी को कथा सुनाई नहीं, बल्कि दी। देने वाला कभी तो लेने वाले को सीधा देता है और कभी किसी के द्वारा भिजवा देता है। शंकर जी ने लोमष ऋषि के द्वारा यह कथा काकभुशुण्डि जी को प्रदान की। कब भिजवाई? जब वे अधिकारी हुए। जिसको राम से प्रेम नहीं वह अधिकारी नहीं। इसलिये अपने अंदर प्रेम भाव जगाकर कथा सुनने के अधिकारी बनें।

काकभुशुण्डि ने कथा याज्ञवल्क्यजी को दी

तेहि सन जागबलिक पुनि पावा। तिन्ह पुनि भरद्वाज प्रति गावा ॥30:5॥

तेहि सन = काकभुशुण्डि जी से, *जागबलिक पुनि पावा* = याज्ञवल्क्य जी ने यह कथा प्राप्त की, *तिन्ह पुनि भरद्वाज प्रति गावा* = फिर याज्ञवल्क्य जी ने यह कथा भरद्वाज मुनि को सुनाई।

कथा की परंपरा बताने के लिये फिर से कह दिया कि काकभुशुण्डि जी से यह कथा याज्ञवल्क्य जी को प्राप्त हुई, उन्होंने फिर भरद्वाज मुनि को सुनाई।

परंपरा की बात क्या कलियुग में छूट जायेगी?

ये सब बातें कई बार समझ में नहीं आती हैं। इनके पीछे भाव यह है कि ज्ञान की बात, भक्ति की बात हमें परंपरा से कहनी चाहिये कि गुरु से हमें यह कथा प्राप्त हुई है। तुलसीदास जी कहते हैं कि यह महत्त्वपूर्ण गुरु परंपरा कलियुग में छूट जायेगी, और सब लोग अपने मन से अलग-अलग पंथ बनाकर उसका प्रचार करेंगे।

भरद्वाज जी से परंपरा आगे बढ़ती गयी

ते श्रोता बकता समसीला। सवँदरसी जानहिं हरिलीला ॥30:6॥
जानहिं तीनि काल निज ग्याना। करतल गत आमलक समाना ॥30:7॥
औरउ जे हरिभगत सुजाना। कहहिं सुनहिं समुझहिं बिधि नाना ॥30:8॥

ते श्रोता बकता = ये कथा सुनने वाले व कहने वाले, *समसीला सवँदरसी जानहि हरिलीला* = समानशील वाले हैं; समदर्शी हैं; प्रभु की लीला के

जानकार हैं, *जानहिं तीनि काल निज ग्याना* = वे अपने ज्ञान से तीनों काल की बात जानते हैं, *करतल गत आमलक समाना* = जैसे हाथ में रखा हुआ आँवला हो, *औरउ जे हरिभगत सुजाना* = और भी जो भगवान के जानकार भक्त हैं, *कहहिं सुनहिं समुझहिं बिधि नाना* = बहुत प्रकार से इस कथा को कहते हैं, सुनते हैं व समझते हैं।

जिस कथा को सुनाने वाले व सुनने वाले इतने महान् हों कि उन्हें तीनों कालों की बातों का प्रत्यक्ष ज्ञान हो, तो उस कथा की महिमा का अनुमान लगाना मुश्किल है। भरद्वाज जी के बाद परंपरा और आगे चल, ज्ञानी लोग इस कथा को कहते रहे, सुनते रहे, समझते रहे हैं। इसी परंपरा से तुलसीदास जी के गुरु को भी यह कथा प्राप्त हुई।

तुलसीदास जी ने कथा अपने गुरु से सुनी

मैं पुनि निज गुर सन सुनी कथा सो सूकरखेत ।
समुझी नहिं तसि बालपन तब अति रहेउँ अचेत ॥दोहा 30 क॥

मैं पुनि = फिर मैनें, *निज गुर सन सुनी कथा सो सूकरखेत* = अपने गुरु से यह कथा सूकरखेत में सुनी, *समुझी नहिं तसि बालपन तब अति रहेउँ अचेत* = परंतु उस समय मैं बचपन के कारण बहुत बेसमझ था अत: कथा को ठीक तरह से समझ नहीं पाया।

सूकर क्षेत्र अयोध्या से 30 कि.मी. दूर है। तुलसीदासजी अपने गुरु नरहरिदास के पास लगभग 5 से 7 वर्ष तक थे। गुरुजी का सूकरक्षेत्र में अभी भी आश्रम बना है, वहाँ एक मंदिर है, एक वटवृक्ष है। गुरुजी ने यह कथा बार-बार तुलसीदास जी को सुनाई, परंतु बालपन के कारण उन्हें इसकी महिमा समझ में नहीं आयी।

श्रीराम कथा शांत मन-बुद्धि से समझ में आती है

श्रोता बकता ग्याननिधि कथा राम कै गूढ़ ।
किमि समुझौं मैं जीव जड़ कलि मल ग्रसित बिमूढ़ ॥दोहा 30 ख॥

श्रोता बकता ग्याननिधि = कथा के श्रोता व वक्ता पूरे ज्ञानी हैं, *कथा राम कै गूढ़* = राम की कथा गूढ़ है, *किमि समुझौं मैं* = मैं इसे कैसे समझ सकता था, *जीव जड़* = मैं तो जड़ जीव हूँ, *कलि मल ग्रसित बिमूढ़* = मैं तो कलियुग के पापों से ग्रसित महामूर्ख हूँ।

रामकथा के वक्ता याज्ञवल्क्य जैसे महान् ऋषि हैं एवं श्रोता भरद्वाज जैसे मुनि हैं, हम तो मनोविकारों से ग्रसित अज्ञानी जीव हैं, भला हम इस कथा की गूढ़ बातों को कैसे समझ सकते हैं? तात्पर्य है इस कथा को समझने के लिये मन, बुद्धि शांत व शुद्ध होना आवश्यक है। अशांत मन में तो सांसारिक बात ही ठीक से समझ नहीं आती, आध्यात्मिक ज्ञान क्या समझ आयेगा? वास्तव में तुलसीदास जी अज्ञानी नहीं थे वे तो संसार के अज्ञानी जीवों से तादात्म्य करते हुए ऐसी बातें बोल रहे हैं। वे स्वयं महान् ज्ञानवान थे।

बुद्धि कम हो तो भी कथा बार-बार सुनते रहें

तदपि कही गुर बारहिं बारा। समुझि परी कछु मति अनुसारा ॥31:1॥

तदपि = तो भी, *कही गुर बारहिं बारा* = जब गुरुजी ने बार-बार यह कथा कही, *समुझि परी कछु मति अनुसारा* = जितनी बुद्धि थी उतनी समझ में आयी।

कथा सुनते तो बहुत लोग हैं परंतु जिसकी बुद्धि में जितना आता है उतना ही ग्रहण कर पाता है। हर व्यक्ति की अपनी सीमा होती है। जैसे तालाब में खूब जल भरा हो, कोई पात्र लेकर जाये तो उतना ही जल ला सकता है, जितना बड़ा उसका पात्र होगा। यदि बुद्धि कम है तो कथा कम समझ में आयेगी, साधना के द्वारा बुद्धि का विकास करें। कथा सुनने से भी बुद्धि का विकास होता है, न समझ में आये तो भी सुनते रहें, सुनते रहें। जो कमियाँ अपने अंदर हैं वे धीरे-धीरे दूर होती जायेंगी।

गुरु से प्राप्त रामकथा, राम जी की प्रेरणा से लिखते हैं

भाषाबद्ध करबि मैं सोई। मोरें मन प्रबोध जेहिं होई ॥31:2॥
जस कछु बुधि बिबेक बल मेरें। तस कहिहउँ हियँ हरि के प्रेरें ॥31:3॥

भाषाबद्ध करबि मैं सोई = उसी कथा को मैं अब हिंदी भाषा में लिखूँगा, *मोरें मन प्रबोध जेहिं होई* = जिससे मेरे मन को संतोष हो, *जस कछु बुधि बिबेक बल मेरें* = जैसा कुछ मुझ में बुद्धि और विवेक का बल है, *तस कहिहउँ हियँ हरि के प्रेरें* = मैं हृदय में हरि की प्रेरणा से उसी के अनुसार कहूँगा।

तुलसीदास जी के गुरु नरहरिदासजी ने उन्हें यह कथा हो सकता है संस्कृत में सुनाई हो, वे कहते हैं मैं उस कथा को हिंदी भाषा में लिख रहा हूँ, जिससे मेरे मन को संतोष प्राप्त हो। मन में प्रबोध से आशय संतोष से भी है और हृदय में ज्ञान उत्पन्न हो इससे भी है। कथा लिखना भी एक साधना है, लिखने से ज्ञान हृदय में सुनिश्चित रूप धारण कर स्थायी होता है। लिखने से अपना हित तो होता ही है साथ ही दूसरों को भी लाभ होता है।

14. रामकथा की महिमा का 18 प्रतीकों से वर्णन

(दोहा 31)

तुलसीदास जी की काव्य शैली बहुत ध्यान से समझने लायक है। इस दोहे में प्रसंग रामकथा महिमा का है। कथा शब्द स्त्रीलिंग है अत: कथा की महिमा कहने के लिये सभी 18 उदाहरण स्त्रीलिंग में दिये हैं जैसे नाव, मोरनी, अरणि, कामधेनु, संजीवनी, अमृत की नदी, सर्पिणी, दुर्गा, लक्ष्मी, पृथ्वी, यमुना, काशी, तुलसी, हुलसी, नर्मदा, अदिति, मंदाकिनी और भक्ति।

1. नाव के समान आराम से संसार नदी से पार करा देती है

निज संदेह मोह भ्रम हरनी। करउँ कथा भव सरिता तरनी ॥31:4॥

निज संदेह मोह भ्रम हरनी = जो स्वयं का संदेह, मोह व भ्रम दूर करती है, *करउँ कथा* = मैं उसी कथा को कह रहा हूँ, *भव सरिता तरनी* = यह संसार की नदी पार करने की नाव है।

रामकथा के पठन से हमारे स्वयं के संदेह और भ्रम दूर हो जाते हैं। हमने तरह-तरह की कल्पना करके अपने चारों तरफ एक नदी के समान संसार बना लिया है, इस नदी से पार होने के लिये यह कथा नाव के समान है। नदी को आप तैरकर भी पार कर सकते हैं, पर उसमें कष्ट है। इसी प्रकार

इस संसार रूपी नदी को आप कठिन साधना करके भी पार कर सकते हैं। पर यह कथा तो हमें नौका के समान आराम से पार करा देगी।

विश्राम व सुख प्रदान करने वाली है

बुध बिश्राम सकल जन रंजनि। रामकथा कलि कलुष बिभंजनि ॥31: 5॥

बुध बिश्राम = ज्ञानी को विश्राम देने वाली है, *सकल जन रंजनि* = सामान्य लोगों को सुख देने वाली है, *रामकथा कलि कलुष बिभंजनि* = यह कलियुग के मानसिक दोषों को नष्ट करने वाली है।

विश्राम क्या है? इसका आशय यह नहीं है कि काम बंद करके आराम करें। व्यक्ति अपने घर से निकलकर सब जगह घूमता-घूमता थक जाता है, वह जब अपने घर वापस आता है तभी उसे आराम मिलता है। वैसे ही जीव का घर परमात्मा का धाम है। वहाँ से निकलकर वह जन्म-जन्मांतर की यात्रा करते हुए घूम रहा है। घूमते-घूमते थक गया है। रामकथा को सुनकर जब जीव राम का स्मरण करता है तो उसे लगता है वह अपने घर वापस आ गया है, उसे विश्राम की प्राप्ति होती है।

2. कलियुग सर्प है, रामकथा मोरनी के समान इसे खा जाती है

रामकथा कलि पंनग भरनी। पुनि बिबेक पावक कहुँ अरनी ॥31:6॥

रामकथा कलि पंनग = रामकथा कलियुग रूपी साँप के लिये, *भरनी* = मोरनी है, *पुनि* = और, *बिबेक पावक कहुँ* = विवेक रूपी अग्नि को प्रगट करने के लिये, *अरनी* = अग्नि प्रगट करने वाली लकड़ी के समान है।

कलियुग सर्प के समान है जिसने सबको डस रखा है, जिसके कारण कलियुग का जहर हमारे ऊपर छाया रहता है। जैसे मोरनी सर्प को खा जाती है वैसे ही रामचरितमानस के पाठ से कलियुग का जहर उतर जाता है। भरनी नाम का चूहे जैसा एक जानवर भी होता है, सर्प उसे खा जाता है, वह सर्प के पेट में जाकर अपने काँटे फैला देता है, सर्प का पेट फट जाता है वह मर जाता है। दोहावली में इसका उल्लेख है।

3. जैसे अरणि से अग्नि प्रगट वैसे रामकथा से ज्ञान प्रगट

लकड़ी के अंदर अग्नि छिपी रहती है, इसे प्रगट करने के लिये दो लकड़ियों को आपस में रगड़ते हैं, इस क्रिया को अरणिमंथन कहते हैं। हमारे अंदर भी ज्ञान छिपा है, श्रीराम के चरित्रों के पाठ से हमारा अज्ञान मिट जाता है और अंदर का ज्ञान प्रगट हो जाता है। विवेक जागृत हो जाता है।

4. कामधेनु के समान सब कामना पूर्ण करती है

रामकथा कलि कामद गाई। सुजन सजीवनि मूरि सुहाई ॥31:7॥

रामकथा कलि कामद गाई = रामकथा कहने से कलियुग के सब मनोरथ पूरे होते हैं, *सुजन* = सज्जनों के लिये, *सजीवनि मूरि सुहाई* = सुंदर संजीवनी बूटी है।

यदि कोई व्यक्ति कोई कामना मन में रखकर रामचरितमानस का पाठ करता है तो उसकी वह कामना पूरी होती है। कामधेनु कलियुग में इसके पाठ मात्र से इच्छाओं की पूर्ति होती है, अन्य युगों में तो बड़े-बड़े हवन इत्यादि करने पड़ते हैं।

5. संजीवनी बूटी के समान मरणासन्न को जीवित कर देती है

लक्ष्मण जी का संजीवनी बूटी वाला प्रसंग प्रसिद्ध है, वे बेहोश पड़े हैं, मरणासन्न हैं, संजीवनी बूटी उन्हें पिलाई जाती है वे होश में आ जाते हैं। संसार में भी बहुत से लोग निराशा का जीवन जीते रहते हैं, वे सोचते हैं हम अब क्या कर सकते हैं? हमारी कोई पूछ नहीं है, हम किसी काम के नहीं हैं, हमारा कोई आश्रय नहीं है, ऐसे व्यक्ति मरणासन्न के समान हैं। वे रामचरितमानस का पाठ करें, उनके अंदर चेतना का संचार होगा, निराशा दूर होगी, वे नया जीवन प्राप्त कर लेंगे।

6. रामकथा पृथ्वी पर अमृत की नदी है

सोइ बसुधातल सुधा तरंगिनि। भय भंजनि भ्रम भेक भुअंगिनि ॥31:8॥

सोइ बसुधातल = यह पृथ्वी पर, *सुधा तरंगिनि* = अमृत की नदी है, *भय भंजनि* = भय का नाश करने वाली है, *भ्रम भेक भुअंगिनि* = जैसे मेढक को सर्पिणी खा जाती है वैसे यह कथा भ्रम को खा जाती है।

कहते हैं कि स्वर्ग में अमृत की नदी है। यह रामकथा तो पृथ्वी की अमृत की नदी है। यह हमें अमर कैसे बना देती है? इसके पाठ से हमारा अज्ञान मिटता है, हमें आत्म ज्ञान मिलता है। आत्म ज्ञान से हमें पता चलता है कि हम अमर हैं।

7. भ्रम व भय मेढक हैं, इन्हें खाने के लिये कथा सर्पिणी है

हमें मृत्यु का भय, बीमारी का भय, बच्चों के भविष्य का भय, धन की सुरक्षा आदि के भय बने रहते हैं। इसी प्रकार हम कई बार संदेहों से घिर जाते हैं, जिससे भगवान में विश्वास ही नहीं कर पाते। रामकथा हमारे भय व संदेह को वैसे ही समाप्त करती है जैसे सर्पिणी मेढक को खाकर उसे समाप्त कर देती है।

8. दुर्गा जी के समान दुर्गति नाश करती है

असुर सेन सम नरक निकंदिनि। साधु बिबुध कुल हित गिरिनंदिनि ॥31:9॥

असुर सेन सम नरक = असुरों की सेना जो नर्क के समान हैं, *निकंदिनि* = उनका नाश करने वाली है, *साधु बिबुध कुल हित* = सज्जन लोग जो देवताओं के समान हैं उनके हित के लिये, *गिरिनंदिनि* = दुर्गा के समान है।

अपने अंदर तरह-तरह की बुराइयाँ ही असुरों की सेना हैं और यही नर्क भी है जिसके कारण हमारी इतनी दुर्गति है। जैसे दुर्गा जी असुरों का नाश करके सज्जनों की रक्षा करती हैं वैसे ही यह कथा हमारे अंदर की बुराइयों, जिनके कारण हमारी दुर्गति हो रही है, का नाश करके हमारे हितों की रक्षा करती हैं।

9. संत समाज क्षीरसागर, रामकथा लक्ष्मी जी

संत समाज पयोधि रमा सी। बिस्व भार भर अचल छमा सी ॥31:10॥

संत समाज पयोधि = संतों का समाज क्षीरसागर है, *रमा सी* = यह कथा लक्ष्मी है, *बिस्व भार भर* = सारे संसार का भार उठाने के लिये, *अचल छमा सी* = यह क्षमाशील पृथ्वी है।

जब संत लोग मिलते हैं, चर्चा करते हैं तब यह कथा उत्पन्न होती है। जैसे लक्ष्मी जी क्षीरसागर से उत्पन्न होती हैं और क्षीरसागर में ही नारायण के साथ

वास करती हैं, वैसे ही यह कथा संत समाज में उत्पन्न होती है, वहाँ रहती भी है और वहीं से प्राप्त होती है।

10. पृथ्वी के समान नियम में अटल व क्षमाशील है

जैसे पृथ्वी विश्व का भार धारण किये हुए अचल है, सबको विश्राम देने वाली है, वैसे ही यह कथा सबको विश्राम प्रदान करती है और सदा सबके पापों को दूर कर उन्हें क्षमा करती रहती है। विज्ञान कहता है कि पृथ्वी अचल नहीं है वह सदा अपनी धुरी पर घूमती है। यहाँ पर अचल से आशय है वह अपने नियम में अचल है, अपने काम में दृढ़ है। उसी प्रकार यह कथा सदैव पापों को नाश करने के नियम में अटल है।

11. यमदूतों को भगाने में यमुना जी के समान है

जम गन मुहँ मसि जग जमुना सी। जीवन मुकुति हेतु जनु कासी ॥31:11॥

जम गन = यमराज के दूतों, *मुहँ मसि* = के मुँह में काला पोतने यानि उन्हें भगाने वाली, *जग जमुना सी* = संसार में यमुना नदी के समान है, *जीवन मुकुति हेतु* = जीव को मुक्त करने के लिये, *जनु कासी* = काशी के समान है।

यमुनाजी के भाई यमराज ने उन्हें वरदान दिया था कि जो भी तुम्हारे जल में स्नान करेगा उसे मेरे दूत लेने नहीं आयेंगे यानि वह नर्क में नहीं जायेगा। इस रामकथा के पाठ से हमें यह ज्ञान होता है कि शुभ कर्म क्या हैं, अशुभ कर्म क्या हैं, यदि हम यह विचार करके शुभ कर्म ही करने का प्रयास करें तो नर्क नहीं जाना पड़ता। इस प्रकार यह कथा यमुना जी में स्नान करने का फल देती है।

12. मुक्त करने में काशी नगरी के समान है

कहते हैं कि जो व्यक्ति काशी नगरी में शरीर त्याग करता है, उसके कान में भगवान शिव स्वयं राम राम कहते हैं, जिससे वह मुक्त हो जाता है। इस कथा को बार-बार कहने, सुनने, पाठ करने से भी व्यक्ति के कान में राम राम गुंजायमान होता है, जिससे व्यक्ति मुक्त हो जाता है। काशी नगरी की तरह यह कथा मुक्तिदायिनी है।

13. राम जी को यह कथा तुलसी समान प्रिय

रामहि प्रिय पावनि तुलसी सी। तुलसिदास हित हियँ हुलसी सी ॥31:12॥

रामहि प्रिय पावनि तुलसी सी = राम जी को पवित्र तुलसी के पत्र के समान प्रिय है, *तुलसिदास हित हियँ* = तुलसीदासजी का हृदय से हित करने वाली, *हुलसी सी* = उनकी माँ हुलसी के समान है।

जैसे तुलसी पत्र भगवान को चढ़ा दो तो वे प्रसन्न हो जाते हैं, वैसे ही रामकथा राम जी को सुना दो तो वे प्रसन्न हो जाते हैं। जैसे तुलसी पवित्र है वैसे ही यह कथा पवित्र है, जैसे तुलसी पवित्र करने वाली है वैसे ही यह कथा भी पवित्र करने वाली है।

14. तुलसीदास जी को यह कथा माँ हुलसी के समान प्रिय

तुलसीदास जी की माँ का नाम हुलसी था। तुलसीदास जी का जन्म मूल नक्षत्र में होने के कारण क्रूर पंडितों ने कहा, इसे मार डालो, पिता ने कृपा की, कहा, मारो मत, फेंक दो, माँ ने और कृपा की व बालक को दासी को दे दिया, जिसने उनका लालन पालन किया। जैसे माँ अपने पुत्र का हित करती है वैसे यह कथा भी तुलसीदासजी का हृदय से हित करने वाली है, उन्हें माँ के समान प्रिय है।

15. शिव जी को नर्मदा नदी के समान प्रिय

सिवप्रिय मेकल सैल सुता सी। सकल सिद्धि सुख संपति रासी ॥31:13॥

सिवप्रिय = शिव जी को प्रिय है, *मेकल सैल सुता सी* = मेकल पर्वत की पुत्री नर्मदा नदी के समान, *सकल सिद्धि सुख संपति रासी* = यह सभी तरह की सिद्धि; संपत्ति व सुख देने वाली है।

मध्यप्रदेश के अमरकंटक में मेकल नाम का पर्वत है जो नर्मदा जी का उद्‌गम स्थल है। नर्मदा नदी में शिवलिंग के आकार के बहुत से पत्थर रहते हैं। ये शिवलिंग वहीं रहते हैं, उसी में नहाते रहते हैं, खेलते रहते हैं व नर्मदा जल का आनंद लेते हैं। ये शिवलिंग बहुत सिद्ध माने जाते हैं। जिस प्रकार शिव जी

को नर्मदा जी अत्यंत प्रिय हैं उसी प्रकार यह रामकथा भी शिव जी को प्रिय है। यह कथा सभी प्रकार की सिद्धि, संपत्ति व सुख देने वाली है।

16. रामकथा माता अदिति के समान

सदगुन सुरगन अंब अदिति सी। रघुबर भगति प्रेम परमिति सी ॥31: 14॥

सदगुन सुरगन अंब अदिति सी = सद्‌गुण रूपी देवताओं को उत्पन्न करने वाली माता अदिति के समान है, *रघुबर भगति प्रेम परमिति सी* = भगवान राम के भक्ति और प्रेम की परम सीमा के समान है।

सद्‌गुण देवताओं के समान हैं। जैसे माता अदिति ने देवताओं को उत्पन्न किया, उनका लालन पालन किया, वैसे ही इस कथा के पाठ से हमारे अंदर अच्छे गुण आने लगते हैं, उन गुणों की रक्षा, पालन पोषण इस कथा से होता है, इसलिये इसकी तुलना माता अदिति से करते हैं।

17. भक्ति की परम सीमा है

यह कथा तो श्रीराम के प्रति भक्ति व प्रेम की परम सीमा है। यानि इसका पाठ प्रभु राम के चरणों में परम भक्ति भाव उत्पन्न करता है, उनके प्रति प्रेम इतना बढ़ाता है कि उसकी कोई सीमा ही नहीं है।

18. रामकथा चित्रकूट की मंदाकिनी के समान

रामकथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारु ।
तुलसी सुभग सनेह बन सिय रघुबीर बिहारु ॥दोहा 31॥

रामकथा मंदाकिनी = श्री रामकथा मंदाकिनी नदी के समान है, *चित्रकूट चित चारु* = सुंदर निर्मल चित चित्रकूट है, *तुलसी सुभग सनेह बन* = तुलसीदास जी कहते हैं सुंदर स्नेह ही वन है, *सिय रघुबीर बिहारु* = इसी वन में सीता जी व राम जी विहार करते रहते हैं।

मंदाकिनी नदी चित्रकूट में पर्वत के पास बारह महीनों बहती है, वहीं पर सुंदर वन हैं जहाँ श्रीराम व सीता जी विहार करते रहते हैं। हमारा शुद्ध चित्त

चित्रकूट है, इसी चित्त में रामकथा मंदाकिनी के समान बहती रहती है, इस कथा के पाठ से हमारे अंदर सुंदर स्नेह का वन छा जाता है, हमारे अंदर के इस स्नेह के वन में ही प्रभु श्रीराम सीता जी के साथ विहार करते रहते हैं।

15. श्री रामचरित्र की महिमा का वर्णन 24 प्रतीकों से

(दोहा 32)

प्रभु राम ने अवतार लेकर जो लीलायें की हैं वे रामचरित्र हैं, और इनका वर्णन रामकथा कहलाता है। इस प्रसंग में राम चरित्रों की महिमा है। रामचरित्र पुल्लिंग है अत: तुलसीदास जी इसकी तुलना 24 पुल्लिंग प्रतीकों से करते हैं, यही उनकी विशेष शैली है। राम नाम, रामकथा, रामचरित्र सब एक ही हैं, इन सबको इस प्रकार प्रस्तुत किया है ताकि ये हमारे मन में ठीक से बैठ जायें।

1. रामचरित्र चिंतामणि के समान, व्यक्तित्व विकास का सुंदर उपाय

रामचरित चिंतामनि चारू। संत सुमति तिय सुभग सिंगारू ॥32: 1॥

रामचरित चिंतामनि चारू = राम जी के चरित्र सुंदर चिंतामणि हैं, *संत सुमति तिय* = संतों की सद्बुद्धि स्त्री के समान है, *सुभग सिंगारू* = जिसका यह रामचरित्र सुंदर शृंगार है।

जैसे पारसमणि नामक पत्थर के संपर्क में आने से लोहा सोना बन जाता है, वैसे ही चिंतामणि नाम का एक कीमती पत्थर है जिसके संपर्क में आने से लोहा ही नहीं बल्कि प्रत्येक वस्तु सोना बन जाती है। प्रभु राम के चरित्र इसी चिंतामणि पत्थर के समान हैं जिनके पाठ से बिल्कुल मूर्ख व्यक्ति या सामर्थ्यहीन व्यक्ति का भी व्यक्तित्व विकास हो जाता है। ये चरित्र व्यक्ति के मन, बुद्धि व स्वभाव का विकास कर देते हैं। ऐसा न सोचें कि राम त्रेता युग में हुए थे, हम कलियुग में हैं हमारा सिद्धांत अलग है। आप व्यक्तित्व विकास के कोर्स में जो भी पढ़ते हैं वे सब रामचरित्रों में हैं। श्रीराम व्यक्तित्व विकास के सभी गुणों के मूर्तिमान उदाहरण हैं। श्रीरामचरितमानस का पाठ आपके व्यक्तित्व का सरलता से विकास कर देगा, आपको पता भी नहीं चलेगा कि हमारा कैसे इतना विकास हो गया। चिंतामणि आभूषण भी है, जैसे कोई स्त्री इस आभूषण को धारण करे तो उसकी सुंदरता बढ़ जाती

है, उसी प्रकार यदि सज्जन व्यक्ति रामचरित्रों को बुद्धि में धारण करें तो उनकी बुद्धि का और विकास हो जाता है। यदि कोई ज्ञान की बातें सुनाते समय रामचरितमानस की चौपाइयों का उद्धरण दे दे तो बातों में चार चाँद लग जाते हैं।

संसार का मंगल करने वाले व चारों फल देने वाले हैं

जग मंगल गुनग्राम राम के। दानि मुकुति धन धरम धाम के ॥32:2॥

जग मंगल गुनग्राम राम के = संसार का मंगल करने वाले हैं राम जी के चरित्र, *दानि* = और ये देते हैं, *मुकुति धन धरम धाम के* = मुक्ति; धन; धर्म व मोक्ष।

प्रभु राम के कुछ विशेष गुण हैं जिसे वे सदा धारण किये रहते हैं, जैसे सौंदर्य व सदा प्रसन्नता। वे सदा अलौकिक सौंदर्य से परिपूर्ण रहते हैं, उनके सुंदर रूप का स्मरण करें, उनकी तरफ देखें, दृष्टि हटेगी ही नहीं। उनके नेत्रों से सदा कृपा बरसती रहती है। वे सदा प्रसन्न रहते हैं। उनकी तरफ देखते-देखते हमारे अंदर भी सदा प्रसन्न रहने का गुण आ सकता है। हम उसी के अनुसार आचरण करने लगें तो संसार का मंगल होगा साथ ही हमें भौतिक जगत के सुख जैसे धन, कीर्ति, यश की प्राप्ति होती है और बाद में इन सुखों से छुटकारा मिलकर मोक्ष भी मिलता है।

2. रामचरित्र सद्‌गुरु के समान हैं

सदगुर ग्यान बिराग जोग के। बिबुध बैद भव भीम रोग के ॥32:3॥

सदगुर ग्यान बिराग जोग के = सद्‌गुरु के समान ज्ञान, वैराग्य व योग प्रदान करने वाले हैं, *बिबुध बैद* = देवताओं के वैद्य के समान, *भव भीम रोग के* = संसार के भयंकर रोग का नाश करने वाले हैं।

जब हम गुरु के पास जाते हैं तो वे हमें निष्काम कर्मयोग करने की शिक्षा देते हैं, निष्काम कर्म योग से वैराग्य आता है, वैराग्य से ज्ञान आता है, इसी प्रकार श्रीराम के चरित्रों का बार-बार पाठ करने से इन तीनों की प्राप्ति होती है।

3. रोग दूर करने में देवताओं के वैद्य के समान हैं

देवताओं के वैद्य अश्विनी कुमार हैं जो सूर्य पुत्र हैं, उनमें रोगों को दूर करने की अद्भुत क्षमता है। इसी प्रकार श्रीराम चरित्र से भयंकर भव रोग दूर होते हैं। शरीर के रोग कैंसर, डायबिटीज आदि हैं जो शरीर छूटने के साथ अपने आप समाप्त हो जाते हैं। परंतु भव रोग तो जीव का रोग है यह शरीर छूटने के बाद अगले जन्म में भी जाता है। श्रीराम के चरित्रों के स्मरण से यह भव रोग दूर होता है।

4. माता पिता के समान प्रेम उत्पन्न करने वाले

जननि जनक सिय राम प्रेम के। बीज सकल ब्रत धरम नेम के ॥32: 4॥

जननि जनक = माता-पिता के समान, *सिय राम प्रेम के* = सीता जी व राम जी के प्रति प्रेम उत्पन्न करते हैं, *बीज सकल ब्रत धरम नेम के* = समस्त व्रत; नियम; धर्म के बीज हैं।

जैसे माता-पिता का अपने संतान के प्रति बहुत प्रेम रहता है, वैसे ही रामजी के चरित्रों के स्मरण से प्रभु राम व माँ जानकी के प्रति हृदय में प्रेम उत्पन्न हो जाता है। जिनके हृदय में भक्ति भाव न हो वे भी यदि इसे बार-बार पढ़ें तो आप देखेंगे उनके अंदर भी भक्ति भाव आ जाता है।

5. रामचरित्र व्रत नियम धर्म के बीज हैं

जैसे फसल उगाने के लिये बीज बोते हैं, उसी प्रकार इन चरित्रों का पाठ हमारे मन में बीज बो देता है, व्रत, नियम व धर्म का। इन चरित्रों का ऐसा अद्भुत प्रभाव है कि इनके पाठ करने से ही व्यक्ति व्रत करने लगता है, नियम का पालन भी करने लगता है, अधर्म का मार्ग छोड़कर व्यक्ति धर्म के मार्ग पर चलने लगता है। कथा सुनो तो सही, यदि कथा सुनोगे ही नहीं तो कुछ फायदा नहीं होगा, दवा खाओ ही नहीं तो रोग कैसे दूर होगा?

6. अच्छे पालक के समान हैं

समन पाप संताप सोक के। प्रिय पालक परलोक लोक के ॥32:5॥

समन पाप संताप सोक के = पाप; संताप व शोक का नाश करने वाले, *प्रिय पालक परलोक लोक के* = इस लोक और परलोक का पालन करने वाले प्रिय पालक के समान हैं।

हमारा कोई अच्छे से लालन पालन करे तो उसे प्रिय पालक कहते हैं। ये रामचरित्र हमारे पालक ही हैं। इनसे हमें इस संसार में कैसे रहना है, कैसे अपने संबंधियों, परिवार व समाज में व्यवहार करना है इसकी शिक्षा मिलती है, इनको जीवन में अपनाने से हमारा यह लोक तो सुधरता ही है, शरीर छूटने के बाद उच्च लोक की प्राप्ति होगी।

7. विचार राजा है, रामचरित्र उसके मंत्री व सेनापति हैं

सचिव सुभट भूपति बिचार के। कुंभज लोभ उदधि अपार के ॥32:6॥

सचिव सुभट = मंत्री व वीर सेनापति हैं, *भूपति बिचार के* = विचार रूपी राजा के, *कुंभज* = अगस्त्य मुनि के समान हैं, *लोभ उदधि अपार के* = लोभ रूपी अपार समुद्र को सोखने के लिये।

अपने आंतरिक जगत के राजा का नाम "विचार" है। हमारे अंदर तरह-तरह की वृत्तियाँ उत्पन्न होती रहती है, इन्हें नियंत्रित करने के लिये विचार रूपी राजा का होना आवश्यक है। यदि हम विचार ही न करें तो जीवन अनियंत्रित हो जायेगा। राजा की मजबूती के लिये श्रीरामचरित्र, वीर सेनापति व बुद्धिमान मंत्री की तरह है। इनकी सहायता से हृदय में विचार का राज्य बना रहता है। यदि प्रभु राम के चरित्रों को ठीक से न धारण करें तो यह विचार रूपी राजा हृदय छोड़कर भाग जायेगा।

8. अगस्त्य ऋषि ने समुद्र पीया, ये लोभ पी जाते हैं

पद का लोभ, संपत्ति का लोभ, राज्य का लोभ आदि समुद्र के समान हैं, इनसे व्यक्ति कभी संतुष्ट नहीं होता। सदा यह कामना बनी रहती है कि और मिल जाये, और मिल जाये। लोभी के हाथ में सारे संसार की संपत्ति आ जाये तो उसे कम ही लगेगी। पौराणिक कथा के अनुसार अगस्त्य ऋषि ने समुद्र को पीकर उसे सुखा दिया था। उसी प्रकार रामचरित्र लोभ के समान समुद्र को पी जायेंगे।

9. मन के दोष हाथी हैं तो रामचरित्र शेर के बच्चे हैं

काम कोह कलिमल करिगन के। केहरि सावक जन मन बन के ॥32:7॥

काम कोह कलिमल = काम और क्रोध कलियुग के मल हैं, *करिगन के* = जो हाथियों के समान हैं, *केहरि सावक* = शेर के बच्चे के समान, *जन मन बन के* = भक्तों के मन रूपी वन के मनोविकार खा जाते हैं।

भक्तों के हृदय में काम व क्रोध वैसे ही आते रहते हैं जैसे वन में हाथी आते रहते हैं। शेर के बच्चे देखने में छोटे होते हैं पर वन में हाथियों को मारकर खा जाते हैं। वैसे ही श्रीराम चरित देखने में छोटे दिखें पर काम व क्रोध को समाप्त करने में बहुत शक्तिशाली हैं।

10. अतिथि के समान शंकर जी को प्रिय हैं

अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के। कामद घन दारिद दवारि के ॥32:8॥

अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के = रामचरित शंकर जी को अतिथि के समान प्रिय हैं, *कामद घन दारिद दवारि के* = जंगल की आग की तरह फैली दरिद्रता को बुझाने के लिये मेघ के जल के समान हैं।

प्राचीनकाल में जब कोई मेहमान बिना बुलाये, बिना तिथि के आ जाये तो उसे अतिथि कहते थे, और उसका बहुत सम्मान करते थे, स्वागत होता था सब उससे प्रेम करते थे। शंकर जी को रामचरित अतिथि के समान प्रिय हैं। इस पर विचार करें तो अतिथि शब्द से तुलना करने के और भी मायने हैं।

11. दरिद्र व्यक्ति की आग बुझाने के लिये मेघ का जल हैं

जैसे जंगल की आग सदा सुलगती रहती है, इसी प्रकार दरिद्र व्यक्ति का हृदय यह सोचकर कि हमारे पास ये नहीं है, वो नहीं है सदा जलता रहता है। इस अग्नि को शांत कैसे किया जाये? तो कहते हैं कि रामचरित्रों का निरंतर पाठ करो, ये धन संपति की कामनाओं की पूर्ति करते हैं। जैसे मेघ का जल जंगल की आग बुझा देता है, वैसे ही ये दरिद्र के हृदय की आग शांत कर देते हैं।

12. विषय विष है तो रामचरित्र विष उतारने की मणि है

मंत्र महामनि विषय ब्याल के। मेटत कठिन कुअंक भाल के ॥32:9॥

मंत्र महामनि = मंत्र और महामणि के समान हैं, *विषय ब्याल के* = विषय रूपी साँप का जहर उतारने के लिये, *मेटत* = मिटा देने वाले हैं, *कठिन कुअंक भाल के* = माथे में लिखे दुर्भाग्य को।

सर्प काटने से फैले विष को मंत्र के द्वारा उतारते हैं। सर्प की मणि को काटे हुए स्थान पर रखने से वह भी विष को खीच लेती है। शब्द, स्पर्श, गंध, रूप, स्वाद ये पाँच विषय हैं। हम इनका सेवन अमृत समझकर करते रहते हैं, लगता है कि ये बहुत सुख देंगे। पर इनका अनुचित सेवन हमारे अंदर सर्प काटने के समान विष उत्पन्न कर देता है। प्रभु राम के चरित्र इस विष को उतार देते हैं। ये मंत्र भी हैं महामणि भी हैं। इनके पाठ से हमें यह ज्ञान हो जाता है कि विषयों का सेवन कैसे करना है, ताकि वे विष न बनकर हमें सुख प्रदान करें।

प्रारब्ध को बदलने में सक्षम हैं

कई बार हमें ऐसा लगता है कि हमने पूर्व जन्म में बहुत पाप किये होंगे, हमारा बड़ा दुर्भाग्य है। बुद्धि उल्टी चल रही है। सब हमसे दुश्मनों जैसा व्यवहार करते हैं। यह माथे का दुर्भाग्य कैसे छूटे? तो राम के चरित्र प्रारब्ध को बदल देते हैं, हमारा दुर्भाग्य भाग्य में बदल जायेगा, बस प्रेम से इनका नियमित पाठ करते रहें।

13. मोह अंधकार है तो रामचरित्र सूर्य का प्रकाश है

हरन मोह तम दिनकर कर से। सेवक सालि पाल जलधर से ॥32:10॥

हरन मोह तम = अंधकार के समान मोह को दूर करने में, *दिनकर कर से* = सूर्य की किरणों के समान हैं, *सेवक सालि पाल* = भक्ति के समान धान की फसल को, *जलधर से* = बढ़ाने में बादलों से बरसने वाले पानी के समान हैं।

हमारे अंदर व्याप्त मोह की तुलना अंधकार से करते हैं। अंधकार मिटाने के लिये सूर्य की किरणों को कुछ करना नहीं होता, जैसे ही सूर्य का प्रकाश आता

है अंधेरा अपने आप चला जाता है। उसी प्रकार राम जी के चरित्रों का आप पाठ शुरू करें, मोह स्वत: ही भाग जायेगा।

14. भक्ति बढ़ाने में वर्षा का जल है

भगवान के प्रति भक्ति का भाव खेत में बोई हुई धान की फसल के समान है। जैसे वर्षा के जल से फसल बढ़ती है वैसे ही ये चरित्र हमारे अंदर छिपी भक्ति को बढ़ाते हैं। हम उस भक्ति में आनंद विभोर होते रहते हैं।

15. कल्पवृक्ष के समान मनोकामना पूर्ण करते हैं

अभिमत दानि देवतरु बर से। सेवत सुलभ सुखद हरि हर से ॥32:11॥

अभिमत दानि = मनोवांछित फल देने में, *देवतरु बर से* = कल्पतरु के वृक्ष के समान हैं, *सेवत सुलभ सुखद हरि हर से* = शंकरजी व विष्णु भगवान के समान आसानी से सरल, सुलभ व सुखदायक हैं।

जैसे स्वर्ग में कल्पवृक्ष के नीचे जाओ तो जो कामना करो पूरी हो जाती है वैसे ही भगवान के चरित्रों को जो सुनता या सुनाता है उसकी भी सब कामनायें पूरी हो जाती हैं।

16. शंकर व विष्णु के समान सरल व सुलभ

जैसे भगवान शंकर, भगवान विष्णु सरल, सुलभ व सुखदायक हैं वैसे ही राम के चरित्र पाठ करने में सरल हैं, समझने व जीवन में अपनाने में सुलभ व सरल हैं।

17. सुकवि के हदय के आकाश के तारे हैं

सुकबि सरद नभ मन उडगन से। रामभगत जन जीवन धन से ॥32:12॥

सुकबि मन = अच्छे कवि का मन, *सरद नभ* = शरद ऋतु का आकाश है, *उडगन से* = उसमें ये तारों के समान हैं, *रामभगत जन जीवन धन से* = रामभक्तों के लिये तो ये जीवन का धन ही हैं।

शरद ऋतु का आकाश अत्यंत साफ सुथरा रहता है उसमें तारे स्पष्ट दिखाई देते हैं। जो तारे सामान्य ऋतु में नहीं दिखते वे भी शरद ऋतु में दिखाई देते हैं। इसी प्रकार अच्छे कवि का हृदय शरद ऋतु के आकाश जैसा है जिसमें रामचरित्र तारों के सामान शोभायमान हैं।

18. भक्तों के लिये जीवन व धन है

कहते हैं कि जीवन है तो सब है, जीवन नहीं तो कुछ नहीं। इसी प्रकार धन के बिना कुछ नहीं होता है ऐसा मानते हैं। भक्तों के लिये तो श्री राम चरित्र उनका जीवन भी है और उनका धन भी।

19. महान् भोगों के समान है

सकल सुकृत फल भूरि भोग से। जग हित निरुपधि साधु लोग से ॥32:13॥

सकल सुकृत फल = समस्त पुण्यों के फल, *भूरि भोग से* = महान् भोगों के समान हैं, *जग हित निरुपधि* = संसार का वास्तविक हित करने में, *साधु लोग से* = साधु के समान हैं।

व्यक्ति को जो भोग प्राप्त होते हैं वे उनके पुण्य कर्मों के कारण मिलते हैं। ये रामचरित्र भी बहुत पुण्यों से प्राप्त महान् भोगों के समान हैं। रामचरित्रों के स्मरण से पुण्यों का फल प्राप्त होता है।

20. साधु के समान सबके हितकारी

जैसे साधु बिना स्वार्थ के संसार का हित करता है वैसे ही रामचरित्र सबका हित करने वाले हैं, ये किसी का अहित नहीं करते हैं।

21. मानसरोवर के हंस के समान हैं

सेवक मन मानस मराल से। पावन गंग तरंग माल से ॥32:14॥

सेवक मन = भक्तों का हृदय, *मानस* = मानसरोवर है, *मराल से* = ये उसके हंस समान हैं, *पावन* = पवित्र करने में, *गंग तरंग माल से* = गंगाजी की तरंग मालाओं के समान हैं।

जैसे मानसरोवर में हंस विचरण करते रहते हैं वैसे ही भक्तों के हृदय में ये चरित्र बार-बार याद आते रहते है। वहीं घूमते रहते हैं। भक्तों को ये चरित्र बहुत प्रिय हैं।

22. पवित्र करने में गंगा की तरंग के समान हैं

जैसे गंगाजी की धारा में खड़े हो जाओ और गंगा जी की धारा शरीर में स्पर्श करती हो, तो एक-एक तरंग एक-एक पाप को बहा ले जाती है। पाप को शरीर में रहने ही नहीं देती है, बहाकर ले जाती है। कहते हैं कि यदि गंगा में स्नान न करो, उनकी लहरों के पास ही चले जाओ, तो लहरों का प्रभाव मन पर पड़ता है, मन में पहुँच कर ये पापों का नाश कर देती हैं। इसी प्रकार प्रभु के चरित्रों को सुनो तो एक-एक चरित्र मन में भरे हुए पापों को दूर करते हैं। पाप दूर होते ही हम पवित्र हो जाते हैं।

23. दुर्गुणों की समाप्ति के लिये प्रचंड अग्नि के समान

कुपथ कुतरक कुचालि कलि कपट दंभ पाषंड ।
दहन राम गुन ग्राम जिमि इंधन अनल प्रचंड ॥दोहा 32 क॥

कुपथ = गलत मार्ग पर चलना; गलत लोगों के साथ रहना, *कुतरक* = गलत बात को सही सिद्ध करने की कोशिश करना, *कुचालि* = दुराचरण, *कलि कपट दंभ पाषंड* = कलियुग के कपट; घमंड व ढोंग, *दहन राम गुन ग्राम* = इन सब दुर्गुणों को राम के चरित्र का समूह भस्म कर देता है, *जिमि इंधन अनल प्रचंड* = जैसे प्रचंड अग्नि ईंधन को भस्म कर देती है।

जैस तेज अग्नि जलाओ और उसमें लकड़ी डालते जाओ अग्नि सभी लकड़ी को जलाकर राख कर देती है, उसी प्रकार राम के गुणों का गान करते जाओ, उनके गुणों को मन में बार-बार स्मरण करके धारण करते जाओ ये गुण धीरे-धीरे हमारे अवगुणों जैसे गलत संग, कुतर्क, ढोंग या पाखंड इत्यादि दोषों को समाप्त कर देते हैं।

24. पूर्णिमा के चन्द्रमा की किरणों की तरह सुखदायी

रामचरित राकेस कर सरिस सुखद सब काहु।
सज्जन कुमुद चकोर चित हित बिसेषि बड़ लाहु ॥32 ख॥

रामचरित राकेस कर सरिस = राम के चरित्र पूर्णिमा के चन्द्रमा की किरणों के समान, *सुखद सब काहु* = सबको सुख देने वाले हैं, *सज्जन* = भक्त, *कुमुद चकोर चित* = जिनका चित्त चकोर व कुमुदिनी की तरह है, *हित बिसेषि बड़ लाहु* = उनके लिये विशेष हितकारी व महान् लाभदायक है।

जैसे कुमुदिनी सिर्फ चन्द्रमा के प्रकाश में ही खिलती है, चकोर को भी पूर्ण चन्द्र की ही आस रहती है, इन दोनों का जीवन ही चन्द्रमा पर निर्भर है। उसी प्रकार भक्तों का जीवन भी श्रीराम के चरित्रों पर ही निर्भर है। भक्तों को कथा सुनते-सुनते राम के स्वरूप का ठीक-ठीक ज्ञान प्राप्त हो जाता है, और उनकी भक्ति उच्चतम सीमा को प्राप्त कर लेती है। यही रामचरित्रों की महिमा है।

16. रामकथा की विचित्रता

(दोहा 33)

भगवान का नाम, उनके चरित्र, चरित्रों की कथा ये सब कल्याण करने वाले दिव्य हैं। इनकी महिमा कहने के बाद तुलसीदासजी कहते हैं हम जो कथा कहने जा रहे हैं वह बहुत विचित्र है। लोग कथा सुनकर आश्चर्य करेंगे, उन्हें जल्दी विश्वास ही नहीं होगा। इसी विचित्रता का वर्णन करते हुए उसका समाधान बताते हैं।

शंकर जी ने पार्वतीजी को जो कथा सुनाई, उसका वर्णन

कीन्हि प्रस्न जेहि भाँति भवानी। जेहि बिधि संकर कहा बखानी ॥33:1॥
सो सब हेतु कहब मैं गाई। कथा प्रबंध बिचित्र बनाई ॥33:2॥

कीन्हि प्रस्न जेहि भाँति भवानी = जिस प्रकार माँ पार्वती ने शंकर जी से प्रश्न किया, *जेहि बिधि संकर कहा बखानी* = शंकर जी ने जिस प्रकार विस्तार से उसका वर्णन किया। *सो सब हेतु* = उन सबका कारण, *कहब मैं गाई* = मैं कविता में गाकर कहूँगा, *कथा प्रबंध बिचित्र बनाई* = प्रबंध काव्य में इस विचित्र कथा की रचना होगी।

चौपाई 30:1 व 30:2 में तुलसीदास जी कहते हैं कि जो कथा मुनि याज्ञवल्क्य जी ने भरद्वाज जी को सुनाई थी उसका वर्णन करेंगे। अब कहते हैं

कि पार्वती जी ने जिस प्रकार प्रश्न पूछा व शंकर जी ने जिस प्रकार कथा सुनाई उसका वर्णन करेंगे। देखें यहीं से विचित्रता प्रारंभ हो गई। विचित्रता की बात यह है कि यह बात सही है कि वह बात सही है कि दोनों गलत हैं।

पहली बार पढ़ने में कुछ समझ नहीं आता है

जेहिं यह कथा सुनी नहिं होई। जनि आचरजु करै सुनि सोई ॥33:3॥

जेहिं यह कथा = जिन्होंने इस कथा को, *सुनी नहिं होई* = सुना नहीं होगा यानि पहली बार सुनेगा, *जनि आचरजु करै* = उसे आश्चर्य अवश्य होगा, *सुनि सोई* = इसे सुनकर।

जो लोग इस ग्रंथ को पहली बार पढ़ते हैं, उन्हें कुछ समझ नहीं आता है, वे चक्कर काटते रहते हैं। सही बात क्या है? इसका सूत्र कैसे चलता है? इसकी व्यवस्था किस प्रकार से है? सब बातें मिलाने की कोशिश करते हैं कुछ मिलाये मिलता नहीं है। इधर बैठाते हैं तो उधर गड़बड़ा जाता है। यह बहुत विचित्र कथा है। जो इस कथा को एक बार सुनेगा, दो बार सुनेगा फिर बार-बार सुनेगा तो उसको यह विचित्र कथा स्पष्ट होने लगेगी, इसके सिद्धांत भी समझ में आने लगेंगे।

विचित्र मायने सुनकर आश्चर्य हो

विचित्र के कई मायने हैं। जैसे किसी को पिता की संपत्ति से वंचित कर दिया जाये तो नियम के अनुसार उसे दु:खी होना चाहिये, वह झगड़ा करेगा पर इस कथा में श्रीराम राज्य चले जाने पर भी प्रसन्न हैं। जिसे संपत्ति मिलती है, राजा बनता है वह बहुत खुश होता है, इस कथा में भरत जी राज्य मिलने पर दु:खी हैं वे राजा बनने को तैयार नहीं होते हैं। विचित्र मायने नाना रूप भी हैं जैसे इसमें नौ रसों का वर्णन हैं, कहीं हास्य है तो कहीं शृंगार रस है। जितने रस हैं उतने ही रूप हैं। कई प्रकार की कथायें भी इसमें हैं।

ज्ञानी आश्चर्य नहीं करेगा

कथा अलौकिक सुनहिं जे ग्यानी। नहिं आचरजु करहिं अस जानी ॥33:4 ॥

कथा अलौकिक = इस अलौकिक कथा को, *सुनहिं जे ग्यानी* = जो ज्ञानी सुनते हैं, *नहिं आचरजु करहिं अस जानी* = ऐसा समझकर आश्चर्य नहीं करते हैं।

विचित्रिता को अलौकिक व आश्चर्यजनक भी कहते हैं। जब अज्ञानी सुनेगा तो कहेगा अरे ऐसा हो ही नहीं सकता है, पर ज्ञानी सुनेगा तो कहेगा हाँ यह संभव है। व्यक्ति को लोभ नहीं करना चाहिये, भाइयों से प्रेम करो, माता-पिता का आदर करो आदि। अगली चौपाई में बताते हैं कि ज्ञानी क्यों आश्चर्य नहीं करेगा।

क्यों कि रामकथा अनंत है, ज्ञानी यह बात समझता है

रामकथा कै मिति जग नाहीं। असि प्रतीति तिन्ह के मन माहीं ॥33:5॥

रामकथा कै मिति = रामकथा की सीमा, *जग नाहीं* = संसार में नहीं हैं, *असि प्रतीति* = ऐसा विश्वास, *तिन्ह के मन माहीं* = जिनके मन में है वे आश्चर्य नहीं करते।

जिनके मन में ऐसा विश्वास है कि प्रभु राम अनंत हैं, उनकी कोई सीमा नहीं है, उनकी कथा भी अनंत है जिसके कारण से बहुत विचित्र घटनायें कथा में आती रहती हैं। तुलसीदास जी ने कुछ कथायें ऐसी लिखी हैं जो कहीं दूसरी जगह या पुराणों में मिल नहीं रही हैं जैसे प्रतापभानु की कथा। इस पर अनुसंधान चल रहा है। भगवान ने कई कल्पों में अवतार लिया है, उन सबको कौन जान सकता है? इस प्रकार भी यह कथा आश्चर्यजनक है। ज्ञानी व्यक्ति सब समझता है इसलिये आश्चर्य नहीं करता है।

प्रत्येक कल्प में राम अवतार से कथा में अंतर

नाना भाँति राम अवतारा। रामायन सत कोटि अपारा ॥33:6॥
कलपभेद हरिचरित सुहाए। भाँति अनेक मुनीसन्ह गाए ॥33:7॥
करिअ न संसय अस उर आनी। सुनिअ कथा सादर रति मानी ॥33:8॥

नाना भाँति राम अवतारा = राम जी ने अनेक प्रकार से अवतार लिया है, *रामायन सत कोटि अपारा* = रामायण में 100 करोड़ श्लोक हैं, *कलपभेद* = कल्प में अंतर के कारण, *हरिचरित सुहाए* = सुंदर रामचरित्रों को, *भाँति अनेक मुनीसन्ह*

गाए = अनेक प्रकार से मुनियों ने गाया है, *करिअ न संसय अस उर आनी* = ऐसा समझकर मन में संदेह न करें, *सुनिअ कथा सादर रति मानी* = कथा को आदरसहित प्रेम से सुनें।

हर कल्प में राम अवतार होता है, लीला का क्रम तो वही रहता है जैसे अयोध्या में अवतार, बाल लीला, विवाह, वन जाना, रावण को मारना आदि। परंतु हर कथा में थोड़ा-थोड़ा अंतर होता जाता है। हर अवतार में परशुराम जी मिलते हैं क्योंकि उनका अवतार राम जी से पहले हो जाता है, कभी वे जनकपुरी में मिलते हैं, कभी देर हो जाती है तो वे विवाह के बाद अयोध्या जाते समय रास्ते में मिलते हैं। बातें दोनों ही सही हैं क्योंकि अलग-अलग समयों के अवतारों की कथा है। राम कथा की रामायण अपार हैं। वाल्मीकि जी ने 100 करोड़ श्लोकों में रामायण लिखी। उसे शतकोटि रामायण कहते हैं।

अतः संदेह न करें, आदर व प्रेम से कथा सुनें

इस बात को ध्यान में रखें तो मन में शंका नहीं होगी। कहते हैं प्रेम व आदर से इसे सुनें। प्रेम+आदर = भक्ति। आदर से आशय है कि कथा को इसलिये न सुनें कि इसमें दोष निकालें, इसकी आलोचना करें। इसे सुनाने या सुनने से यदि अहंकार भाव आता है कि मैं तो कथा सुनता हूँ, मैं बहुत धार्मिक हूँ या मैं कथा सुनाता हूँ, मैं महान् कथावाचक हूँ, तो भी इसका अनादर है। यदि इस भाव से सुनें कि यह हमारे काम की नहीं है, यह तो समय काटने के लिये है, जिनके पास कोई काम नहीं उनके लिये है तो भी कथा का अनादर हो गया। कथा सुनने बैठे और मन यहाँ वहाँ के विचारों में उलझा रहा, कथा में ध्यान नहीं है, कुछ समझे ही नहीं तो कहेंगे कथा में आदर नहीं है। इसके भाव, भाषा, शिक्षा को समझकर जीवन में धारण करने की कोशिश करें तब कहा जायेगा कि कथा के प्रति आदर भाव है। प्रेम भाव भी रखें। अपने बेटे के प्रति माँ का प्रेम होता है पर आदर नहीं, बेटे का माँ के प्रति प्रेम व आदर दोनों होता है, उसे कहते हैं मातृभक्ति।

दिव्य दृष्टि से रामचरित देखकर तुलसीदास जी ने लिखा है

तुलसीदास जी सिद्ध पुरुष थे, उनको दिव्य दृष्टि प्राप्त थी। वे चौपाई 2:2 में कहते हैं कि हमने अपने हृदय के नेत्रों में गुरुदेव के चरणों की धूलि का अंजन

लगाया है। इस अंजन के लगाने से हमें जगह-जगह श्री रामचरित्र दिखे जा रहे हैं। उन्हीं चरित्रों का हम वर्णन कर रहे हैं। बहुत सी बातें जो इसमें हैं उनका कहीं अन्यत्र वर्णन नहीं है। दिव्य दृष्टि से देखकर वे वर्णन करते हैं।

राम अनंत, गुण अनंत, कथा अनंत है

राम अनंत अनंत गुन अमित कथा बिस्तार ।
सुनि आचरजु न मानिहहिं जिन्ह कें बिमल बिचार ॥ दोहा 33 ॥

राम अनंत अनंत गुन = श्रीराम व उनके गुण अनंत हैं, *अमित कथा बिस्तार* = उनकी कथा भी अनंत है, *सुनि आचरजु न मानिहहिं* = इसे सुनकर वे आश्चर्य नहीं करेंगे, *जिन्ह कें बिमल बिचार* = जिनके विचार निर्मल हैं।

प्रभु श्रीराम देश के परे हैं, काल के परे हैं, वस्तुओं के परे हैं, उनके अतिरिक्त कहीं कुछ और है ही नहीं, वही एक होकर सर्वत्र विद्यमान हैं, इसे कहते हैं अनंत। श्रीराम के गुण मायने वे सदा प्रसन्न रहते हैं, उदार हैं, दीनबंधु हैं, सबका हित चाहते हैं, सबसे प्रेम करते हैं, उनके गुण अनंत हैं। इसी प्रकार उनकी कथा का विस्तार भी अनंत है।

ज्ञानवान लोग संशय न कर जीवन में इसे अपनाते हैं

जो लोग साफ मन के हैं वे इसमें संशय नहीं करेंगे, जो मलिन मन के हैं उन्हें कथा में बहुत से दोष दिखेंगे वे संशय भी करेंगे। निर्मल मन वाले ज्ञानवान लोग कथा की गहराई में जाकर उसके रहस्यों को समझते हैं, उसे अपने जीवन में अपनाकर आनंद का अनुभव करते हैं, शांति व विश्राम पाते हैं।

17. शुभ मुहूर्त, शुभ स्थान में रचना

(दोहा 34, 35)

भगवान राम के त्रेता युग में अयोध्या में अवतार के समय जो तिथियाँ थीं वे ही संवत् 1631, रामनवमी के दिन थी। बहुत शुभ मुहूर्त था। जैसे दोपहर में राम का अवतार हुआ उसी प्रकार दोपहर में अयोध्या में कथा लिखने का कार्य प्रारंभ किया। उस दिन मंगलवार था, जो हनुमान जी का दिन है। तुलसीदास जी को हनुमान जी सिद्ध थे, उन्हीं के कहने से, उनकी प्रेरणा से यह रचना

की। 2 वर्ष 7 माह तक निरंतर वे रचना करते रहे। सीता-राम विवाह के पावन दिन यह रचना कार्य पूर्ण हुआ। इस प्रसंग में अयोध्या में रचना का कारण, इस ग्रंथ का नाम रामचरितमानस क्यों रखा है, इन सब बातों का वर्णन है।

शंकाओं को दूर कर सभी को प्रणाम कर कथा आरंभ

एहि बिधि सब संसय करि दूरी। सिर धरि गुर पद पंकज धूरी ॥34:1॥
पुनि सबही बिनवउँ करि जोरी। करत कथा जेहिं लाग न खोरी ॥34:2॥
सादर सिवहि नाइ अब माथा। बरनउँ बिसद राम गुन गाथा ॥34:3॥

एहि बिधि सब संसय करि दूरी = इस प्रकार सब शंकाओं को दूर करके, *सिर धरि गुर पद पंकज धूरी* = गुरु के चरण कमलों की धूलि को सिर पर धारण करके, *पुनि सबही बिनवउँ करि जोरी* = मैं पुन: हाथ जोड़कर सबकी विनती करता हूँ, *करत कथा जेहिं लाग न खोरी* = जिससे कथा की रचना में कोई दोष न आवे, *सादर सिवहि नाइ अब माथा* = अब मैं आदरपूर्वक शिव जी को सिर नवाकर, *बरनउँ बिसद राम गुन गाथा* = राम जी की निर्मल गुणगाथा का वर्णन आरंभ करता हूँ।

कथा कहने से पहले ही सभी शंकाओं को दूर कर दिया है, अब कोई शंका न करे। तुलसीदासजी ने इस दोहे में आते-आते गुरु, देवताओं व मुनियों की वन्दना तीन बार की है। अब वन्दना का क्रम समाप्त होता है। गुरुकृपा, शंकर जी की कृपा, देवताओं की कृपा, संतो व ज्ञानियों की कृपा से इस कथा में कोई दोष न आने पाये इसलिये सबकी वन्दना करते हैं।

संवत् 1631, मंगलवार, रामनवमी को अयोध्या में रचना आरंभ

संबत सोरह सै एकतीसा। करउँ कथा हरि पद धरि सीसा ॥34:4॥
नौमी भौम बार मधुमासा। अवधपुरीं यह चरित प्रकासा ॥34:5॥

संबत सोरह सै एकतीसा = विक्रम संवत् 1631 में, *करउँ कथा हरि पद धरि सीसा* = श्रीराम के चरणों में अपने सिर को रखकर यह कथा प्रारंभ करता हूँ। *नौमी* = नवमी तिथि, *भौम बार* = मंगलवार, *मधुमासा* = चैत्र का महीना, *अवधपुरीं यह चरित प्रकासा* = अयोध्या में इस रचना को आरंभ करते हैं।

तुलसीदासजी रामचरितमानस की रचना प्रारंभ करने के 2 वर्ष पूर्व संवत् 1629 में अयोध्या पहुँच गये। दो वर्षों तक उन्होंने अन्न का त्याग किया, संयमपूर्वक रहे, सिर्फ दूध ही ग्रहण करते थे। इस प्रकार उनके शरीर, मन, बुद्धि का शुद्धीकरण हुआ। उनकी साधना पहले ही बहुत हो चुकी थी फिर भी उन्होंने अपने आपको निर्विकार व शांत किया। उन्होंने पहले ही निश्चय कर लिया था कि संवत् 1631 को रामनवमी, दिन मंगलवार से कथा प्रारंभ करेंगे, क्योंकि ज्योतिष गणना के अनुसार भगवान राम के त्रेतायुग में अवतार के समय जो तिथियाँ थीं वही तिथियाँ संवत् 1631, रामनवमी को पड़ने वाली थीं। उस दिन मंगलवार भी था, जो हनुमानजी का दिन है और हनुमान जी गोस्वामी जी को सिद्ध थे। उन्हीं के कहने से, उन्हीं की प्रेरणा से यह रचना तुलसीदासजी ने की। इन दो वर्षों में तुलसीदास जी ने मानसिक रूप से सब तैयारी कर ली, पूरी कथा की रचना मन में कर ली। और जब शुभ मुहूर्त आया तब इसको लिखना आरंभ किये। 2 वर्ष, 7 महीने तक यह रचना कार्य चलता रहा। जिस दिन कथा पूरी हुई उस दिन सीता राम विवाह का शुभ मुहूर्त था।

अयोध्या में रामनवमी का महत्त्व

जेहि दिन राम जनम श्रुति गावहिं। तीरथ सकल तहाँ चलि आवहिं ॥34:6॥
असुर नाग खग नर मुनि देवा। आइ करहिं रघुनायक सेवा ॥34:7॥
जन्म महोत्सव रचहिं सुजाना। करहिं राम कल कीरति गाना ॥34:8॥

जेहि दिन राम जनम = जिस दिन राम जी का अवतार हुआ, *श्रुति गावहिं* = वेद कहते हैं कि उस दिन, *तीरथ सकल तहाँ चलि आवहिं* = सभी तीर्थ चलकर अयोध्या आ जाते हैं, *असुर नाग खग नर मुनि देवा* = असुर, नाग; पक्षी; मनुष्य; मुनि; देवता, *आइ करहिं रघुनायक सेवा* = सब अयोध्या आकर राम जी की सेवा करते हैं, *जन्म महोत्सव रचहिं सुजाना* = राम जी के अवतार को मनाते हैं, *करहिं राम कल कीरति गाना* = राम का गुणगान करते हैं; भजन कीर्तन करते हैं।

रामनवमी के दिन अयोध्या में सब तीर्थ चलकर आने से आशय यह है कि तीर्थों में रहने वाले संत, महात्मा, सिद्ध लोग वहाँ से चलकर अयोध्या आते

हैं। तीर्थों की पवित्रता अयोध्या पहुँचती है। इसके अलावा सब तरह के लोग आते हैं। असुर भी आते हैं, विभीषण व प्रह्लाद तो असुर जाति के ही हैं, रावण न आवे विभीषण तो आयेगा। नाग मायने पाताल लोक के प्राणी। पक्षी में जटायु आदि आ गये। सब पहुँच कर राम जी की सेवा करते हैं मायने उनका स्मरण करते हैं, उनकी पूजा करते है, भगवान के अवतार की लीला करते हैं। अयोध्या में खूब धूमधाम रहती है।

अनुकूल वातावरण से भक्ति भाव आता है

मज्जहिं सज्जन बृंद बहु पावन सरजू नीर ।
जपहिं राम धरि ध्यान उर सुंदर स्याम सरीर ॥दोहा 34॥

मज्जहिं = स्नान करते हैं, *सज्जन बृंद बहु* = सज्जनों के बहुत से समूह, *पावन सरजू नीर* = सरयू नदी के निर्मल जल में, *जपहिं राम* = राम नाम का जप करते हैं, *धरि ध्यान उर* = हृदय में ध्यान करते हुए, *सुंदर स्याम सरीर* = राम के सुंदर नील रंग के शरीर का।

जिनके हृदय में भक्ति भाव न हो, वे भी यदि ऐसे सुंदर वातावरण में रहें, सरयू के पवित्र जल में स्नान करें, राम नाम जपें, भगवान राम के सुंदर शरीर का हृदय में ध्यान करें, पूजा करें, सबके साथ कीर्तन करें, सत्संग करें, जन्म की लीला में शामिल हों तो उनके अंदर भी भक्ति भाव आ जाता है।

सरयू नदी में प्रभु राम ने स्नान किया इसलिये पवित्र है

दरस परस मज्जन अरु पाना। हरइ पाप कह बेद पुराना ॥35:1॥
नदी पुनीत अमित महिमा अति। कहि न सकइ सारदा बिमल मति ॥35:2॥

दरस परस मज्जन अरु पाना = सरयू नदी का दर्शन; स्पर्श; स्नान या जल के पान से, *हरइ पाप कह बेद पुराना* = पाप दूर होते हैं ऐसा वेद पुराण कहते हैं, *नदी पुनीत अमित महिमा अति* = सरयू नदी अत्यंत पवित्र है इसकी महिमा बहुत है, *कहि न सकइ सारदा बिमल मति* = सरस्वती जी की निर्मल बुद्धि भी इसकी महिमा नहीं कह सकती है।

जब भी किसी नदी में स्नान करने जायें तो पहले उसकी महिमा कहें या सुनें, इससे उस नदी के प्रति श्रद्धा उत्पन्न होती है। फिर श्रद्धा भाव के साथ स्नान करें तभी स्नान फलदायी होता है। सरयू नदी में प्रभु राम ने स्वयं खूब स्नान किया है इसलिये यह पवित्र है। सरयू में स्नान करते समय यह स्मरण रखें कि इसमें प्रभु राम ने कभी स्नान किया है।

अयोध्या पवित्र नगरी व समस्त जीवों को मुक्ति देती है

राम धामदा पुरी सुहावनि। लोक समस्त बिदित अति पावनि ॥35:3॥
चारि खानि जग जीव अपारा। अवध तजें तनु नहिं संसारा ॥35:4॥

राम धामदा = अयोध्या राम के परमधाम को देने वाली है, *पुरी सुहावनि* = यह बहुत सुंदर पुरी है, *लोक समस्त बिदित* = सब लोकों में प्रसिद्ध है, *अति पावनि* = यह बहुत पवित्र है, *चारि खानि जग जीव अपारा* = संसार में चार तरह के अगनित जीव हैं, *अवध तजें तनु* = इनमें से जो भी अयोध्या में शरीर छोड़ते हैं, *नहिं संसारा* = वे फिर संसार में नहीं आते।

अयोध्या में वास करने वाले लोग यदि इस भाव से रहें कि यहाँ प्रभु राम ने राज्य किया है यह बहुत पवित्र स्थान है तो वे मृत्यु के बाद प्रभु श्रीराम के साकेतधाम में पहुँच जाते हैं। मनुष्य के अलावा भी कोई भी प्राणी अयोध्या में शरीर त्यागता है तो वह जीव भाव से मुक्त हो जाता है, उसके विकार समाप्त हो जाते हैं वह सीधे साकेतधाम चला जाता है।

अयोध्या की महिमा के कारण यहाँ पर रचना की

सब बिधि पुरी मनोहर जानी। सकल सिद्धिप्रद मंगल खानी ॥35:5॥
बिमल कथा कर कीन्ह अरंभा। सुनत नसाहिं काम मद दंभा ॥35:6॥

सब बिधि पुरी मनोहर जानी = इस अयोध्या पुरी को सब प्रकार से मनोहर, *सकल सिद्धिप्रद* = सब सिद्धियों को देने वाली, *मंगल खानी* = और कल्याण की खान समझकर, *बिमल कथा कर कीन्ह अरंभा* = मैंने इस निर्मल कथा का आरंभ किया, *सुनत नसाहिं काम मद दंभा* = इसके सुनने से काम, दंभ व मद नष्ट हो जाते हैं।

अयोध्या में तुलसीदास जी गये तो उनके भी सारे पाप दोष दूर हो गये, फिर उनके द्वारा यह दोषरहित कथा प्रारंभ हुई। अयोध्या जी व सरयू नदी के प्रभाव से यह कथा भी उन्हीं के समान पवित्र हो गयी।

इस रचना का नाम रामचरितमानस है

रामचरितमानस एहि नामा। सुनत श्रवन पाइअ बिश्रामा ॥35:7॥
मन करि बिषय अनल बन जरई। होइ सुखी जौं एहिं सर परई ॥35:8॥

रामचरितमानस एहि नामा = इस कथा का नाम रामचरितमानस है, *सुनत श्रवन पाइअ बिश्रामा* = क्योंकि इसको सुनने से मन को विश्राम मिलेगा, *मन करि बिषय* = मन के अंदर उठने वाली वासनायें, *अनल बन जरई* = अग्नि के समान जलकर समाप्त हो जायेगी, *होइ सुखी* = व्यक्ति सुखी हो जायेगा, *जौं* = जो व्यक्ति, *एहिं सर* = इस सरोवर, यानि रामचरितमानस में, *परई* = डुबकी लगायेगा।

तुलसीदासजी जो श्रीरामकथा लिखने जा रहे हैं इसका नाम 'रामचरितमानस' है। वाल्मीकि जी ने जो श्रीरामकथा लिखी थी उसका नाम रामायण था। विषयों की अग्नि में लोगों के हृदय जल रहे हैं, श्रीरामचरितमानस एक सरोवर के समान है, जो इस सरोवर मे डुबकी लगायेगा उसको शीतलता मिलेगी, मन शांत हो जायेगा। इस कथा को बार-बार समझने की कोशिश करें तब मन शांत होगा।

सबसे पहले इसकी रचना शिवजी ने की

रामचरितमानस मुनि भावन। बिरचेउ संभु सुहावन पावन ॥35:9॥
त्रिबिध दोष दुख दारिद दावन। कलि कुचालि कुलि कलुष नसावन ॥35:10॥

रामचरितमानस मुनि भावन = यह रामचरितमानस मुनि लोगों को भी प्रिय लगता है, *बिरचेउ संभु* = शंकर जी ने इसकी रचना की, *सुहावन पावन* = जो सुंदर व पवित्र है, *त्रिबिध दोष* = यह तीनों प्रकार के दोषों को, *दुख दारिद दावन* = दु:ख व दरिद्रता को, *कलि कुचालि कुलि कलुष नसावन* = कलियुग की कुचालों को व सब पापों का नाश करने वाली है।

सबसे पहले राम चरित्रों के कथा की रचना शिवजी ने अपने मन में की, इसलिये यह रामचरितमानस है। यह कथा बहुत सुन्दर व पवित्र है, जिसके कारण मुनियों के मन को अच्छी लगती है। इसके प्रभाव से तीनों प्रकार के दोष, दु:ख-दरिद्रता, कलियुग के कुचाल व सभी तरह के पाप नष्ट हो जाते हैं।

शिव जी ने इसका नाम रामचरितमानस रखा

रचि महेस निज मानस राखा। पाइ सुसमउ सिवा सन भाषा ॥35:11॥
तातें रामचरितमानस बर। धरेउ नाम हियँ हेरि हरषि हर ॥35:12॥

रचि महेस = शिव जी ने इसकी रचना करके, *निज मानस राखा* = अपने मन में ही रखा, *पाइ सुसमउ* = सुअवसर आने पर, *सिवा* = पार्वती जी, *सन भाषा* = को कथा सुनाई, *तातें रामचरितमानस बर धरेउ नाम* = इसलिये इसका नाम रामचरितमानस रखा, *हियँ हेरि* = अपने हृदय में देखकर, *हरषि हर* = शंकर जी ने प्रसन्न होकर।

शंकर जी ने सबसे पहले श्रीरामकथा की रचना की एवं इसे अपने मन में ही रखा। मन मायने मानस होता है। शंकर जी ने अपने मानस में ही कथा देखी व प्रसन्न होकर इसका नाम रामचरितमानस रख दिया। पार्वती जी के पूछने पर शिव जी ने इस रचना को उन्हें सुनाया।

कथा वही है जो शिव जी ने रचना की

कहउँ कथा सोइ सुखद सुहाई। सादर सुनहु सुजन मन लाई ॥35:13॥

कहउँ कथा सोइ = मैं उसी कथा को कहूँगा, *सुखद सुहाई* = जो सुख देने वाली व सुंदर है, *सादर सुनहु सुजन मन लाई* = सज्जन लोग आदर से व मन लगाकर इसे सुनें।

तुलसीदास जी कहते हैं इस ग्रंथ का नाम हमारा रखा हुआ नहीं है यह तो शिव जी का रखा हुआ है। हम तो शंकर जी के मन वाली ही कथा लिखने जा रहे हैं इसलिये हमने भी इसका नाम रामचरितमानस रखा है।

18. रामचरितमानस मानसरोवर के समान है

(दोहा 36 से दोहा 38)

इस कथा की रचना वैसे ही होती है जैसे सरोवर की होती है। इसे समझाने के लिये वे सांग रूपक अलंकार का प्रयोग करते हैं। इसमें प्रत्येक अंग की एक दूसरे के साथ तुलना की जाती है।

रामचरितमानस की रचना कैसे होती है

जस मानस जेहि बिधि भयउ जग प्रचार जेहि हेतु ।
अब सोइ कहउँ प्रसंग सब सुमिरि उमा बृषकेतु ॥दोहा 35॥

जस मानस = ये मानसरोवर कैसा है, *जेहि बिधि भयउ* = जिस प्रकार से इसकी रचना हुई, *जग प्रचार जेहि हेतु* = जिस प्रकार से संसार में इसका प्रचार हुआ है, *अब सोइ कहउँ प्रसंग सब* = अब मैं उस कथा को कहूँगा, *सुमिरि उमा बृषकेतु* = शंकर जी व पार्वती जी का स्मरण करके।

जैसे कैलास पर्वत पर मानसरोवर है वैसे ही मन में रामचरितमानस का सरोवर है। इस सरोवर की रचना कैसे होती है उसका वर्णन करते हैं।

शंकर जी द्वारा दी गई बुद्धि से कथा लिखते हैं

संभु प्रसाद सुमति हियँ हुलसी। रामचरितमानस कबि तुलसी ॥36: 1॥
करइ मनोहर मति अनुहारी। सुजन सुचित सुनि लेहु सुधारी ॥36:2॥

संभु प्रसाद = शंकर जी की कृपा से, *सुमति हियँ हुलसी* = हृदय में सद्बुद्धि व उत्साह आया, *रामचरितमानस कबि तुलसी* = और तुलसीदास रामचरितमानस का कवि बन गया, *करइ मनोहर मति अनुहारी* = अपनी बुद्धि के अनुसार सुंदर रचना कर रहे हैं, *सुजन सुचित सुनि* = सज्जन लोग अच्छे भाव से सुनें, *लेहु सुधारी* = और उन्हें कोई गलती मिले तो सुधार लें।

अच्छी बुद्धि व उत्साह होने से ही भावनायें काव्य रूप में व्यक्त होती हैं। तुलसीदास जी कहते हैं इसकी प्राप्ति शंकर जी की कृपा से हुई है। शंकर जी ने जितनी बुद्धि प्रदान की उसी अनुसार मैं रामचरितमानस की रचना कर रहा हूँ।

इस ग्रंथ में कोई गलती निकाल ही नहीं सका

तुलसीदास जी कहते हैं कि सज्जन लोग इसे अच्छे भाव से ग्रहण करें और उन्हें कहीं कोई गलती मिले तो उसे सुधार लें। पर रामचरितमानस इतनी उच्चकोटि की रचना है कि आज तक इसमें कोई गलती निकाल ही नहीं सका। किसी ने जब भी शब्दों में हेरफेर कर सुधारने की कोशिश की यह ग्रंथ बिगड़ गया। जब प्रिंटिंग प्रेस नहीं थे, तो हाथ से लिखकर इसकी और भी कापियाँ बनीं, लिखने वालों को जहाँ समझ न आये, शब्दों को बदल दिया। बदलने से ग्रंथ बिगड़ गया। विद्वानों की एक कमिटी बनी, उन्होंने निर्णय दिया कि मूलग्रंथ ही सही है उसमें सुधार की कोई भी आवश्यकता नहीं है।

रामचरितमानस सरोवर की रचना

सुमति भूमि थल हृदय अगाधू। बेद पुरान उदधि घन साधू ॥36:3॥
बरषहिं राम सुजस बर बारी। मधुर मनोहर मंगलकारी ॥36:4॥

सुमति भूमि = सद्‌बुद्धि जमीन है, *थल हृदय अगाधू* = हृदय गहरा स्थान है, *बेद पुरान उदधि* = वेद व पुराण समुद्र हैं, *घन साधू* = साधु बादल हैं, *बरषहिं राम सुजस बर बारी* = जो राम जी के सुंदर यश की वैसे ही वर्षा करते हैं जैसे बादल जल बरसाते हैं, *मधुर मनोहर मंगलकारी* = जो मधुर, मनोहर और मंगलकारी है।

मानसिक सरोवर के निर्माण की तुलना स्थूल सरोवर के निर्माण से करते हैं। स्थूल सरोवर के निर्माण के लिये आवश्यक पाँच तत्त्व इस प्रकार हैं:
1. जमीन, 2. जमीन में ढलान या गहरापन, 3. खारे पानी का विशाल समुद्र, 4. बादल जो समुद्र से खारे पानी को लें, 5. बादल से पानी की वर्षा। जब वर्षा होगी तो जल ढलान या गहरी जमीन में एकत्रित होगा। इस जल से सरोवर का निर्माण होगा। यह स्थूल सरोवर है, इसे बनते हम इन आँखों से देख सकते हैं।

मानसिक सरोवर के निर्माण के लिये भी पाँच तत्त्व चाहिये। रामचरितमानस सूक्ष्म सरोवर है यह मन की आँख से ही दिखाई देगा। तुलसीदास जी इसके भी दर्शन बहुत ही काव्यात्मक शैली में करा रहे हैं। प्रेम से समझकर इसका आनंद लें।

1. सद्‌बुद्धि : यह मानसिक सरोवर की जमीन है।

2. हृदय : यह जमीन का गहरापन है। जमीन समतल होगी तो वर्षा का जल बह जायेगा, उसी प्रकार यदि सिर्फ सद्‌बुद्धि होगी, हृदय की गहराई नहीं होगी तो प्रभु राम के चरित्रों का, उनके यश का ज्ञान मन में एकत्रित नहीं होगा।

3. वेद व पुराण : जैसे समुद्र में अगाध जल भरा है, इनमें ज्ञान भरा है। सागर में जल तो बहुत है पर आप उससे प्यास नहीं बुझा सकते, पानी खारा रहता है। इसी प्रकार वेदों में ज्ञान तो बहुत है पर उन्हें पढ़ो तो अर्थ समझ में नहीं आयेगा।

4. साधु : ये बहुत तप करते हैं, सारा जीवन शास्त्रों का अध्ययन करते हैं, वेदों, पुराणों के ज्ञान को सरल करके समझने योग्य बनाकर अपने अंदर धारण कर लेते हैं। जैसे बादल समुद्र के खारा पानी को मीठा बनाकर अपने अंदर भर लेते हैं।

5. सत्संग : जैसे बादल हजारों-हजार मील तक समुद्र का खारा जल मीठा करके बरसाते हैं, इस जल को गाँव-गाँव शहर-शहर तक पहुँचा देते हैं। यही जल गहरी जमीन में एकत्रित होकर सरोवर बना देता है। इसी प्रकार साधु लोग श्रीराम के यश को, उनके चरित्रों को नगर-नगर, डगर-डगर सरल करके सत्संग के द्वारा पहुँचा देते हैं। समझदार लोग इन चरित्रों के ज्ञान को अपने हृदय के गहरेपन में या मन में एकत्रित कर लेते हैं। यही रामचरित मानस का सरोवर है जो हमारे मन में बन जाता है।

सगुण लीला से मन की सफाई

लीला सगुन जो कहहिं बखानी। सोइ स्वच्छता करइ मल हानी ॥36:5॥

लीला सगुन = प्रभु राम की सगुण लीला का, *जो कहहिं बखानी* = साधु लोग विस्तार से वर्णन करते हैं, *सोइ स्वच्छता करइ* = यह मन की सफाई करती है, *मल हानी* = मन के विकारों को दूर करती है।

यहाँ पर बहुत महत्त्वपूर्ण बात कहते हैं, श्रीराम का वर्णन सगुण व निर्गुण दोनों रूपों में होता है, सगुण लीला का वर्णन चित्त को शुद्ध करता है, मन की सफाई करता है, निर्गुण का वर्णन हमारे मन की सफाई नहीं करता है।

निर्गुण को समझने के लिये शुद्ध मन पहले से होना चाहिये। प्रभु राम की सगुण लीला के वर्णन में उसका बहुत विस्तार होता है, एक के बाद एक लीलायें आती हैं। इन्हें बच्चे, बड़े सब सुन सकते हैं। कथा को सुनते जायें मन के विकार अपने आप दूर होते जाते हैं। जैसे वर्षा का जल पेड़ पत्तों में पड़ी धूल को साफ कर देता है।

प्रेम व भक्ति जल की शीतलता व मधुरता हैं

प्रेम भगति जो बरनि न जाई। सोइ मधुरता सुसीतलताई ॥36:6॥

प्रेम भगति = प्रेम व भक्ति, *जो बरनि न जाई* = का अलग से वर्णन नहीं करना होता, *सोइ मधुरता सुसीतलताई* = यही जल की मधुरता व शीतलता है।

जैसे वर्षा का जल अपने आप में ही मधुर व शीतल होता है, अलग से कुछ नहीं करना होता है, वैसे ही प्रभु राम की सगुण लीला की कथा में प्रेम व भक्ति सहज रूप से ही आ जाती है अलग से वर्णन नहीं करना पड़ता। प्रेम व भक्ति से मन मधुर होता है इसके विक्षेप दूर हो जाते हैं, मन शांत हो जाता है, शांत मन ही शीतलता देता है।

वर्षा जल से फसल बढ़ी, कथा से पुण्य विकसित

सो जल सुकृत सालि हित होई। राम भगत जन जीवन सोई ॥36:7॥

सो जल = वर्षा का जल, *सुकृत* = पुण्यों का उदय, *सालि हित होई* = धान की फसल के लिये अच्छा है, *राम भगत जन जीवन सोई* = राम भक्तों के लिये कथा ही जीवन है।

जैसे खेतों पर वर्षा का जल बरसता है तो धान की फसल बढ़ने लगती है वैसे ही श्रीराम कथा हमारे सोये हुए पुण्यों को जागृत कर देती है। हमने पाप-पुण्य सभी किये होंगे पर कथा पुण्यों को विकसित कर देती है। संस्कृत में जल को जीवन भी कहते हैं, जल से ही सब प्राणियों का जीवन है। वर्षा का जल सबको जीवन प्रदान करता है वैसे ही यह कथा भक्तों को जीवन प्रदान करती है।

कथा कान से चलकर हृदय में एकत्रित हो सरोवर बनाती है

मेधा महि गत सो जल पावन। सकिलि श्रवन मग चलेउ सुहावन ॥36:8॥

मेधा = बुद्धि जो स्मरण रखने का कार्य करती है, *महि गत सो जल पावन* = पृथ्वी पर गिरने वाली वर्षा का पवित्र जल रामकथा के समान है, *सकिलि* = जो सिमटकर, *श्रवन मग* = कान के रास्ते, *चलेउ सुहावन* = सुहावने रूप से चलती है।

जब वर्षा का जल जमीन पर गिरता है तो वह सिमटकर ढलान की तरफ बहता है। जल बहते हुए सरोवर में पहुँचकर वहाँ एकत्रित होता जाता है। उसी प्रकार जब साधु लोग श्रीराम कथा की वर्षा करते हैं तो कान के सुंदर रास्ते से चलती हुई बुद्धि द्वारा ग्रहण की जाती है वहाँ से हृदय की गहराई में जाकर एकत्रित होती रहती है।

कथा को कुछ समय मन में धारण रखें तब काम आती है

भरेउ सुमानस सुथल थिराना। सुखद सीत रुचि चारु चिराना ॥36:9॥

भरेउ सुमानस = हृदय में भरती है, *सुथल थिराना* = भरकर वहीं स्थिर होती है, *सुखद सीत रुचि चारु* = फिर सुखदायी शीतल रुचिकर सुंदर होती है, *चिराना* = पुराना होकर यानि कुछ समय तक वहाँ रुककर।

वर्षा का जल साफ रहता है पर वह जब जमीन में बहता है तो उसके साथ मिट्टी, धूल आदि भी मिलकर सरोवर में एकत्रित होते हैं। कुछ दिन बाद गन्दगी नीचे बैठ जाती है, स्वच्छ जल ही दिखने लगता है जो सबके काम आता है। यह शीतल व सुखदायी होता है। इसी प्रकार श्रीरामकथा वर्षा के जल की तरह निर्मल व शुद्ध है पर जब लोग पहली बार सुनते हैं तो उनके मानसिक विकार भी कथा में मिल जाते हैं, कथा मैली हो जाती है। वह कथा यदि अपने मन में कुछ समय तक बनी रहती है, तो वे विकार नीचे बैठ जाते हैं। कथा स्वच्छ व निर्मल दिखने लगती है। मानसरोवर का निर्माण हो जाता है। इसी सरोवर का जल व्यक्ति के जीवन भर काम आता रहता है। यह जल सुंदर, शीतल व रुचिकर होता है।

सरोवर में चार घाट, कथा में चार वक्ता व चार श्रोता

सुठि सुंदर संबाद बर बिरचे बुद्धि बिचारि ॥
तेइ एहि पावन सुभग सर घाट मनोहर चारि ॥दोहा 36॥

सुठि सुंदर संबाद बर= कथा में चार उत्तम संवाद हैं, *बिरचे बुद्धि बिचारि*= जो बुद्धि से विचार करके रचे गये हैं, *तेइ एहि पावन सुभग सर*= वे संवाद इस पवित्र व सुंदर सरोवर के किनारे, *घाट मनोहर चारि*= चार मनोहर घाट हैं।

जब राजा सरोवर का निर्माण कराता है तो उसमें सुंदर चार घाट बनवाता है। तीन घाटों में तो सीढ़ियाँ रहती हैं जिनसे उतरकर व्यक्ति सरोवर में स्नान करें, जल पीयें। चौथे घाट को ढालदार बनाया जाता है ताकि पशु भी उसका प्रयोग कर सकें। इस कथा में भी चार वक्ता हैं सब अपनी बुद्धि के अनुसार कथा सुनाते हैं। तुलसीदास जी कहते हैं कथा तो एक ही है परंतु वर्णन करने की शैली अलग-अलग है, जिसकी जैसी शैली है उसको हमने यथावत् रखने की कोशिश की है। ये चार संवाद इस प्रकार हैं:

1. कैलास पर्वत पर वट वृक्ष के नीचे बैठकर भगवान शंकर माँ पार्वती को श्रीराम कथा सुना रहे हैं। इसे ज्ञान घाट कहते हैं।
2. तीर्थराज प्रयाग में ऋषि याज्ञवल्क्य जी भरद्वाज मुनि को राम कथा सुना रहे हैं। यह कर्म घाट कहलाता है।
3. नीलगिरि पर्वत पर वृक्ष के नीचे बैठकर काकभुसुण्डि जी गरुड़ को कथा सुना रहे हैं। यह भक्ति घाट है।
4. अयोध्या में बैठकर तुलसीदास जी हम सबको श्रीराम कथा सुना रहे हैं। यह निरहंकारी घाट है।

घर-घर रामचरितमानस का पाठ हो तब परिवर्तन आयेगा

जो समझदार हैं, जो चाहते हैं कि उनका परिवार सुसंगठित रहे, बालक संस्कारी बनें, ज्ञान आये, भक्ति आये, उनके लिये आवश्यक है कि रोज घर में रामचरितमानस का पाठ हो। 15 से 20 मिनट सब बैठें, एक व्यक्ति चौपाई बोले सब लोग उसे दोहरावें। नियमित साल दो साल पाठ करें, घर में प्रेम भाव जागेगा, परिवार का विघटन दूर होगा। यह कठिन बात नहीं है, बस महिमा एक बार समझ में आ जाये।

सात काण्ड सरोवर की सात सीढियाँ

सप्त प्रबंध सुभग सोपाना। ग्यान नयन निरखत मन माना ॥37:1॥

सप्त प्रबंध = सात काण्ड, *सुभग सोपाना* = सुंदर सात सीढियाँ हैं, *ग्यान नयन* = ज्ञान के नेत्रों से, *निरखत* = देखने पर, *मन माना* = मन प्रसन्न हो जाता है।

जैसे सरोवर में सात सीढ़ियाँ हों जिनसे उतरते-उतरते हम जल तक पहुँचें, वैसे ही रामचरितमानस में सात काण्ड हैं। बालकाण्ड से शुरू करके अयोध्याकाण्ड आदि होते हुए हम सातवें उत्तरकाण्ड में पहुँचते हैं। इस काण्ड में परमात्मा का ही निरुपण है। यह मानसिक सरोवर ज्ञान की आँखों से ही दिखेगा, तब हमारा मन भी मान लेगा कि रामकथा की रचना हमारे हृदय में भी हो गई है। हमें बहुत प्रसन्नता का अनुभव होगा।

निर्गुण राम की महिमा का वर्णन अगाध जल है

रघुपति महिमा अगुन अबाधा। बरनब सोइ बर बारि अगाधा ॥37:2॥

रघुपति महिमा = श्री राम की महिमा, *अगुन अबाधा* = जो निर्गुण व एकरस है, *बरनब* = उसका वर्णन करेंगे, *सोइ बर बारि अगाधा* = जो सुंदर अथाह जल के समान है।

अगाध जल मायने जिसकी थाह न मिले, उसी प्रकार निर्गुण ब्रह्म की भी कोई थाह नहीं है। कहते हैं इस कथा में प्रभु राम की निर्गुण महिमा का भी वर्णन करेंगे जो मानसिक सरोवर में सुंदर अथाह जल के समान है।

सगुण राम का वर्णन जल की मधुरता है

राम सीय जस सलिल सुधासम। उपमा बीचि बिलास मनोरम ॥37:3॥

राम सीय जस = राम जी व सीता जी के यश का वर्णन, *सलिल सुधासम* = जल की मधुरता है, *उपमा* = जो उपमा दी गई है, *बीचि बिलास मनोरम* = वे जल तरंगों की क्रीड़ा है जो मन को भाती है।

श्रीराम व सीता जी के यश की लीलाओं के सगुण रूप का वर्णन सरोवर के जल की मधुरता है। जल में दो बातें हैं एक अगाधता दूसरी मधुरता। अगाधता निर्गुण वर्णन व मधुरता सगुण वर्णन हो गया। ये सब देखने के लिये हृदय के नेत्र चाहिये। अपने अंदर देखो सब दिखेगा। जैसे बाहर सुंदर सरोवर देखो, सुंदर सीढ़ी, निर्मल जल तो आँखों को अच्छा लगेगा, उसी तरह हृदय में देखो आनंद की अनुभूति होगी।

उपमायें जल तरंगों का खेल है

इस कथा में जगह-जगह प्रभु राम व सीता जी के सगुण रूप व निर्गुण रूप की तुलना प्रतीकों से करके उनकी महिमा को समझाया गया है। ये उपमायें मन को बहुत भाती हैं, जैसे सरोवर के जल के ऊपर लहरों की क्रीड़ा है जो बहुत अच्छी लगती है।

चौपाइयाँ जल में कमल के पत्ते हैं

पुरइनि सघन चारु चौपाई। जुगुति मंजु मनि सीप सुहाई ॥37:4॥

पुरइनि सघन = कमल के पत्ते जो घने होते हैं, *चारु चौपाई* = सुंदर चौपाइयाँ हैं, *जुगुति मंजु* = सुंदर युक्तियाँ, *मनि सीप सुहाई* = मणि व सीप के समान सुंदर हैं।

सरोवर के जल के ऊपर हरे रंग के कमल के पत्ते रहते हैं। इन घने पत्तों के नीचे ही जल छिपा रहता है। इस कथा में चौपाइयों के भीतर ही सब छिपा है। प्रभु राम की निर्गुण व सगुण लीला सब इन्हीं में छिपी है। चौपाइयों का प्रेम से पाठ करो सब उसी में मिलेगा।

विशेष बातें जल में मणि व सीप हैं

कथा में बहुत सी विशेष बाते हैं, सुंदर युक्तियाँ हैं। इन्हें लोग याद कर लेते हैं व जीवन में प्रयोग करते रहते हैं। ये सुंदर बातें मणि व सीप के समान हैं। जैसे मणि धारण करने से व्यक्ति सुंदर दिखता है वैसे ही रामचरितमानस की विशेष बातों के उद्धरण से बातचीत में सुंदरता आ जाती है।

छंद, सोरठा, दोहा सरोवर के रंग बिरंगे कमल हैं

छंद सोरठा सुंदर दोहा। सोइ बहुरंग कमल कुल सोहा ॥37:5॥

छंद सोरठा सुंदर दोहा = सुंदर छंद; सोरठे व दोहे, *सोइ बहुरंग कमल कुल सोहा* = ये विभिन्न रंगों के कमल के फूल के समान शोभायमान हैं।

रामचरितमानस में चौपाइयों के बीच-बीच में दोहे हैं, कहीं पर छंद तो कहीं पर सोरठे हैं। ये वैसे ही शोभायमान हैं जैसे सरोवर के जल में कमल के घने हरे पत्तों के बीच-बीच में रंग बिरंगे कमल के फूल खिले रहते हैं।

भाषा-पराग, भाव-मकरंद, अर्थ-सुगंध है

अरथ अनूप सुभाव सुभासा। सोइ पराग मकरंद सुबासा ॥37:6॥

अरथ अनूप सुभाव सुभासा = अनुपम अर्थ, भाव व सुंदर भाषा, *सोइ पराग मकरंद सुबासा* = वे कमल के पराग के मकरंद व सुगंध हैं।

कमल के फूल की तीन विशेषताओं से रामचरित मानसरोवर की तुलना करते हैं।

1. पराग– यह पीले रंग का होता है, रामचरितमानस की भाषा कमल के पराग के समान है।
2. मकरंद– पराग के अंदर मकरंद होता है जिसे चूसकर मधुमक्खी शहद बनाती है। इसके पाठ से हमारे अंदर जो प्रेम, करुणा इत्यादि के भाव आते हैं ये मानों कमल के मकरंद हैं।
3. सुगंध– कमल की सुगंध दूर तक महकती है। इसी प्रकार इसका अर्थ समझकर जब जीवन में अपनाते हैं तब हमारे व्यक्तित्व की खुशबू दूर तक जाती है।

पाठक कमल के भौरे के समान हैं

सुकृत पुंज मंजुल अलि माला। ग्यान बिराग बिचार मराला ॥37:7॥

सुकृत पुंज = पुण्यशाली पाठक, *मंजुल अलि माला* = सुंदर भौंरों का समूह हैं, *ग्यान बिराग बिचार* = ज्ञान वैराग्य व विचार, *मराला* = हंस के समान हैं।

जिस प्रकार कमल के चारों तरफ भौंरे मंडराते रहते हैं, उसी प्रकार सज्जन लोग जिनके पुण्य उदय हो गये हैं वे रामचरितमानस का पाठ कर पाते हैं। इस कथा को सुनकर या पढ़कर इसका भाव व अर्थ वही ग्रहण कर सकता है जिसके पुण्य जाग गये हैं।

ज्ञान, वैराग्य व विचार सरोवर के हंस हैं

सरोवर में हंस भी रहते हैं। हंस की दो विशेषताये हैं। 1. पानी में रहता है पर पानी का प्रभाव उस पर नहीं पड़ता, उसके हाथ-पैर गीले नहीं होते। इसी प्रकार वैराग्यवान व्यक्ति संसार में रहता है पर संसार का प्रभाव उस पर नहीं पड़ता। 2. हंस दूध से पानी अलग कर देता है, उसी प्रकार ज्ञानवान व्यक्ति सत् असत् का विचार करके सत् को ग्रहण करते हैं। इस कथा में वर्णित ज्ञान, वैराग्य व विवेक सरोवर के हंस हैं।

ध्वनि व सांकेतिक अर्थ जल में मछली के समान हैं

धुनि अवरेब कबित गुन जाती। मीन मनोहर ते बहुभाँती ॥37:8॥

धुनि अवरेब = ध्वनि व सांकेतिक अर्थ, *कबित गुन जाती* = कविता के अनेक गुण, *मीन मनोहर ते बहुभाँती* = मन को भाने वाली बहुत प्रकार की मछली के समान हैं।

कविता के अनेक गुण होते हैं उन्हीं में ध्वनि व अवरेब भी हैं। अभिधा, लक्षणा व व्यंजना, ये शब्द के तीन प्रकार के अर्थ होते हैं। व्यंजनात्मक अर्थ देने वाले काव्य सर्वश्रेष्ठ काव्य कहलाते हैं। रामचरितमानस ऐसा ही काव्य है। मछलियाँ टेढी-मेढी घूमती रहती हैं इसलिये सांकेतिक अर्थों की तुलना मछलियों से की है।

चारों फल जल के जीव, राम नाम महिमा जल के पक्षी

अरथ धरम कामादिक चारी। कहब ग्यान बिग्यान बिचारी ॥37:9॥
नव रस जप तप जोग बिरागा। ते सब जलचर चारु तड़ागा ॥37:10॥
सुकृती साधु नाम गुन गाना। ते बिचित्र जलबिहग समाना ॥37:11॥

अरथ धरम कामादिक चारी = अर्थ; धर्म; काम व मोक्ष ये चारों, *कहब ग्यान बिग्यान बिचारी* = ज्ञान; वैराग्य व विचार इन सबका वर्णन होगा, *नव रस* = नौ रस, *जप तप जोग बिरागा* = जप; तप; योग व वैराग्य का वर्णन है, *ते सब जलचर चारु तड़ागा* = ये सब सुंदर तालाब के जल में रहने वाले जीव हैं, *सुकृती साधु* = पुण्यात्मा व सज्जन लोग, *नाम गुन गाना* = व श्रीराम के नाम का गुणगान, *ते बिचित्र जलबिहग समाना* = ये जल में रहने वाले विचित्र जल पक्षियों के समान हैं।

सरोवर में रहने वाले सारे जीव जैसे साँप, मेढक, कीड़े आदि उसी जल से ही पोषित होते हैं। इसी प्रकार श्रीरामचरितमानस रूपी सरोवर में अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष, ज्ञान, विज्ञान, जप, तप, योग, वैराग्य, नौ रसों का वर्णन है जो जल में रहने वाले जलचर के समान हैं, इनका पोषण करने वाले श्रीराम ही हैं। यदि राम में श्रद्धा है तो जप, तप, नियम सब चलते रहते हैं, यदि प्रभु में प्रेम नहीं तो न जप चलता है न तप चलता है। यदि सरोवर में जल नहीं तो जीव भी नहीं रहेंगे। इसमें पुण्यात्मा, सज्जन लोग व भगवान राम के नाम की महिमा का वर्णन है जो जल में रहने वाले विचित्र पक्षियों के समान हैं।

संतों की सभा आम की बगीचियाँ

संतसभा चहुँ दिसि अवँराई। श्रद्धा रितु बसंत सम गाई ॥37:12॥
भगति निरूपन बिबिध बिधाना। छमा दया दम लता बिताना ॥37:13॥
सम जम नियम फूल फल ग्याना। हरि पद रति रस बेद बखाना ॥37:14॥

संतसभा = संतों की सभा, *चहुँ दिसि अवँराई* = चारों तरफ आम की बगीचियाँ हैं, *श्रद्धा रितु बसंत सम गाई* = श्रद्धा वसंत ऋतु के समान है, *भगति निरूपन बिबिध बिधाना* = विभिन्न प्रकार से भक्ति का प्रतिपादन, *छमा दया दम* = क्षमा; दया व इन्द्रिय निग्रह, *लता बिताना* = वृक्ष की लताओं के समान हैं, *सम जम नियम फूल* = संयम; यम; नियम फूल हैं, *फल ग्याना* = फल ज्ञान हैं, *हरि पद रति रस* = प्रभु राम के चरणों में प्रेम फल का रस है, *बेद बखाना* = ऐसा वेदों में वर्णन है।

अभी तक सरोवर व उसके जल से तुलना की थी। अब कहते हैं सरोवर के ऊपर देखो, चारों तरफ आम के वृक्ष लगे हैं। ये सरोवर को चारों तरफ से घेरे रहकर हमेशा वहीं डटे रहते हैं। इसी प्रकार संत लोग भी श्रीरामकथा रूपी सरोवर को चारों तरफ से घेरे रहते हैं, इसी कथा को सुनते-सुनाते रहते हैं उसी में लगे रहते हैं।

वसंत श्रद्धा, लतायें भक्ति, बौर नियम हैं, फल ज्ञान है

कथा सुनने से जब प्रभु राम के प्रति श्रद्धा आती है तो मानो वसंत ऋतु का वातावरण मन में बन गया। फिर भक्ति आती है, क्षमा, दया, दम आदि भक्ति के रूप हैं ये आम के वृक्ष की लतायें हैं। श्रद्धा-भक्ति आने पर व्यक्ति यम नियम का पालन करने लगता है। मानो वसंत में आम की लताओं में बौर यानि फूल लग गये हों। धीरे-धीरे आम के फूल कच्चे आम के फल में परिवर्तित होने लगते हैं, उसी प्रकार व्यक्ति के अंदर ज्ञान आने लगता है। कहते हैं ज्ञान फल है।

श्रीराम में प्रेम का आना आम का रस है

जैसे कच्चे आम का स्वाद खट्टा होता है, वैसे ज्ञान के अहंकार में कड़वाहट भी होगी। पक जाने पर आम में रस आता है जिससे वह मीठा हो जाता है। उसी प्रकार बार-बार कथा को सुनते-सुनते उसी में लगे रहने से ज्ञान का अहंकार मिटेगा, मधुरता व विनम्रता आ जायेगी। फिर राम चरणों में प्रेम आयेगा यही फल का रस है।

अन्य कथायें रंग बिरंगे पक्षी के समान हैं

औरउ कथा अनेक प्रसंगा। तेइ सुक पिक बहुबरन बिहंगा ॥37:15॥

औरउ कथा अनेक प्रसंगा = और तरह-तरह की कथा व प्रसंग हैं, *तेइ* = वे सब, *सुक पिक बहुबरन बिहंगा* = तोता व कोयल जैसे रंग-बिरंगे पक्षी हैं।

रामचरितमानस में प्रभु राम के अवतार की कथा के साथ में शंकर-पार्वती कथा नारद मोह की कथा, गरुड़-काकभुसुंडि कथा, प्रतापभानु की कथा, मनु-सतरूपा आदि की कथायें भी हैं। ये सब वृक्ष पर रहने वाले तोता, कोयल व अन्य अनेक रंग-बिरंगे पक्षियों के समान हैं।

रोमांच पेड़ व सुखानुभूति पक्षियों का विहार

पुलक बाटिका बाग बन सुख सुबिहंग बिहारु ।
माली सुमन सनेह जल सींचत लोचन चारु ॥दोहा 37॥

पुलक = रोमांच का आना, *बाटिका बाग बन* = वाटिका; बाग व वन हैं, *सुख* = सुख की अनुभूति होना, *सुबिहंग बिहारु* = सुंदर पक्षियों का विहार है, *माली सुमन* = बगीचे की देखभाल करने वाला व्यक्ति, *सनेह जल* = प्रेम के जल से, *सींचत* = बगीचे को सींचता है, *लोचन चारु* = उसी प्रकार सुंदर नेत्रों के अश्रु से कथा सिंचती है।

सरोवर से कुछ दूर देखते हैं तो वन हैं जहाँ पेड़ स्वतंत्र रूप से उग आते हैं मनुष्यों द्वारा लगाये नहीं जाते, बाग हैं जहाँ आम, जामुन, अमरूद आदि के पेड़ करीने से लगाये जाते हैं और वाटिकाएँ हैं जहाँ फूलों के पौधे लगाये जाते हैं। जब कथा सुनने से व्यक्ति रोमांचित होने लगता है यानि उसके रोयें खड़े हो जाते हैं तो मानों ये वन, बाग व वाटिका हैं। इनमें पक्षी चहचहा रहे हैं, घूम रहे हैं, ये कथा सुनने से प्राप्त होने वाले सुख के समान हैं।

आँखें माली, प्रेमाश्रु जल

वाटिका की देखरेख के लिये माली होता है, जो जल से पौधों को सींचता है उसी प्रकार कथा को सुनने या सुनाने से आँखों में प्रेम के अश्रु आने लगते हैं। ऐसा लगता है आँखें, माली की तरह जल से मन के सरोवर के चारों ओर लगे वाटिका के पुष्पों को सींच रही हैं।

संभालकर कथा कहने वाले सरोवर के रक्षक

जे गावहिं यह चरित सँभारे। तेइ एहि ताल चतुर रखवारे ॥38:1॥

जे गावहिं यह चरित सँभारे = जो लोग इस रामचरित्र को संभालकर गाते हैं, *तेइ एहि ताल चतुर रखवारे* = वे इस सरोवर के चतुर रखवाले हैं।

सरोवर का जल साफ रहे, लोग उसमें गंदगी न फैलायें उसके लिये रक्षक रखे जाते हैं जो इसकी देखरेख करते हैं। इसी प्रकार रामकथा के भाव को बनाये रखने

वाले, दोष न देखने वाले इस कथा के रक्षक हैं। जैसे रखवाला, गंदगी आदि को सरोवर में आने नहीं देता, वैसे ही कथा कहने वाले इसमें दोष व मलिनता का समावेश नहीं होने देते, भाव को बनाये रखते हैं। जिनकी बुद्धि मलिन होती है वे कथा में घुसकर इसे भी मलिन बना देते हैं। ये एक तरह से चोर के समान हैं।

आदर से सुनने वाले देवता के समान सरोवर स्नान के अधिकारी

सदा सुनहिं सादर नर नारी। तेइ सुरबर मानस अधिकारी ॥38:2॥

सदा सुनहिं सादर नर नारी = जो स्त्री-पुरुष इस कथा को आदर पूर्वक सदा सुनते हैं, *तेइ सुरबर* = वे देवताओं के समान श्रेष्ठ हैं, *मानस अधिकारी* = वे मानसरोवर में स्नान कर सकते हैं।

कैलास मानसरोवर में स्नान करने के लिये देवता आते हैं, उसी प्रकार जो इस कथा को आदरपूर्वक सुनते हैं, वे देवताओं के समान इस मानसरोवर में स्नान के अधिकारी हैं। बार-बार आग्रह करते हैं कि कथा को आदरपूर्वक सुनें। यह कथा संवत् 1631 में उसी प्रकार अवतीर्ण हुई जिस प्रकार भगवान राम ने अवतार लिया। इसलिये कथा का भी उसी प्रकार आदर होना चाहिये जैसे भगवान राम का होता है। जैसे भगवान पूजनीय हैं वैसे ही कथा भी पूजनीय है। मन में ऐसा विश्वास रखें कि भगवान स्वयं कथा में आकर विराजमान हैं। इसलिये कथा में आपस में बातें न करें, सोयें नहीं, भगवान की उपस्थिति का अनुभव करते रहें।

चार प्रकार के लोगों में कौन कथा सुन पाता है

मानसरोवर बहुत दुर्गम है, उसी प्रकार श्रीराम कथा सुनने पहुँचना भी कठिन है। चार तरह के स्वभाव के लोगों का वर्णन करके यह समझाते हैं कि कुछ तो कथा में जाते ही नहीं, कुछ जाना चाहते हैं पर बाधा रोक देती है, यदि गये भी तो वहाँ सो जाते हैं।

1. अति खल, बगुले व कौओ के समान यहाँ नहीं आते

अति खल जे बिषई बग कागा। एहि सर निकट न जाहिं अभागा ॥38:3॥
संबुक भेक सेवार समाना। इहाँ न विषय कथा रस नाना ॥38:4॥
तेहि कारन आवत हियँ हारे। कामी काक बलाक बिचारे ॥38:5॥

अति खल जे बिषई = जो अति दुष्ट व विषयी हैं, *बग कागा* = वे बगुले व कौए के समान हैं, *एहि सर निकट न जाहिं अभागा* = वे अभागे इस सरोवर के किनारे जाते ही नहीं हैं, *संबुक* = सीव के भीतर का कीड़ा, *भेक* = मेढक, *सेवार* = काई के ऊपर लगी हल्की घास जिसमें कीड़े हों, *समाना* = के समान हैं, *इहाँ न विषय कथा रस नाना* = इस कथा में विषयों की बात नहीं है, *तेहि कारन आवत* = इसलिये यहाँ आकर भी, *हियँ हारे* = हृदय में हार मान लेते हैं, *कामी काक बलाक बिचारे* = बेचारे कौवे व बगुले के समान विषयी लोग।

कौआ और बगुला मानसरोवर के पास नहीं जाते हैं, वे ऐसे जल के पास जाते हैं जहाँ गंदगी हो कीड़े-मकोड़े हों। इन्हें ही खाने में इनको मजा आता है। इसी प्रकार अत्यंत दुष्ट व्यक्ति का कथा में मन नहीं लगता क्योंकि यहाँ गप्पें, खाना-पीना व विषयों की बातें नहीं हैं। तुलसीदासजी ऐसे व्यक्तियों को पहले अति खल कहते हैं फिर बेचारे कहकर सहानुभूति रखते हैं, ताकि कभी तो इनका सुधार हो।

2. सुनना चाहते हैं पर बाधायें कथा में जाने ही नहीं देतीं

आवत एहिं सर अति कठिनाई। राम कृपा बिनु आइ न जाई ॥38:6॥
कठिन कुसंग कुपंथ कराला। तिन्ह के बचन बाघ हरि ब्याला ॥38:7॥
गृह कारज नाना जंजाला। ते अति दुर्गम सैल बिसाला ॥38:8॥
बन बहु बिषम मोह मद माना। नदीं कुतर्क भयंकर नाना ॥38:9॥

आवत एहिं सर अति कठिनाई = इस सरोवर के किनारे बहुत मुश्किल से लोग जा पाते हैं, *राम कृपा बिनु आइ न जाई* = बिना राम जी की कृपा के कथा के पास जा नहीं पाते, *कठिन कुसंग कुपंथ कराला* = घोर कुसंग ही भयानक बुरा रास्ता है, *तिन्ह के बचन बाघ हरि ब्याला* = कुसंगियों के बचन ही बाघ; सिंह व साँप के समान हैं, *गृह कारज नाना जंजाला* = घर के काम और गृहस्थी के बहुत सारे जंजाल, *ते अति दुर्गम सैल बिसाला* = वे अत्यंत दुर्गम विशाल पहाड़ हैं, *बन बहु बिषम* = बहुत से घने जंगल, *मोह मद माना* = मोह; मद और मान के समान हैं, *नदीं कुतर्क भयंकर नाना* = कुतर्क भयानक नदियाँ हैं।

पहले प्रकार के लोग तो कथा में जाना ही नहीं चाहते हैं। दूसरे प्रकार के लोग सोचते हैं कथा हो रही है हमें भी सुननी चाहिये पर बाधाओं के कारण नहीं जा पाते हैं। चार बाधाओं की तुलना मानसरोवर के कठिन मार्ग से करते हैं:

क. कुसंग– जैसे मानसरोवर जाने का रास्ता अत्यंत कठिन है वहाँ बाघ, सिंह व सर्प का डर रहता है। उसी तरह कुसंगी तीन तरह के बचन बोलते हैं। **1.** मित्र– ये लोग बाघ के समान कहेंगे, 'अरे कहाँ जा रहे हो, व्यर्थ का समय गँवाते हो, यह कथा तो बूढ़े लोगों के लिये है अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है?' **2.** घर के बड़े लोग– ये सिंह की भाँति गुर्राकर, डाँटकर छोटों को कहेंगे 'चलो नहीं जाना, क्या रामायण में समय खराब कर रहे हो कुछ काम की बातें करो' **3.** घर में छोटे लोग– जब बड़े कथा में जाते हैं तो छोटे लोग सर्प की भाँति धीरे-धीरे फुसफुसाकर कहेंगे, 'दादा जी या पापा जी, बेमतलब के कामों में समय मत गँवाओं, घर का काम देखो, दो नावों में पैर मत रखो।'

ख. घर के काम– जैसे मानसरोवर के रास्ते में दुर्गम पहाड़ बाधा है, उसी प्रकार व्यक्ति को घर में बहुत से कार्य रहते हैं। लोग सोचते हैं अभी काम निपटा लें बाद में कथा सुन लेंगे, पर जीवन में बाद कभी आता ही नहीं है।

ग. मोह, मद व मान सम्मान– ये सब रास्ते के घने जंगल के समान हैं। परिवार का मोह है, हम जायेंगे तो ये लोग कैसे रहेंगे। हम अपने आप को बहुत ज्ञानी समझ लेते हैं, ज्ञान का मद या धन का मद भी कथा में नहीं जाने देता। हम अपने को कथा कहने वाले से श्रेष्ठ मान लेते हैं, इसलिये भी नहीं जाते।

घ. कुतर्क– सत्य को छिपाने व मिथ्या बात को स्थापित करने के लिये दिये जाने वाले तर्क को कुतर्क कहते हैं। ये रास्ते में भयंकर नदियों के समान हैं। इन्हें पार करना बहुत मुश्किल है।

कथा सुनने के लिये श्रद्धा, सत्संग व राम के प्रति प्रेम हो

जे श्रद्धा संबल रहित नहिं संतन्ह कर साथ ।
तिन्ह कहुँ मानस अगम अति जिन्हहि न प्रिय रघुनाथ ॥दोहा 38॥

जे श्रद्धा संबल रहित = जिनके पास श्रद्धा का संबल नहीं है, *नहिं संतन्ह कर साथ* = जिनका संतों का साथ नहीं है, *तिन्ह कहुँ मानस अगम अति* = उनके

लिये यह कथा पहुँच के बाहर है, *जिन्हहि न प्रिय रघुनाथ*= और जिन्हें राम जी प्रिय नहीं हैं।

भगवान की कथा सुनने जाने के लिये तीन बातें आवश्यक हैं। यदि ये तीनों नहीं है तो व्यक्ति कथा सुनने नहीं जा सकता है :

क. श्रद्धा का संबल– जैसे व्यक्ति मानसरोवर की यात्रा के लिये निकले तो रास्ता का खर्च, खाना-पीना आदि चाहिये वैसे ही कथा स्थान तक ले जाने के लिये श्रद्धा चाहिये। यदि श्रद्धा नहीं है तो कथा स्थल तक कोई नहीं ले जा सकता है।

ख. संतों का साथ– ऐसे लोगों का साथ चाहिये जो स्वयं भी कथा सुनते रहे हों, इसका महत्त्व समझते हों और दूसरों को प्रोत्साहित करते हुए उन्हें भी कथा तक ले जायें।

ग. श्रीराम में प्रेम– भगवान के प्रति जिन्हें प्रेम है वे कथा सुनने चल ही देते हैं। जिन्हें रघुनाथ जी प्रिय न हों उन्हें कथा सुनना मुश्किल है।

3. कथा सुनने पहुँच तो गये पर सुन नहीं पाये

जौं करि कष्ट जाइ पुनि कोई। जातहिं नीद जुड़ाई होई ॥39:1॥
जड़ता जाड़ बिषम उर लागा। गएहुँ न मज्जन पाव अभागा ॥39:2॥
करि न जाइ सर मज्जन पाना। फिरि आवइ समेत अभिमाना ॥39:3॥
जौं बहोरि कोउ पूछन आवा। सर निंदा करि ताहि बुझावा ॥39:4॥

जौं करि कष्ट जाइ पुनि कोई= यदि कष्ट सहकर कोई वहाँ पहुँच भी जाये, *जातहिं नीद जुड़ाई होई*= वहाँ पहुँचते ही नींद आ जाती है जैसे ठंढ लगने लगे, *जड़ता*= कुछ समझ नहीं आता, *जाड़ बिषम उर लागा*= भयंकर ठंढ लगने लगती है जिससे, *गएहुँ न मज्जन पाव अभागा*= अभागे पहुँचकर भी स्नान नहीं कर पाते, *करि न जाइ सर मज्जन पाना*= सरोवर में स्नान व जलपान तो किया नहीं, *फिरि आवइ समेत अभिमाना*= पर अभिमान सहित लौट आते हैं, *जौं बहोरि कोउ पूछन आवा*= फिर कोई उससे वहाँ का हाल पूछने आता है, *सर निंदा करि ताहि बुझावा*= तो सरोवर की निंदा करके उसे समझा देता है।

अब तीसरे प्रकार के व्यक्तियों का वर्णन करते हैं, जो सब कष्टों को पार करके कथा सुनने गये तो लेकिन वहाँ पहुँचते ही नींद लग गयी, कथा सुन नहीं पाये। जैसे सरोवर में पहुँच तो गये पर सर्दी लगने लगी, पानी ठंढा लगने लगा, न स्नान किया न जलपान किया। नींद न आवे, तो भी बुद्धि में कुछ समझ नहीं आता है। बिना सुने या बिना समझे अपने अभिमान के साथ वापस आ गये। कोई पूछने आया कि कथा कैसी थी या सरोवर कैसा था तो अपनी गलती को छिपा लिया, कह दिया अरे इतना ठंढा पानी था उसमें नहा करके मरना नहीं था। कथा की निंदा करते हुए कह दिया, अरे उसमें था ही क्या, न हारमोनियम न तबला कोई रुचिपूर्ण कथा थी ही नहीं, नीरस कथा थी, ऐसा कहकर पूछने वाले को संतुष्ट कर दिया।

4. राम सुकृपा से बाधायें दूर, कथा में पहुँचे, सुने व समझे

सकल बिघ्न ब्यापहिं नहिं तेही। राम सुकृपाँ बिलोकहिं जेही ॥39:5॥
सोइ सादर सर मज्जनु करई। महा घोर त्रयताप न जरई ॥39:6॥
ते नर यह सर तजहिं न काऊ। जिन्ह कें राम चरन भल भाऊ ॥39:7॥

सकल बिघ्न = ये सारी बाधायें, *ब्यापहिं नहिं तेही* = उसकी दूर हो जाती हैं, *राम सुकृपाँ* = श्रीराम कृपा करके, *बिलोकहिं जेही* = जिसकी ओर देख लेते हैं, *सोइ सादर सर मज्जनु करई* = वह व्यक्ति आदरपूर्वक सरोवर में स्नान करता है, *महा घोर त्रयताप न जरई* = महा भयानक तीनों तापों से वह जलता नहीं है, *ते नर यह सर* = ऐसे व्यक्ति इस सरोवर को, *तजहिं न काऊ* = कभी छोड़ते नहीं, *जिन्ह कें राम चरन भल भाऊ* = जिनके मन में रामजी के चरणों में सुंदर प्रेम है।

अब चौथे प्रकार के लोग हैं, इनके सामने भी वही बाधायें हैं, घर के कार्य हैं, नींद की समस्या है परंतु श्रीराम की सुकृपा से ये बाधायें इन्हें रोक नहीं पायीं, ये कथा में पहुँचते हैं। भगवान की कृपा तो सब पर होती है, जो कथा सुनने नहीं जाते उन पर भी कृपा है, उनके कारखाने हैं, दुकाने हैं, खेती हैं, संपन्नता है, वे काम के जंजाल में फँसे रहते हैं। यह कृपा है पर सुकृपा नहीं है। प्रभु के प्रति प्रेम हो, भक्ति हो, ज्ञान हो यह सुकृपा है। जिन पर राम की सुकृपा हुई वे इस कथा को सुनने पहुँचे या रामचरितमानस का अध्ययन करने लगे, इसके फल से उनके तीनों प्रकार के ताप दूर हो जाते हैं। जीवन

में क्लेश नहीं रहते हैं। ये लोग कथा को जीवन का एक अंग बना लेते हैं, निरंतर सुनते या सुनाते रहते हैं।

इस मानसरोवर को पाने के लिये सत्संग करें

जो नहाइ चह एहिं सर भाई। सो सतसंग करउ मन लाई ॥39:8॥

जो नहाइ चह एहिं सर भाई = जो लोग इस सरोवर में स्नान करना चाहते हैं, *सो सतसंग करउ मन लाई* = वे मन लगाकर सत्संग करें।

भगवान की सुकृपा जब होगी तब होगी, लेकिन जो अभी इस मानसरोवर रूपी कथा में स्नान करना चाहते हैं वे क्या करें? उनके लिये उपाय बताते हैं कि खूब मन लगाकर सत्संग करें। भगवान की कृपा संतों द्वारा ही आती है। अब संतों से ही दूर रहोगे तो कुछ नहीं होने वाला है। ऐसे ही रोते-रोते, हाय-हाय करते जीवन निकल जायेगा। ऐसे लोगों के साथ रहो जिनका कथा में प्रेम है।

19. रामचरितमानस सरयू नदी के समान है

(दोहा 39 से दोहा 41)

सरयू नदी कैलास पर्वत पर मानसरोवर नामक सर से निकली है अत: इसका नाम सरयू है। पुराणों की कथा के अनुसार अयोध्या में पहले नदी नहीं थी, वहाँ के राजा मनु ने एक ऐसा बाण छोड़ा जिसने मानसरोवर का एक किनारा काट दिया। पानी उधर से बह चला, आगे-आगे बाण पीछे-पीछे पानी चला। बाण अयोध्या में से होकर निकला और आगे जाकर गंगा जी में मिल गया। तुलसीदासजी के हृदय के मानसरोवर में राम की कथा उमड़ पड़ी, वही कविता बन गयी और उनके हृदय से निकल पड़ी। कथा का प्रवाह ही सरयू नदी के समान है। इस प्रसंग में सरयू की उपमा करते हुए रामचरितमानस का संक्षिप्त प्रस्तुतीकरण है।

तुलसीदास जी के हृदय से कविता निकली

अस मानस मानस चख चाही। भइ कबि बुद्धि बिमल अवगाही ॥39:9॥
भयउ हृदयँ आनंद उछाहू। उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रबाहू ॥39:10॥
चली सुभग कबिता सरिता सो। राम बिमल जस जल भरिता सो ॥39:11॥

अस मानस = ऐसे मानसरोवर को, *मानस* = अपने मन की, *चख चाही* = आँखों से देखकर, *भइ कबि बुद्धि बिमल अवगाही* = तुलसीदासजी की बुद्धि निर्मल हो गयी, *भयउ हृदयँ आनंद उछाहू* = हृदय में आनंद व उत्साह आ गया, *उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रबाहू* = प्रेम व प्रमोद की धारा फूट पड़ी, *चली सुभग कबिता सरिता सो* = उससे वह सुंदर कविता नदी के समान बह निकली, *राम बिमल जस* = जिसमें रामजी के निर्मल यश, *जल भरिता सो* = का जल भरा है।

तुलसीदासजी ने अपने गुरु से और संतों से फिर श्रीराम कथा सुनी, सुनते-सुनते उनके हृदय में यह कथा भर गई, और समय के साथ थिरा गई। उसी में उन्होंने अपनी बुद्धि को स्नान कराया। बार-बार इसका मनन, चिंतन किया जिससे बुद्धि में संपूर्ण कथा का ताना-बाना स्पष्ट समझ में आ गया। बुद्धि में ज्ञान का प्रकाश आ गया, उनका कवित्व जाग उठा, कथा में भाव भी आने लगे। जैसे मानसरोवर से सरयू नदी निकली वैसे ही तुलसीदासजी के हृदय से प्रेम व प्रमोद का प्रवाह श्रीराम जी के यश की कविता के रूप में निकल पड़ा। इसलिये रामचरितमानस प्रेम व आनंद से भरपूर है।

सरयू व कविता, दोनों मानस पुत्री, पवित्र व मंगलकारी

सरजू नाम सुमंगल मूला। लोक बेद मत मंजुल कूला ॥39:12॥
नदी पुनीत सुमानस नंदिनि। कलिमल तृन तरु मूल निकंदिनि ॥39:13॥

सरजू नाम = इसका नाम सरयू है, *सुमंगल मूला* = यह सभी मंगलों का स्रोत है, *लोक बेद मत* = लोकमत व वेदमत, *मंजुल कूला* = इसके दो सुंदर किनारे हैं, *नदी पुनीत* = यह नदी पवित्र है, *सुमानस नंदिनि* = यह मानसरोवर की कन्या है, *कलिमल तृन तरु* = कलियुग के छोटे व बड़े पाप रूपी तिनकों व वृक्षों को, *मूल निकंदिनि* = जड़ से उखाड़ फेकने वाली है।

नदी के दो किनारे होते हैं, उन्हीं के बीच में वह बहती है। इसी प्रकार यह कविता भी लोकमत व वेदमत दोनों को साथ लेकर चलती है। सरयू मानसरोवर से निकली इसलिये मानस पुत्री है, रामचरितमानस की कविता तुलसीदास जी के

मन से निकलती है इसलिये यह भी मानसपुत्री है। नदी के किनारे जो पेड़ रहते हैं उनकी जड़ें जब ज्यादा पानी आता है तो खुल जाती हैं, पानी के बहाव में बह जाते हैं। उसी प्रकार यह कथा कलियुग के तमाम पापों, दोषों को जड़ से निकालकर समाप्त कर देती है।

तीन तरह की बस्तियों जैसे तीन तरह के श्रोता

श्रोता त्रिबिध समाज पुर ग्राम नगर दुहुँ कूल ।
संतसभा अनुपम अवध सकल सुमंगल मूल ॥दोहा 39॥

श्रोता त्रिबिध समाज = तीनों प्रकार के श्रोताओं का समाज ही, *पुर ग्राम नगर दुहुँ कूल* = इस नदी के दोनों किनारों पर बसे हुए पुर, गाँव और नगर हैं, *संतसभा* = संतों की सभा ही, *अनुपम अवध* = अनुपम अयोध्या है, *सकल सुमंगल मूल* = जो सभी मंगलों की जड़ है।

नदी के किनारे तीन तरह की बस्तियाँ होती हैं: 1. पुर– एकदम छोटी बस्ती, 2. गाँव– थोड़ी बड़ी बस्ती, 3. शहर– बहुत बड़ी बस्ती। इसी प्रकार साधना की दृष्टि से कथा के तीन तरह के श्रोता हैं: 1. संसारी– वे हैं जिनकी संसार से प्रीति छूटी नहीं है पर कथा से प्रेम हो गया है। 2. जिज्ञासु– ये लोग साधनामय जीवन जी करके पूजन, ध्यान, चिंतन करते हैं। 3. सिद्ध– सरयू के किनारे अयोध्या है इस कथा के किनारे संत समाज रहता है। जिस प्रकार सरयू चलती रहती है इस प्रकार इस कथा का भी प्रचार होता रहता है।

सरयू गंगा में, कथा भक्ति में जाकर मिलती है

रामभगति सुरसरितहि जाई। मिली सुकीरति सरजु सुहाई ॥40:1॥

रामभगति = कथा राम की भक्ति में, *सुरसरितहि* = गंगा जी में, *जाई मिली* = जाकर मिलती हैं, *सुकीरति सरजु सुहाई* = सुंदर कीर्ति वाली सरयू नदी।

सरयू नदी बहते हुए आगे जाकर गंगा जी में मिल जाती हैं। उसी प्रकार इस कथा को सुनते-सुनते व्यक्ति के अंदर प्रभु राम के प्रति भक्ति की भावना आ जाती है। कथा का समापन भक्ति में होता है।

पवित्र युद्ध की गाथा का वर्णन सोननदी के समान है

सानुज राम समर जसु पावन। मिलेउ महानदु सोन सुहावन ॥40:2॥

सानुज राम = छोटे भाई लक्ष्मण व राम के, *समर जसु* = युद्ध की गाथा, *पावन* = पवित्र है, *मिलेउ महानदु सोन सुहावन* = जैसे महानदी सोन गंगा में आकर मिलती है।

इस कथा में जो युद्ध का वर्णन है वह भी पवित्र है, उसके पाठ से हमारे अंदर के निशाचर मारे जाते हैं, उसकी तुलना सोन नदी से करते हैं। सोन नदी अमरकंटक से निकलती है, मध्यप्रदेश से घूमती हुई गंगा की तरफ दक्षिण दिशा से आकर मिलती है। सरयू नदी उत्तर की तरफ से आकर गंगा में मिलती हैं। सोन नदी की बालू लाल-लाल चमकती है, तो पानी भी लाल दिखाई देता है, ऐसा प्रतीत होता है कि रक्त की धारा बह रही हो।

ज्ञान-सरयू, वैराग्य-सोन दोनों से भक्ति-गंगा जी शोभायमान है

जुग बिच भगति देवधुनि धारा। सोहति सहित सुबिरति बिचारा ॥40:3॥

जुग बिच = दोनों के बीच में, *भगति देवधुनि धारा* = भक्ति के समान गंगा की धारा, *सोहति सहित सुबिरति बिचारा* = सुंदर वैराग्य व ज्ञान के साथ शोभायमान है।

'बिचारा' मायने विचार करना। जैसे प्रकाश के बिना अंधकार दूर नहीं होता वैसा ही विचार के बिना ज्ञान नहीं आता। प्रभु की यश गाथा का स्मरण, गुणगान ही विचार है। ज्ञान सरयू नदी के समान है। प्रभु की युद्धगाथा के पाठ से हमारे अंदर की राक्षसी प्रवृत्ति समाप्त होकर सुंदर वैराग्य आता है। यह सोन नदी के समान है। ये दोनों नदियाँ गंगा जी में मिलती हैं, बीच में गंगा है, एक तरफ सरयू है दूसरी तरफ सोन नदी है। इसी प्रकार ज्ञान व वैराग्य से हमारे अंदर भक्ति आती है। ऐसी सुंदर भक्ति जिसकी एक तरफ ज्ञान हो दूसरी तरफ वैराग्य हो वही बात यहाँ पर तुलसीदास जी काव्यात्मक भाषा में कह रहे हैं।

गंगा जी समुद्र में तो भक्ति श्रीराम में जाकर मिलती है

त्रिबिध ताप त्रासक तिमुहानी। राम सरूप सिंधु समुहानी ॥40:4॥

त्रिबिध ताप त्रासक = तीनों तरह के तापों को समाप्त करने वाली, *तिमुहानी* = तीन मुख वाली यह गंगा जी, *राम सरूप सिंधु* = राम के स्वरूप के समान समुद्र में, *समुहानी* = जाकर मिल जाती हैं।

जब गंगाजी में सरयू और सोन मिलती हैं, तो तीन नदियों के कारण ये तीन मुख वाली कहलाती हैं। गंगाजी इन दोनों को लेकर आगे बढ़ती हैं फिर समुद्र में जाकर समाहित हो जाती हैं। समुद्र की तुलना राम के स्वरूप से करते हैं। इसी प्रकार जब भक्ति में वैराग्य व ज्ञान आकर मिले फिर तीनों मिलकर प्रभु राम में समाहित हो जाते हैं। श्रीराम के दर्शन होते हैं। इनके मिलन से तीनों तरह के कष्ट–दैहिक, दैविक व भौतिक समाप्त हो जाते हैं।

रामकथा मन को पवित्र करती है

मानस मूल मिली सुरसरिही। सुनत सुजन मन पावन करिही ॥40:5॥

मानस मूल = सरयू मानस से निकली, *मिली सुरसरिही* = गंगाजी में मिली, *सुनत सुजन* = सुजन लोग सुनकर, *मन पावन करिही* = अपने मन को पवित्र करते हैं।

सरयू मानसरोवर से निकली व गंगा जी में जा मिली। इसी प्रकार रामजी की कथा तुलसीदासजी के हृदय से वाणी के द्वारा निकली व भक्ति में आकर मिल गयी। इसे सुजन लोग प्रेम से सुनेंगे, सुनकर उनका मन पवित्र हो जायेगा, निर्मल हो जायेगा। सुजन वे हैं जिन पर रामजी की कृपा है, वे बिना किसी व्यवधान के आदरपूर्वक कथा सुनते हैं।

अन्य कथायें नदी किनारे वन के समान हैं

बिच बिच कथा बिचित्र बिभागा। जनु सरि तीर तीर बन बागा ॥40:6॥

बिच बिच = बीच-बीच में, *कथा बिचित्र बिभागा* = अन्य विचित्र कथायें हैं, *जनु सरि* = जैसे नदी, *तीर तीर* = के किनारे-किनारे, *बन बागा* = वन और बगीचे हैं।

नदी के किनारे के बन बाग स्थिर रहते हैं, आगे नहीं बढ़ते, सरयू आगे बढ़ती जाती है। इस मानस में अन्य कथायें हैं जैसे शंकर-पार्वजी जी की कथा, नारद मोह की कथा है, ये आगे नहीं बढ़तीं वहीं समाप्त हो जाती हैं, श्रीराम कथा रामचरितमानस में सरयू के समान अंत तक बहती रहती है।

शंकर जी के बाराती : जल में रहने वाले जीव

उमा महेस बिबाह बराती। ते जलचर अगनित बहुभाँती ॥40:7॥

उमा महेस बिबाह बराती = शिव-पार्वती के विवाह के बाराती, *ते जलचर अगनित बहुभाँती* = वे जल में रहने वाले तरह-तरह के जीव के समान हैं।

मानसरोवर से सरयू निकली वहीं कैलास में शिव-पार्वती जी विराजमान हैं। इस मानस की पहली कथा क्या है? शंकर-पार्वती जी की कथा। सती जी का प्रभु राम पर संदेह, सती का शरीर त्याग, पार्वती जी का जन्म, उनकी तपस्या व शंकर जी के साथ विवाह, उसके बाद पार्वती जी का प्रश्न पूछना, वहीं से यह कथा प्रारंभ होती है। शंकर जी के बारात में तरह-तरह के बाराती थे, कोई मुँह हीन था, कोई बहुत छोटा था, किसी के हाथ पैर नहीं थे – जैसे नदी के जल में विभिन्न प्रकार के जीव रहते हैं।

राम जन्म का आनंद सरयू की भँवर व तरंग

रघुबर जनम अनंद बधाई। भवँर तरंग मनोहरताई ॥40:8॥

रघुबर जनम = रामजी के अवतार होने पर, *अनंद बधाई* = आनंद छा गया, *भवँर तरंग मनोहरताई* = यह सरयू की मनोहर लहर व भँवर के समान है।

जब श्रीराम का अवतरण हुआ, अयोध्या में आनंद छा गया, बाजे बजने लगे, बधाई दी जाने लगीं। जब कोई आनंदित होता है तो कहते हैं कि आनंद की तरंग में है, वैसे ही सरयू की तरंग है, व्यक्ति नदी के भँवर की तरह नाचने लगता है।

चारों भाइयों की लीलायें सरयू के बहुरंग कमल हैं

बालचरित चहु बंधु के बनज बिपुल बहुरंग ।
नृप रानी परिजन सुकृत मधुकर बारि बिहंग ॥दोहा 40॥

बालचरित चहु बंधु के = चारों भाइयों के जो बालचरित हैं, *बनज बिपुल बहुरंग* = बहुत से रंगों के खिले हुए कमल हैं, *नृप रानी परिजन सुकृत* = राजा, रानी व रिश्तेदारों के पुण्य, *मधुकर* = कमल के भौंरे, *बारि बिहंग* = व जल के पक्षी हैं।

चारों भाइयों की बाल लीलायें वैसी ही हैं जैसे सरयू में रंग-बिरंगे कमल खिले हों। कमल के चारों ओर भौंरे उसकी सुगंध लेते रहते हैं। महाराज दशरथ, रानी कौशल्या, कैकेयी व सुमित्रा के पुण्य अत्यंत प्रबल हैं। दिन भर वे बालकों के पास रहते हैं, भौंरो की भाँति लीलाओं के सुगंध का रसपान करते हैं। उनके परिजन के पुण्य कम हैं, वे बीच-बीच में प्रभु को देखते हैं। अयोध्यावासियों के पुण्य और कम हैं, वे दूर से ही जल के पक्षियों की भाँति आनंद लेते हैं।

सीता स्वयंवर, सरयू की सुंदरता

सीय स्वयंवर कथा सुहाई। सरित सुहावनि सो छबि छाई ॥41:1॥

सीय स्वयंवर कथा सुहाई = सीताजी के स्वयंवर की सुंदर कथा, *सरित* = सरयू नदी की, *सुहावनि सो छबि छाई* = सुंदर छबि के समान है।

राम कथा में सीता-राम विवाह एक प्रमुख घटना है। सीता जी का स्वयंवर, धनुष यज्ञ, श्रीराम विवाह– इस प्रसंग में बहुत उत्साह है, जनकपुरी को सजाया जाता है, चारों तरफ मोद मंगल आनंद छाया है। देवता भी देखने आते हैं। यह सरयू जी की सुंदर छवि के समान है, सुंदर धारा बह रही है, तट के किनारे बन बाग दिखाई दे रहे हैं।

प्रश्न नाव, उत्तर केवट, आपस में चर्चा नाव के यात्री

नदी नाव पटु प्रस्न अनेका। केवट कुसल उतर सबिबेका ॥41:2॥
सुनि अनुकथन परस्पर होई। पथिक समाज सोह सरि सोई ॥41:3॥

नदी नाव पटु प्रस्न अनेका = अनेक सुंदर विचारयुक्त प्रश्न इस नदी की नावें हैं, *केवट कुसल उतर सबिबेका* = उनके विवेकपूर्ण उत्तर ही चतुर केवट हैं, *सुनि अनुकथन परस्पर होई* = इसे सुनकर जो आपस में चर्चा होती है, *पथिक समाज सोह सरि सोई* = वह नाव में बैठे यात्री के समान नदी की शोभा हैं।

सीता स्वयंवर में बहुत से प्रश्न-उत्तर होते हैं। जैसे:

1. जनक जी पूछते हैं कौन राजा कहाँ से आये हैं, उसी प्रकार उनके बैठने की व्यवस्था करते हैं। राजा लोग जनक जी से उनकी प्रतिज्ञा पूछते हैं, वे अपनी प्रतिज्ञा बताते हैं।
2. रामजी जब जनकपुरी जाते हैं तो विश्वामित्रजी से पूछते हैं, लक्ष्मणजी को नगर दिखा लायें? जब वे नगर में जाते हैं तो उन्हें देखकर सब लोग एक दूसरे से प्रश्न पूछते हैं ये कौन हैं? फिर जो जानते हैं वे उत्तर देते हैं।
3. जब धुनष टूटने की बात आती है तो रानियाँ प्रश्न पूछती हैं कि ये राजा लोग धनुष नहीं तोड़ पाये तो सीताजी कुँवारी रह जायेंगीं? सीताजी की सखियाँ उत्तर देती हैं कि इन दो राजकुमारों को छोटा मत समझो ये ही धनुष तोड़ेंगे।
4. धनुष टूटने पर परशुराम जी आते हैं, उनके साथ राम-लक्ष्मण का खूब प्रश्न-उत्तर होता है।

यदि नदी में केवल नाव हो केवट न हो तो नावें डूब जायेंगी। प्रश्न नाव हैं उत्तर केवट हैं जो प्रश्नों को सँभाले हैं। नाव खाली नहीं है, उसमें केवट के साथ यात्री भी बैठे हैं। इसी प्रकार प्रश्न-उत्तर के बाद अनुकथन होता है। लोग कहते हैं, हाँ उत्तर तो ठीक है पर ऐसा नहीं हुआ तो? दूसरा कहता है यथार्थ बात है ऐसा ही होगा। ये आपस की बातचीत नाव में बैठे यात्री हैं। नदी में नाव उसमें केवट हो, यात्री हो, नाव चल रही हो तब नदी की शोभा बढ़ जाती है।

तेज धार परशुराम क्रोध, घाट राम के मधुर वचन

घोर धार भृगुनाथ रिसानी। घाट सुबद्ध राम बर बानी ॥41:4॥

घोर धार = नदी की भयंकर धारा, *भृगुनाथ रिसानी* = परशुरामजी का रुष्ट होना है, *घाट सुबद्ध* = सुंदर बँधे हुए घाट, *राम बर बानी* = रामजी के सुंदर वचन हैं।

परशुराम जी कथा में क्रोध करते हैं, तुलसीदास जी क्रोध की जगह रिसाना शब्द का प्रयोग करते हैं। राम ने शंकर जी का धनुष तोड़ दिया, जिससे परशुराम जी रुष्ट हो जाते हैं। यह मानो नदी की प्रबल धारा है, जिसे नाव से पार नहीं कर सकते हैं। इस तेज धारा में स्नान न कर पायें तो नदी के घाट में उतरकर आराम से स्नान करें। प्रभु राम के सुंदर, कल्याणकारी, मधुर वचन जो उन्होंने परशुराम जी से कहे, वे घाट के समान हैं।

विवाह का आनंद नदी में स्नान है

सानुज राम बिबाह उछाहू। सो सुभ उमग सुखद सब काहू ॥41:5॥
कहत सुनत हरषहिं पुलकाहीं। ते सुकृती मन मुदित नहाहीं ॥41:6॥

सानुज राम बिबाह = राम का छोटे भाइयों सहित विवाह के, *उछाहू* = उत्साह, *सो सुभ उमग* = की सुंदर उमंग, *सुखद सब काहू* = सबको सुख देने वाली है, *कहत सुनत हरषहिं पुलकाहीं* = इसके कहने सुनने में जो हर्षित व पुलकित होते हैं, *ते सुकृती* = वे पुण्यशाली लोग, *मन मुदित नहाहीं* = मानो प्रसन्न मन से नदी में स्नान कर रहे हैं।

श्रीराम के साथ छोटे भाइयों भरत, लक्ष्मण व शत्रुघ्न का भी विवाह होता है। विवाह के उत्साह की उमंग में लोग आपस में बातचीत कर रहे हैं। श्रीराम की बारात में शामिल होने शंकर जी, ब्रह्मा जी व अन्य देवता भी आते हैं। ब्रह्मा जी कहते हैं वाह! नगर इतना सुंदर सजा है? शंकर जी कहते हैं यह रचना तुम्हारी नहीं है, परब्रह्म परमेश्वर की रचना है। इस प्रकार देवता भी बातचीत कर रहे हैं। इन सबका बातचीत करना, प्रफुल्लित होना, आनंदित होना वैसा ही है जैसे नदी के जल में खूब स्नान करें, पानी में छम-छम करें, उछल-कूद करें।

राम के राजतिलक की तैयारी: नदी किनारे पर्व

राम तिलक हित मंगल साजा। परब जोग जनु जुरे समाजा ॥41:7॥

राम तिलक हित = श्रीरामजी के राज तिलक के लिये, *मंगल साजा* = जो मंगल साज सजाया गया, *परब जोग* = पर्व पर, *जनु जुरे समाजा* = मानो नदी के किनारे लोग एकत्रित हुए।

विवाह की कथा पूरी हुई। बारात लौटकर अयोध्या आई। महाराज दशरथ ने जनकपुर के स्वागत सत्कार विवाह का विस्तार से महारानियों के सामने वर्णन स्वयं किया। महारानियों ने सीता जी व अन्य बहुओं की आरती की, उन्हें देखकर प्रसन्न हुईं। 10 से 12 वर्ष बाद महाराज दशरथ ने राम जी के राजतिलक की बात सोची। उन्होंने गुरु वशिष्ठ से कहा, गुरु ने कहा बहुत अच्छा। राजतिलक की तैयारी शुरू हो गई। नगर सजने लगा, चारों ओर तैयारी होने लगी, लोग एकत्रित होने लगे। यह वैसे ही है जैसे नदी किनारे किसी पर्व पर सब समाज के लोग एकत्रित होते हैं।

कैकई की कुमति घाट में काई, गिरे, विपत्ति आई

काई कुमति केकई केरी। परी जासु फल बिपति घनेरी ॥41:8॥

काई = नदी पर काई, *कुमति केकई केरी* = रानी कैकेयी की कुबुद्धि है, *परी जासु फल बिपति घनेरी* = जिसके कारण बहुत भारी विपत्ति आ गई।

सरयू घाट पर कोई स्नान करने जाये और जैसे ही घाट की सीढ़ियों पर पैर रखे तो काई के कारण फिसल जाये और डूबने लगे, उसी प्रकार उधर राम के राजतिलक की तैयारी हो रही है, इधर कैकेई की दुर्बुद्धि काई बन गयी। उसने दो वरदान माँग लिये, भरत को राज्य व राम को वनवास। उसके कारण बहुत संकट आ गया। महाराज दशरथ का शरीर त्याग, राम का वन जाना।

भरत चरित्र जप यज्ञ है, विपत्ति आये तो जप करें

समन अमित उतपात सब भरत चरित जपजाग ।
कलि अघ खल अवगुन कथन ते जलमल बग काग ॥दोहा 41॥

समन अमित उतपात = अगनित विपत्तियों को शांत करना, *सब भरत चरित* = सब भरत चरित्र ने किया, *जपजाग* = यह जपयोग के समान है, *कलि अघ खल अवगुन कथन* = कलियुग के पाप व दुष्टों के अवगुणों का वर्णन, *ते जलमल* = वे इस नदी के जल का कीचड़, *बग काग* = और बगुले व कौवे जैसे हैं।

कथा में भरत जी का आगमन होता है, वे विपत्तियों को संभालते हैं। जीवन में जब भी विपत्ति आये तो जप करें। भरत चरित्र नदी के किनारे किये जाने वाले जपयज्ञ के समान है। भरत जी राज्य स्वीकार नहीं करते, वे राम को वापस बुलाने चित्रकूट जाते हैं। राम जी के आदेश से पादुकायें लेकर अयोध्या वापस आते हैं, सिंहासन पर इन्हें बैठाकर राम जी की ओर से 14 वर्षों तक राज्य सँभालते हैं। उधर राम जी राक्षसों का वध करके देवताओं का कार्य पूरा करते हैं। इस प्रकार भरत जी ने त्याग करके विपत्ति के प्रभाव को निष्फल कर दिया। संकट तो रहा पर असर नहीं हुआ, भाइयों में प्रेम व एकता बनी रही।

पापों व दुष्टों का वर्णनः नदी की गंदगी हैं

जब बरसात आती है तो सरयू का जल मैला भी होता है, उसमें कीड़े आदि उत्पन्न हो जाते हैं, जिन्हें खाने के लिये बगुले व कौवे भी आ जाते हैं। ये सब मानसरोवर में नहीं थे क्योंकि वहाँ इनकी पहुँच नहीं थी। सरयू मैदान में आ गयी इसलिये ये भी आने लगे। इसी तरह जब भगवान की कथा जन साधारण के बीच मे आती है तो लोग इसमें कुछ गलत बातें व कुतर्क आदि भी जोड़ देते हैं, इनसे आकर्षित होकर दुष्ट लोग भी बीच-बीच में आ जाते हैं। इसी प्रकार कलियुग के पापी व दुष्ट लोगों के कथन भी इस कथा में हैं जो पानी की गंदगी व बगुले कौवे के समान हैं।

20. श्रीराम कथा की तुलना 6 ऋतुओं से

(दोहा 42)

श्रीरामचरितमानस महाकाव्य है। महाकाव्य के बहुत से नियम हैं जैसे इसमें सरोवर, नदी, पर्वत, समुद्र व ऋतुओं का वर्णन आवश्यक है। तुलसीदास जी ने सभी का समावेश किया है। अब कथा की तुलना सभी ऋतुओं से करते हैं।

छहों ऋतुओं में यह सुहावनी व पवित्र है

कीरति सरित छहूँ रितु रूरी। समय सुहावनि पावनि भूरी ॥42:1॥

कीरति सरित = यह कीर्ति रूपी नदी, *छहूँ रितु रूरी* = छः ऋतुओं में सुंदर है, *समय सुहावनि* = सभी समय यह परम सुहावनि, *पावनि भूरी* = और अत्यंत पवित्र है।

जैसे सरयू नदी सभी ऋतुओं में सुँदर है वैसे कथा भी प्रत्येक ऋतु में सुँदर व पवित्र है। तुलसीदास जी सर्दी की ऋतुओं को सुखदायक व गर्मी को दु:खदायक मानते हैं। पर वे कहते हैं, सभी ऋतुओं की अपनी शोभा है। अगर गर्मी में गर्मी न हो और ठंढ में ठंढ न हो तो उसकी शोभा नहीं।

1. हेमंत ऋतु: शिव-पार्वती विवाह

हिम हिमसैलसुता सिव ब्याहू। सिसिर सुखद प्रभु जनम उछाहू ॥42:2॥

हिम = हेमंत ऋतु, *हिमसैलसुता* = हिमालय की पुत्री पार्वतीजी का, *सिव ब्याहू* = शंकर जी के साथ विवाह, *सिसिर सुखद* = सुखदायी शिशिर ऋतु, *प्रभु जनम उछाहू* = रामचन्द्रजी के जन्म का उत्सव।

रामचरितमानस में शिव जी के पार्वती के साथ विवाह की कथा का वर्णन हेमंत ऋतु के समान है। इस ऋतु में हल्की सर्दी व हल्की वर्षा व शीतलता रहती है।

2. शिशिर ऋतु: राम जन्मोत्सव

अगहन, पूस, माघ व फागुन तक शिशिर ऋतु रहती है। यह बहुत सुखदायक है। श्रीराम के जन्म के उत्सव की कथा का आनंद शिशिर के समान है।

3. वसंत ऋतु: श्रीराम विवाह

बरनब राम बिबाह समाजू। सो मुद मंगलमय रितुराजू ॥42:3॥

बरनब राम बिबाह समाजू = श्रीरामजी के विवाह का वर्णन, *सो मुद मंगलमय रितुराजू* = वह आनंद मंगलदायी ऋतुओं का राजा वसंत है।

श्रीराम का सीता जी से विवाह होता है। इस विवाह में सारा समाज एकत्रित होता है व बहुत अधिक आनंद व उत्साह रहता है। इसकी तुलना सभी ऋतुओं के राजा वसंत ऋतु से करते हैं। यह ऋतु मोद व मंगल देने वाली है।

4. ग्रीष्म ऋतु: श्रीराम का वन जाना

ग्रीषम दुसह राम बनगवनू। पंथकथा खर आतप पवनू ॥42:4॥

ग्रीषम दुसह = कष्टकारी ग्रीष्म ऋतु, *राम बनगवनू* = राम जी के वनवास की कथा है, *पंथकथा* = मार्ग की कथा, *खर आतप पवनू* = कड़ी धूप व लू है।

श्रीराम वन में जाते हैं, सब लोग दु:खी होते हैं, राम जी भी वन में बहुत कष्ट उठाते हैं, पैरों में कंकड़ लगते हैं, गर्मी, सर्दी सहते हैं। इन सबकी तुलना ग्रीष्म ऋतु से करते हैं। इस ऋतु में तेज धूप रहती है, लू चलती है, लोगों को कष्ट होता है।

5. वर्षा ऋतु : युद्ध, निशाचरों का मरना

बरषा घोर निसाचर रारी। सुरकुल सालि सुमंगलकारी ॥42:5॥

बरषा = वर्षा ऋतु, *घोर निसाचर रारी* = राक्षसों के साथ घोर युद्ध है, *सुरकुल* = देवताओं के लिये, *सालि* = और धान की फसल के लिये, *सुमंगलकारी* = यह मंगलकारी है।

जैसे वर्षा ऋतु में वर्षा की झड़ी लगी रहती है ऐसे ही युद्ध में अस्त्र-शस्त्रों की झड़ी लगी रहती है। सब निशाचर मारे जाते हैं। जैसे वर्षा ऋतु धान के खेतों के लिये सुखदायी है, धान लहलहाने लगती है वैसे ही निशाचरों के मारे जाने से देवता लोग प्रसन्न होते हैं।

6. शरद ऋतु : श्री राम राज्य स्थापना

राम राज सुख बिनय बड़ाई। बिसद सुखद सोइ सरद सुहाई ॥42:6॥

राम राज = राम जी का राजा बनना, *सुख बिनय बड़ाई* = रामराज्य में सुख, विनय और बड़ाई, *बिसद सुखद सोइ* = लंबे समय तक चलने वाला वह सुख, *सरद सुहाई* = सुहावनी शरद ऋतु है।

इसके बाद रावण मारा जाता है। श्रीराम अयोध्या वापस आते हैं, सिंहासन पर बैठते हैं। प्रभु राम की नीति ऐसी है कि सब लोग सुखी हो जाते हैं, सारी प्रजा प्रसन्न रहती है। यह मानो शरद ऋतु आ गई हो। राम राज्य बहुत दिनों तक चला इसलिये इसे 'बिसद सुखदायी' कहते हैं।

21. श्रीराम कथा की तुलना सरयू के जल से

(दोहा 43)

जल में चार गुण होते हैं स्वच्छता या निर्मलता, शीतलता, मधुरता व हल्कापन। श्रीराम कथा की तुलना जल के चारों गुणों से करते हैं।

1. सीता जी का स्वभाव जल की निर्मलता है

सती सिरोमनि सिय गुन गाथा। सोइ गुन अमल अनूपम पाथा ॥42:7॥

सती सिरोमनि = सतियों में श्रेष्ठ, *सिय गुन गाथा* = सीताजी के गुणों की कथा, *सोइ गुन अमल अनूपम पाथा* = वह इस जल की स्वच्छता व निर्मलता के समान है।

पतिव्रताओं में श्रेष्ठ, सीता जी के स्वच्छ व निर्मल चरित्रों की कथा सरयू में बह रहे स्वच्छ पानी की तरह है।

2. भरत जी का स्वभाव जल की शीतलता है

भरत सुभाउ सुसीतलताई। सदा एकरस बरनि न जाई ॥42:8॥

भरत सुभाउ = भरतजी का स्वभाव, *सुसीतलताई* = इस जल की शीतलता के समान है, *सदा एकरस बरनि न जाई* = जो सदा एक सी रहती है और उसका वर्णन नहीं किया जा सकता है।

भरत जी का स्वभाव सरयू में बह रहे जल की शीतलता के समान है जो सदा एक सा रहता है। सरयू का जल गर्मी व ठंढी दोनों में शीतल रहता है। इसी प्रकार भरत जी का स्वभाव अनुकूल व प्रतिकूल दोनों परिस्थितियों में शीतल रहता है।

3. चारों भाइयों का आपस में प्रेम जल की मधुरता है

अवलोकनि बोलनि मिलनि प्रीति परसपर हास ।
भायप भलि चहु बंधु की जल माधुरी सुबास ॥दोहा 42॥

अवलोकनि = एक दूसरे की ओर देखना, *बोलनि* = एक आपस में बातचीत करना, *मिलनि* = एक आपस में मिलना, *प्रीति* = प्रेमपूर्ण है, *परसपर हास* = एक आपस में हास परिहास, *भायप भलि* = सुंदर भाईचारा, *चहु बंधु की* = चारों भाइयों की, *जल माधुरी सुबास* = जल की मधुरता व सुगंध है।

चारों भाइयों का आपस में परस्पर प्रेम मानो जल की मधुरता व सुगंध है। चारों भाई जब एक दूसरे की ओर देखते हैं तो प्रेम से देखते हैं, जब आपस में बात करते हैं तो प्रेम से करते हैं, आपस में मिलते हैं व हास परिहास करते हैं वह भी प्रेमपूर्वक ही होता है। यह वर्णन मन को छू लेने वाला है। हमें अपने जीवन में भी इसी प्रकार के प्रेम को विकसित करना चाहिये। यदि नहीं है तो इसका बार-बार पाठ करें अपने आप प्रेम आयेगा, जीवन आनंदमय बनेगा।

4. तुलसीदास जी की दीनता, निरहंकारिता जल का हल्कापन है

आरति बिनय दीनता मोरी। लघुता ललित सुबारि न थोरी ॥43:1॥

आरति बिनय दीनता मोरी = मेरा आर्त्तभाव; विनय व दीनता, *लघुता न थोरी* = कम हल्कापन नहीं है, *ललित सुबारि* = इस सुंदर व निर्मल जल का।

जल में हल्कापन भी रहता है, प्रश्न है जब रामकथा की तुलना जल से करते हैं तो कथा में हल्कापन क्या है? तुलसीदास जी कहते हैं कथा में हल्कापन कहीं नहीं है। वे कहते हैं जो भी हल्कापन है वह मेरा है। मेरा आर्त्तभाव, बार-बार शंकर जी, राम जी से विनती करना, यह सब कथा में लघुता है, हल्कापन है। तुलसीदासजी कहते हैं यदि मैं अपनी दीनता व निरंहकारिता के साथ कथा न कहता तो कथा इतनी सुंदर न बनती। लघुता का गुण रह ही जाता। जल की लघुता भी बहुत गुणकारी है।

कथा सुनने मात्र से लाभकारी है, जल पीने से लाभ

अदभुत सलिल सुनत गुनकारी। आस पिआस मनोमल हारी ॥43:2॥

अदभुत सलिल = यह कथा अनोखी है, *सुनत गुनकारी* = सुनने से ही लाभ मिलता है, *आस पिआस* = आशायें पूरी करती है, *मनोमल हारी* = मन के मल को दूर करती है।

सरयू का जल कितना ही सुंदर क्यों न हो, जब पिओगे तब लाभ होगा। परंतु यह कथा तो सुनने मात्र से ही अपना गुण प्रदान करती है। कथा का कानों से सुनना ही कथा का पीना है। सरयू का जल पीने से प्यास बुझ जाती है, स्नान करने से शरीर शुद्ध हो जाता है। इसी प्रकार कथा सुनने से तमाम मनोकामनायें, आशायें पूर्ण होकर समाप्त हो जाती हैं, मन के मैल दूर होकर चित्त निर्मल हो जाता है।

जल से खेत पोषित, कथा से राम के प्रति प्रेम पुष्ट होता है

राम सुप्रेमहि पोषत पानी। हरत सकल कलि कलुष गलानी ॥43:3॥

राम सुप्रेमहि = राम के प्रति प्रेम भाव को, *पोषत पानी* = पानी के समान यह पुष्ट करती है, *हरत* = यह दूर करती है, *सकल कलि कलुष गलानी* = कलियुग के समस्त पापों और ग्लानि को।

जल को खेत में डाल दो तो पौधे परिपुष्ट होते हैं। इस कथा को सुनने से राम के प्रति भक्ति भाव पुष्ट होता है, भक्ति बढ़ती है। कलियुग के तमाम पाप और उनसे उत्पन्न होने वाली ग्लानि समाप्त हो जाती है। रामचरितमानस का पाठ भक्ति भाव बढ़ाता है।

आदर के साथ पान करें, समस्त दोष दूर होते हैं

भव श्रम सोषक तोषक तोषा। समन दुरित दुख दारिद दोषा ॥43:4॥
काम कोह मद मोह नसावन। बिमल बिबेक बिराग बढ़ावन ॥43:5॥
सादर मज्जन पान किए तें। मिटहिं पाप परिताप हिए तें ॥43:6॥

भव श्रम सोषक = संसार के श्रम को सोख लेती है, *तोषक तोषा* = संतोष को भी संतुष्ट करती है, *समन दुरित दुख दारिद दोषा* = पाप; ताप; दरिद्रता और दोष नष्ट हो जाते हैं, *काम कोह मद मोह नसावन* = यह कामनायें; क्रोध;

मद; मोह को समाप्त करती है, *बिमल बिबेक बिराग बढ़ावन* = यह निर्मल विवेक व वैराग्य को बढ़ाती है, *सादर मज्जन पान किए तें* = आदर के साथ स्नान करने व पान करने से, *मिटहिं पाप परिताप हिए तें* = हृदय के पाप व संताप मिट जाते हैं।

इस संसार में बार-बार जन्म लेने और बार-बार मरने को भव-श्रम कहते हैं। यह कथा इससे छुटकारा दिलाकर जीवन मुक्त बना देती है। यह बहुत अधिक तृप्ति प्रदान करती है। कथा सुनते-सुनते व्यक्ति की दरिद्रता समाप्त हो जाती है। दरिद्र मायने व्यक्ति अपने को हीन व तुच्छ समझता है। अहंकार मायने व्यक्ति अपने को बहुत कुछ समझता है। ये दोनों मानसिक विकार छूट जाते हैं। व्यक्ति के अंदर विवेक व वैराग्य आता है। जैसे आदर से सरयू के जल को पीते हैं, उसमें स्नान करते हैं, उसी प्रकार आदर से इस कथा का पाठ करें, मनन व चिंतन करें, बार-बार सुनें, समझें। ऐसा करने से पाप व परिताप मिट जाते हैं।

जो यह कथा नहीं सुनते, वे कायर हैं कलियुग उन्हें ठगेगा

जिन्ह एहिं बारि न मानस धोए। ते कायर कलिकाल बिगोए ॥43:7॥

जिन्ह = जिन लोगों ने, *एहिं बारि* = इस रामचरितमानस रूपी जल में, *न मानस धोए* = अपने मन को नहीं धोया है, *ते कायर* = वे कायर हैं, *कलिकाल बिगोए* = कलियुग ने उन्हें ठग लिया है।

कायर मायने अभी इतनी हिम्मत नहीं है कि कथा को सुने, उसमें डुबकी लगाये। यहाँ पर तुलसीदास जी कायर कहकर ललकार रहे हैं, कि जाओ कथा सुनो। रामचरितमानस रूपी सुंदर, स्वच्छ जल में अपने मन को धोओ। ठगना मतलब है कलियुग के झूठ, फरेब, बेईमानी, कलह के जंजाल में फँस जाना। कथा सुनने व मनन करने से बुद्धि आती है, हमें यह समझ में आ जाता है कि लालच ठीक नहीं, इसलिये ठगे जाने से बच जाते हैं।

कलियुग में ठगा व्यक्ति भागता ही रहता है

तृषित निरखि रबि कर भव बारी। फिरिहहिं मृग जिमि जीव दुखारी ॥43:8॥

तृषित निरखि रबि कर = प्यासा मृग सूर्य की किरणों में पानी देखकर, *भव बारी* = ठगा व्यक्ति संसार में पानी देखकर, *फिरिहहिं मृग* = मृग उसके पीछे भागकर दु:खी होता है, *जिमि जीव दुखारी* = जीव उसके पीछे भागकर दु:खी होता है।

मरुस्थल में पानी न होते हुए भी सूर्य की चमकती किरणें जब रेत पर पड़ती हैं तो वह पानी का आभास देती हैं, मृग उसे पानी ही समझ लेता है और पीने के लिये भागता है। वह जितना भागता है, श्रम के कारण उसकी प्यास और बढ़ती है, वह दु:खी होता है। इसी प्रकार जिसे कलियुग ने ठग लिया है उसे संसार में पानी यानि सुख दिखाई देता है। वह संसार में झूठी आशायें लगाये रहता है कि ऐसा कर लेंगे तो ऐसा हो जायेगा, वह सदा कामनाओं से ग्रसित होकर, मरुस्थल के प्यासे मृग की भाँति भागता ही रहता है। इस प्रकार कठोर वचन कहकर तुलसीदास जी हम सबको सावधान करते हैं कि यह कथा कहते रहो, सुनते रहो अन्यथा इस कलिकाल में विनाश ही है।

नोट



अवलोकितेश्वर (सुबोध अग्रवाल) का जन्म मध्यप्रदेश के सतना जिले में 1962 में हुआ। उन्होंने स्वामी सत्यानन्द सरस्वती से जुलाई 1983 में मंत्र दीक्षा ग्रहण की। अपने शैक्षिक जीवन को 1988 में समाप्त कर मुंगेर आश्रम में ढाई वर्ष तक गुरु सेवा में रत रहे, और गुरुदेव ने उनको अवलोकितेश्वर नाम भी प्रदान किया। वे अभी मध्यप्रदेश के सतना जिले में चार्टर्ड एकाण्टेण्ट का कार्य कर रहे हैं।

श्री गुरुदेव की प्रेरणा से भारत की अनुपम संस्कृति के प्रचार व उत्थान हेतु प्रवचनों को संग्रहित कर शीर्षकों के माध्यम से लेखन व संपादन का मंगलकारी एवं उत्तम कार्य शुरू किया। प्रथम ग्रंथ श्री हनुमान चालीसा है जिसमें चिन्मय मिशन के प्रमुख स्वामी तेजोमयानन्दजी के प्रवचनों का संग्रह है। अन्य ग्रंथ गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस पर चिन्मय मिशन के वरिष्ठ स्वामी श्री शंकरानंदजी के प्रवचनों के संग्रह हैं।



श्री स्वामी सत्यानन्द जी कहते हैं कि श्रीरामचरितमानस का शब्दानुवाद होना चाहिये। उनकी प्रेरणा व स्वामी निरंजनानंद सरस्वती के कृपापूर्ण मार्गदर्शन में श्रीरामचरितमानस के बालकाण्ड भाग एक का शब्दानुवाद, श्री स्वामी सत्यानन्द जी के रिखिया सत्संगों का संकलन, चिन्मय मिशन के वरिष्ठ स्वामी श्री शंकरानंद जी के प्रवचनों का संकलन व संपादन शीर्षकों व उपशीर्षकों के माध्यम से किया गया है। परमपूज्य गुरुदेव का निर्देश है कि तुलसीदास जी ने जैसा ग्रंथ लिखा है, उसे वैसा ही समझा जाये। इस बात को ध्यान में रखते हुए ही यह संकलन व संपादन कार्य किया गया है।

बालकाण्ड के प्रथम भाग में तुलसीदास जी ने संपूर्ण जगत् को सिय-राममय जानकर वंदना की है। राम नाम की वंदना करते हुए यह स्पष्ट किया है कि राम नाम एक पूर्ण महामंत्र है। राम नाम का जप सब प्रकार के सुख, शांन्ति, आनन्द व सफलता प्रदान करने में सक्षम है। हिन्दी साहित्य का यह महाकाव्य शिव-पार्वती की कृपा से सिद्ध ग्रंथ बन गया है। इसका पाठ हमें स्वयं को सुधारने के लिए करना है।



ISBN

978-81-940805-6-5